

श्री.

ज्ञानानंद श्रावकाचार।

[भाषाटीका]



प्रकाशक–

मूलचंद जैन–सागर, (सी० पी०)

" जैन विजय " प्रेस–सूरत ।

श्री वीतरागाय नमः ।



सद्बोधरत्नाकर सप्तम

श्री
ज्ञानानंद श्रावकाचार ।



संशोधक.

श्री मूलचन्द कासेजा



प्रकाशक.

श्री कन्हैयालाल मूलचन्द मालिक
सद्बोधरत्नाकर कार्यालय
बड़ाबाजार सागर सी. पी.

प्रथमवार वीर संवत् २४४१

मूल्य १॥) कपड़ेकी जिल्दका १॥।)

प्रकाशकः—
श्री कन्हैयालाल मूलचन्द
मालिक सद्बोधरत्नाकर कार्यालय
बड़ाबाजार सागर सी. पी.

* * *

मुद्रकः—
ईश्वरलाल किसनदास व[redacted]ड़ैय
'जैनविजय प्रिन्टिंग प्रेस' खपाटिया चक
लक्ष्मीनारायणबाड़ी, सूरत

प्रस्तावना ।

सज्जनो,

जिस ग्रन्थकी हम प्रस्तावना लिखनेका आरंभ करते हैं वह वास्तवमें बहुत ही महत्वका है । ग्रन्थकर्ताने इस ग्रन्थकी रचना कर जैनजातिका बड़ा भारी उपकार किया है । इस ग्रन्थके रचियता श्रीयुत विद्वद्वर्य पं० रायमल्लजी सा० जयपुरनिवासी हैं। आपके विषयमें बहुत कुछ लिखनेकी हमारी इच्छा थी परन्तु जैनसमाज ऐतिहासिक विषयोंमें सबसे पीछे पड़ा हुआ है इसी कारण आज कोई किसी आचार्य, विद्वानकी जीवनी लिखना चाहे तो पहले तो उसे सामग्री ही नहीं मिलती; यदि कुछ सामग्री भी मिल गई तो पूरी न मिलनेके कारण पाठकोंको संतोष नहीं होता । ऐतिहासिक विषयोंकी खोज करनेके लिये जिस शिक्षाकी आवश्यकता है हमारे समाजमें सच पूछो तो उसका प्रारम्भ ही नहीं हुआ है । ग्रन्थकर्त्ताकी जीवनीका मैंने बहुत खोज किया, कई ग्रन्थ देखे, कई जगह ढूंढ़ खोज की किन्तु दुःखका विषय है कि ऐसे महत्वपूर्ण ग्रन्थके रचयिता विद्वान्का केवल नाम और ग्राम विदित होनेके सिवाय और कुछ पता न लगा । इतना भी परिचय श्रीयुत मास्टर दरयावसिंहजी सोधिया इन्दौर निवासीद्वारा प्राप्त हुआ । यह ग्रन्थ (ज्ञानानंद श्रावकाचार) जैनियोंका आचार प्रधान ग्रन्थ है इस ग्रन्थकी एक २ प्रति वर्तमान समयमें प्रत्येक जैनीके हाथमें होना आवश्यक है,

विना इसका संस्करण निकाले ऐसा होना असम्भव था इसी लिये मैंने इस ग्रन्थको प्रकाशित करनेका साहस किया है।

ग्रन्थकर्त्ताकी कृतिमें लेशमात्र फेरफार न करके जयपुरी भाषामें इसको जैसाका तैसा छपाया है। इस ग्रन्थके संशोधनमें श्रीयुत पं० बालचन्दजी संघी तथा श्रीयुत मास्टर दीपचन्द्रजीने विशेष सहायता दी इसलिये मैं उनका आभारी होकर उन्हें कोटिशः धन्यवाद देता हूं।

जखौरा जिला झांसी
चैत्र वदी २ सं० १९७५

हितैषी—
मूलचन्द मैनेजर



यह पुस्तक मिलनेका पता—
मूलचन्द मैनेजर
सद्बोधरत्नाकर कार्यालय
बड़ा बाजार, सागर (सी. पी.)

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

ज्ञानानन्द श्रावकाचार।

मंगलाचरण।

दोहा।

राजत केवलज्ञान युत परमौदारिक काय।
निरख छबि भवि छकित ह्वे पी रस सहज सुभाय॥१॥
अरहत जी हन अरिनकों पायो सहज निवास।
ज्ञान ज्योति परगट भई ज्ञेय किये सब प्रकास॥२॥
सकल सिद्ध वन्दों सुविधि समयसार अविकार।
स्वच्छ स्वछन्द उद्योत नित लख्यो ज्ञान विस्तार॥३॥
ज्ञान स्वच्छ जसु भावमें लोकालोक समाय।
ज्ञेयाकार न पर नवे सहज ज्ञान रस पाय॥४॥
अन्त आँचके पाचतें शुद्ध भये शिवराय।
अभेद रूप जे वरनवे सहजानंद सुपाय॥५॥
जिन मुखतैं उत्पन्न भई ज्ञानामृत रस धार।
स्वच्छ प्रवाह वहै ललित जग पवित्र करतार॥६॥
जिन मुखतैं उत्पन्न भई सुरति सिन्धुमय सोय।
मो निर्मित्त अघ हरणतैं सब कारज सिध होय॥७॥
निरविकार निर्ग्रन्थए ज्ञान ध्यान रस लीन।

नासा अग्रजु दृष्टि धर कर कर्म मल छीन ॥८॥
इह विधि मंगल करनतैं सब विधि मंगल होत।
होत उदंगल दूर सब तम ज्यों भानु उद्योत ॥९॥



इसप्रकार मंगलाचरण पूर्वक अपने इष्टदेवको नमस्कार कर ज्ञानानन्द पूरित निज रस नाम शास्त्र ताका अनुभवन करूंगा। सो हे भव्य! तूं सुन। कैसा है इष्ट देव, अरु कैसा है यह शास्त्र, अरु कैसा हूं मैं सोई कहिये है। देव दोय प्रकार है—अर्हन्त, सिद्ध। गुरू तीन प्रकार है—आचार्य, उपाध्याय, साधु। धर्म एक ही प्रकार है सो विशेषपने भिन्न भिन्न निरूपण करिये है। सो कैसे हैं अर्हन्तदेव परमौदारिक शरीर तावि‍षें पुरुषाकार आत्मद्रव्य है। बहुरि नाश किया है घातिया कर्ममल जाने अर धोया है आत्मासे कर्मरूपी मैल जाने, अरु अनन्त चतुष्टयको प्राप्त भया है, अरु निराकुलित अनुपम बाधारहित ज्ञान सुरस करि पूर्ण भरया है, अरु लोकालोकको प्रकाशक ज्ञेयरूप नाहीं परनवे है। एक टंकोत्कीर्ण ज्ञायक स्वभावको धरे है, अरु शान्तिक रसकर अत्यन्त तृप्त हैं। क्षुधादि अठारह दोषनसौं रहित हैं। निर्मल (स्वच्छ) ज्ञानका पिंड हैं, जाका निर्मल स्वभाव वि‍षैं लोकालोकके चराचर पदार्थ स्वयमेव आन प्रतिविंब हुवे हैं। मानो भगवानका स्वभाव वि‍षैं पहिले ही ए पदार्थ तिष्ठे था। ताका निर्मल स्वभावकी महिमा वचन अगोचर है। बहुरि कैसे हैं अरहंत देव जैसे सांचा वि‍षैं रूपा धातुका पिंड निरमापिऐ है। तैसे अरहंत देव चैतन्य धातुका पिंड परम औदारिक शरीर वि‍षैं तिष्ठे

हैं। शरीर न्यारा है अरहंत आत्मा द्रव्य न्यारा है ताकौ हुं अंजुली जोर नमस्कार करौं हौं। बहुरि कैसे हैं परम वीतराग देव अतीन्द्रिय आनंद रसकौ पीवै हैं वा आस्वादै हैं। ताका सुखकी महिमा हम कहवा समर्थ नाहीं। पन छद्मस्थका जानवानै उपमा संभवै है। तीन काल सम्बन्धी बारहा गुनस्थानके धारी मुनि ताके आत्मीक सुखकी जुदी जात है। सो ऐ तौ अतेन्द्रिय क्षायिक सम्पूर्ण स्वाधीन सुख है। अरु क्षद्मस्थकै इन्द्रियजनित पराधीन किंचित् सुख है। ऐसा निसंदेह है बहुरि कैसे हैं केवलज्ञानी केवल एक निज स्वच्छ ज्ञानका पुंज है। ता विषैं और भी अनंतगुण भरे हैं। बहुरि कैसे हैं तीर्थंकर देव अपना उपयोगकूं अपने स्वभाव विषैं गाल दिया है। जैसे लूनकी डली पानी विषैं गल जाय त्यों ही केवली भगवानका उपयोग स्वभाव विषैं गल गया है। फेरि बाहिज निकसवाने असमर्थ है नियम करि। बहुरि आत्मीक सुख सौ अत्यंत रत भया है। ताका रस पीवाकर तृप्ति नाहीं होय है वा अत्यंत तृप्ति है और वाका शरीरकी ऐसी सौम्य दृष्टि ध्यानमय अकंप आत्मीक प्रभावकरि सोभै है मानौ भव्य जीवनै उपदेश ही देय है कि रे भव्य जीवो! अपना स्वरूप विषैं ऐसे लागौ। विलम्ब मत करौ ऐसा शांतीक रस पीवौ ऐसे सैन करि भव्य जीवनकूं अपना स्वरूप विषैं लगावै है। इह निमत्तनै पाय अनेक जीव संसार समुद्रसूं तिरे। अनेक जीव आगै तिरैंगे। वर्तमान विषैं तिरते देखिये है। सो ऐसा परम औदारिक शरीरको भी हमारा नमस्कार होहु। जिनेन्द्रदेव हैं सो तौ आत्मद्रव्य ही हैं परन्तु आत्मद्रव्यके निमित्तै शरीरकी भी

स्तुति उचित है। अरु भव्य जीवनै मुख्यपनै शरीरकाही उपकार है तातैं स्तुति वा नमस्कार करवौ उचित है। अर जैसे कुलाचलनके मध्य मेरु शोभे है। तैसे गणधरानके विषैं वा इन्द्रोंके विषैं श्री भगवान शोभै हैं। ऐसा श्री अरहंत देवाधिदेव या ग्रन्थकूं पूरा करैं।

आगे श्री सिद्ध परमेष्ठीकी स्तुति महिमा करि अष्ट कर्म हनूं हूं। सो कैसे हैं श्री सिद्ध परम देव जिन धोया है घातिया अघातिया कर्ममल **निषपन्न भया** जैसे सोला वानीका शुद्ध कंचन अंतकी आंचकर पचाया हुवा निषपन्न होय है। तैसे अपनी स्वच्छ शक्ति कर देदीप्यमान प्रगट भया है स्वरूप जाका। सो प्रगट हीतै मानूं **समस्त ज्ञेयकौ** निगल गया है। बहुरि कैसे हैं सिद्ध एक एक सिद्धकी अवगाहना विषैं अनंत अनंत सिद्ध न्यारे न्यारे अपनी अपनी सत्तासहित तिष्ठैं हैं। कोऊ सिद्ध महाराज काहु सिद्धसे मिलें नाहीं बहुरि कैसे हैं सिद्ध परम पवित्र हैं। अरु स्वयं सुद्ध हैं अरु आत्मीक स्वभाव विषैं लीन हैं। परम अतेंद्री अनुपम बाधा रहित निराकुलित सुरसकूं निरंतर अखंड पीवै हैं। तामै अंतर नाहीं पड़े है। बहुरि कैसे हैं सिद्ध भगवान असंख्यात प्रदेश चैतन्य धातुके पिंड निवड़ घनरूप धरे हैं अरु अमूर्तीक चर्म शरीर हैं किंचित् ऊन हैं। सर्वज्ञ देवकों प्रत्यक्ष विद्यमान न्यारे न्यारे दीसै हैं बहुरि कैसे हैं सिद्ध भगवान अपना ज्ञायक स्वभावतैं प्रगट किया है। अरु समय २ षट् प्रकार हानि वृद्धि रूप अनंत अगुरु लघु गुणरूप परनवै हैं। अनंतानंत आत्मीक सुखकों आचरैं हैं। वा आस्वादैं हैं। अरु तृप्ति नाहीं होय हैं वा अत्यंत

तृप्त होय है। अब कुछ भी चाह रही नाहीं कृत्य कृत्य हुआ कारज करता था सो कर चुका। बहुरि कैसे हैं परमात्मा देव ज्ञानामृत कर भरे है स्वभाव जिनका अरु स्वसंवेदन करि उछलैं हैं। आनंदरसकी धारा जाविषैं उछलकर अपने ही स्वभाव विषैं गड़फ होय है अथवा शक्करकी डली जल विषैं गल जाय। तैसे स्वभाव विषैं उपयोग गल गया है। वाहरें निकसनेको असमर्थ हैं। अरु निज परिनति (अपने स्वभाव) विषैं रमै हैं। एक समय विषैं उपजै हैं अरु विनसैं हैं अरु ध्रुव रहैं हैं। पर **परनतिसे भिन्न अपने ज्ञान स्वभाव विषैं** प्रवेश किया है। अरु ज्ञान परिनति विषैं प्रवेश किया है। अर एकमेक होय अभिन्न परिणवै है। ज्ञानमें अरु परिनतिमें दो जायगा रहै नाहीं। ऐसा अभूत पूर्व कौतूहल सिद्ध स्वभाव विषैं होय है। बहुरि कैसे हैं सिद्ध अत्यंत गंभीर हैं अरु उदार है अर उत्कृष्ट है स्वभाव जाका। बहुरि कैसे हैं सिद्ध निराकुलित अनुपम बाधा रहित स्वरस कर पूर्ण भरया है वा ज्ञानानंद करि अहलाद है वा सुख स्वभाव विषैं मगन हैं। बहुरि कैसे हैं सिद्ध अखंड हैं, अजर हैं, अमर हैं, अविनाशी हैं। निर्मल हैं, अरु चेतना स्वरूप हैं, सुद्ध ज्ञानमूर्त हैं। ज्ञायक हैं, वीतराग हैं, सर्वज्ञ हैं, त्रिकाल सम्बन्धी चराचर पदार्थ द्रव्य गुन पर्याय संयुक्त ताकों एक समय विषैं युगपत जानै हैं। अरु सहजानन्द हैं, सर्व कल्यानके पुंज हैं, त्रैलोक्य करि पूज्य हैं, सेवत सर्व विघन विलय जाय हैं, श्री तीर्थंकर देव भी तिनकौ नमस्कार करैं हैं, सो मैं भी बारम्बार हस्त जुगल मस्तककों लगाय नमस्कार करूं हूं सो क्या वास्ते नमस्कार करूं हूं वाही

के गुनकी प्राप्तिके अर्थ। बहुरि कैसे हैं सिद्ध भगवान देवाधिदेव हैं। सो देव संज्ञा सिद्ध भगवान विषै ही शोभै है। अरु चार परमेष्ठिनकी गुरु संज्ञा है। बहुरि कैसे हैं सिद्ध परमेष्ठी सर्व तत्वकों प्रकाश ज्ञेयरूप नाहीं परणमैं हैं अपना स्वभावरूप हीं रहै हैं। अरु ज्ञेयको जानैं ही हैं सो कैसे जाने हैं। जो ए समस्त ज्ञेय पदार्थ मानूं शुद्ध ज्ञानमें डूब गया है। कि मानूं प्रतिबिंबित हुवा है कै मानूं ज्ञानमें उकीर काड्यौ हैं। बहुरि कैसे हैं सिद्ध महाराज शांतिकरस अर असंख्यात प्रदेश भरे हैं। अरु ज्ञानरस करि अहलादित है शुद्धामृत सोई भया परम रस ताकौ ज्ञानांजलि कर पीवै हैं बहुरि कैसे हैं सिद्ध जैसे चन्द्रमाका विमान विषैं अमृत श्रवै है। अरु औराकूं आहलादि आनंद उपजावै है। अरु आतापकूं दूर करै त्यौं ही श्री सिद्ध महाराज आप तौ ज्ञानामृत पीवै हैं वा आजरैं हैं अर औराकूं आहलादि आनंद उपजावै है। ताकौ नाम स्तुति वा ध्यान करते जो भव्य जीव ताका आताप विलै जाय है। परनाम शांत होय हैं। अर आपा परकी सिद्धि होय है अरु ज्ञानामृतनै पीवै हैं। अरु निज स्वरूपकी प्राप्त होवे है ऐसे सिद्ध भगवानकौ फिर भी नमस्कार होहु। ऐसे सिद्ध भगवान जैवन्ते प्रवर्तौ अरु संसार समुद्र माहींसूं काढ़ौ अरु संसार समुद्र विषैं पड़नैतैं राखौ म्हारा अष्ट कर्मकौ नाश करौ अरु मोनै आप सरीखौ करौ। बहुरि कैसे हैं सिद्ध भगवान जाकै जन्म मरन नाहीं जाकै शरीर नाहीं है, जाकै विनास नाहीं है, संसार विषैं गमन नाहीं है, जाकै असंख्यात प्रदेश ज्ञानका आधार है। बहुरि कैसे हैं सिद्ध भगवान अनंत गुनकी खान हैं। अनंतगुन करि पूर्ण

भरचा है। तातैं अवगुन आवनै जांगां नाहीं। ऐसे सिद्ध परमेष्ठीकी महिमा वर्णन कर स्तुति करि। आगै सरस्वती कहिऐ जिनधानी-ताकी महिमा स्तुति करिये हैं। सो हे भव्य! तूं सुन सो कैसी है जिनवानी जिनेन्द्रका हृदय सोई भया द्रह तहां थकी उत्पन्न भई है। वहां थकी आगै चली सो चल करि जिनेन्द्र मुखारविंदतैं निकसी, सो निकसकरि गनधर देवांका कान विषैं जाय पड़ी। अरु पडिकरि वा थकी आगै चलि गणधर देवांका मुखारबिंदतैं निकसी। निकसिकरि आगाने चाल सुरत सिन्धुमें जाय प्राप्त भई। भावार्थ—या जिनवानी गंगा नदीकी उपमानै धरचा है। वहुर कैसी है जिनैन्द्र देवकी वानी स्याद्वाद लक्षण करि अंकित है वा दया अमृत करि भरी है। अर चन्द्रमा समान उज्वल है वा निर्मल है, जैसै जैसे चन्द्रमाकी चांदनी चन्द्रवंसी कमलानै प्रफुल्लित करै है और सब जीवोंके आतापनै हरै है। तैसे ही जिनवानी भव्य जीव सोई भया कमल त्यानै प्रफुल्लित करै है। वा आनंद उपजावै है, अरु भव आतापमै दूर करै है। बहुरि कैसी है सरस्वती जगत्की माता है सर्व जीवानै हितकारी है। परम पवित्र है। पुन कुवादी रूप हस्ती ताका विदारवाणै वा परिहार करवानै वादित्त रिद्धिका धारी महा मुनि सोई भया शार्दूल सिंह ताकी माता है। बहुरि कैसी है जिन प्रणीत बानी अज्ञान अंधकार विध्वंश करवानै जिनेन्द्र देव सूर्य ताकी किरन ही है। या ज्ञानामृतकी धार बरषावनेकौ मेघमाला है। इत्यादि अनेक महिमानै धरचा है। ऐसी जिनवानी ताकै अर्थ म्हारा नमस्कार होहु। ईहां सरूपानुभवनका विचार मैंनै किया है सो इस कार्यकी

सिद्धत्व ही है। ऐसी जिनवानीकी स्तुति वा महिमा बरनन करि। आगे निरग्रन्थ गुरू ताकी महिमा स्तुति करै हैं। सो हे भव्य! तूं सावधान होयके नीके सुन। कैसे हैं निरग्रन्थ गुरु दयालु है चित्त जाका अरु वीतराग है स्वभाव जाका अर प्रभुत्व शक्ति कर आभूषित हैं। अर हेय ज्ञेय उपादेय ऐसा विचार करि संयुक्त हैं। अरु निर्विकार महिमानै प्राप्ति भये हैं। जैसे राजपुत्र बालक नगन निर्विकार शोभै हैं। अरु सर्व मनुष्य वा स्त्रीकूं प्रिय लागै है। मनुष्य वा स्त्री वाका रूपकूं देख्या चाहे है। वा स्त्री वाका आलिंगन करै है। परन्तु स्त्रीका परनाम निर्विकार हो रहै है सरागतादिकको नहीं प्राप्त होय है। तैसे ही जिन लिङ्गका धारक महा मुनि वालवत निर्विकार शोभै है। सर्व जनको प्रिय लागै है, सर्व स्त्री वा पुरुष मुन्याका रूपनै देख देख तृप्त नाहीं होय है अथवा वह मुनि निर्ग्रन्थ नाहीं हुवा है। अपना निर्विकारादि गुननै ही प्रगट किया है। बहुरि कैसे हैं शुद्धोपयोगी मुनि ध्यानारूढ़ हैं। अरु आत्मा स्वभाव विषैं स्थिति हैं। ध्यान बिना क्षणमात्र गमावै नाहीं, कैसे स्थिति है नासाग्र दृष्टि धर अपनै स्वरूपनै देखै हैं, जैसे गाय बच्छानै देख देख तृप्ति नाहीं होय है। निरंतर गायके हृदय विषैं बच्छा वसै है तैसे ही शुद्धोपयोगी मुनि अपना स्वरूपनै छिनमात्र भी विसरै नाहीं है। गौवच्छावत् निज स्वभावसौ वात्सल्य किए हैं। अथवा अनादि कालका अपना स्वरूप गुमिगया है ताकों तेरैं हैं। अथवा ध्यानअगनि कर कर्म ईंधन कूं आभ्यंतर गुप्त होमै हैं। अथवा नगरादिक नै छोड़ वनके विषै जाय नासाग्र दृष्टि धर

ज्ञान सरोवर विषै पैठ सुधा अमृतनै पीवै है। वा सुधा अमृत विषै केलि करै है वा ज्ञान समुद्रमें डूब गया है अथवा संसारका भय थकी डरपि आभ्यंतर विषैं अमूर्तीक पुरुषाकार ज्ञानमय मूरत ऐसा चैतन्य देवके शरणकूं प्राप्त हुवा है या विचारै है भाई म्हानै तो एक चैतन्य धातुमय पुरुष ज्ञायक महिमानै धरचा ऐसा परम देव सोही शरण है। अन्य शरण नाहीं ऐसा म्हाकै निःसन्देह अवगाढ़ है। बहुरि सुधामृत करि चैतन्य देवका कर्म कलंकनै धोय लेपन कहिये प्रक्षालण करिऐ है पाछै मगन होय ताकौ सन्मुख ज्ञान धारा-कौ क्षेपै है। पाछै निज स्वभाव सोही भया चन्दन ताकी अर्चा कहिये ताकौ पूजै हैं। अरु अनंत गुण सोई भया अक्षत ताकौ तिन विषैं क्षेपै हैं। पाछै सुमन कहिये भला मन सोई भया आठ पांखुड़ी संयुक्त पदम--पुष्प ताकौ वा विषै बहुड़ै हैं। अरु ध्यान सो ही भया नैवेद्य ता विषै सन्मुष करै है अरु ज्ञान सोही भया दीप-ताकों ताविषैं प्रकाशित करै हैं। मानौं ज्ञान दीपकर चैतन्य देवका स्वरूप अवलोकन करै है। पाछै ध्यानरूपी अगनि विषै कर्म सो ही भया धूप ताकौ उदार मन करि शीघ्रपने आछै २ क्षेपे हैं, पाछै निजानंद सो ही भया फल ताकू भलीभांत ताविषै प्राप्त करै हैं ऐसे अष्ट द्रव्य करि पूजन करै है। मोक्ष सुखकी प्राप्तिके अर्थ। बहुरि कैसे हैं शुद्धोपयोगी मुनि आप तौ शुद्ध स्वरूप विषै लग गया है। तहां मारगमें कोई भोला जनावर ढूंठ जान वाके शरीर सों खाज खुजावै है। तोहू मुन्याका उपयोग ध्यानसौ चलै नाहीं है। ऐसा निज स्वभावसौ रत हुवा है। बहुरि हस्ती, सिंघ, शूकर, व्याघ्र, मृग, गाय इत्यादि वैरभाव छोड़ सन्मुख खड़ा

होय नमस्कार करै है। अरु अपना हितके अर्थ मुन्याके उपदेश नै चाहै है। बहुरि ज्ञानामृतका आचरन करि नेत्रविषै अश्रुपात चालैसों अंजुली विषै पड़ै है ताको चिड़ी कबूतर आदि भोला-पक्षी जल जान रुचिसो पीवे है। सो ए अश्रुपात नाहीं चाले हैं यह तो आत्मीक रस ही श्रवै है। सो आत्मीकरस समाया नहींहै तातै बाह्य निकस्या है अथवा मानौ कर्मरूपी बैटीकौ ज्ञानरूपी षड्ग करि संघार किया है। तातै रुधिर उछलिकर बाह्य निकसे है। बहुर कैसे हैं शुद्धोपयोगी मुनि अपना ज्ञान रस करि क्षक रह्या है। तातैं बाह्य निकसवानै असमर्थ है। कदाचित् पूर्वकी वासना कर निकसै है तौ बानै जगत् इन्द्र जालवत् भासै है। फेर तत्क्षण ही स्वरूप विषैं ही लग जाय है। फेरि स्वरूपका लागवा करि आनंद उपजै है। ताकर शरीरकी ऐसी दशा होय है। अरु गदगद शब्द होय है। अरु कहीं तौ जगतके जीवानै उदासीन मुद्रा प्रति भास है। अरु कहे मानूं मुन्यानिधि पाई ऐसी हंस मुखमुद्रा प्रतिभासै है। ये दोऊ दशा मुनियाकी अत्यन्त शोभै है। बहुर मुनि तौ ध्यान विषै मरक (लीन) हुवा सौम्य दृष्टिनै धरचा है। अर कहां नगरादिकसूं राजादिक बंधवानै आवै है सो अवै वे मुनि कहां तिष्ठै है। कै तो मसान भूमिका विषै कै निरंजन पुराना वन विषैं अरु कै पर्वतादिककी कंदरा कहिये गुफा विषैं अरु कै पर्वतका सिखर विषैं अरु कै नदीके तीर विषैं अथवा नगर बाह्य चैत्यालय विषैं इत्यादि रमनीक मनके लगवाने कारन जो होय ता अरु उदासीनताके कारन ऐसा स्थान विषै तिष्ठै हैं जैसै कोई अपनी निधिनै छिपावता फिरै अर एकान्त जायगाका

अनुभव करै तैसे ही महामुनि अपना ज्ञान ध्यान निधिकौ छिपावता फिरै है अर एकान्त हीमें वाका अनुभव किया चाहै है। अरु ऐसा विचारै है कि म्हाकी ज्ञान ध्यान निधि जाती न रहै अरु म्हाका ज्ञान भोगमें अंतर न परै, तिहि वास्तै महा मुनि कठिन कठिन स्थानक विषै वसै हैं। जेठे मनुष्यका संचार नहीं तेठे वसे हैं अरु मुनिने पर्वत गुफा नदी मसान बन ऐसा लागे है मानौ ध्यान ध्यान ही पुकारै है। कहा कहि पुकारै है कहै आवो आवो यहां ध्यान करौ ध्यान करौ निजानंद स्वरूपनै बिलासौ बिलासौ। थाकौ उपयोग स्वरूप विषै बहुत लागसी तीसौं और मत विचारौ ऐसे कहै है। बहुर शुद्धोपयोगी मुनि घनौ पवन चालै तेठै, अर घना घाम होई तेठै वा घना मुनुष्यांका संचार होई तेठै जोरावरीतें नहीं वसै है। क्यों नाहीं वसै है मुन्याका अभिप्राय एक ध्यानाध्यन करि वांकौ ही ऐ। जेठें ध्यानाध्यन घनौ वधै तेठै ही वसै। कोई या जानैगा कि मुनि सर्व प्रकार ऐसा कठिन कठिन स्थानक विषैं ही बसै अर स्वतः चाहि चाहि परीषहनकौ सहै अर एता दुद्धर तपश्चरन करै है। अर सास्वता ध्यानमई ही रहैं सो यूंतौ नाहीं। कारण कि मुन्याकै बाह्य क्रियासूं तौ प्रजोजन है नाहीं, अर अठाईस मूल गुन ग्रहन किया है तानै सिला ऊपर वा पर्वतके सिखिर विषैं ध्यान धरैं वा चौमासेमें वृक्ष्यांके तलै ध्यानकौ धरैं ही तौ अपनै परनामाकी बिशुद्धताकै अनुसार धरै है।

अत्यंत विरक्त होय तौ ऐसी जागै ध्यान धरै। नाहीं तौ और ठौर मन लागै जेठै ध्याण धरै अर साम्हा आया उपसर्गकौ

छोड़ि नाहीं जाय है सो मुन्याकी सिंघवत् वृत्ति है और मुन्याका परिनाम ध्यान विषै स्थिति होय है। तब ध्यानको छोड़ और कार्यको नाहीं विचारै है। अरु ध्यानसूं परनाम उतरै है तब शास्त्राभ्यास करै है। वा औराकूं करावै है। वा अपूर्व जिनवानीके अनुसार ग्रंथ जोड़ै है। अरु शास्त्राभ्यास करता करता परनाम लग जाई। तौ शास्त्राभ्यास छोड़ि ध्यान विषैं लाग जाय है। सो शास्त्राभ्यास बीच ध्यानका फल बहुत है। तातै ओछा कार्यको छोड़ि ऊंचा कार्यकूं लागवो उचित ही है। सो ध्यान विषैं उपयोगकी थिरता बहुत रहै है। अर शास्त्राभ्यास विषैं उपयोगकी थिरता बहुत रहै है। तीसौ मुनि महाराज ध्यान भी धरै हैं। अर शास्त्र भी वांचै है। अर आप गुरन पै पढ़ै है वा चरचा करै हैं। मूल ग्रन्थाके जनुसार अपूर्व ग्रन्थ जोड़ै हैं। वा नगरसूं नगरान्तर देशसूं देशान्तर विहार करै हैं। अरु भोजनके अर्थ नगरादिक विषै जाय हैं। तेठै पडगाह्या ऊंचा क्षत्री, वैश्य, ब्राह्मन कुल विषै नवधा भक्ति संयुक्त छियालीस दोष वत्तीस अंतराय टाल खड़ा खड़ा एकवार कर पात्रमें आहार लेय हैं इत्यादि शुभ कार्य विषै प्रवर्त्तै है। और मुनि उत्सर्गनै छोड़े तौ परनामोंकी निर्मलताके अर्थ अपवादमार्गनै आदरै है। अरु अपवादमार्गनै छोड़ उत्सर्गनै आदरै है। सो उत्सर्ग तौ कठिन है अर अपवाद मार्ग सुगम है। मुन्याकै ऐसा हठ नाहीं की म्हानै कठन हीं आचरन आचरना वा सुगम ही आचरनका आचरन करना। भावार्थ—मुन्याकै तौ परनामका तौल है वाह्य क्रिया ऊंपर प्रयोजन

नहीं जा प्रवर्ति विषै परनामाकी शुद्धता बधै अर ज्ञानका क्षयोपशम बधै सोई आचरन आचरै। ज्ञान वैराग्य आत्माका निज लक्षन है ताहीकौ चाहै है। और अवे मुनिराज कैसै ध्यान विषै स्थिति है। अरु कैसे विहार करै है अर कैसे राजादिक आय बंदै हैं सोई कहिए है। मुनि तौ वन विषै वा मसान विषै वा पर्वतकी गुफा विषै वा पर्वतकी सिखिर विषै वा सिला विषै ध्यान दिया है। अर नगरादिक सौ राजा विद्याधर व देव बंदवाणै आवै है। अर मुन्याकी ध्यान अवस्था देषि दूर थकी नमस्कार करि उहा ही खड़ा रहै है। अर कैई पुरुषाकै यह अभिलाषा वर्तै है। कदि (कब) मुन्याका ध्यान खुलै अर कदि मैं निकट जाई प्रश्न करौं। अर गुरांका उपदेशनै सुनौ अर प्रश्नका उत्तर जानों अर अतीत अनागतके पर्यायोंकूं जानों। इत्यादि अनेक प्रकारका स्वरूप ताकौ गुरांकी मुखथकी जान्या जाय क्षै ऐसै कैई पुरुष नमस्कार करि करि उठजाई है। अर कैई ऐसा विचारै है सो म्हैं मुन्याका उपदेश सुन्या विना घर जाई कांई करा। म्हैं तौ मुन्याका उपदेश विना अतृप्त क्षा। अरु हाकै नानातरहका संदेह अै। अर नाना तरैका प्रश्न छै। सो या दयालु गुरां विना और कौन निवारन करै। तीसूं हे भाई म्हैनौ जेतै मुन्याका ध्यान खुलैते तै ऊभाईक्षा। अर मुन क्षै सो परम दयाल क्षै मुन अपना हेत नै छोड़ि अन्य जीवानै उपदेश दे हैं। तीस्यूं मुन्यानै अपना आगमन जनावो मति, अपना आगमन करि कदाच ध्यान सौ चलसी तौ अपना अंपराध लागि तीसूं गोप्य ही रहै है। अर कैई परस्पर ऐसे कहैं देषौ भाई मुन्याकी कांई दशा है। काष्ठ पाषाणका

स्थंभवत अचल है। अर नासाग्र दृष्ट धरचा है। अत्यंत संसारसूं उदासीन है। अपना स्वरूपसूं अत्यंत लीन है ईहां आत्मीक सुखके वास्तै राज लक्ष्मीनै वो वोदा तृणकी नाई क्षोड़ि है। सो अपनी याकै काई गिनती छै। अर कैई कहता हुवा रे भाई आपनी गिनती तौ नाहीं सो सत्य परंतु यह परम दयाल है महा उपकारी है, तारन तरन समर्थ है। तासूं ध्यान खुलै अपनौ भी कार्य सिद्ध करसी। बहुरि कैई ऐसा कहता हुवा देखौ माई मुन्याकी क्रान्ति अर देखौ भाई मुन्याका अतिशय अर मुन्याकौ साहसूं क्रांति कर तौ दशौ दिशा उद्योत कीनी है अरु अतिशयका प्रभाव करि मारगकै सिंघ हस्तीसूं व्याघ्र, रीछ, चीता, मृग इत्यादिक जनावर वैरभाव छोड़ि मुन्यांनै नमस्कार करि निकट बैठा है। अरु मुन्याकौ साहस ऐसा है सो ऐसा क्रूर जनावर ताकी भय थकी निर्भै हुवा है उद्यान विषै तिष्ठै है।

अर ध्यानसूं क्षिन मात्र भी नाहीं चलै है। अर क्रूर जनावरनै अपूरामोह लिया है। सो यह बात न्याय ही है जैसा निमित्त मिलै तैसा ही कार्य उपजै। सो मुन्याकी शांतिता देख क्रूर जनावर भी शांतिताकुं प्राप्त हुवा है। रे भाई या मुन्याका साहसपनौ अद्भुत है। कांई जाने ध्यान खुलै कै ना भी खुलै। तीसूं ऐहाही सूं नमस्कार करि घरां चालौ फेर आवलौ। और कोई ऐसै कहता हुवा रे भाई अवै कोई उतावलौ होहु क्षो श्री गुरूकी वानी सोई हुवौ अमृत तीका पिया विना घर जावा मै कांई सिद्ध है। थानै घर आक्षौ लागै है म्हांनै तो लागै नाहीं म्हानै तौ मुन्याका दशन उत्कृष्ट प्रिय लागै है। अर मुन्याका ध्यान अब खुलसी।

घनी वार हुई है तीमूं कोई प्रकारकौ विकल्प मत करौ। और कोई ऐसै कहता हुवा रे भाई तैं या आछी कही याकै अत्यंत अनुराग छै। श्रावक धन्य छै ऐसै परस्पर बतलावता हुवा। अर मन जै विचारता हुवा तैसै ही मुनिका ध्यान खुल्या। अर बाह्य उपजोग कारि सिख्य जनादिने देखवा लागा तब सिख्य कहता हुवा। रे भाई सुन परम दयाल आपाने दया करि सन्मुख अवलोकन कैर है। मानूं आपनै वुलावै ही है हीमूं अवैं सावधान होइ अर सितावी चालौ चालिकर अपना कारज सिद्ध करौ। सो वे सिख्य मुन्याके निकट जाता हुवा अर श्री गुराकी तीन प्रदक्षिना देता हुवा अर हस्त जुगल मस्तक कै लगाई नमस्कार करता हुवा। अर मुन्याका चरन कमल विषै मस्तक धरता हुआ। अर चरननकी रज मस्तककै लगावता हुवा अर अपनौ धन्यपनौ मानता हुवा। अर न घना दूर न घना नजीक ऐसे विनय संयुक्त खड़ा हुआ अरु हाथ जोर स्तुति करता भया, काई स्तुति करता हुआ हे प्रभू, हे दयाल, हे करुनानिधि, हे परम उपगारी, संसार समुद्रके तारक, भोगनसूं परान्मुख, अरु संसारसूं परान्मुख, अर संसार सूं उदासीन, अर शरीरसूं निःस्नेह अर स्वपर कार्य विषै लीन, ऐसै ज्ञानामृत करि लिप्त थैं जैवंता प्रवर्तौ। अर मो ऊपर प्रसन्न हो, प्रसन्न हो, बहुरि हे भगवान् थां विना और म्हा कौ रक्षक नाहीं थै अवै म्हांनै संसारमाहि सूं काढ़ौ अर संसार विषै पड़ता जीवानै थैं ही आधार छै। अर थैं ही सरन छौ। तीमूं जीवातमें म्हाकौ कल्याण होइ सोई करौ अर

म्हाकै आपकी आज्ञा प्रमान है। म्है निर बुद्धी क्षा अर विवेक रहित क्षा। तिसूं विनय अविनयमैं समझा नाहीं क्षा। एक आपनै हेतुनै ही चाहूं क्षा। जैसे बालक मातानै लाड़ करि चाहैं ज्यौं बोलै। अर लडूवा आदि वस्तुनै मागै सो माता पिता बालक जान वासूं प्रीति ही करै। अर खावानै मिष्ठानादिक चोखी वस्तु काढ़ ही दे। जैसे ही प्रभु मै बालक क्षो आय माता पिता क्षो। बालक जान म्हां ऊपर क्षिमा करौ। अर म्हाका प्रश्नका उत्तर करौ अर सन्देहका निवारन करौ। त्यूं म्हाकौ अज्ञान अंधकार विलै जाई। अर तत्त्वका स्वरूप प्रतिभासै। आपा परकी पिछान होई। सो उपदेश म्हांनै द्यो। ऐसे सिख्य जन खड़ा खड़ा वचनालाप करता हुवा पाछै चुपका होय रह्या पाछै मुनि महाराज सिख्य जनाका अभिप्रायके अनुसार मिष्ट मधुर आत्म हितकारी कोमल ऐसा अमृतमई वचनकी पंकितता कर मेघ कैसी नाई सिरव्य जनानै पोषिता हुवा अर कैसे वचन उच्चारता हुवा हे राजन! हे पुत्र! हे भव्य! हे वक्ष! तैं निकट भव्य क्षौ। अर अवै थाकै संसार थोरौ क्षै। तीसूं थाकै यह धर्म रुचि उपजी क्षै। अब थै म्हाका वचन अंगीकार करौ सो मै थानै जिनवानीके अनुसार कहौं क्षा सो चित है सुनो। यौ संसार महा भयानक क्षै। धर्म विना यौ संसारकौ नाश होइ नाहीं। तीसूं एक धर्मनै सेवौ पाछै ऐसा मुन्याकौ उपदेश पाय जथा जोग्य जिन धर्म गृहन करता हुवा। अर केई प्रश्नका उत्तर सुनता हुवा केई जथा

जोग्य आसढ़ीकौ गृहण करता हुवा अरु कई प्रश्न करता हुवा। केई अपना अपना संदेहका निवारन करता हुवा ऐसे नाना प्रकारके पुन्य उपार्जे ज्ञानकों बधाई मुन्यानै फेर नमस्कार करि मुन्याका गुनानै सुमरता सुमरता आपनै ठिकाना जाता हुवा।

ऐठा आगै मुन्याका विहार स्वरूप कहिए है जैसे निरबंध स्वेच्छाचारी वनविषैं हस्ती गमन करै है। तैसे ही मुनि महराज गमन करै है सो हस्ती भी धीरे धीरे सूंडिकी चालन करिता अरु सूंडनै भूमसूं सपर्स करावता थका अरु सूंड़नै ऐठी उठी फेलावता थका अरु धरतीनै सूंड़सुं सूंघता थका निशंक निरमय गमन करै है। त्योंही मुनि महाराज धीरै धीरै . ज्ञानदृष्टि करि भूमिकूं सोधता निरभय निशंक स्व इच्छाचारी विहार कर्म्म करै है। मुन्याकै भी नेत्रकै द्वारै ज्ञानदृष्टि धरती पर्यंत फैली है। सो याके यही सूंड है तीसूं हाथीकी उपमा संभवै है अरु गमन करता जीवांकूं विराध्या नांही चाहै है। अथवा मुनि गमन नांही करै है भूमी निर्ख हेरता जाय है। अरु गमन करता करता ही स्वरूपमें लग जाय है। तब खड़ा रहि जाइ है। फेर उपयोग **तला** उतरै है तब फेर गमन करै है पाछै एकांत तीष्ठ फेर आत्मीक ध्यान करै है। अरु आत्मीक रस पीवै है जैसे कोई पुरुष क्षुधा करि पीड़ित त्रषावान ग्रीष्म समय शीतल जल करि **गल्या मिश्री काढेला** अत्यंत रुचिसूं गड़क गड़क पीवै है। अरु अत्यंत तृप्ति होई है। तैसे शुद्धोपयोगी महामुन स्वरूपाचरन करि अत्यंत तृप्ति है वार वार वेई रसनै चाहै हैं वाकूं छोड़ि कोई काल पूर्व ली वासना करि शुभोपयोग विषैं लागैं हैं। तब या जानै है ग्हा ऊपर आफत

आई। यह हलाहल विष सारसी आकुलता म्हासूं कैसी भोगी जाई। अबार म्हाकौ आनंद रस कढ़ि गयौ। फेर भी म्हाकै ज्ञाननंद रस की प्राप्ति होती कै नांही। हाय, हाय अबै म्है कांई करौ यौ म्हाकौ स्वभाव नाहीं छै, म्हाकौ स्वभाव तौ एक निराकुलित बाधा-रहित अतेन्द्री अनोपम सुरस पीवाकौ है। सोई म्हांनै प्राप्ति होई कैसै प्राप्त होइ। जैसे समुद्र विषै मगन हुवा मच्छा बाह्य निक-स्या न चाहै। अरु बाह्य निकसवानै असमर्थ होय। त्योंही मैं ज्ञान समुद्र विषैं डूब फेर नाहीं निकस्या चाहूं हूं। एक ज्ञानरस हीकौं पीवौ करौं आत्मीकरस विना और काहूंमें रस नाहीं सर्व जगकी सामग्री चेतन रस विना जड़त्व स्वभाव नै घट्या फीकी, जैसै लून बिना अलूनी रोटी फीकी, तीसूं ऐसौ ज्ञानी पुरुष कौन है सो ज्ञानामृतनै छोड़ि उपादीक आकुलता सहित दुख आचरै, कदाचन आचरै। ऐसे शुद्धोपयोगी महामुन ज्ञानरसके लोभी अरु आत्मीक रसके स्वादी निजस्वभावतै छूटै हैं तव ऐसै झूरैं हैं। वहुरि आगे और भी कहिए है मुनि ध्यान ही धरै हैं सो मानूं केवलीकी वा प्रतिमाजीकी होड़ ही करै हैं। कैसे होड़ करै हैं भगवानजी थांके प्रसादकरि म्है भी निजस्वरूपनै पाया है। सो अबै म्है निजस्वरूप कौ ही ध्यान करता। थाकौ ध्यान नहीं करा थांका ध्यान बीच म्हांका निजस्वरूपकौ ध्यान करता आनंद विशेष होय छै। म्हांकै अनुभव करि प्रतीति है। अरु आगममें आप भी ऐसौ ही उपदेश दियौ छै। रे भव्यजीवौ! कुदेवानै पूजौ तातैं अनंत संसारके विषै भ्रमोला अर नारकादिका दुख सहौला अरु म्हांनै पुजौ तातै स्वर्गादिक मंद क्लेशसहेला। अरु निजस्व-

रूपनै धावौला तौ नियमकरि मोक्ष सुखनै पावौला। तीसूं भगवानजी मैं थानै ऐसा उपदेशकरि सर्वज्ञ–वीतराग जान्यां अरजे सर्वज्ञ वीतराग हैं तेही सर्व प्रकार जगत विषै पूज्य हैं ऐसा सर्वज्ञ वीतराग जान भगवानजी म्है थानै नमस्कार करूं छूं। सर्वज्ञ विना तौ सर्व पदार्थोंका स्वरूप जान्या जाई नाहीं अरु वीतराग विना राग द्वेषकौं वसकरि यथार्थ उपदेश दिया जाई नाहीं। कैतौ अपनी सर्व प्रकार निंदाका ही उपदेश है। कै अपनी सर्व प्रकार बड़ाई महंत ताका उपदेश है सो ए लक्षन भलीभांति कुदेवादिक विषै संभवै है। तीसूं भगवानजी म्है भी वीतराग छा। तीसूं म्हाका स्वरूपकी बड़ाई करा छां। सो म्हानै दोष नाहीं। एक राग द्वेष ही का दोष है। सो म्हाकै राग द्वेष आपके प्रसाद करि विलै गया है। बहुरि कैसे हैं शुद्धोपयोगी महा मुनि जाकैं राग अरु द्वेष समान है। अरु जाकैं सत्कार पुरस्कार समान है। अरु जाके रतन अरु कौड़ी समान है। अरु जाकैं सुख दुख समान है। अरु जाकैं उपसर्ग अनउपसर्ग समान है। जाकैं मित्र शत्रु समान है। कैसे समान है सो कहिए है पूर्व तौ तीर्थंकर चक्रवर्त्ति वा बलिभद्र वा कामदेव वा विद्याधर वा बड़ा मंडलेश्वर मुकुट बंधराजा इत्यादि बड़ा महंत पुरुष मोक्ष लक्ष्मीके अर्थ संसार देह भोगसूं विरक्त होई राज्य लक्ष्मीनै चोदा तृणकी नाईं छोड़ि संसार बंधननैं हस्तीकी नाईं तोड़ वनके विषैं जाइ दीक्षा धरैं हैं। निरग्रन्थ दिगम्बर मुद्रा आदरै हैं। पाछैं परनामोंका महात्म करि नाना प्रकारकी रिद्धि फुरै है कसी है रिद्धि काय बलि रिद्धिका बल करिं चाहे जेता छोटा बड़ा शरीर बना ले है। वा सारखी सामर्थता होय है अरु वचन बलि रिद्धि करि द्वादशांग

शास्त्र अंतर मुहूर्तमैं पड़ जाइ है। अरु मन बल रिद्धि कर द्वादशांग शास्त्रका अंतर मुहूर्त्तमैं चिंतवन कर लें हैं। अरु आकाश विषै गमन करै हैं और जलविषैं ऊपर गमन करैं हैं पनजलका जीवकौ विरोधै नाहीं हैं। अरु धरती विषैं डूबि जाई हैं पण पृथ्वी कायकी जीवकौ विरोधैं नाहीं हैं। और कही विषावह राया है, अरु शुभ द्रष्टि करि देखै तौ अमृत होई जाय है पन ऐसै मुन महाराज करै नांही। और कहीं अमृत वह राया है। अरु मुनमहाराज करै द्रष्टि कर देखै तौ विष होय जाइ पन ऐसै भी करै नांही। और दया शांति द्रष्टि करि देखै तौ केतईक योजन पर्यंतकाका जीव सुखी होइ जाइ। अरु दुर्भिक्ष आदि ईत भीत दुख मिटि जाइ। सो ऐसी शुभ रिद्धि दयाल बुद्धि करि फुरै है तौ दोष नाहीं। अरु क्रूरि द्रष्टि करि देखै तौ केताइक जोजनके जीव भस्म होइ जाइ। पन ऐसे करै नाहीं, अरु जाका शरीरका गंधोदक व नवों द्वारोंको मल अरु चरनातरली धूल अरु शरीरका सुपर्सा पवन शरीरकूं लगै तब लगता को आदि सर्व प्रकारके रोग नाशकुं प्राप्ति होइ। और मुनि महाराजजी गृहस्थ कै आहार कीया है तीके भोजन विषै नाना प्रकारकी अटूट रसोई होय जाई तिहि दिन सर्व चक्रवर्तिका कटक जीमै तौ भी टूटे नाहीं अरु चार हाथकी रसोईके क्षेत्रमै ऐसी अव गाहन शक्ति होयजाई सो चक्रवर्तिका कटक सर्व समाइ जाई। अरु बैठ कर जुदा जुदा भोजन करै तब भी सकड़ाई होइ नाहीं। अरु जेठै मुन अहार करैं तीके दुवारै पंचाचार्य होई। रत्नवृष्टि, पहुपवृष्टि, गंधोकवृष्टि अरु जय जयकार शब्द, अरु देव दुंदुंभि ये पंचाचार्य जाननै। अरु सम्य-

ग्दृष्टी श्रावक मुन्यानै एकवार भोजन दे तौ कल्पवासी देव ही होय ऐसै शुद्धोपयोगी मुन्यानै एकवार भोजन देवाका फल निपजै। और मुन मति, श्रुति, अवधि, मनःपर्यय ज्ञानका धारी होइ है इत्यादि अनेक प्रकारके गुन संयुक्त होते संतै भी कोई रंक पुरुष आइ महां मुनकूं गाली दे वा उपसर्ग करै तौ वासूं कदाचित् भी क्रोध न करै। परम दयालु बुद्धि करि वाका भला चाहै है और ऐसा विचारै ए भोला जीव है याकौ अपना हित अहित की खबर नाहीं ये जीव या परनामों करि बहुत दुख पावसी। म्हांकौ कुछ विगार है नाहीं परन्तु ये जीव संसार समुद्रमांहीं डूबसी। तीसूं जौ होई तौ याकौ समुझाईए ऐसा विचार करि हितमित बचन दया अमृत करि करता भव्य जीवनकूं आनंदकारी ऐसा वचन प्रकाशै कांई प्रकाशै हे भव्य! हे पुत्र! तूं **आपानै** संसार समुद्रा विषै मति डोबै या परिनामोंका फल तोनै खोटा लागसी अरु तूं निकट भव्य छै। अरु थारा आयु भी सुच्छ रहा है। तीसूं अबै सावधान होई जिनप्रणीत धर्म अंगीकार करि ई धर्म बिना तूं अनादि कालकौ संसार विषैं रुल्यौ अरु नरक निगोद आदि नाना प्रकार दुष सह्या सो तूं भूल गया। ऐसा श्री गुराका दयाल वचन सुन वह पुरुष संसारका भय थकी कंपाईमान होता हुवा अरु शीघ्र ही गुरुके चरनाकूं नमस्कार करता हुवा। अरु अपना किया अपराधनै निंन्दता हुवा अरु हाथ जोड़ खड़ा हुवा अरु ऐसा वचन कहता हुवा। हे प्रभु! हे दया सागर! मो ऊपर क्षिमा करौ, क्षिमा करौ, हाय हाय, अबै हूं कांई करूं। यौ म्हारौ पाप निर्वृत्ति कैसे होई। म्हारै कौन पाप उदय आयौ सो म्हारै या खोटी बुद्धि उपजी। बिना

अपराध म्हा मुन्यानै मैं उपसर्ग कियौ। अरु जाका चरनाकी सेवा इन्द्रादिक देवानै भी दुर्लभ है। अरु मै एकने ऐसी करी ये परम उपगारी त्रैलोकाकरि पूज्य तानै मै कांई जाण उपसर्ग कियौ। हाय हाय, अब म्हारौ कांई होसी। अरु हूंसी गति जासूं। इत्यादि ऐसे वह पुरुष बहुत विलाप करतौ हुवौ अरु हाथ मसलतो हूवो अरु वारंवार मुन्याके चरणनै नमस्कार करतो हूवो जैसे कोई पुरुष दरआव विषै डूबतौ जिहाजनै अवलंबै। तैसे गुरांका चरन-विषै अवलंबतौ हुवौ। अबै तो मानै ऐहीका चरनकौ सरन छै। अन्य शरन नाहीं। जोई अपराध सूं बचौ तौ याहीके चरनाका सेवनि करि बचूं छूं, और उपाई नाहीं। म्हारौ तौ दुख काटवानै ऐही समर्थ है। पाछै ई पुरुषकी धरम बुद्धि देख श्री गुरु फेर बोल्या हे पुत्र! हे वच्छ! तूं मति डरपै। थारै संसार निकट आयौ छै। तीसूं अबैथै धर्म्मामृत रसाईननै पी। अरु जरामरन दुःखका नाश कर। ऐसा अमृतमई वचन करि वे पुरुषनै पोषता हुवा जैसे ग्रीषम समय कर मुरझाई वन-स्पतिकूं मेघ पोषे तैसें पोषता हुवा सोमहंत पुरुषांका यह स्वभाव ही है। अवगुणका ऊपर गुण ही कैटे सो ऐसे गुरू तारवा समर्थ क्यौं नांही होई है। बहुर ये शुद्धोपयोगी वीतराग संसार भोग सामग्री तासूं उदासीन शरीर सूं निष्प्रेह शुद्धोपयोगकी थिरताके अर्थि शरीरनै आहार दे है। सो कैसे दे हैं ताकूं कहिये है मुन्याकै आहार कै पांच अर्थ है। गोचरी कहिये जैसे गउनै रंक वा पुन्यवान कोई घासादि डारै सो चरवा ही सौ प्रयोजन है। अरु कोई पुरुष सौ प्रयोजन नाहीं। त्यों ही मुन्यानै भावै तौ

रंक पड़गाहि अहार द्यौ। भावै राजादिक पड़गाहि अहार द्यौ। सो आहार लेवा सौ तौ प्रयोजन है। रंक वा पुन्यवान पुरुष-सूं प्रयोजन नाहीं। बहुर दूसरा अर्थ भ्रामटी कहिये जैसे भौरा उड़ता फूलकी बासनातै फूलनै विरोधै नाहीं। बहुर तीसरा अर्थ दाहश्रमन कहिये जैसे लाय लगी होई तानै जेती प्रकार बुझाई देना। त्यौंही मुन्याकै उदराग्न सोई भई लाय तीनै जीसौ तीसौ आहार मिलै तिहिंकरि बुझावै है। आछा बुरा स्वादका प्रयोजन नाहीं। बहुरि चौथा अक्ष प्रख्यन कहिये जैसे गाड़ी औंगन बिना चालै नाहीं। त्योंही मुन या जानै यह शरीर अहार दिया बिना शिथिल होसी अरु म्हानै पासूं मोक्षस्थान बिषै पहुंचा जै तौं यासूं काम है। ताहैं याकूं अहार है या कैआसरै संजम आदि गुन ऐकठा करि मोक्षस्थान विषै पहुंचना बहुरि पांचमा गरत पूर्न कहिये जैसे कोई पुरुषकै सांप आदिका खाड़ा खाली होइ गया होई। तीनै वे पुरुष भाटा ईंट माटी काकरि पूर दिया चाहै। त्योंही मुन्याकै निराहारादिक करि खाड़ा कहिये उदर होई तौ जीती भांति अहार करि वाकूं भरहे। ऐसा पांच प्रकारके अभिप्राय जान वीतरागी मुन शरीरकी थिरताके अर्थ अहार लै है। शरीरकी थिरतासूं परिनामकी थिरता होय है। अरु मुन्याकै परनाम सुधर वा कोई निरंतर उपाय रहै है। ती वातमैं रागद्वेष न उपजै तिहि क्रियारूप वर्त्तै। और प्रयोजन नाहीं सो ऐसा शुद्धोपयोगी मुन्यानै गृहस्थ दातारका सात गुण संयुक्त नवधाभक्ति करि आहार दे है। प्रतिग्राहन कहिये प्रथम तौ मुन्यानै पड़गाहा है। पछै ऊचौ स्थान कहिये मुन्यानै ऊंचा स्थान विषै स्थापै। पाछै पादोदक

कहिये मुन्याका पद कमल प्रक्षालन करै सोई भया गंधोदिक सो अपना मस्तक आदि उत्तम अङ्गों कै कर्मका नाश कै अर्थ लगावै अपनैको धन्य मानै वा कृत्य कृत्य मानै। पाछै अर्चन कहिये मुन्याकी पूजा करै। पाछै प्रनाम कहिये मुन्याका चरननै नमस्कार करै। बहुरि मन शुद्ध कहिये मन प्रफुल्छित होय महा हर्ष होय बहुरि वचन शुद्धि कहिये मीठा मीठा वचन बोलै बहुरि काय शुद्धि कहिये विनयवान होइ शरीरका अङ्गोपांगको नम्रीभूत करै।

बहुर ऐषण शुद्धि कहिये दोष रहित शुद्ध अहार देई। ऐसै नवधाभक्तिका स्वरूप जानना। आगै दातारके सात गुन कहिये मुन्याने अहार देई लोकके फलकी वांक्षा न करै क्षमावान होई कपट रहित होई अदेक सखापनो न होइ अरु विषाद करि रहित होई हरष संजुक्त होई अहंकार रहित होई ऐसे सात गुण सहित जानना सोई दातार स्वर्गादिकका सुख भोग परंपरा मोक्ष-स्थान पहुंचै है ऐसै शुद्धोपयोगी मुन तारनतरन है। आचार्य, उपाध्याय, साधु ताके चरनकमलको म्हारा नमस्कार होउ। अरु कल्यानके कर्ता हो। अरु भवसागर विषै पड़तानै राखौ ऐसे मुन्याका स्वरूप वर्नन करा। सो हे भव्य! जौ तूं आपना हित-नै वांक्षै छै। तौ सदैव ऐसा गुर यांका चरनारबिंद सेवो अन्यका सेवन दूरही तैं तजो। इति गुरु स्वरूप वर्णन सम्पूर्ण॥

१—ऐसें आचार्य, उपाध्याय, साधु या तीन प्रकारके गुराका भेला ही बर्नन किया तीनौ ही शुद्धोपयोगी हैं। तातैं समानता है विशेषता नाहीं ऐसे श्री गुराकी स्तुति करि वा नमस्कार करि वा ताके गुन वर्नन करि ईठै आगै ज्ञानानंद पूरित निरभर निज रस श्रावकाचार नाम

शास्त्र जिनवानीके अनुसार मेरी बुद्धि माफिक निरूपन करूंगा। सो कैसा है यह शास्त्र क्षीर समुद्रकी शोभानै धरैं है सो कैसा है समुद्र अत्यंत गम्भीर है अरु निर्मल जल करि पूर्ण भरचा है अरु अनेक तरंगोंके समूह कर व्याप्त है। ताका जलकूं श्री तीर्थंकर देव भी अंगीकार करैं हैं। त्यों ही शास्त्रार्थ करि अत्यंत गम्भीर है। अरु सुरस करि पूर्ण भरचा है सोई जल है। अरु सर्व दोष रहित अत्यंत निर्मल है। अरु ज्ञान लहर करि व्याप्त है। ताकौ भी श्री तीर्थंकर देव सेवें हैं। ऐसै शास्त्रकौ म्हारा नमस्कार होहु क्या वास्तै नमस्कार होय ज्ञानानंदके प्राप्तकै अर्थ, और प्रयोजन नाहीं। आगै करता अपना स्वरूपकौ प्रगट करै है वा अपना अभिप्राय जनावै है। सो कैसा हूं मै ज्ञानजोति कर प्रगट भया हूं तातैं ज्ञान ही नै चाहूं हूं। ज्ञान छै सो म्हारा स्वरूप छै। सोई ज्ञान अनुभव न कर मेरैं ज्ञान ही की प्राप्ति होय मैं तौ एक चैतन स्वरूप करि उत्पन्न भया। ऐसा जो शांतिक रस ताके पीवाकौ उद्यम किया है। ग्रंथ बनावा का अभिप्राय नाहीं, ग्रन्थ तौ बड़ा बड़ा पंडितोंनै धना ही बनाया है मेरी बुद्धि कांई। पुन उस बिषै बुद्धिकी मंदता करि अर्थ विशेष भाषता नहीं। अर्थ विशेष भास्या विना चित्त ऐकाग्र होता नहीं॥ अरु चित्तकी एकाग्रता विना कषाय गलै नहीं। अरु कषाय गल्या विना आत्मीक रस उपजै नहीं॥ आत्मीक रस उपज्या विना निराकुलित सुख ताकौ भोग कैसे होई॥ तातै ग्रन्थका मिस कर चित्त एकाग्र करि वाका उद्यम किया। सो ए कार्य तौ बड़ा है। अरु हम जोग्य नहीं। ऐसा हम भी जाने है। परन्तु अर्थी

दोषान्न पश्यति ॥ अर्थी पुरुष छे ते शुभाशुभ कार्यकुं विचारे नहीं आपना हेत नहीं चाहै है ॥ तातै मैं निज स्वरूप अनुभवन-का अत्यंत लोभी हौं ॥ जातै मेरे ताई और कछू सूझता नांही। मेरेताई एक ज्ञान सूझता है ॥ ज्ञान भोग विना कांई भोग तातै मैं और कार्य छोड़ि ज्ञान हीकुं आराधूं छूं, अरु ज्ञान हीकौ आदर करुं छूं, अरु ज्ञानहीका आचरण करूं छूं अरु ज्ञान हीका शरन रह्या चाहूं छूं बहुरि कैसा हूं मैं शुद्ध परनति कर प्राप्त भया हौं। अरु ज्ञान अनुभूत करि संयुक्त हौं अरु ज्ञायक स्वभावनै धरचा हूं। अरु ज्ञानानंद सहज रस ताका अभिलाषी हौं वा भोगता हूं ऐसा मेरा निज स्वभाव छै ताके अनुभवनका मेरे ताई भय नाहीं अपनी निज लक्ष्मीका भोगता पुरुषनै भय नांही त्यौं ही मोनै स्वभाव विषै गमन करता भय नांही। या बात न्याय ही है। अपना भावका ग्रहन करता कोई दंड देवा समर्थ नांही पर द्रव्यका ग्रहन करता दंड पावै है तातै मैं पर द्रव्यका ग्रहन छोड़ा है तीस्यूं मै निशंक स्वच्छंद हुवा प्रवर्त्तौं हौं मेरे तांई कोई भय नांही जैसे शार्दूल सिंहके ताई कोई जीव जंतू आदि वैरीका भय नांही। त्यों ही मेरै भी कर्मरूप वैरी ताका भय नांही। तीसूं ऐसौ जान अपनै इष्ट-देव ताकूं विनयपूर्वक नमस्कार करि आगे ज्ञानानंद पूरित निर-भर निजरस श्रावकाचार नाम शास्त्र ताका प्रारम्भ करिऐ है। इति श्री स्वरूप अनुभूत लक्ष्मीकरि आभूषित ऐसा मैं जु हौं सम्यक्त ज्ञानी आत्मा सोई भया ज्ञायक परम पुरुष ताकरि चिंतते ज्ञाना-नंद पूरित निरभर निज रस नाम शास्त्र ता विषै बंदना ऐसा जो नामाधिकार ता विषै अनुभवन पूर्वक वर्नन भया।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः।

दोहा—जिनराज देव वन्दौ सदा कहूं श्रावकाचार।
पापारम्भ तव ही मिटै कटै कर्म्म अघद्वार ॥१॥

अर्थः—ऐसे अपने इष्ट देवकूं नमस्कार करि सामान्यपने करि श्रावकाचार कहिये है सो हे भव्य! तूं सुन, श्रावक तीन प्रकार है। एक तौ पाक्षिक, एक नैष्ठिक, एक साधक॥ सो पाक्षिक कै देव गुरु धर्मकी प्रतीत तौ जथार्थ होय। अरु आठ मूल गुणता विषै। अरु सात विकृता जो सप्त व्यसनता विषै अतीचार लागै। अर नैष्ठिकके मूल गुन विषै वा सात विकृता विषै अतीचार लागै नाहीं ताका ग्यारह भेद है ताकौ वर्नन आगै होयगा अर साधक अंत विषै सन्यास मरन करै है। ऐसे ये श्रावक तीनौ देव, गुरु, धर्म्मकी प्रतीत सहित छे। अरु आठ समकितका अङ्ग सहित है निःशांकित, निःकांक्षित, निर्विचिकित्सा, अमूढ़दृष्टि, उपगूहन, स्थिनिकरण, वात्मल्य, प्रभावना। एवं आठ अरु आठ समकितके गुण सहित है ताके नाम कहिये है। करुनावान, क्षमावान सौजनिता आपनिंदा, समता, भक्ति, वीतरागता, धर्म्मानुराग। एवं आठ, अरु पच्चीस दोष ताके नाम कहिये है। जाति १ लाभ २ कुल ३ रूप ४ तप ५ बल ६ विद्या ७ सिरदारी ८ इन आठोंका गर्भ है। आठ मद जानना। शंका १ कांक्षा २ विचिकित्सा ३ मूढ़दृष्टि ४ परदोष भाषन ५ अस्थिरता ६ वात्सल्य रहित ७ प्रभावना रहित ८ ए आठ मूल सम्यक्त्वका आठ अंग त्यासूं उलटा जानना। कुगुरु १ कुदेव २ कुधर्म ३ अरू इन तीनका धारक पाछै वाकी सराहना

करनी ए षट् अनायतन अरु देव गुरु धर्म इन विषै मूढदृष्टि ऐसे पच्चीस दोष २५ । इन करि रहित ऐसे निर्मल दर्शन करि संजुक्त तीन प्रकारके जघन्य मध्यम उत्कृष्ट संजमी जाननै । सो पाक्षिक विषै अरु साधक विषै ग्यारह भेद नाहीं है । नैष्ठिक विषै ही है । सो पाक्षिकको तौ पांच उदम्बर १ पीपर २ वर ३ ऊंबर ४ कठूंबर ५ पाकर इन पांचका फल अरु मद्य मधु माँस सहित ये तीन मकार पाका प्रत्यक्ष तौ त्याग है अरु आठ मूल गुन विषै अतीचार लागै है सो कहिये है । मास विषै तौ चामके संजोगका घृत तेल हींग, जल अरु रात्रीका भोजन, अरु विदल अरु दो घड़ीका छान्या जल अरु वीधा अन्न इत्यादि मर्यादा रहित वस्तु, ता विषै त्रस जीवाकी वा निगोदकी उत्पत्ति है ताका भक्षनका दोष लागै है । अरु प्रत्यक्ष पांच उदम्बर तीन मकार भक्षन नाहीं करै है । अरु सात व्यसन भी नाहीं सेवै है । अरु अनेक प्रकारकी आखड़ी संजम पालै है । अरु धर्मका जाकै विशेष पक्ष है । ऐसा पाक्षिक विशेष जघन्य संयमी जानना । सो ऐ प्रथम प्रतिमाका भी धारक नाहीं है । अरु प्रथम प्रतिमा आदि संयमका धारवा का उद्यमी हुआ है । तातै याका दूजा नाम प्रारध्व है । नैष्ठिकका ग्यारा भेद । दर्शन १ व्रत २ सामायिक ३ प्रोषध ४ सचित्त त्याग ५ रात्रि-मुक्ति वा दिन विषै कुशील त्याग ६ ब्रह्मचर्य ७ आरम्भत्याग ८ परिग्रह त्याग ९ अनुमति त्याग १० उद्दिष्ट त्याग ११ ऐसेई ग्यारह भेद विषै असंजमका हीनपनौ जाननां । तातैं याका दूजा नाम घटमारग है । अरु तीजा साधक ताका दूसरा नाम निपुन है । भावार्थ पाक्षिक तौ संयम विषै उद्यमी हुवा है करवा नहीं लागा

है। अरु साधक सम्पूर्ण कर चुक्या ऐसा प्रयोजन जानना। अबै पाक्षिक वा साधकनै छोड़ि नैष्ठिक तिनका सामान्यपनै वर्णन करिये है। प्रथम दर्शन प्रतिमाकौ धारक सात व्यसन अतीचार सहित छोड़े। अरु आठ मूल गुन अतिचार रहित ग्रहण करै। अर दूसरौ व्रत प्रतिमाको धारक पांच अनुव्रत तीन गुणव्रत चार शिक्षाव्रत. इनइ व्रतोंका गृहण करे। अरु तीसरौ सामायिक व्रतधारक अधौन (सांझ) सवारे व मध्यान विषै सामायिक करै। अरु चौथा प्रोषध व्रतकौ धारक आठै चौदश जे परबी तिन विषै आरम्भ छोड़ि धर्म्मस्थान विषै वसै। अरु पांचमौ सचित्त त्याग व्रतकौ धारक सचित्तकौ त्याग करे। रात्रि भुक्त त्याग व्रत कौ धारक रात्रि भोजन छोड़ै। अरु दिन विषै कशील छोड़ै। अरु सातथौ ब्रह्मचर्य्य वृतकौ धारक रात्रि या दिन विषै मैथुन सेवन तजे अर आठमो आरम्भत्याग व्रतको धारक आरम्भ तजे अरु नवमौ परिग्रहत्याग व्रतकौ धारक परिग्रह तजे। अरु दशमौ अनुमति त्याग वृतको धारक पाप कार्यका उपदेश वा अनुमोदना तजे। अरु ग्यारमो उद्दिष्ट त्यागव्रतकौ धारक उपदेशो भोजन तजै। ऐसा सामान्य लक्षण जाननां ऐठा आगै इनका विशेष वर्नन करिये है। सो दर्शनप्रतिमाकौ धारक आठ मूल गुण पूर्वै कहा सो ग्रहन करै अरु सात व्यसन तजै अरु इनका अतीचार तजै अथवा कोई आचार्य आठ मूलगुण ऐसे कहे हैं पांच उदंबरका एक अरु तीन मकारका तीन सो चार कौ पूर्वै आठ कह्या तेही भया। अरु चार और जानना सोई कहिये है। णमोकारमंत्रका धारण अरु दयाचित्त अरु रात्रि भोजनका

त्याग अरु दोय घड़ी उपरांतकौ अनछान्या जलका त्याग ऐसै आठ मूल गुन जाननां। सात व्यसन है ते जानना १ जूवा २ मांस ३ दारू ४ वेश्या ५ परस्त्री ६ शिकार ७ चोरी एवं सात। ज्यासौ राजा दंड देई अरु लौकिक विषै महानिन्दा पावे ऐसा जानना। अवै मूल गुन वा सात व्यसन ताका अतीचार हिये है प्रथम दारूका अतीचार आठ पहर ऊपरका अथाना अरु चलित रस अरु जो वस्तु उफन कै आई वा वस्तुका भक्षण करै। इत्यादि अरु मांसका अतीचार चामके संगमकौ हींगघृत तैल जल इत्यादि शहदका अतीचार फूलका भक्षन अरु शहदका अंजन औषधि अरथ लैना इत्यादि। अरु पांच उदम्बरका अतीचार। अनजान फरलाका भक्षण करे अरु विना शोध्या फलका भक्षण करे इत्यादि। आठ मूल गुनके अतिचार जानता। बहुर आगे सात व्यसनके अतीचार कहिये है सो प्रथम जुवा अतिचार होडादि अर मास मदिराके पूर्वै कहि आये। परस्त्रीके अतीचार क्वारी लड़क सौ कीडा करवौ। अर अकेली स्त्रीसुं ऐकांत बतलावौ 'इत्यादि' अर वेश्याके अतिचार नृत्यादि वादित्र गांनता विषै आशक्त होय देखै अरु सुने॥ अरु वेश्या विषैं रमे त्यां पुरषासौ गोष्ठी राखै॥ अरु वेष्याके घर विषै जाइ इत्यादि अरू शिकारके अतीचार काष्ठ, पाषाण मृत्तका धातुका चित्रामसे घोड़ा हाथी मनुष्य आदि जीवनके आकार बनाया हुवा ताका घात करना 'इत्यादि' चोरीके अतीचार पराया धनकुं लेना वा जोवरीकरि खोश लेना। थोड़ा मोल देय घना मोलकी वस्तुसे ले लेनी तौलमै घट

देना बड़ लेना धरोहर राख मेलनी झोले मारना इत्यादि ऐसे सात व्यसनके अतीचार जानना। ऐ अतीचार छोड़ै सो दर्शनप्रतिमाका धारी श्रावक जाननां और आगे भी केतीक वात नीतपूर्वक प्रथम प्रतिमाके धारक पालै सो कहिये है। अनारम्भ विषैं जीवका घात न करै। मावार्थ हवेली महल आदिका करावा विषै हिंसा होई छै सो तौ होई छै ही। परंतु विना आरम्भ जीवनै मारै नांही अरु उत्कृष्ट आरम्भ न करै खोटा व्यापार जिहिमैं घनी हिंसा होई घनौ झूठ होई वा जगत विषै निंदहोई। हाड़ चाम आदि अथवा ता विषै घनी त्रष्णा बधै इत्यादि उत्कृष्टका स्वरूप जानना अरु निज स्त्री जिहि तिही प्रकार कर धर्म्म विषैं लगावै। स्त्रीकी धर्म्मबुद्धिसौ धर्म्मसाधनीका साधै है। अरु अपना धर्मका अनुराग होत सूचै है। अरु धर्माचार रहित लोकाचार उलंघै नाहीं। जा विषै लोक निंदा करै ऐसा कार्य कौन करै परंतु जा विषैं अपना धर्म जाई है अरु लोक भला कहै है सो ऐसा नाहीं। कै धर्म छोड़ि लोकका कहा कार्य करै तातै अपनै धर्मकौ राख लोकाचार उलंघै नाही अरु स्त्रीनै पुरुषकी आज्ञा माफिक करवौ उचित है पतिव्रता स्त्रीकी यही रीत है। और यह धर्मात्मा पुरुष है सोषट् आवश्यक हमेशा करि भौजन करै सो कहिये है प्रभात ही तौ देव अरहंतकी पूजा करै पाछै निर्ग्रन्थ गुरुकी सेवा करै। शक्ति अनुसार तप अरु संयम करै शास्त्र श्रवन पढ़न करै पाछै पात्रके तांई वा दुःखित भुखित जीवांके तांई चार प्रकार दान दे। सुपात्रानै तौ अहार औषधि शास्त्र वस्त्रका दान भक्तिपूर्वक देवे अरु दुखिततांकौ आहार औषधि

अभय आदि दान दया करि देवे अरु चार भावना भावता निरंतर तिष्ठै सो सर्व जीवासूं तौ मैत्री भाव राखै। भावार्थ-सर्व जीवानै अपना मित्र जानै। आप सा सुख स्वरूप ऊको भी जानै। तीसूं काइनै विरोधै नांही सर्व जीवांको रक्षपाल ही होय। अरु दूसरी प्रमोद भावनासूं आपसूं अधिक गुनवान पुरुषसूं विनैवान होय प्रवत्तौ। अरु तीसरी कारुण्य भावना दुखित जीवांकौ देख वाकी करुना करै अरु जिस प्रकारसे बाकौ दुख दूर होय ती प्रकार दुख्यनै मैटै। अरु आपनी सामर्थ नहीं होई तौ दयारूप परनाम ही करै। वानै दुखी देख निरर्द रूप कठोर परनाम छै सो यहां कषाय है। अरु कोमल परनामा छै सो निःकषाय छै सो ही धर्म छै अरु चौथी माध्यस्त-मानना सो विपरीत पुरुष तासूं माध्यस्थ रूप है नहीं तौ वेसूं राग करै नहीं वेसूं द्वेष करै। कोई हिंसक पुरुष छै। अथवा सप्त व्यसनी पुरुष छै सो वानै समझै तौ धर्मोपदेश दे करि पाप कार्य छुड़ाई दीजै। नहीं समझै तौ आप माध्यस्थ रूप रहनै। ऐसे चार भावनाका स्वरूप जाननां। अरु और भी केतीक वस्तूका त्याग करै सो कहै है। अरु बीधा अन्न अरु माखन कहिये नैनू। अरु विदल कहिये टुफाड़ा नाजका संजोग सहित उश्न बिना। अथवा दाख चिरौंजी आदि वृक्षका फल दही वा छाछका खाना। अरु चौमासै तीन दिन सियालै (सीत ऋतु) सात दिन उन्हालै (गरमीमें) पांच दिन उपरांत कालके आटाका भक्षण नाहीं करना आठ पहरके उपरांतका दही न खाइ। भावार्थः—आजका जमाया काव खाना जामन दिया पाछै पहर अष्टकी मर्यादा है और

बीधी वस्तूका भक्षण अर दही गुर मिलाइ खानेका वा जलेबी इत्यादिमें त्रस जीव वा निगोद उपजै है तातै याका त्याग करना। अरु नैनूकी दो घड़ीकी मर्यादा है वा कोई आचार्य शास्त्र विषैं चार घड़ीकी मर्यादा भी लिख हैं तातै दोय घड़ी वा चार घड़ी पाछै जीव उपजै है। परन्तु ये भअक्ष हैं तातै तुरतका भी विलोया खाना उचित है नाही। याका खावा विषै मास कैसा दोष होय है या विषै राग भाव होवै है और वैंगन अरु साधारन वनस्पति अरु घोंसका वरा अरु पाला अथ गाडा मृत्तका अरु विष अरु रात्रि भोजनका भक्षन तजै। पांच उदम्बर अरु वैंगण ताका भी भक्षण नहीं करै। याका खाया सूं रोग भी बहुत उपजै है। और चलित रस ताकौ व्यौरौ वासी रसोई मर्यादा उपरांत आटा घी तेल मिठाईका भक्षन तजै अरु आम व मेवा आदि जाका रस चलि गया होई ताका भक्षन नाहीं करै है। और बड़े वेर वा जारियाका वेर हाथ सूं फोड़ा विना अरु नेत्र सौ विना देखे आप ही मुखमें न देय। ये काना बहुत होय है ता विषै लट होइ है। अरु गलित आम विषै भी सूतका तार सरीखा लट होय है। सो विना देख्या चूसै नाही। अरु काना सांठा वा कानी ककडी इत्यादि काना फूल तामै लट उपजै है ताका भक्षन तजै और सियालेमें साग आदि हरित काय ता विषै वादलाका निमित्त करि लटां उपजै हैं ताका भक्षन तजौ अरु कलींदा तरबूज आदि बड़ा फल याका घात विषैं निर्दईपना विशेष उपजै है। मलीन चित्त होय है अरु याकौ हस्त विषै छुरियासूं विदारै तब बड़ा त्रस जीवां कीसी हिंसा किये की सो परनाम विषै प्रतिभासै है। तातै

बड़ा फलका दोष विशेष है। अरु केला ताका भक्षण तजै या खाया राग बहुत उपजै है। अरु फूल जात वा नरम हरत काय जाकी छालि कहिये छोटा जाड़ा होय वा बटके इंठै वा सांटा आदिकी ये लीवा कांकरी आदि ताकी लकीरी अरु निंबू दाझौं आदि ताकी जाली ये गूढ होय याका व्यक्तपना नाहीं भासै ताका भक्षण तजै। भावार्थ ऐसी वनस्पति विषै निगोद हो है। इत्यादि जीव हरित काय विषै निगोद होय वा जा विषै त्रस जीव अरु दुष्ट चित्त अत्यंत होय है। अरु अत्यंत गदला परनामा करि पाप करि लिप्त ऐसा बहुत होय ते वनस्पति सर्व ही तजनी उचित है। और आगै ऐसै व्यापारादि नाही करै है ताका व्यौरा—लोह हाड़ चाम केश हींग सीघड़ाका घृत तेल तिल ताक हलदी साजी लोह रांग फिटकड़ी कसुंभा नील साबणा लाख विष सहद पसारीपनाका सर्व ही व्यापार निषिध है। अर हरित कायका व्योपार ताका अर बीधा अन्न आदि जा विषै त्रस जीवाका घात बहुत होई ऐसा सर्व ही व्यापार तजै। और चंडाल कसाई धोवी लुहार ढेड़ डूम भील कोरी वागरी साढना कूंजरा नीलगर ठग चोर पालीगर याका बनज कहिये वाकों वस्तु मोल वेंचै भी नांही, वाकी वस्तु मोल लैनीका भी त्याग करै, वा हलवाईगरीका किसब तजै। वा धोबी पास धुवाई वा छीपा नीलगर पास रंगाया कपड़ा बैचना ताकूं तजै वा खेती करावै नांही, खांड पिड़ावै नाहीं वा खेतीका करावा वालेनै उधार दै नाहीं वा चूना खैरकी मट्टी आदि घरै करावै नाहीं और भाड़ विषै वस्तु सिकावै नाहीं। वा भड़भूजा वा लुहार ताकूं

द्रव्य उधार दै नाहीं वा कोयलाकी भट्टी करावै नाहीं वा दारुकी भट्टी करावै नाहीं वा सोरा कहिये दारु जाकौ करावे नाहीं वा कोइला वा मदिरा वा सोरा कौ करनेवालौ कौ बनजै नाहीं। बहुर ऊंट घोड़ा भैंसा बलद गधा गाड़ी बहल कुदाड़ी बमूला भाड़े दै नांही वा आप भाड़ौ देय वहावै नाहीं। वा ताकै वहावनेवाले पुरुषकूं उधार द्रव्य दे नाहीं या विषै महत् पाप है। जा कार्य कारि प्रानी दुःखी होई वा विरोधो जाई ऐसा कार्य कौ धरमात्मा पुरुष कैसे करै। जीवहिंसा उपरांत और संसार विषै पाप नाहीं तातै सर्व प्रकार त्यजनौ जोग्य है। अर ताकूं द्रव्य भी उधार दै नाहीं और शास्त्रका व्यापार तजै अरु शास्त्रके व्यापारीकूं उधार भी दै नाहीं इत्यादि खोटे किसब तजै अरु याके सेवा वाले ताकी देवा लैई कौ तजै और पापिनकी वस्तु मोल ले नहीं और विराना डील (शरीर) का पहिरचा वस्त्र मोल लै आप पहिरै नाहीं। अपनै डील (शरीर) का वस्त्र और कुं वैचै नहीं। अरु मंगता आहि भिक्षुक दुखित जोव नाज आदि भिक्षुक वस्तु माग लयाये होय ताकं मोल दै कर भी लैनां नहीं। अरु देव अरहंत गुरू निरग्रन्थ धर्म्म जिन प्रणीत ताके अर्थ द्रव्य चढ़ाया ताकौ निर्माल्य कहिये ताकै अंश-मात्र भी ग्रहण करै नहीं या का फरु नरक निगोद है। इहां प्रश्न जो ऐसा निरमाल्यका दोष कैसे कहा, भगवानकुं चढ़ा द्रव्य ऐसा निंद्य कैसे भया ताका समाधान। रे भाई ये सर्वोत्कृष्ट देव है ताकी पूजा करवे समर्थ इन्द्रादि देव भी नाहीं। अरु ताके अर्थ कोई भक्त पुरुष अनुरागकरि द्रव्य चढ़ाया पाछै अपूठा चहोड़ बाकी जाइगा वाकै द्रव्यकौ विना दिया ग्रहन करै तौ वे पुरुष देव गुरू

धर्मका महा अविनय कीया। बिना दियाका अर्थ ए है जौ अरहंत देव तौ वीतराग हैं तातैं ऐ तौ आप करि कोई नैं दे नाहीं। तातै विना दिया ही कहिये है जैसा राजादिक बड़े पुरुष कोई वस्तु नजर करि पाछै वाका विना दिया ही मांगते है तौ वाके राजा महादंड दै है। ऐसै ही निरमाल्यका दोष जानना। और भगवानके अर्थ चढ़ाया सर्व द्रव्य परम पवित्र है। महा विनय करनै योग्य है। परन्तु लेना महा अजोग्य है। या समान और अजोग्य नाहीं तातै निरमाल्य कौ तजना। वा निरमाल्य वस्तुका लेवा वाला ताकौ उधार दै नाहीं। बहन पुत्री आदि सुवासिनी ताकौ द्रव्य उधार तनक भी गृहन करै नाहीं इत्यादि अन्याई पूर्वक सब ही कार्यकूं धर्मात्मा छोड़ै है, जा कार्य विषें अपजस होय अपना परिणाम संक्लेश रूप रहे वा शोक भयरूप रहे ता कार्यकूं छोड़े। तब धर्मात्मा सहज ही होई ऐसा भावार्थ जानना। ऐसै प्रथम प्रतिमा कौ संयमी नीत मारग चालै छै। घरका भार सौंप दूजी प्रतिमाका ग्रहण करै सो कहे है। पांच अणुव्रत तीन गुणव्रत चार शिक्षाव्रत ए बारह व्रत अतीचार रहित पालै। ताकूं दूसरी प्रतिमाका पालक कहिये प्रतिमा नाम प्रतिज्ञाका है। अब याका विशेष कहिये है। द्वेषबुद्धि कर चार प्रकार त्रस जीवका घात। अरु विना प्रयोजन पांच प्रकारका थावर जीवका घात नाहीं करै ताका रक्षक होई। भावार्थ— कैई या कहै तूनै पृथ्वीका राज द्यूं छूं। तूं थारां हाथसूं कीड़ानै मार अरु नाहीं मारै तौ थारा प्राननका नाश करिसूं। ऐसा राजादिकका हठ जानै। जो हुं याकूं कहौ न करिस्यूं तौ ए विचारी

छै सोई करसी ऐसी जान धर्मात्मा पुरुष ऐसी विचार करै जो हमारे बूतै त्रस जीव ऊपर शस्त्र कैसे चलाये जाई। तीसूं शरीर धनादिक जाइछै। तो जाव याकी स्थिति ये ते ही छै महारौ कोई तरौ राखा कैसे रहसी। अरु थिति बधती छै। तौ राजा वा देव करि हत्या कैसे जासी। यह निःशन्देह है। तीसूं म्हारे सर्वथा करि जीव घात करवौ उचित नाहीं अरु कोई या कहै अवार तौ एक ही छै सोही करौ पाछै प्रायश्चित करि लीजौ, सो धर्मात्मा पुरुष ई नैया कहै। रे मूढ़ जिन धर्मकी आखड़ी ऐसी नाहीं। जो शरीर बांधुवादिक वास्ते भंग कीजै अरु पाछै फेर प्रायश्चित कीजे यौ उपदेश तौ आनमत मै छै जिनमतमें नाहीं सो ऐसी जान वे धर्मात्मा पुरुष जीवकौ मारवौ तौ दूर ही रहौ। पन अंश मात्र भी परनाम चलावै नाहीं अरु कायरताका भी वचन उचारै नाहीं। अरु चलन हलनादि क्रिया विषै अरु भोग संजोगादि क्रिया विषै संख्यात असंख्यात जीव त्रस अर अनंत निगोद जीवकी हिंसा होय है। परन्तु याके जीव मारवा कौ अभिप्राय नाहीं। हलन चलनादि क्रियाका अभिप्राय है अर वा क्रिया त्रस जीवकी हिंसा बिना बनै नाहीं तातै याकूं स्थूलपनै त्रस जीवकी रक्षा कहिये अरु पांच थावरकी हिंसाका त्याग है नाहीं तौ भी विना प्रयोजन थावर जीवका स्थूल पनै रक्षक ही है। तातै याकौ अहिंसावृतका धारक कहिये। ऐसे जानना आगै सत्य वृत का स्वरूप कहिये हैं जो झूठ बोलौ राजा दंड देवे जगत विषै अपजश होय। ऐसा स्थूल झूठ बोलै नहीं। अरु ऐसा सत्य बचन भी बोलै नहीं जा सत्य बचन बोलै परिजीवका बुरा होई। अरु

कठोरताने लिया ऐसा भी सत्य बचन बोलै नहीं। कठोर बचन कहिये वाका प्रान पीड़ा जाय है अरु अपना भी प्रान पीड़ा जाय है ऐसा सत्य बचनका स्वरूप जानना। अरु अचौर्यव्रत स्वरूप कहिए है औरांकी चौरी सर्व प्रकार तजे और चोरीकी वस्तु मोल लेना ही। अर गैले पड़े पाइ होइ तौ वस्तु ताका ग्रहन करे नहीं अरु जो ले मारे नाहीं अरु वस्त्र अदला बदली करे नाहीं काहीकी रकम चुरावै नाहीं, राजादिकका हासल चुरावै नहीं। तौल विषै घाट दै नहीं। बाढ़ लेना ही। और गुमास्तागिरी विषै वा घरका व्योपार विषै कि सौकी चोरी भी नहीं करे इत्यादि सर्व चोरी का त्याग है। भावार्थ॥ मारगकी माटी वा दरयावका जल आदिका तौ याके बिना दिया ग्रहन है। ये माल राजादिकका है याका नहीं येती चोरी याकौ लागै है अरु विशेष चोरी नहीं लागे है तिहि वास्तै याकुं स्थुल पनै अचौर्य व्रतका धारक कह्या। आगै बृह्मचर्य्य व्रतकौ कहिए है। सो परस्त्रीका तो सर्व प्रकार त्याग करै। अर स्वस्त्री विषै आठै चौदश अठाई सोलह कारन दक्षलक्षन रत्नत्रय आदि जे धर्म्म पर्व ताकौ शील पालै अरु काम विकार विषै घटती करै। अरु शीलकी नव वाड़ि ताकुं पालै ताकौ ब्यौरौ। काम उत्पादक भोजन करे नहीं, उदर भर भोजन करै नहीं, श्रंगार करे नाहीं, पर स्त्रीकी सेज्या विषै ऊपर बसै नहीं अकेली बतलावै नाहीं। अकेली स्त्रीकी संगति करै नाहीं रागभाव करि स्त्रीके बचन सुनै नाहीं रागभाव करि स्त्रीका रूप लावण्य निरख करै नहीं। मनमथ कथा करै नहीं ऐसे ब्रह्मचर्य्य व्रत जानना। आगै परिग्रह परिमान व्रत कहिये हैं सो आपना पुण्यके

अनुसांर दश प्रकारके सचित अचित बाह्य परिग्रह ताकौ प्रमान न करै ऐसा नहीं के पुन्य तौ थोड़ा अर प्रमान बहुत राखै ताकौ परिग्रह परिमान व्रत कहिये सौ यो नाहीं है या विषै तौ अपन लोभ तीव्र होई है इहां लोभ हीका त्याग करना है ऐसे जानना अबै दश प्रकारके परिग्रहका स्वरूप कहिये है। धरती, जान कहिये पालकी आदि, द्रव्य कहिये धन, धान्य कहिये नाज, हवेली, हलवाई, वरतन, सिज्यासन, चौपद, दुपद, ऐसे दश प्रकारके परिग्रह त्यागका प्रमान राख अवशेष त्याग करना ताकौ परिग्रह त्याग व्रत कहिये है। ऐसे पांच अणुव्रतका स्वरूप जानना। आगे दिग्व्रतका स्वरूप कहिये है। सो दिग नाम दिशाका है। सो दशूं दिशा विषैं सावद्य जोग अर्थि गमन कर वाका परनाम राख जौ वौ जीव मर्यादा कर लेई उपरांत क्षेत्रसूं वस्तु मंगावै नाहीं वा भेंजै नाहीं चिट्ठीपत्री भेजै नाहीं। अरु वहाकी पत्री चिट्ठी आई वाचै नाहीं ऐसे जानना। आगे देशव्रत कहिये है। देश नाम एकौ-देशका है दिन प्रत दिशाव्रत दिशा प्रमान कर लै आज मोनै दोय कोश वा चार कोश वा वीस कोश मौकला है। अवशेष क्षेत्र विषै गमन न करनै आदि कार्यका त्याग है ता विषै भी रातका जुदा प्रमाण है। दिनका जुदा प्रमाण करै रात विषै तुच्छ गमन करना है दिन विषें अरु देश व्रत विषै विशेष गमन करना। तातै ति माफिक गमन करै ता आगै कौन करता। भावार्थ। दिगविरत विषै अरु देश विरत विषैं एता विशेष है सो दिगविरत विषै तौ दिशाका जावत जीवनै प्रमान राख त्याग करै। अर देशविरत

विषैं मर्यादतीमैं मर्यादअल्प राख घटाय घटाय त्याग करै। जैसे बरस दिनका, छह महीनाका, महीनाका, एक एक पक्षका, वा दिनका वा पहरका वा दोय घड़ीका ता पर्यंत क्षेत्रका प्रमाण सावद्य जोगके अर्थिकरि धर्मके अर्थ नाहीं करै। धर्मके अर्थ कोई प्रकारका त्याग है नाहीं। आगै अनर्थदंडत्यागव्रत कहिये है विना प्रयोजन पाप लगै अथवा प्रयोजन विषै महापाप लगै ताका नाम अनर्थदंड है। ताका पांच भेद है १ पापोदेश २ अपध्यान ३ हिंसादान ४ प्रमादचर्या ५ दुश्रुतिश्रवन एवं पांच याका विशेष कहिये है। अपध्यान कहिये जा बात करि अन्य जीवका बुरा होइ वा राग द्वेष उपजै, कलह उपजै अरु विश्वास उपजै दुःख उपजै, मरचा जाय, धन लूटा जाइ सो कलह उपजै ताका उपायका चिंतवन करै। मुवा मनुष्यकूं ताके वाके दुष्टकौ सुनाय देना। परस्पर बैर आदि करावना राजादिकका भय वतावना अबगुन प्रकट करना। मरमछेद बचन कहना ताका ध्यान रहै इत्यादि अपध्यानका स्वरूप जानना। बहुरि हिंसादान कहिये है। छुरी, कटारी, तरवार, बरछी इत्यादि हथियार मांगा देना। ईधन, अग्नि, दीपक मांग्या दैना, कुसी, कुदारी, फावड़ा, कौ मांग्या देना, गाड़ी बलध ऊंटकौ घोड़ाकौ मागा देना, सिंगारादिककौ मांगा दैना और चूला, ऊखली, मूसल, घरटी (चक्की) मांगा दैना, काकसी बुहारीकौ मांग्या दैना इत्यादि हिंसाने कारनजे वस्तु सो धरमात्मा पुरुष पेलेका भला मनावा वास्तै मांग्या है नांही। ऐसे ही हिंसानै कारन जे वस्तु ताका व्यौपार भी करै नांही, और बैठा बैठा ही विना प्रयोजन खोद नाखे अर पानी ढोलै छै।

अरु अग्निनै प्रजाले छै। अरु वीजनासौ पवन करवौ करै। वनस्पतीनै शस्त्रकरि छैद नाखै हाथसौ तोड़िनाखै ऐसे हिंसादानका स्वरूप जानना। आगै प्रमाद चर्याकौ स्वरूप कहिये है। प्रमाद लिये धरती ऊपर विना प्रयोजन आम्हां साम्हां फिरवौ करै, कहीनै हालै कहीने चालै, कठैनै ही वा विना देख्या बैठ जाय, विना देखै वस्तु उठाय लेय वा मेल देय इत्यादि प्रमादचर्याका स्वरूप जानना। आगै पापोदेशका स्वरूप जानना ऐसा उपदेश देना ही फलाना तूं हवेली कराई वा कुवा, वावड़ी, तलाव खनाय वा खेत बांध थारै खेती निदानी आयो है, तीकौ निहाउ वा थारौ खेत सूकै छै जाकुं जलि करि सीचवा, थारी बेटी कुंवारी है ताकौ व्याह करि वा थारौ बैटा कुंबारा छै ताकूं व्याह करवा, बजार विषै नीबू, आबंला, काकड़ी, खरबूजा आदि जे फल विकै छै सो तू मोल ल्याव अरु गाजर, कंदमूल, सकलकंद, आदि बजारमैं विकै छै सो तूं मोल ल्याव वा मैथी, वथुवौ, गाँदल इत्यादि बाजारमैं विकै छै सो मोल ल्याव। तोरई, करेला, ठीठसा आदि मोल मगाई वाकी उपदेश देई अर अग्नि ईधन जल घृत लून मंगाय वाका उपदेश देय, वा चूल्यो बालवांकौ, आंगन लिपायवांकौ, गारा गोवर करवाका उपदेश देइ। कपड़ा धुवावाका, स्नान करावाका, स्त्रीके मस्तकका केश सवांरवाका, खाट ताबड़े नषायवाका, कपड़ा वा सेज आदि काड़वांका, दीवो जोवाकौ, वींध्यो सूंल्यो नाज मंगावेका वा घृत तैल गुड़ खांड़ नाज आदि वस्तु भांडार राखवा का उपदेश देई। वा दान तप शील संजम सौ सु आखड़ी आदि धर्म्म कार्य विषैं कोई पुरुष लागै ताकूं मनै करै ऐसा उपदेश

दे अथवा पूर्वै कहै जे सर्व वस्तुका सौदा करै अरु नाना प्रकारकी खोटी वस्तु चतुराई व अकल औराकुं सिखावै अथवा राजकथा वा चोरकथा स्त्रीकथा देशकथा इत्यादि नाना प्रकारकी विकथाका उपदेश देई ऐसे पापोदेशका स्वरूप जानना। आगै दुःश्रुतिका स्वरूप कहिये है। दुःश्रुत कहिये है खोटी कथाका सुनना श्रंगारादिक गीत राग बाजित्रका सुनना। काम उत्पादन कथा भोजन चोर राज देश स्त्री वेश्या नृत्यकारणीकी कथा वा रार संग्राम जुद्ध भोगकी कथा स्त्रीका रूप हावभाव कटाक्षकी कथा, जोतिष वैद्यक मंत्र तंत्र जंत्र स्वरोदयकी कथा, ख्याल तमाशा इत्यादि पापनै कारन ताकी कथाका सुनना ताकौ दुःश्रुति श्रवन कहिये है। इत्यादि ये विना प्रयोजन महापाप ताकौ अनर्थदंड कहिये है। ताका त्याग करै ताकौ अनर्थदंड त्याग व्रत कहिये ऐसे तीन गुणवृतका स्वरूप जानना।

आगै सामायिक व्रत कौ स्वरूप कहिये है सो अथोन सवारैं मध्यान विषैं त्रैकाल (तीन वेर) सामायिक करै। आठै चौदश प्रोषध करै ताका स्वरूप आगै कहैगे। आगै भोगोपभोग व्रतका स्वरूप कहा है। सो एकवार भोगवामें आवै सो भोग जैसे भोजनादि। अरु वेही वस्तु बार बार भोगिये जैसे स्त्री वस्त्र वा गहना आदि ताकौ उपभोग कहिये। नित्तवार चार पहर कौ प्रमान करले। प्रभात प्रमान करै सो तौ अथौनै याद करले अरु अथौनका प्रमान कीनौ प्रभात याद करले। याका विशेष भेद ताका नाम सत्तरा नेम है ताका व्योरा भोजन १ षट रस २ जलपान ३ कुंकुमादि ४ लेपन ५ पुष्प ६ ताम्बूल ७ गीत ८

नृत्य ९ ब्रह्मचर्य १० श्रान ११ भूषण १२ वस्त्रादि १३ वाहन १४ सेन १५ आसन १६ सचित १७ आदि वस्तु संख्या ऐसा जानना। आगै अतिथि संविभागका स्वरूप कहिये है। विना बुलाया तीन प्रकारके पात्र वा दुखित अपनै वारनै आवै अनुराग कर दान दे सो पात्रनै तौ भक्ति करि दै। अरु दुखित जीवनै अनुकंपा कर दै। सो दातारके सात गुण सहित दे अरु मुन्यानै नवधाभक्ति कर दे। ताकौ व्योरौ नवधाभक्तिका नाम प्रतिग्रहन है। ऊचौ स्थान १ पादोदक २ अर्चन ३ चरण धोना ४ मन-शुद्धि ५ वचनशुद्धि ६ कायशुद्धि ७ एषणाशुद्धि ८ शुद्ध-अहार देना ९ ऐसा जानना और भी दान दे। मुन्यानै कमंडल पिछी पुस्तक वा औषधि वस्तका देई। अरु आर्जिका श्रावकानै पांच तौ वे ही अरु वस्त्र देई। अरु दुखित जीवने वस्त्र औषधि आहार आदि देई। अरु अभय दान भी देइ और जिन मंदिर विषै नाना प्रकारके उपकरन चहोड़े पूजा करै वा शास्त्र लिखाइ धर्मात्माज्ञानी पुरुषनै देइ। अरु बंदना पूजा करावे, तीर्थ जात्रा विषै द्रव्य खरचै। अरु न्याइपूर्वक द्रव्य पैदा करै ताका तीन भाग करै। तीमै एक भाग धर्म्म निमित्त खर्चे, अरु एक भाग भोजनके अर्थ कुटुम्बनै सौपै, अरु एक भाग संचय करै सो तौ उत्कृष्ट दातार जानना। अरु एक भाग तौ दान अर्थि तीन भाग संचय करै सो जघन्य त्यागी है। अरु जो दशौ भाग धर्म्ममें खर्चै नाहीं। तौ वाकौ घर मसान समान है। मसानविषैं भी अनेक प्रकारके जीव हौमे जाइ हैं। अरु गृहस्थका चूला विषै नाना प्रकारके जीव दग्ध होंय है। अथवा कैसा है वह पुरुष

सो सर्वसूं हलकीसौं हलकी तोरई है। और तासै भी हलकौ आकके फूल है, और तासूं भी हलकी परमानू छै तीसूं भी हलकौ जाचक है। तीसूं भी हलकौ कृपण दान रहित पुरुष है। सो वे तौ अपनौ सर्वस खोय हाथमोड़ो, अरु जाचना कौ दीन वचन मुखसेती भाखौ अरु विना बुलाये आपनौ घर आयौ तौ भी वाकौ दान नाहीं दीनौ। तीसौ जाचक पुरुष सौ भी हीन दान करि रहित पुरुष है, और धर्मात्मा पुरुष कै धर्म देख पूजा अरु दान छे। षट् आवाश्यक विषै भी ये दोय मुख्य धर्म देवपूजा अरु दान छै। बाकी चार गौण छै गुरुभक्ति १ तप २ संयम ३ स्वाध्याय ४ तातै सात ठिकाना विषै द्रव्य खरचवौ उचित है। मुनः १ अर्जिका २ श्राविका ३ श्रावक ४ जिनमंदिरप्रतिष्ठा ५ तीर्थजात्रा ६ शास्त्र लिखावै ७ ए सात स्थानक जानना। सो दान देना के चार भेद है। प्रथम तौ दुखित भुखित जीवकी खबर पाइ वाके घर देवा जोग्य वस्तु पहुंचावै सो तौ उत्कृष्ट दान है सो दान देना। बहुरि वाकूं अपने घर बुलाई कर दान दैना सो ए मध्यमदान है। बहुरि अपनौ काम चाकरी कराय दान दैना सो ये अधम दान है। और कोई प्रकार धर्म विषै द्रव्य नाहीं खरचै है अरु तृष्णाके वशीभूत हुवा द्रव्य कमाई कमाई इकट्ठा ही किया चाहै है तौ वह पुरुष मरकै सर्प होय है। पाछै परम्परा नरक जाई है निगोद जाइ है। ता विषै नाना प्रकारके भेदन मारन ताडन सूलारोपन आदि तौ नरकके दुख अरु मन कान आँख नाक जिह्वा कौ अभाव है जाके, अरु स्पर्श इन्द्रीकै द्वारा एक अक्षरके अनंतवै भाग ज्ञान बाकी रहै है। ता

बिषै भी आकुलता पावजै है। ऐसा एकेन्द्रिय परजाई है सो नरकके दुखसे भी विशेष दुख्य जाननां। सो वह लोभी पुरुष ऐसी नरक निगोद परजाई विषै अनंतकाल पर्यंत भ्रमन करै है। वासौ वे इन्द्री आदि परजाई पावना महा दुर्ल्लभ होई है। तातै लोभ परनतिकूं अवश्य तजना जोग्य है। जे जीव नरक तिर्यंच परजाइनै छोड़ि मनुष्य भव विषै प्राप्त होय है। अरु नरक तिर्यंच गत हू कौ पाछै जानै जोग्य है ताका तौ यह स्वभाव होय है ताकौ द्रव्य बहुत प्रिय लागै है अरु धनके वास्ते निज प्रानका त्याग करै पन द्रव्यका ममत्व छोड़ै नहीं तौं वह रंक वापरा गरीब कृपन हीनबुद्धि महामोही परमारथके अर्थ दान कैसै करै वाके बूतै रूपेका रुपैआ कैसै दिया जाई। बहुरि कैसा है वे पुरष मच्छके समान है स्वभाव व परनति जाकी। बहुरि दातार पुरुष है सो देवगति माहींसू तौ आऐ हैं अरु देवगति वा मोक्षगतिनै जानै जोग्य हैं। सो ए न्याय ही है। तिर्यंच गतिके आऐ जीवके उदार चित्त कैसे होइ ज्यां वापरा असंख्यात अनंत काल पर्यंत क्यों भी भोग सामग्री देखी नांही। अरु आगै मिलनैकी आस नाही तौ वाकै तृष्णारूपी अग्नि अरु किंचित् विषय सुखरूप जल करि कैसे बुझै। अरु असंख्यात वर्ष पर्यंत अहमिन्द्र आदि देवोपुनीत आनंद सुखके भोगी ऐसा जीव मनुष्य पर्यायके हाड़ मांस चामके पिंड मल मूत्र करि पूरित ऐसा शरीर ताके पोषनै विषै आशक्त कैसै होइ। अरु कंकर पत्थरादि द्रव्य विषै अनुरागी कैसे होइ। अरु भेद विज्ञान करि स्वपर विचार भया है जानै आपकौ परद्रव्यसूं भिन्न सास्वता अविनाशी

सिद्ध शादृश्य लोकालोकके देखनहारे आनंदमय जान्या है। ताहीके प्रसाद कर सर्व प्रकार परद्रव्यसूं निवृत्ति हुवा चाहै है ताका सहजही त्याग वैराग्यरूप भाव वर्त्तै है। एक मोक्ष ही नै चाहै है ताकें परद्रव्यसूं ममत्व कैसे होइ ए धन महापाप क्लेश करि तौ उत्पन्न होय है। अरु अनेक उपाय कर वाकौ आपनै आधीन राखिये है। ताकै विषै भी महा पाप उपजै है। अरु याकै मान बड़ाई अर्थि वा विषय भोग सेइवेके अर्थि अपनै हाथांकरि खरचिये है। ता विषै व्याहादिककी, हिंसा करिवा द्रव्यके छीजनै करि महा पाप कष्ट उपजै है। अरु विना दिया राजा चोर खोस लूट ले है वा अग्निमैं जल जाइ है वा व्यंतरादि हरलै है। वा स्वयमेव गुम जाइ है वा विनश जाइ है ताके दुखकी वा पाप बंधकी कांई पूछनी। सो ये पर द्रव्यका ममत्व करना सत्पुरुषांनै हेय कह्या है। कोई प्रकार उपादेय नाहीं परन्तु अपनी इच्छाकरि परमार्थकै अर्थ दान विषै द्रव्य खरचै तौ ईलोक विषै महासुखनै पावै अरु देवादिक करि पूज्य होय ताके दानकौ प्रभाव करि त्रैलोक्य करि पूज्य है चरनकमल जाके ऐसा जो मुनिराज ताका वृंद कहिये समूह सो दानके प्रभाव करि प्रेरचा हुवा विना बुलाया दातारके घर चाल्या आवे है। पाछै दानके समै वे दातार ऐसा फल सुखकौ प्राप्त होय है अरु ऐसा शोभै है सो कहिये है मानूं आज मेरे आंगन कल्पतरु आयौ कै कामधेनु आई है। कि मानूं चिंतामन पाया कि मानूं घर मांहि नवनिधि पाई इत्यादिक सुख फल उपजै है। अरु त्रैलोक्य करि पूज्य है चरन कमल जाका ऐसा महामुन ताका हस्तकमल तौ तलै अरु दातार

का हस्त ऊपर। सो यासौ भी दातारकी उत्कृष्टता पात्रके दान विना और कौन कार्य विषै होय। अर जो वे मुनि रिद्धि धारी होइ तौ पंचाश्चर्य्य होइ ताकौ व्यौरा। रत्नवृष्टि १ पहुपवृष्टि २ देवदुंदभी आदि वादित्र ३ अरु देवाकै जयजयकार शब्द होय ४ गंधोदक वृष्टि यह ५ बात आश्चर्यकारी होय तातै याका नाम पंचाश्चर्य है। बहुरि तिहि दिन वा चार हाथकी रसोई विषै नाना प्रकारकी तरकारी वा पकवान सहित अमृतमई अटूट होय जाइ अरु वे रसोईशाला विषै सर्व चक्रवर्तिका कटक जुदा जुदा बैठ जीमै तौ भी सकुड़ाई होय नांही। अरु रसोई टूटै नांही ऐसा अतिशय वरतै। पाछै बड़ा बड़ा राजा नगरके लोग सहित अरु इन्द्रादिक देव त्यां कर वह दातार पूज्य होय। अरु बड़ाई जोग्य होय अरु वाका दीया दानकी अनुमोदना करि घना जीव महा पुन्यकौ उपार्जै। परंमपराय मोक्षनै पावै। सो सम्यग्दृष्टी तीन प्रकारके पात्रनै दान दै तौ स्वर्ग ही जाय। अरु मिथ्यादृष्टी दान दै तौ जघन्य मध्यम उत्कृष्ट भोगभूमि जाई। पाछै मोक्ष जाय ऐसा पात्रदानका ईलोक वा परलोक विषै फलै है। अरु दुखित भुखित जीवानै करुना करि दान दीजै तौ वाका भी महा पुन्य होई है। सर्व सौं बड़ा सुमेर है तासूं भी बड़ा जंबूद्वीप है तासूं भी बड़ा तीन लोक है तासूं भी बड़ा अलोकाकाश द्रव्य है। पनि एतौ कछू दे नाहीं तातै याकी शोभा नांही। तासूं भी बड़ा दातार है तासूं भी बड़ा अजाचीक त्यागी पुरुष है। तातै कोई अज्ञान मूरख कुबुद्धि अपघाती ऐसा फल जान करि भी दान नाहीं करै है तौ वाकी लोभीकी वा अज्ञानकी कांई पूछनी

अरु कदाच दान करै तौ कुपात्रनै पोखै है अरु पुन्य चाहै है। तौ वे पुरुष कौनकी नाईं, जैसे कोई पुरुष सर्प नै दुग्ध प्याय वाका मुखसो अमृत लीया चाहै है। जल विलोय घृतकौ काढ़ा चाहै है, पत्थरकी नाव बैठ स्वयम् रमन समुद्र तिरचा चाहै है। वा वज्राग्र विषै कमल कौ बीज बोय वाके कमलनके फूलकी आशा करै है। वा कल्पवृक्ष कट धतूरा बोवै है वा अमृतकूं तज हलाहल विषका प्याला पीके अमर हुवा चाहै है। तौ काई वा पुरुषका मन बांक्षित करज सिद्ध हो सी। कार्य सिद्ध तौ कार्य कै लगै होसी। अरु झूठा ही गरज करि मान्या तौ गरज कोई सरी। कांच का खंडनै चिन्ता मन रत्न जानै घना अनुराग सूं पल्लै बांध्य राख्या तौ काई वह चिन्तामणि रत्न हुवा। जैसे बालक गारि पाखानके आकारकूं हाथी घोड़ा मान संतुष्ट होय है त्यों ही कुपात्रका दान जाननां घना कहा कहिये। जिनबानी विषै तौ ऐसा उपदेश है रे भाई धन धान्यादिक सामग्री अनिष्ट ही लागै है तो आंधेरे कूवामें नाख द्यो तो केवल द्रव्य जाई लो। और अपराध क्यों नाहीं होयला अरु कुपात्र कौ दान दिये धन भी जाइ। अरु परलोक विषै नरकादिका भव भव विषै दुख सहनै पड़ैगा तीसूं प्रान जावो तौ जावो पन कुपात्रनै दान देवा उचित नांही। सो ए बात न्याइ ही है। पात्र तौ आहारादिक ले मोक्ष साधन करै है अरु कुपात्र आहारादिक लेइ अनंत सागरके बधावनैका कार्य करै है। सो कार्यके अनुसार कारनके कर्त्ता दातार ताकौ फल लागै है। सो वे कुपात्रानै दान दिया मानौ आपाने मोक्षका दान दिया। अरु वे कुपात्रनै दान

दिया अपूठा आपाने अनंत संसार विषै डुबोया अन्य घना जीवानै डुबोया ऐसा जान बुद्धिमान पुरुषन कूं सर्व कुपात्र कूं दान तजना सुपात्र दान करना उचित है। ग्रहस्थके घरकी शोभा धनसूं है। अरु धनकी शोभा दानसूं है। अरुधन पाईए है सो धर्म्म सो पाई ये हैं। धर्म्म विना एक कौड़ी पाइवौ दुर्लभ है। जे अपना पुरुषार्थ कर धनकी प्राप्त होय तौ पुरुषार्थ तौ सर्व जीव कर रहे हैं। ऐक ऐक जीवकै तृस्ना रूपी खाड़ा ऐसा दीर्घ ऊड़ा है। ताके विषै तीन लोककी सम्पदा पाई हुई परमानू मात्रसी दिखलाई दै हैं। सो ऐसा तृस्ना रूपी खाड़कौ सर्व ही जीव पूरया चाहैं हैं। परन्तु आज पर्यंत कोई जीवनै नाहीं पूरया गया। तातै सत्पुरुष तृस्ना छोड़ि सन्तोषनै प्राप्त भया है अर त्याग वैराग्यनै प्राप्त होय है। ताहीका प्रसादकरि ज्ञानानंद-मय निराकुलित शांति [illegible] करि पुर्ण सूक्ष्म निर्मल केवलज्ञान लक्ष्मीनै पावै है। अविनाशी अविकार सर्व दोष रहित परम सुखनै सदैव सास्वता अनंतकाल पर्यंत भोगवे है। ऐसा निर्लोभ-ताका फल है तातै सर्वजीव निर्लोभ ताकौ सर्व प्रकार उपादेय जान भजौ, कृपनतानै दूर ही तै तजनौ। आगै दुखित भुखितके दानका विशेष कहिये है। अंधा, बहरा, गूंगा, लूला पांगुला वा सकल वृद्धि स्त्री रोगी घायल क्षुधाकरि पीड़ित शीतकी बाधा करि पीड़ित वंदीवान तिर्यंच व्या व्यावर स्त्री कूंकरी विलाई गाय भैंस घोडी आदि जाका कोइ रक्षक सहाइक खाविंद नाहीं। ऐ पूर्व कहे मनुष्य तिर्यंच ते सर्वदा अनाथ पराधीन हैं। अर गरीब हैं दुखित है, दुखकरि महाकष्टनै सहैं हैं। अरु विलविलाट करैं

हैं। अर दीनपनाका बचन उच्चारे हैं। दुख सहनै कूं असमर्थ हैं ताके दुख करि विलखा गया है मुख जाका। अर शरीर करि छीन है बल करि रहित है। सो ऐसा दुखी प्रानिन कुं देख दयालु पुरुष हैं ते भयभीत होय हैं। अरु वाकैसा दुख आपकै होय हैं। अर घबराइ गया है चित्त जाका ऐसा होतै वह दयालु पुरुष जिहि तिहि प्रकार अपनी शक्ति के अनुसार वाके दुखकों निर्वृत्त करै है। अरु प्रानी जीवकूं मारता होई बाधा करता होई ताकौ जिहि तिहि उपाय करि छुडावै है। दुखी जीवका अविलोकन करि निरदई हुवा आगै नाहीं चल्या जाइ है। अरु वज्र समान है हृदय जाका ऐसा निर्दई पुरुष दुखी प्रानीनकूं भी विलोक जाकै दया भाव नाहीं उपजै है। अरु या विचारे है ऐ पापी पूर्व पाप किया ताका फलकूं भोगवै ही भोगवे। ऐसे नाहीं जानै मैं भी पूर्व ऐसा दुख पाया होईगा अरु फेर२ पाऊंगा। तातै आचार्य कहै हैं धिक्कार होउ ऐसे निरदई परनामकौ। जिनधर्मका फल एक दया ही है। जाके घट दया नाहीं ते काहेका जैनी। जैनी विना दया नाहीं यह नियम है।

आगै दान देनेका स्वरूप कहिये है। रोगी पुरुषन कौ औषधि दान दीजिये सो नाना प्रकारकी औषधि कराइ कराइ राखजै पाछै कोई रोगी आइ मांगै ताकूं दीजिये। अथवा वैद्य चाकर राखवा का इलाज कराइये ताका फल कर देवादिकका निरोग शरीर पाइये है आयु पर्यन्त ताकौ रोगकी उत्पत्ति नाहीं अथवा मनुष्यका शरीर पावै तौ ऐसा पावै--अपनै शरीरमै तौ रोग कोई प्रकार उपजै नाहीं अरु अपनै शरीरका स्पर्श करि वा नहानेका

जल करि अन्य जीवनका अनेक प्रकार छिन मात्र मैं रोग दूर होइ है बहुरि क्षुधा तृषा करि पीड़ित प्रानीकौ शुद्ध अन्न जल दीजै। भावार्थ--अन्न तौ ऐसा त्रस जीव अरु हरित काय कर रहित यथा जोग्य अन्न रोटी अर छान्या जलसौ पोखिये ताका फल करि क्षुधा करि रहित देवपद पावै। अरु मनुष्य होइ तौ जुगलिया तीर्थंकर चक्रवर्ति आदि पदवी धारक महा भोग सामग्री सहित होय बहुर मरते जीवकूं छुड़ाइये वा आप मारना छोड़िये ताका फल करि महा पराक्रमी वीर्यके धारी देव मनुष्य होइ। ताकौ कोई शंका नाहीं ऐसा निरभय पद पावै। बहुरि आप पढ़ा होय तो औरकौ सिखाइये, तत्वोपदेश देय जिनमारग विषै लगाइये। आप शास्त्र लिखिये वा सोधिये व काव्यशास्त्रकी टीका बनाइये अथवा धन खरच नाना प्रकारके जैन शास्त्र लिखाइये। अरु धर्मात्मा पुरुषनकौ दीजिये। ये ज्ञान दान सर्वोत्कृष्ट है। याका फल भी ज्ञान है। सो ज्ञान दानका प्रभाव करि मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान मनःपर्ययज्ञान विना अभ्यास किये ऐसी फुरै है पाछै शीघ्र ही केवलज्ञान उपजै है। बहुरि परनै सुखी किया आपने जगत सुखदाई परनवै। बहुरि गुरादिककी विनय किया आप जगत करि विनय जोग्य है। अरु भगवानके चमर क्षत्र सिंहासन वादित्र चंदोवा झारी रकेबी आदि उपकरन चहोंड़ै। तौ भी ऐसा पद पावै है सो आपके ऊपर क्षत्र फिरै चमर ढुरै है। वा सिंहासन ऊपर बैठि देव विद्याधरोंका अधिपति होइ। बहुरि जिनमंदिरका करावा अरि भगवानकी पूजा कर आप भी त्रैलोक्य पूज्य पद पावै है।

भावार्थ—तीर्थंकर पद वा सिद्ध पद पावै है। सो ऐ न्याय ही है जैसा वीज बोवै तैसा फल लागै। ऐसा नाहीं कै वीज तौ और ही वस्तुका अरु फल और ही वस्तुका लागैं। सो ए त्रिकाल त्रिलोक विषै होइ नांही यह नियम है। सो ही जगत विषै प्रवृत्ति देखिये हैं जैसा जैसा ही नाज वोवै तैसा तैसा ही निपजै। सो जैसा ही वृक्षका वीज वोवै तैसा तैसा ही वृक्षके फल उपजै सो जैसा जैसा ही पुरुष वा स्त्री वा तीर्यंचनका संयोग होइ ताकै तैसा ही पुत्रादिक उपजै। ऐसा वीजके अनुसार फलकी उत्पत्ति जाननी। तीसूं श्री गुरु कहै हैं। हे पुत्र कुपात्र अपात्रनै छोडि सुपात्र अर्थ दान करहु। अथवा अनुकम्पाकरि दुखित भुखित जीवानै पोषि जैसे जीवाकी बाधा निवृत्ति होइ। वा गुरुकी ठसक धरावै ताकौ दमरी मात्र भी देना उचित नाहीं। बहुरि कैसा है अपात्रका दान जैसे मुरदाका चकडोल काढ़िये है। अरु रुपैया पैसा उछालिये है अरु चंडालादिक चुन चुन ले है अरु मुख सूं धन्य धन्य करैं हैं। परन्तु दानके करनै वाला घरका धनी तौ ज्यूं त्यूं देखै है। त्यूं त्यूं छाती ही, कूटै है तैसे ही कुपात्रने दान दिया लो भी पुरुष जश गावै है। परन्तु दानके करनै दैनै वालौकुं तौ नरक ही जाना होसी। सम्यक्त्व सहित होय तौ पात्र जानना अरु सम्यक्त्व तौ नाहीं है अरु चारित्र है ते कु-पात्र जानना। अरु सम्यक्त्व वा चारित्र हू है नाहीं ते अपात्र ही है। ताका फल नरकादि अनंत संसारी है। अरु सर्व प्रकार ही दांन नाहीं करै है सो कैसा है मसानके स्थूल मुरदा समान है। अरु धन है सौ याका मांस है। अरु कुटुम्ब परवार सो कैसे है गृद्ध पक्षी है याका

धन आमिष खाय है। अरु विषइ कषाय रूपी अरथी है। ता विषै ए जलैं हैं। तातै मसान मुरदाकी भलीभांति उपमा संभवै है तातै ऐसी सर्व प्रकार निंदित अवस्था जान कृपनता भनि पर-द्रव्यका ममत्व न करना। संसार ममत्व हीका बीज है। ऐसी हेय उपादेय बुद्धि विचार शीघ्र दान करना। अरु परलोकका फल लैना नाहीं तौ यह सर्व सामग्री कालस्वरूप दावाग्नि विषै भस्म होयगी। पाछै तुम वहुत पछतावोगे सो कैसा है वो पछतावो जैसे कोई आइ समुद्रके तीर बैठ काग उड़ावने अर्थि चिंतामणि रत्न समुद्र विषै फैंक पछतावै है। पाछै रत्नकूं झूर मरै है। परन्तु स्वप्न मात्र भी चिंतामन रत्न पावै नाहीं ऐसा ज नना। धनी कहा कहिये उदार पुरुष ही सराहवा योग्य है अरु वे पुरुष देव समान है ताकी कीर्ति देव गावै है। इति अतिथिसंविभाग-व्रतका स्वरूप सम्पूर्ण।

बारह व्रत सम्पूर्ण ऐसा बारा व्रतका स्वरूप जानना। आगै श्रावकके बारह व्रत तथा सम्यक्त्व अंत समाधि मरनके सत्तर अतीचार ताका व्योरा स्वरूप कहिये है। प्रथम सम्यक्त्वके अ-तीचार ५ ता विषै 'शंका' कहिये जिन वचन विषै सन्देह १ कांक्षा कहिये भोगविलासकी इच्छा २ विचिकित्सा कहिये ग्लानि ३ अन्य दृष्टीकी परोक्ष प्रशंसा ४ अन्य दृष्टि संस्तव कहिये मिथ्यादृष्टिकी समीप जाय स्तुति करना ५। ऐसे हिंसा अनुव्रतके अतीचार पांच। ता विषै 'बंध' कहिये बांधना १ बध कहिये मारना २ छेद कहिये छेदना ३ अतिभारारोपन कहिये बहुत बोझा लादना ४ अन्न पान निरोध कहिये खाना पानी

आदिका रोकना ५। ऐसे सत्यानुव्रतके अतीचार ५ मिथ्योपदेश कहिये झूठका उपदेश देना १ रह्यो व्याख्यान कहिये काहूकी गुप्त बात प्रकाश दैना २ कूटलेख क्रिया कहिये झूठा खातादि लिखना ३ न्यासापहारा कहिये काहूकी धरी वस्तु मैटना ४ साकार मंत्र भेद कहिये अन्य पुरुषका मुखादिकका चिन्ह देखि ताकौ अभिप्राय जान प्रकाश दैना ५। अबै अचौर्य अनुव्रतके अतीचार पांच। स्तेन प्रयोग कहिये चोरीका उपाइ बताइ देना १ तदाहृतादान कहिये चोरनका हरचा माल मोल लेना २ अरु विरुद्ध राज्यातिक्रम कहिये हासलका चुरावना ३ हीनाधिक-मानोन्मान कहिये घाटि दैना वाड़ि लैना ४ प्रतिरूपक व्यवहार कहिये बाढ़ मोल वस्तुमैं घाट मोली वस्तु मिलावना ५। ऐसे ब्रह्मचर्य अनुव्रतके पांच अतीचार। पर विवाह करन कहिये पराया विवाह करावना १ इत्वरिका परगृहीता गमन कहिये व्यभिचारनी पराई स्त्री सुहागिन ताके विषै गमन करना २ इत्वरिका अपर गृहीता गमन कहिये खाविंद रहित स्त्री ता विषै गनम करना ३ अनंग क्रीड़ा कहिये हस्तस्पर्शादिकर क्रीड़ा करना ४ काम तीव्रा-भिनिवेश कहिये कामका तीव्र परिणाम करना। अबै परिग्रह के विशेष कहै है। तथा और भी कहिये है। अति वाहन कहिये मनुष्य पशु आदिको अधिक गमन करावना १ अति संग्रह कहिये वस्तुनका संग्रह करना २ अति भारारोपण कहिये लालच करि अति बोझा लादना ३ अति लोभ कहिये अति लोभ करना गये धनका लोभ करना। तथा और प्रकार भी कहै है। क्षेत्र वास्तु कहिये गांव खेत हाट खेली आदि १ हिरन्य सुवर्ण कहिये रोकड़

तथा गहनौ व दासी दास कहिये नौकर नौकरनी १ कूप भांड वस्त्र तथा सुगंधि भाजनादि १ इनका प्रतिक्रम कहिये प्रमान किया था ताकौ उलंघना व दिग्व्रतके अतीचार पांच ऊर्ध्व व्यतिक्रम कहिये ऊर्ध्व दिशाका प्रमान उलंघना व अधो व्यतिक्रम कहिये अधो दिशाका प्रमान उलंघना २ तिर्य व्यतिक्रम कहिये तिर्यक दिशाकौ उलंघन करना ३ क्षेत्र वृद्धि कहिये क्षेत्रका जो प्रमान था सोई क्षेत्रका प्रमान बधाय दैना ४ स्मृत्यन्तराधान कहिये क्षेत्रका प्रमान किया था ताहि भूल जाना ५ ऐसे जानना देशव्रतके अतीचार। व आनयन कहिये मर्यादा उपरांत क्षेत्र तै वस्तु मगावना १ व प्रेष प्रयोग्य कहिये मर्यादा उपरांत वस्तु भेजनी २ शब्दानुपात कहिये प्रमान उपरांत क्षेत्र तै शब्द कहि काहू कौ बुलावना ३ रूपानुपात कहिये प्रमान उपरांत क्षेत्र विषै अपना रूप दिखाय अभिप्राय जनाय दैना ४ पुद्गल क्षेप कहिये प्रमान उपरांत क्षेत्र विषै कंकरी इत्यादि वगावना। ५ अनर्थदंड व्रतके अतीचार पांच। कंदर्प कहिये कामोद्दीपन आहारादिकका करना १ कौत्कुच्च कहिये मुख मोड़ना आंख चलावनी भौंह नचावनी २ मौखर्य कहिये वृथा बकवाद करना ३ अस्मीक्षादिकरन कहिये विगर देखै वस्तुनका उठावना मेलना ४ भोगानर्थ कहिये निषिद्ध भोगोपभोगका सेवना ५ सामायिकके अतिचार पांच। मनोयोग दुःप्रनिधानान कहिये मनकी दुष्टता १। वचनयोग दुःप्रनिधानान कहिये बचनकी दुष्टता २ काययोग दुःप्रनिधानान कहिये शरीरकी दुष्टता ३ अनादार कहिये सामायिकका निरादर ४ स्मृति अनुपस्थान कहिये पाठका भूल जाना ५ प्रोषधोपवासके अतीचार

पांच, अप्रत्यवेक्षित अप्रमार्जित उत्सर्ग कहिये विना देखे विना पूछे वस्तुका धरना अप्रत्यवेक्षित अप्रमार्जित आदान कहिये विना देखे बिना शोधे वस्तुका उठावना अप्रत्यवेक्षित अप्रमार्जित संस्तर कहिये विना देखै विना पूछै साथरा विछावना ३ अनादर कहिये निरादरसे प्रोषधका करना ४ स्मृत्यनुपस्थान कहिये प्रोषध दिन आठै चौदश जे परवी दिन तिनकौ भूल जाना ५ भोगोपभोग परमानके अतीचार, सचित आहार कहिये हरित कायादिकका आहार करना व सचित्त सम्बन्ध आहार कहिये पातल दोंना आदि सचित्त वस्तु वर्त्तन विषै मैं ले तथा ढांके। इत्यादि सचित्त सम्बधका आहार करना २ सचित्त मिश्राहार कहिये उस्न जलमैं शीतल जल नाख्या होय ताका अंगीकार करना ३ अभिषव आहार कहिये सीला विंदलि इत्यादि अयोग्य आहार करना ४ दुःपक्काहार कहिये दुःखते पचै जो आहार ताका लैना ५ अतिथि संविभाग व्रतके अतिचार पांच सचित्तनिक्षेप कहिये सचित्त जे पातल दोंना ता विषै मेल्यौ जो आहार ताका दैना व सचित्तोपधान कहिये सचित्त कमल पत्रादिसे ढंके हुए आहार औंषधि आदिका दैना २, परव्यपदेश पात्र दान औरनकौ बनाइ आप अन्य कार्जकौ जाइ, ३ मात्सर्य कहिये औरनका दान दिया देख न सकै, ४, कालातिक्रम कहिये हीनाधिक कालका लगावना, ५, अंत सल्लेखनाके अतीचार पांच। जीवित आशंसा कहिये जीवनैकी अभिलाषा १, मरन आशंसा कहिये मरनेकी अभिलाषा, मित्रनुराग मित्रन विषै अनुराग ३, सुखानुबंध कहिये इहि भवका सुखका चिंतवन ४, निदान कहिये

परभवके भोगनकी अभिलाषा ९, ऐसे सब मिल सत्तर अतीचार भये, तिनका त्याग करना। आगै सामायिकका वत्तीस दोष कहै है। अनादृत्त कहिये निरादरसौ सामायिक करै १, पर जीवने पीड़ा उपजावे अर्थ सामायिक करै २, प्रतिष्ठा कहिये मान बड़ाई महिमाके वास्ते सामायिक करै ३, अरु पीड़ित कहिये परिजीवने पीड़ा उपजावै ४, दोलापति कहिये हं दीवालाकीसी नाई सामायिक विषै हालै ५, अंकुश कहिये अंकुश कीसी नाई सामायिक वक्रता लिये करै ६ कछुपरित्यागका कछुवाकी नाई शरीर संकोच करि सामायिक करै ७, मत्सोदन वर्त्तन कहिये माक्षला कैसी नाईं नीचौ ऊचौ होई ८, मनोदुष्ट कहिये मन दुष्टता राखै ९, वेदका बंध कहिये आम्नाय बाह्य १०, भय कहिये भय संयुक्त सामायिक करै ११, विभस्त कहिये गिलान सहित सामायिक करै १२, ऋद्धि गौर कहिये रिद्धि गौरव मनसै राखै १३, गौरव कहिये जाति कुलकौ गर्व राखै १४ स्तेन कहिये चोरकीनी नाई करै १५ व्यतीत कहिये व्यतकाल १६, प्रदुष्ट कहिये अत्यंत दुष्टतासौ कहै १७, तपित कहिये पैलनै भय उपजावै १८, शब्द कहिये सामायिकमैं सावद्य कार्य लिया बोलै १९, हीलति कहिये परकी निंदा करैं २०, तृवली कहिये मस्तककी त्रवली भौंह चढ़ाई सामायिक करै २१, कुंचित कहिये मनके विषै संकुच्या सामायिक करैं २२, दिगविलोडन कहिये दशों दिशामाहीं अवलोकन करै २३, अदिष्ट कहिये जागा विना देख्यां विनां पौंछै करै २४, संयम करि मोचन कहिये जैसे काहीको लहनौ दैनौ होई सो जिहितिहि प्रकार पूरौ पाड़नौ चाहै त्यौही दैनै कैसी नाई जिहितिहि प्रकारै सामायिककौ काल पूरौ

कियौ चाहै २५, लब्ध कहिये सामायिककी सामग्री लंगोटी पीछी वा क्षेत्रकी जोगाई मिलै तौ करै नहीं तौ आधोकरि जाय २६, अलब्ध कहिये न लब्धी २७, हिन कहिये सामायिकका पाठ है सो हीन पड़ै अथवा सामायिककौ काल पूरौ हुवा ही विना उठबैठा होय २८, उचूलिका कहिये खंडित पाठ कहै २९, मूक कहिये गूंगा कैसे नाई बोलै ३०, दादुर कहिये मीढककी नांई सुरनै लीया बोलै ३१, चलुनित कहिये चित्तकौ चलाईवौ ३२, ऐसे सामायिकके बत्तीस दोष जानना। आगै सामायिक विषै सात शुद्धि राख सामायिक करै ताका व्योरा। क्षेत्र शुद्धि ऐ जेठे मनुष्याकौ कलकलाट शब्द घना न होय अरु डास मच्छर न होय और घनौ पवन वा घनी गरमी वा घनौ शीत न होई १, काल शुद्धि कहिये प्रातःकाल वा मध्यानकाल वा सांझकाल सामायिककौ काल छै उलंघै नांही। जघन्य दोय घड़ी मध्यम चार घड़ी उत्कृष्ट छह घड़ी सामायिककौ काल छै। सो दोय घड़ीकी करनी होय तौ घड़ीका तड़का सूं लगाई घड़ी दिन चड़ा पर्यंत। चार घड़ीकी करनी होय तौ दोय घड़ीका तड़कासूं लगाई दोय घड़ी दिन चड़ा पर्यंत छह घड़ीकी करनी होय तौ तीन घड़ीका तड़कासूं लगाय तीन घड़ी दिन चड़ा पर्यंत ई कालकी आदि विषै सामायिककी प्रतिज्ञा करै। प्रतिज्ञा सिवाइ काल लगावै नाहीं। ऐसे ही मध्यान समै विषै जानना २, आसन शुद्धि कहिये पद्मासन वा कायोत्सर्गासनसौ सामायिक करै ३, अरु आसनकूं चलायमान न करै विनय शुद्धि कहिये देव गुरु धर्म्मकौ वा दर्शन ज्ञान चारित्रताकौ विनय लिया करै मन शुद्धि कहिये राग द्वेष रहित मनकूं राखै ५ वचन

शुद्धि कहिये सावद्य वचन बोलै नांही ६ काल शुद्धि काहिये विना देख्या विना पूंछा हाथ पगि उठावै वा धरै नांही ७ ऐसे सात शुद्धिका स्वरूप जानना। आगे कायोत्सर्गके बाईस दोष कहिये है। कुआश्रित कहिये भीतकौ आसरो लेवौ १ लतावक्र कहिये वेलकी नाई हालता रहना २ स्तंभावष्टक कहिये थंभका आसरालेना ३ कुंचित्कहिये शरीरका संकोचना ४ स्तवेक्षा देखना ५ काकदृष्टि कहिये काक कैसी नाई देखना ६ सीर्ष कंपति कहिये मस्तकका कंपावना ७ भूकेष कहिये भंवर कैसी चंचलताई करना ८ उत रीति कहिये मस्तकका ऊचा करना ९ उन्मत्त कहिये मत्तवालाकी नाई चेष्टा करनी १० पिशाच कहिये भूत कैसी नाई चेष्टा करनी ११ अष्ट दिशे क्षण कहिये आठ दिशाकी तरफ चौधना १२ ग्रीवां वन कहिये नाग्रईकौ नमावै १३ मूक संज्ञा कहिये गूंगेकी नाईं सैन करना १४ अंगुलि चलावन कहिये आंगुलि चलावन १५ निष्टीवन कहिये खखारना १६ षलितनं कहिये खखारका नाखना १७ सारी गुह्यगूहन कहिये गुह्य अंग काटना १८ कापि मुष्ट कहिये काथोडीकी नाईं मुठी बांधना १९ ग्रीवो त्रमन कहिये नाड़ीका उंचा करना २० श्रंखलिताप कहिये सांकल कीसी नाईं पादका होना २१ मालिकोचलन कहिये कोई पीठ माथा ऊपरि तीकौ आश्रय लेना २२ अंग स्पर्सन कहिये अपना अंग सपर्सना २३ घोटकं कहिये घोड़ा कीसी नाई पादका करना २४ ऐसा चौवीस दोष कायोत्सर्गका जानना। आगे श्रावकके चार प्रकार अंतराय कहिये हैं। मदिरा १ मांस २ हाड़ ३ काचा चर्म ४ चार अंगुल लोहूकी धारा वड़ा पचेन्द्री जनावर

१ विष्टा मूत्र १ चूहडा १ इन आठौनका तौ प्रत्यक्ष नेत्रा करि देखनै हीका भोजन विषै अंतराय है। बहुरि आठ तौ पूर्व देखनै विषै कह्या सोई। अरु सूका चर्म १ नख १ केश १ ऊरात १ पांख १ असंजमी स्त्री वा पुरुष १ वड़ा पञ्चेन्द्री तिर्यंच १ ऋतुवंती स्त्री १ आखड़ीका भंग १ मल मूत्र करनेकी शंका १ शूद्रका स्पर्श, कांसा विषै कीड़ा त्रस मृतक जीव निकसै वा हस्तादिक निज अंगसौ वे इन्द्री आदि छोटा बड़ा जीवका घात, इत्यादि भोजन समय स्पर्श होय तौ भोजन विषै अंतराय होइ है। बहुरि मरन आदिका दुख ताका विरह करि रोवता होइ ताकै सुननैका, लाय लागी होय तौ ताके सुनवा की, नगरादिकका मार्‌याका धर्म्मात्मा पुरुषकौ उपसर्ग होई व कोईका नाक कान छेदनैका व कोई चोरादिकके मारने गया होई ताका व चंडालके बोलनैका व जिन बिंब व जिन धर्मके अविनयका व धर्म्मात्मा पुरुषके अविनयका व इत्यादि महा पापके वचन सत्यरूप आपनै भासै तौ ऐसे शब्द सुननैं विषै भोजनकी अंतराय होय है॥ बहुरि भोजन करती बार आशंका उपजै या तरकारी तौ मांस सारखी है। वा लौही सारखी है। वा चाम सारखी है वा विष्टा वा शहद इत्यादिक निंद्य वस्तु सारखे भोजन विषै कल्पना उपजै अरु मनमें ग्लान होय आवै॥ अरु मन वाके चाखनै विषै औहौटा होय तौ भोजन विषै अंतराय है। अरु भोजन विषै निंद्य वस्तुको कल्पना तौ नाहीं उपजै अर यहांसे मनि विषैका जानपना होय तौ अंतराय नांही॥ ऐसे देख वाके आठ ८ स्पर्शके वीस २० सुननैकी दश॥१०॥ मनका छह॥६॥ सब मिल चारके चवालीस अंतराय

जानना ॥४४॥ केई मूरख अज्ञानी पाखंडी कलंगी राग भाव घटनेके कारन अरि अन्य जीवकी दया हेत ये अंतराय तौ पालै नाहीं ॥ अरु झूंठा छोरानका मुखतै भ्रष्टा आदि खोटा बचन सुननेतै अंतराय होना मानै ॥ पाछै झालर थाली बजाइ अंधा बहरा कैसी नाई देख्या अनदेख्या करै सुना अनसुना करै पाछै नाना प्रकारकी गरिष्ट गरिष्ट मेवा पकवान दही दुग्ध घृत तरकारी खाद्य अखाद्य के विचार विना त्रस थावर जीवका हिंसा अहिंसाके विचार विना कामोत्पादक वस्तु अघोरीकी नाईं अनभावतै ठग ठग पेट भरै है। राजी होइ स्वाद लै है अरु भिखारीकी नाईं सरावगांकी खुसामद करि करि माग माग खाइ। जैसे कोई पुरुष सूक्ष्म थावराकी तौ रक्षा करै अरु बड़ा बड़ा त्रस जीवाकुं आंखमीच साजा ही निगलै। अरु पाछै कहै म्है सूक्ष्म जीवाकी भी दया पालौ हों ऐसा काम करि बापरा गरीब भोला जीवनके धर्म अरु धनकुं ठगै है। पाछै आपुन साथि मोंहमंत्र करि कुगति ले जाई। तैसे महाकालेश्वर देव अरु पर्वत ब्राह्मन मायामई इन्द्रजाल सादृश्य चमत्कार दिखाइ सगरराजाके वंशकुं जग्य विषै होम्याकर नरक विषै प्राप्त किये अरु मुखतै ऐसा कहै जग्य विषै होम्या प्रानी वैकुंठ जाय है ऐसा आचार कुलिंगाका जानना। आगे सात जाइगा मौन करनाका स्वरूप कहिये हैं १ देवपूजा विषें २ सामायिक विषें ३ स्नान विषें ४ भोजन विषें ५ कुशील विषें ६ लघुदीर्घ बाधा विषें ७ वमन विषें इन सप्त मौनके धारक पुरुष हाथसूँ व मुखसूं सैनको नाहीं करें य हुंकार करें नाहीं। आगे बारह स्थान विषें श्रावकके जीवनकी दयाके अर्थ चंदोवा चाहिये १ पूजाजीके स्थानक ऊपर

२ सामायिकका स्थानक ऊपर ३ चूल्हे ऊपर ४ पनहड़े ५ उखली ६ चाकी ७ भोजन स्थान ८ सेज्या स्थान आटौ चालतै ऊपर ९ व्यापारादिक करै तटै १० अरु धर्म चर्चाके स्थान ११ दुग्ध गरमके स्थान १२ ऐसा जानना। आगै सामायिक प्रतिमाका स्वरूप कहिये है। दूजी प्रतिमा विषै आठै चौदश वा और पर्व विषै तौ सामायिक करै ही करै। औरा दिना विषै मुख्य-पनै तौ सामायिक करै ही करै पन सर्व प्रकार नेम नांही करै वा नाहीं करै। अरु तीसरी प्रतिमा धारीकै सर्व प्रकार नेम है। ऐसा विशेष जानना। आगै प्रोषध प्रतिमाका स्वरूप कहिये है। ऐसी ही दूजी तीजी प्रतिमाधारी कै प्रोषध उपवासका नियम नांही है। मुख्यपनै तौ करै है गौण पनै नाही करै है। अरु चौथी प्रतिमाधारी कै नियम है यावज्जीव करै ही करै। आगै सचित्त त्याग प्रतिमाका स्वरूप कहिये है। दोय घड़ी उपरांतका **अन छान्या पानी** अरु हरित काय मुख कर नांही विराधै है। अरु मुख्यपनै हस्तादिक कर भी पांच स्थावरानकुं नांही विरोधै है। याकै सचित्त भक्षन त्याग है पांच स्थावरांका शरीरकी क्रियादि करि त्याग नांही मुनीकै है। हस्तादिक अंग करि हिंसाका पाप अल्प है अरु मुखमैं भक्ष्यनैका महा पाप है। मुखका त्याग पांचवी प्रतिमा धारी करै है। अरु शरीरादिकका त्याग मुनि करै। मुनि विशेष संयमकूं प्राप्त भया है। आगै रात्रि भुक्ति त्याग दिन विषै कुशील त्याग प्रतिमाका स्वरूप कहिये है। रात्रिभोजनका त्याग तौ पहली दूसरी प्रतिमा सूं ही मुख्य पनै होय आया है। परन्तु क्षत्री, वैश्य, ब्राह्मण, शूद्र आदि जीव नाना प्रकारके हैं। स्पर्श शूद्र पर्यंत श्रावक व्रत

होय है। सो जाकै कुल कर्म विषै ही रात्र भोजनका त्याग चल्या आया है ताकै तौ रात्रि भोजनका त्याग सुगम है। परन्तु अन्य-मती होय अरु श्रावक व्रत धारै ताकुं कठिन है। तीसूं सर्व प्रकार छठी प्रतिमा विषै ही याका त्याग संभवै है। अथवा अपनै खावा का त्याग तौ पूर्व ही कियौ थौ इहां औराकुं भोजन करावनै आदिका त्याग किया। आगै ब्रह्मचर्य प्रतिमाका स्वरूप कहिये है। यहां घरकी स्त्रीका भी त्याग किया नव वाड सहित ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार किया। आगै आरम्भ त्याग प्रतिमा कहै है। इहां व्यौपार रसोई आदि आरम्भ करनैका त्याग किया पैलाके घरि वा अपनै घर न्यौता वा बुलाया जीमै है। आगै परिग्रह त्याग प्रतिमाका स्वरूप कहिये है। इहां जो वाकै लक्ष अपनै परवानकै धोवती दुपटा पछेड़ी इत्यादि राखै है। अवशेष सर्व परिग्रहका त्याग करै। आगै अनुमति त्याग प्रतिमाका स्वरूप कहिये है। इहां सावद्य कार्यका उपदेश देना तज्या है। सावद्य कीया कार्यकी अनुमोदना भी नाहीं करै है। आगै उद्दिष्ट त्याग प्रतिमाका स्वरूप कहिये है। यहां बुलाया नाहीं जीमै है। उदंड ही उतरै है। एक क्षुल्लक ऐलक, क्षुल्लक तौ कमंडलकी पीछी आधा पछै बडा लंगोट राखै है। स्पर्श शूद्र लोहका पात्र राखै है। ऊंच कुली पीतल आदि धातकौ राखै है। अरु पंचघरासूं भोजन लेय अंतके घर पानी लै वहां ही बैठ लोहके पात्र तामै भोजन करै है। कोई ऊंच कुली एक हीके घर भोजन करै है। अरु एकान्तमें भी करै है। ऐलक पक्षे बड़ा विना एक कमंडल पीछी लंगोट राखै है। अन्य नांही राखै है। अरु कर पात्र आहार करै है। अरि लौच करै है।

अरि लंगोट लाल राखै है। अरु लंगोट चाहिये तौ भी लेय। अरि आहारको जाय तब श्रावकके द्वार ऐसा शब्द करै है अक्षै दान। अरि नगर वारै मंडल विषै वसै है। वा मुन्याके समीप वनादिक विषै वसै है। अरु मुन्याके चरनारविन्द सेवै है। अरु मुन्याके साथ विचरै है। अरि क्षुल्लक भी मुन्याके साथ विचरै है। अरु संसारसौ महा उदासीन है। अरु अनेक शास्त्रांका पारगामी है। अरि स्वपरविचारका वेत्ता है। तातै आप चिन्मूर्त्ति हुवा शरीरसूं भिन्न स्वभाव तिष्ठै है। अरि ऐलक आर्जिका जी तौ क्षत्री वैश्य ब्राह्मन ऊंच कुली ही नियम करि उत्कृष्ट श्रावकके व्रत धारै है। अरु असपर्श शूद्रनै प्रथम प्रतिमाका धारक जघन्य श्रावक ताकौ भी व्रत नाहीं संभवै है। अरु यासै आखड़ी पलै नाहीं। अरु बड़ा सैनी पञ्चेन्द्री तिर्यंच विषै ज्ञानका धारक तातै भी मध्यम श्रावक व्रत होय है। सो देखौ श्रावककौ तौ यह व्रत है। अरि महा पापी अरि महा कषाई महा मिथ्याती महा परिग्रही व विषई देव गुरु धर्मका अविनई महा तृषावान महा लोभी स्त्रीके राग महा मानी गृहस्थांकै विभव महा विकल सप्त व्यसन कर पूरन अरु मंत्र जंत्र जोतिष वैद्यक कामिनादिके डोरा गंडा करि मोहित किया है बारा भोला जीवानै अरि ज्याकै कोई प्रकारका संवर नाहीं। तृश्ना अग्र कर दग्ध होय गया है आत्माजाका। सो अपनै लोभके अर्थ गृहस्थांका भला मना वाचनैके वास्तै त्रैलोकन करि पूज्य श्री तीर्थंकर देवका प्रतिबिंब वाके घर ले जाय, वाकूं दर्शन करावै। पाछै औहीटा ल्यावै ऐसा अनर्थ अपने मतलबके अर्थ करै। सो

आप तौ घोरान घोर संसार विषै बूड़ा ही है। परंतु वापरे भोरा जीवानै संसार विषै डोवोवै है। दोय चार गांव ताका ठाकुर भी सेवकका मतलबके वास्तै सेवकका ले गया सेवकके घर जाय नाहीं। तौ ए सर्वोत्कृष्ट देव याकूं कैसे ले जाई। सो इस समान पाप और हुवा न होसी। सो कैसा कैसा विपर्यय-वात कहिये आजीविकाके अर्थ ग्रहस्थाके घर जाय शास्त्र वांचै अरु शास्त्रमैं अर्थ तौ विषय कषाय रागद्वेष मोह छुड़ावाका अरु वे पापी अपूठा विषय कषाय रागद्वेष मोह ताकौ पोखै। अरु या कहै अवार तौ पंचमकाल है, न ऐसा गुरु न ऐसा श्रावक। अपनै गुरु माना वाकै वास्तै गृहस्थानै भी धर्मसूं विमुख करै अरु गृहस्थानै एक श्लोक भी प्रीति करि सिखावै नांही। मनमैं या विचारै कदाच याकै ज्ञान होय जासी तौ म्हाका औगुन वांचे प्रतिभासमी तो पाछै म्हांकी आजीविका मनै किसी रीतिसूं होसी। ऐसा निर्दई अपना मतलबके वास्तै जगतनै डोबै है। अरु धर्म पंचमकालके अंत ताईं रहता है ये अब ही धर्म घटावै है अरु जिनधर्मके आसरै जीविका पूरी करै है। जैसे कोई पुरुष कोई प्रकार आजीविका करवानै असमर्थ है। पाछै वह अपनी मातानै पीठे बैठार आजीविका पूरी करै है। त्यों ई जिनधर्म्म सेइ सत्पुरुष तौ एक मोक्षनै ही चाहै है। स्वर्गादि भी नाही चाहै है तौ आजीविकाकी कहा बात। सो हांय हाय हुंडा व सर्पनी कालदोष करि पंचमकाल विषै कैसी विपरीतिता फैली है। काल दुकाल विषै गरीबाका छोरा भूखा मरता होय चार रुपैया विषै चाकर भया भूरा गोलाकी नाईं मोल विकचा पाछै निर्मायल

खाइ खाइ बड़ा हुवा। अरु जिनमंदिरमै अपनै रहवाका घर किया अरु शुद्ध देव गुरु धर्मके विनयका तौ अभाव किया। अरु कुगुरादिके सेवनका अधिकारी हुवा ऐसा ही औरानै उपदेश दिया। जैसे अमृतनै छोड़ हलाहल विषनै सेवै वा चिंतामणि रत्न छांड़ि कांच खंडकी चाह करै वा कामदेव सौ भरतार छोड़ी असपर्श शुद्र अंधा बहरा गूंगा लूला कोड़ी तासूं विषय सेय आपनै धन्य मानै अरु या कहै शीलवंती पतिव्रता स्त्री हूं। सो इसी रीत वेश्या विषै पाईये है। अरु ताहीका आंधा जीव आसरा लेइ धर्म साधना कहै है। अरु वह आपकूं पुजाय महंत माननै लगा अरु अपनै मुखसै कहै है भट्टारक दिगम्बर गुरू हौं म्हानै पूजौ। अरु नाहीं पूजौ तौ दंड देस्यां वा थाके माथै भूखां रहस्या। वा मानै चंदा करस्या। अरु स्त्री साथ लिया फिरै सौ भट्टारक नाम तौ तीर्थंकर केवलीका है। अरु दिगम्बर कहिये दिग नाम दिशाका है अंवर नाम वस्त्रका है सो दशूं दिशाके वस्त्र पहिरै होय ताकूं दिगम्बर कहिये है। निग्रन्थ नाम परिग्रह त्यागका है तातै तिल तुस मात्र परिग्रह तौ बाह्य नांही अर चौदा प्रकारकौ आभ्यंतर तासूं रहित सौ वस्तुका स्वभाव तौ अनादिनिधन है ऐसा अरु यह यसै मानै सो यह बात कैसी है। म्हारी मां अरु वांझ सो जगत विषै परिग्रहसूं नरकां जाइ है। अरु परिग्रह ही जगत विषै निंद्य है। ज्यूं ज्यूं परिग्रह छोड़ै त्यों त्यों संजम नाम पावै। सो या बात तौ ऐसी न्याय बनी अरु हजारा लाखा रुपैयाकी दौलति अरु घोड़ा व हल रथ पालकी चढ़नैकुं चाकर कंकर अरु कड़ा मोती पहरै। नरक लक्ष्मीके पानग्रहन करनैकी दशा करै है।

बहुर चेला चांटा सोई भई फौज अरु चेली सोई हुई स्त्री। ऐसी विभूति सहित राजा सादृश्य होता संता भी आपकौ दिगम्बर मानै है। सो हे दिगम्बर हम कैसे जानै मानै एक दिगम्बर नांहि हुंडा सर्पनी पंचमकालकी विधातानै एक मूर्त्ति ही गड़ी है, कै मानूं सात व्यसनकी मूरति ही है कै मानूं पापका पहार ही है। कै मानूं जगतके डुबोवानै पत्थरकी नाव है। बहु २ कैसा है कलिकालके गुरु सो आहारके अर्थ दिनप्रति नगृ व्रत आदरै। अरु स्त्रीका लक्षन देख वांका मिसकर स्त्रीयांका स्पर्श करै। स्त्रीका मुख कमलनै भंवर सादस्य होइ वाका अवलोकन करै। पाछै अत्यंत मग्न होय आपनै कृत्य कृत्य मानै। सो या बात न्याय ही है। ऐसा तौ नाना प्रकारका गरिष्ट नित्य नवा भोजन मिल्या अरु नित्य नई स्त्री मिली तौ याका सुखकी कांई पूछनी। ऐसा सुख राजानै भी दुर्लभ सो ऐसा सुखनै पाइ कौन पुरुष मगन न होइ? होय ही होय। सो कैसी है वे स्त्री अरु कैसा है वाका खाविंद। सो स्त्रीका तौ अंतहकरन परनाम कैसी बनी। अरु पुरुष मोह मदिरा करि मूर्च्छित भया तातै ई अन्यायका मैठ वानै कौन समर्थ है? कोई नाहीं। तीसूं आचार्य कहै है म्हें ई विपर्जय देखि मौन करि तिष्ठो याका न्याय विधाता ही करनेकूं समर्थ है। अरु वहीं दंड देनेकूं समर्थ हैं हम नाही सो ऐसा गुरानै परलोक विषै भला फलसू वोछै हैं सो वे कोइ करै हैं। जैसे कोई पुरुष वांझके पुत्रका आकाशके फूरलस्हं सेहरा गूंथ आप मुवा पाछै वाका अवलोकन किया चाहै हैं वा जस कीर्त्तिकूं सुन्या चाहैं हैं तिहि सादस्यनवाका फल स्वरूप जांननां बहुरि वे परस्पर प्रशंसा

करै है थै म्हांके सतगुरु हौ वे कहै है । के पुन्यात्मा श्रावक हौ । कौन दृष्टांत जैसे ऊंटका तौ व्याह अरु गंधर्वगीत गावने वारे वे तौ कहै है बींदका स्वरूप कामदेव सादृस्य बन्या है अरु वे कहे हैं कैसा किन्नर जातके देवके कंठ सादृश्य कंठसूं राग गावै है । या सादृश्य श्रावक गुराकी शोभा जाननी । इहां कोई कहसी कै थै अपना गुराकी दशा बरनई । अरु श्वेताम्बर आदि अन्यमती-न की दशा क्यों न बरनई वे तौ पान या वीच भी खोटा है ताकुं कहिये है भाई ए न्याय तौ नीकै होसी जद ब्राह्मणाके ही हाथकी रसोई निषद्ध छै । तौ चंडाल दिकके हाथकी रसोई लीन कैसे होसी । ऐसा जांयनां इहां कोई प्रश्न करै ऐसे नाना प्रकारके भेष कैसे भये ताकूं कहिये हैं जैसे राजाके सुभट वैरीके शस्त्रप्रहार करि कायर होय भागैं पाछै राजा याकूं भाजे जान नगरमैं आवना मनै किया अरु बाहरि ही सौ कैईको कालौ मुख करि माथा मूढ ताकौ या कही कै गधै चढाई नगर दौल्या फेरौ, कैहीकूं लाल कपड़ा पहिराये, कैही कूं चुरिया पहिराई, कैही का रांड़ स्त्रीका सा भेष किया, कैहीका सुहागल स्त्रीका भेस किया है कै इनमैं भीख मंगाई इत्यादि नाना प्रकारके स्वांग कराय नगर बाहरै काढ़ दिया। अरु जे रन विषै बैरीकौ जीत आये मुजरा किया ताकूं राजा नाना प्रकारके पद दिये अरु मुखसूं बड़ाई कीनी तौ यहां दृष्टांतके अनुसार दृष्टांत जाननी । तीर्थंकरादि देव त्रिलोकीनाथ सोई भया राजा ताके भक्त पुरुष भगवानकी मस्तक ऊपर आज्ञा धार मोह कर्म सूं लड़वानै ज्ञान वैराग्यकी फौजि साथ ले वनवासी होय मोहसे लरयौ । पाछै मोहकी विषय कषाय फौज करि ज्ञान वैराग्य फौजकौ

लुटाई अरु आप कायर होय भागे ताकूं भगवानकी आज्ञा अनुसार विधाता कर्मनै गृहस्थपना रूप नगरमें तौ आवा नाहीं दिया वाह्य ही राख्या अरु रक्तांवर पांटावर स्वेताबर जटाधारी कनफटा आदि नाना प्रकारके स्वांग बनाये अरु जे भक्त पुरुष मोहकर्मकी जयनै प्राप्त भये ताकौं अर्हंतदेव नाम नगरका राजा किया ताकी अपनै मुखकरि बहुत बड़ाई कीनी और भी अनागत काल विषै तीर्थंकर होसी ऐसा याका स्वरूप जानना। ऐसा ग्यारा प्रतिमाका स्वरूप विशेषपनै कह्या।

आगै रात्रि भोजनका स्वरूप वा दोष वा फल कहिये है। प्रथम तौ रात्रि विषै त्रस जीवाकी उत्पत्ति बहुत है सो बड़ा त्रस-जीव तौ डांस माच्छर पतंग आदि आंख्यां देखिये है, जो महा छोटा जीव दिन विषै भी नजरां नाहीं आवै है ऐसा संख्यात असंख्यात उपजै है। अरु वाका स्वभाव ऐसा होय सो अग्नि विषै तौ दूरसेती भी आई झुकै है। ऐसा ही कोई वाके नेत्र इन्द्रियका विषय पीड़ै है। बहुरि सरदी बिगटा रस सजाति विषै बेठा हुवा चिपटी जाय है अरु कौड़ि मकोड़ि कुंथुवा कसार मकड़ी विसमरा आदि त्रस जीवाका समूह छुधाकरि पीड़ा हुवा वा नासिका नेत्र इन्द्रीका पीड़ा हुवा भोजन सामग्री विषै आई प्राप्त होई है। अथवा भोजन सामग्रीकूं किया पाछै घनीवार हुई तौ वही विषै मर्यादा उलघै पाछै घना त्रस जीवाका समूह उपजै। पाछै वही भोजनकूं रात्रिनै कांसा विषै धरै पाछै ऊपरसुं माखी माछर टाड़रा कीड़ी मकोड़ी जाला विसमराका बच्चा आदि आई पड़ै है वा कणसली सर्पका बच्चा आय पड़ै है अथवा सारा कासा विषै

तालासूं चड़ि आवै है अथवा जटी तटी ऊठीसूं कासा विषै आई डूबै है और निशाचर जीवनकूं रात्रिनै विशेष सूझे है। तातै रात्रिनै गमन घना करै है। सो गमन करतै भोजन सामग्री विषै भी आई जाई है। पाछै ऐसा जीवाका समूहनै कोई पशु सादृश्य मनुष्य निरहै हुवा खाई है तो वह मनुष्यामैं अघोरी है। पाछै नाना प्रकारके जीवनै भखटा करि नाना प्रकारके रोग उपजै वा इच्छा छीण परै है। जैसा जैसा जीवन कै मासका जैसा विपाक होय तैसा ही रोग उत्पन्न होइ। कोडि उपजावै कोडि होइ शूल होइ सकोदर अतीसार होइ अरु पेटमै गडारी परि-चलै वाल निसरै वाई पित्त कफ उपजै इत्यादि अनेक रोगकी उत्पत्ति होय। अथवा अंधा होइ बुद्धि करि रहित होइ सो ऐसा दुख तौ इही पर्यायमै उपजै। पाछे पाका फल करि अनंत सर्पादिक खोटी पर्याय विषै जन्म पावै है परम्पराय नरकादि जाई है। ऐसे ही नरकसूं तिर्यंच तिर्यंच सौं नरक केताईक पर्याय नर्कका धारी पाछै निगोद माहीं जाइ परै है। पाछै उहांसूं दीर्घकाल पर्यंत भी निकसवौ दुर्लभ है और भी दोष कहिये है। कीड़ी-भक्षन तैं बुद्धि नाश होइ अरु जुवा भक्षन तै जलोधर रोग उपजै, माछी भक्षन तै वमन होइ, बालतै सुरभंग होइ, मकोडी तै कोड़ होइ, भंवरी तै सुन होई, कसारी तै कंपाइ होइ, आंख अंधी होइ। त्रस जीवाका भक्षनमै मांसका दोष लागै १ महा हिंसा होइ २ अपच होय अपचतै अजीर्न होय ३ अजीर्नतै रोग होई ४ तिरखा लगै ५ अरु काम वधै ६ जहरतै मरन होइ ७ डांकनी भूत पिशाच व्यंतरादि भोजन झूठौ करि जाइ। ऐसा पाप करि

नरक विषै पतन होइ। ऐसा दोषनै धर्मात्मा पुरुष सर्व प्रकार करि जन्म पर्यंत रात्रिका खान पान तजौ। एक मांसका रात्रि भोजनका त्यागका फल पंद्रह उपवासका फल होय ऐसे रात्रि भोजनका स्वरूप जानना। अरि दिन विषै ताखाना विषै गुफा विषै वा बांदल विषै आंधी वा धूल्याके निमित्त करि चौहड़े अंधेरा होय ता समय भोजन करिये तौ रात्रि सादृश्य दोष जाननां। भावार्थ–जीव नजर न आवै तौ दिन विषै भी भोजन करना उचित नाहीं। इति रात्रि दोष।

आगै चूल्हा रात्रि न वारिये ताका दोष दिखाईए है। प्रथम तौ रात्रिनै कोई जन्तू सूझै नाहीं अरु छानेमै तौ त्रस जीवाका समूह है अरु आला सूंकाकी खबर परे नाहीं, जो आला छौना होई ता विषै पइसा पइसा भरा गिडोलानै आदि दै बालका अग्रभाग संख्यातका वा भाग पर्यंत सैकड़ा हजारां लाखां असंख जीवाका समूह पावनै है। सो सर्व चूल्हा विषै भस्म होयजाय। अरु लाकड़ी बालिये तौ वा विषै भी अनेक प्रकारकी लट वा कीड़ी व कनसला व अलीखा आदि बहुत त्रस जीवका समूह होय है। भावार्थ–घनी तरह लाकड़ी तौ बीधी होय है ता विषै तौ जीव अगिनित है ही अरु लाकड़ी पोली होय है ता विषै कीड़ी मकोड़ी मकोड़ा उदेई कामला सपली आपैस जाई है। अरु जेठमासका निमित्त पाइ सरदी होय तौ कुंथिया निगोद आदि जीवकी उत्पत्ति होय पाछै वैसाही बली तानै बालिये तौ वाके जीव दग्ध होंय। ता पापीकी काई पूछनी। बहुरि चूल्हा विषै उस्नताका निमित्त पाइ वा छिद्र आदि आश्रयका निमित्त पाइ कीड़ी मकोड़ी आदि त्रस जीव रहैं हैं। सो सब

चूल्हा विषै होम्या जाइ है। बहुरि माखी माकड़ी आदि जीव रात्रि नै ऊपर छत विषै व ठाट बिषै विश्राम लै। अरु पाछै रात्रिनै चूल्हाका धुवाँ करौ होय सारा घरमै आताप फैलै ताका निमित्त करि हजारा जीव दौड़ा दौड़ा फिरै है। अरु चूल्हा विषैं वा हाँडी विषै वा आटा विषै वा पानी विषै आई पड़े है तौ सब ही प्रानांत होइ। अरु अग्निका झार व लपट दूर ही थकी पतंगा डांस माछर आई चूल्हामै होम होई और रात्रिनै आटा सीधा विषै इली सुलसुली कुंथिया होय अरु कीड़ी मकोड़ी ईला आदि आप ही चड़ि आवै है। अरु घी तेल मीठा विषै जीव आन पड़े है। सो वे छोटा जनावर दिन विषै भी दीसै नाहीं तौ रात्रि विषै वा जीवका देखवांकी काई गम्य। तातै आचार्य कहै है ऐसा दोष संयुक्त आहार कैसा किया जाय तातैं रात्रिका चूल्हा बालना मसानकी अरथीसूं भी अधिक कह्या है। मसान विषै तौ दिननै एक मुरदा हौमिये है अरु चूलै विषैं अगिनित जीवता प्रानी हौमिये है। तीसूं रात्रि चूल्हा बालवाका महापाप है अरुता विषै चतुर्मास विषै कोई महापापी वाले है तौ वाके पापकी मर्यादा हम नाहीं जानै केवलज्ञान गम्य है। अरु केई धर्म्मात्मा पुरुष तौ ऐसा है। सो रात्रि विषै दिवा भी जोवै नांही। ऐसे रात्रीके चूल्हा वालनैका दोष कहा।

आगै अनछान्या पानीका दोष कहिये है। लाख कोड़ि बेडां तुरंतके छान्या पानी डारिये तातै भी एक इन्द्री जीवके मारवेका पाप घना है, तासूं असंख्यात गुनावे इन्द्रीके मारवे का पाप है तासूं असंख्यात गुना ते इन्द्रीकौ। तासौ असंख्यात गुना चौ इन्द्री तासूं असंख्यात

गुना असैनी पञ्चेन्द्रीका तासूं असंख्यात गुना सैनी पञ्चेन्द्री मार वा का पाप है। सो अनछान्या पानीका एक चुल्लू विषै वे इन्द्री ते इन्द्री, चौइन्द्री, पञ्चेन्द्री, सैनी असैनी लाखां कोड्या तौ आकाशके विषै पेहराकी रेन **आड्या सांड्या** गमन करैं ता सादृश्य पंच प्रकारके त्रस जीव पावजै हैं। सो नीका द्रष्टि करि देखिये तौ ज्योंका त्यों नजर आवै। बहुरि तासूं छोटा जीव ताही के संख्यातवै भाग सूक्ष्म अवगाहनाके धारक असंख्यात पांच प्रकारके त्रस और भी पावजै है। ऐक ऐक नातनाका छिद्रमैं असंख्यात त्रस जीवा युगपत पानी छानिती वार निकर जाइ है। इन्द्रिय गोचर नाहीं आवै, अवधिज्ञान व केवलज्ञान गम्य है। बहुरि कैईक पानी छानै भी हैं। अरु विलछानी जहांका तहां नीका नाहीं पहुंचावै है। तौ वह पानी अनछान्या ही पिया कहिये भावै, तीसूं एक चुल्लू अनछान्या पानीका अपनै हाथसूं डालौ वा वरतौ वा पीवौ वा औरनै प्यावो ताका पाप एक गांव मारा कैसा है। ऐसे हे भव्य तूं अनछान्या पानीकौ दोष जान अनछान्या पानी पीवौ भावै लोहु पीवौ अरु अनछान्या पानीसौ सापड़ौ भावै लोहुसौ सापड़ौ। लोही बीचि भी अन छान्या पानी का विशेष दोष कहै। अरु लोहु तौ निंदनीक है ही। अरु अन छान्या पानीका वरतवा विषै असंख्यात त्रस जीवांका घात हो है। अरु जगत विषै निंद्य है, महा निर्दई पुरुष याके पाप करि भवि विषैं रुलै है नर्क तिर्यंचके क्लेशने पावै हैं, संसार समुद्रमांही सूं निकसना दुर्ल्लभ होय है। या समान पाप और नांही है घना कहा कहि ये जैनी पुरुषनका तीन चिन्ह है। एक तौ प्रतिमाके

दर्शन किया विना भोजन न करै अरु अनगालौ जल न पीवै और रात्रि विषै भोजन नाही करै। या मैं सूं एक भी कसर होई तौ जैनी नाहीं अन्यमती शूद्र सादृश्य है। तातै अपनी हेतका बांछा करि पुरुष शीघ्र ही अनगाल्या पानीकौ तजौ इति अनगाल्या पानी दोष सम्पूर्ण।

आगै सात व्यसन विषै छह व्यसनानै छोड़ि जुवाका दोष वर्णन करिये है। छह व्यसनका दोष प्रगट दीसै है जुवाका दोष गूढ है। ताकूं छह व्यसनसूं अधिक प्रगट दिखाइये है। जुवामै हार होइ तौ चोरी करनै परै चोरीके धन आये परस्त्रीकी वा परस्त्रीका संजोग मिलै तब वेश्या यादि आवै। वेश्याके घर आये सुरापान करै, वाके अमल मै मांसकी चाह होइ. मांस चाह भयै शिकार खेला चाहै। ततै सात व्यसनका मूल जुवा है और भी धना दोष उपजै है। जुवारी पुरुषका घरकी जायगा आकास ही रह जाय है, ईलोक विषै अपजश होइ है, पैठि विगरै है विश्वास मिटै है, राजादिक करि दंडकौ पावै है, अनेक प्रकारके कलह क्लेश बढ़ै है—अरु क्रोध लोभ अत्यंत बढै है। जनै जनै आगै दीनपना भासै है-इत्यादि अनेक दोष जानना पाछै ताके पाप करि नरक जाई है जहां सागरा पर्यंत तीव्र वेदना उपजै है। तातै भव्यजीव हैं ते दुष्टकर्म शीघ्र छोड़ौ। पंच पांडव आदि जुवेके वशीभूत होय सर्व विभूति व राज्य खोया ऐसा जानना।

आगै खेतीका दोष कहिये है। असाढ़के महिना प्रथम वर्षा होइ ताके निमित्त करि पृथ्वी जीवमई होइ जाइ। ऐसे

जीव बिना एक अंगुल भूमिका न पाइये ता भूमिकाकूं हल करि फेरिये सो भूमिका विदारवां करि सर्वत्र स्थावर जीवनै प्राप्त होइ। फेरि पूर्ववत् नवा जीव उपजै पाछै दूजी वरसा करि वे भी मरनकूं प्राप्त होइ। फेरि जीवाकी उत्पत्ति होइ फेरि हल करि हन्या जाइ ता भूमिका विषै बीज बोवै पाछे सर्व जायगा अन्यके अंकूरा अनंन निगोद रासि सहित उत्पन्न होइ। फेरि वर्षा होइ ताकरि अगिनित त्रस थावर जीव उपजै फेरि निंदवा करि सर्व जीव हन्या जाइ, फेरि वर्षा करि ऐसी ही और उपजै। फेर धूप वा नुननी करि मरै ऐसे ही चतुर्मास पूर्ण होय। पाछै सर्व खेती त्रस थावर जीवा करि आश्रित ताकूं दांतलादि करि काटिये। सो काटिवा करि सर्व जीवदल मल्या जाइ ऐसे तौ चतुर्मासकी खेतीका स्वरूप जानना। आगै उनारीकी खेतीका स्वरूप वा दोष कहिये है। सो सावनका महिनासूं लगाइ कातिक महिना पर्यंत पांच सात वार हल कुसिया फावड़ा करि भूमिकानै आमी सामी चूर्न करै पाछै वाके अर्थ दोय चार वर्ष पहली गुवार रोडीका संचय किया था। अथवा दोय चार वरसका एकठी हुई मोललै खेत विषै नाखै। सो वे रोडीका पापकी कांई पूछनी जेती वह रोडीकौ बोझ होय तेताही लटादिक त्रस जीव जानना। एक दोय दिनका गोबर पड़ा चोंहडे रह जाइ ता विषै लाखां कोडयां आदि अगनित लटादि त्रस जीव किल किल करते आंख्यां देखिये है। तौ दोय चार बरसका संचय किया सैकड़ा गाड़ा भर गोबर विष्टा आदि अशुचि वस्तु ऊपरा ऊपर एकठी हुई सासती सरदी सहित ता विषै जाय पेखै तौ वाका निर्दयीपनाकी

कहा बात। पाछै वा खातकूं सारा खेत विषै बखेरता ऊपर सारे वखट फेरै ता पीछै बीज बोवै। पीछे मगसिरका महिनासूं लगाई फागुन पर्यंत अनछान्या कुंवा बावड़ी तलाबका जल करि दिनप्रति ताईं सींच्यां करै सो वा जल कर पाहिला त्रस थावर जीव तौ प्रलयनै प्राप्त होइ नवा सरदीका निमित्त करि त्रस थावर जीव फेर उपजै ऐसौ ही दिन प्रति चार पांच महिना ताईं पूर्व पूर्व जीव मरते जांय अपूर्व अपूर्व जीव उपजते जांय। ऐसे होते सन्ते अनेक उपद्रव करि निर्विघ्नपनै खेती घरमैं आवै। वा न आवै कदाचिद आवै तौ राजाका बीजकी दैनी चुकै वा न चुकै सो फल तौ जाकौ ऐसा अरु पाप पूर्वे कह्या तैसा। असंख्यातासंख्याता त्रस जीव अनंतानंत निगोद राशि आदि थावर जीवका घात एक नाजका कनकै वंदा आवै है। भावार्थ—ऐसी ऐसी हिंसा करि एक एक नाजका कना पैदा होय है। बहुरि केई या जानैगा खेती करती वार तौ सुखी होयगा ताकौ कहिये है। जहां पर्यंत खेती करनैका संग्रह हो है जहां पर्यंत राक्षस ते दैत्य दरिद्री कलंहरवत् ताका स्वरूप जानना अरु परभव विषै नरकादि फल लागै है। तातै ज्ञानी विचक्षण पुरुष खेतीका किसब छौड़ौ। ऐसे खेतीका दोष जानना सो प्रत्यक्ष चौड़े दीसै हैं ताकौ कहा लिखिये। अरि कुंवा बावड़ी तलाब खनाइवे का महल अटारी बनावनेका खेती हवेलीके पापसूं असंख्यात अनंत गुना पाप जानना। इति खेती धरती दोष।

आगै रसोई करवाकी विधि कहिये है। सोई रसोई करवा विषै तीन बात करि विशेष पाप उपजै विना सोध्या

अन्न, विवेक बिना गाल्या जल, अरु विना देख्या बलीता (ईंधन) ऐ तीन पाप कर रसोई उपजै सो रसोई मांस समान जानना। अरु ये तीन पाप रहित रसोई निपजै सो रसोई कहिये है। ताका स्वरूप कहिये हैं। प्रथम तो नाजका अगाऊ संग्रह न करना। दस दिन पन्द्रा दिनका पांच दश जायगा अवधि देख मोल ल्यावै। पीछे ताको दिन विषै नीका सोध बीन दिन ही विषै ताबड़ा माहें कपड़ासूं पोंछे तब पिसावै। पाछे लोह पीतल बांस आदि चाम बिना चालनीसूं चाल लीजै। ऐसे तो आटाकी क्रिया जाननी। बलीता छानानै फौड़ काढ फार जीव रहित प्रासुक लकड़ी वा कोइले ए बलिता ताकी शुद्धता है। अरु छाना गोबर रसोई विषै सर्व प्रकार अलीक है। अरु ता विषै जीवकी उत्पत्ति भी बिसेष है। अरु अंतर मुहूर्त सौ लगाई जहां पर्यंत वा विषै सरदी है। तहां पर्यंत अनेक त्रस जीव उपजै हैं। पाछे गोबरका सूकवा करि सारा नासनै प्राप्त होइ है। सूका पीछै बड़ा बड़ा ताका कलेवर पईसा पईसा भरि गिडाला आदि संख्या देखिये हैं। पाछे फेर चतुर्मास आदि विषै सरदीका निमित्त पाइकर असंख्यात कुंथवा लट उपजै हैं। तातै छानाका बलीता तौ हिंसाका दोष कर सर्व प्रकार ही तजनी। अरु लकड़ीका कोइला ग्रहनैं योग्य है। सो कोइला तो सर्व प्रकार त्रस थावर जीव रहित प्रासुक है। तातै मनुष्यनै बालना उचित है। तातै बुद्धिवान पुरुष विशेष पनै बीधी सूखी लकड़ी फार अवलि देखकर गृहन करै। या विषै आलस प्रमाद राखै नाहीं, या विषै पाप अगिनित अपार है। सो विवेककर तछ लागै है। तातै धर्मात्मा पुरुषनै बलीताकी सावधानी राखनी। पोली

लकड़ी विषै कीड़ी मकोड़ी देही कांनखजूरा सर्प आदि अनेक त्रस जीव पैसजाई हैं। सो विना देखी बालिये तौ सर्व भस्म होय। सो पार्श्वनाथ तीर्थंकरके समै कमठ निर्दय हुवा पंचाग्नि तपै। तहां अधजल्या लकड़ी पोली विषै सर्पनी अर्द्ध दग्धि हुई ताकूं पार्श्वनाथ स्वामी अवधिज्ञान कर बलता देख्या ताकूं नवकार मंत्र सुनाई देवलोकनै प्राप्त किया। ऐसे बिना देख्या बलता ता विषै जीवका दग्धि जानना घनी कहा कहिये। बहुरि तलाव कुंड तुच्छ जलकर बहती नदी अरु कुंवा बावड़ीका पानी तो छान्या हुवा भी अयोग्य है। या जल विषै त्रसकी रास इन्द्रिय गोचर आवै है। तातै जा कुवांका पानी चड़स करि छटता होय ताका जल विषै जीव नजर नाहीं आवै। वा जलको कुवा ऊपर आप जाय व आपका प्रतीतका आदमी जाय दोवड़ नातना गाढ़ा गुठलीकर रहित वा जामें जलकौ ग्रास हुवा एक पल भी रहै ततकाल ही ऐके साथ छनन जाय। अनुक्रम सौं धीरे धीरे छनै ऐसा नातनांसूं जल छानिये ताका प्रमाण। जी वासण विषै छानिये ताका मुंहसूं तिगुना लांबा चौड़ा डयोड़ा सो दोबड़ो बड़ो किये समचौकोर हो जाय ऐसा जानना। अथवा बिना छान्या ही कुंवासो भरि डेरै लै जाय। युक्ति पूर्वक नीका छानना, छानती बार अनछान्या पानीकी बूंद भी गिरै नाहीं वा अनछान्याकी बूंद छानै पानीपै आवै नाहीं ऐसे पानी छानिये। अनछान्या पानीके हाथसूं छान्या पानी करि अनछान्या पानीके बासनमें न धरिये।

पीछे छान्या पानीका बासनकुं पकड़िये। दोय वार तीन वार छान्यां पानी करि बासनकूं खोलिये। पाछें वाके मोड़े नातिना दीजिये वा

हाथ विषै बेला बेला लेय छोटा बासनसों बोर बोर पानी छानै अरु वह नातना बेला ऊपर धर बहुर कूपसों पानी काढै फेर वाही भांति छानै जब बासन भर चुकै तब नातना हाथमें करि वानै पानी भर पाल ऊपर लिया लिया आवना नातिना ऊपर धरि धरि धीरे धीरे काढ़िये। पीछे अनछान्याका हाथकुं खोल अगल बगल सूं कोना कूं पकड़ उलटौ करिये। पीछे छान्या पानी करि अविशेष अन-छान्या पानी रह्या ता विषै जीवानी करिये। अथवा जुदी वासना विषै जीवानी करिये। बीचसूं जीवानीकी तरफ चिमठी करि नातिना रखड़िये नाहीं। पीछे चार पहर दिनका व आठ पहर दिनका जीवानी एकट्ठा कर भंवरकलीका डोलसूं जाका वाका जल आया होय तिहि कूंवे पहुंचावै। अथवा भंवरकलीका डोलन होय तो भंवरकलीका डोल बना चरूका लोटासों भी पहुंचे है। वाका पांसानै उलटौ बांध पीछों डोरा अपूटी ल्याव पांच सात अंगुलकी लाकड़ी बांध लोटेके मौठे भीतर आड़ी लगाइयो ताका सहारासूं लोटा सूध्या चल्या जाय, कुंवाके पीदे जल ऊपर लोटा पहुंचै तब ऊपरसूं डोल हिलाय दीजे। पीछे वह लोटेसूं लाकड़ी निकस औंधा होय ऊपर तै खैंच्या हुवा चल्या आवै ऐसे पहुंचावना। अथवा इ भांति भी न पहुंच्या जाइ तो सारा प्रभात सर्व पानीका जीवनी एकट्ठा कर पानी भरका बासन विषै घालिये अरु पनहारीकुं सौंपिये पनहारीनै पानी भरवाका महीना सिवाय टको दोटको बढ़ाइये अरु वाकुं ऐसा कहिये। जीवानै शुद्धता पूर्वक कुंवा-में नाख दैनी। गैला वा ऊपरसूं कुंवा विषै जीवनै न नाखना कदाच नाख्या तौ तूनें पानी भरवासौ ही दूर करौंगा। ऐसो कहा पीछे

भी दोय चार वार गुपति वाके पीछे जाय कुवा पर्यंत ठीक पाड़िये जे पूर्वे कह्या। ता माफिक जीवानी सुद्ध उरासना ऐसे ही कुंवामें उरासै है ताकौ विशेष पड़ाई दीजिये टका दो टकाकी गम्य खाइये, पापका भय दिखाईये हैं। या भांति जीवानी पहुचावै तिनकुं छान्या पानी पिया कहिये। अरु पूर्ववत् जीवानी न पहुंचे ताकों अनछान्या पानी पिया कहिये। वा शूद्र साद्दस्य कहिये। जिनधर्म्म विषै ही तो दया ही का पालना धर्म्म है दया बिना धर्म्म नाम पावै नाहीं। जाके घट दया है तेई सत्पुरुष भवसागर तिरै हैं। ऐसे पानीकी शुद्धता स्वरूप जानना। बहुरि मर्यादा उपरांत आटा विषै कुंथवा सुलसुली आदि अनेक त्रस जीवांकी रास वा सरदी विषै भी निगोद्रास सास्वते त्रसरास उपजै है। ज्यों ज्यों मर्यादा उलंघ आटा रहै त्यों त्यों अधिक बड़ी बड़ी अवगाहना-का धारक आटा विषै कनक सारखा त्रस जीव उपजै है। सो प्रत्यक्ष ही आंख्या देखिये है तातें मर्यादा उलंघ्या आटा अरु बा-जारका तुरत पिसाया भी अवश्य तजना, जेता आटाका कनका ते ता ही त्रस जीव जानना। तातें धर्म्मात्मा पुरुष ऐसा देखिके आटाका भक्षन कैसे करें। बहुरि चामका संयोग करि घृत विषै अंतर मुहूर्तसूं लगाय जहां पर्यंत चामके सीधड़ामें घृत रहै तहां पर्यंत अधिक अधिक संख्याता त्रस जीव उपजै है। अरु चर्मका अस्पर्स करि महा निंद्य अभक्ष होय है। ताका उदाहरण कहिये है। काहू एक सरावगी रसोई करवाके समै कोई सरधानी पुरुष हाथ पैसा टकाका घृत बाजारसों मंगाया तब वह सीघ्र वाका घृत छुडायवाके अर्थ एक अकल उपजावता

हुवा। सौ बजारमांसूं नवा जूता मोललें वामें घृत घाल वाकी रसोई विषै जाय धस्यो तब वह रसोई छोड़ उठवा लागा तब यानै कही रसोई क्यों छोड़ो हौ। थे पूर्व या कही थी म्हाकै तो चर्मके घृतका अटकाव नाहीं तातै बजारका महाजनोंके तो काचा चर्म्मके बासनमें घृत था। मैं थांके अटकाव न जान पाका खालका जूता विषै घृत ल्याया अरु थानें सौंप्या तौ म्हानै काहेका दोष मैं या न जानी थी के पूर्वोवाली क्रिया है। पूरव्या मोकला अनछाना पानीसों तो साफ है। अरु सीसा साटस्य सोई उज्जल रसोईका बासन राखै। अरु बड़ा बड़ा चौका देई कोई ब्राह्मन आदि उत्तम पुरुषाका स्पर्श होई तो रसोई उतर जाय। पाछै कांसामें मांस लै राजी होय होय खाय। तातै त्योंही चामका घृत महा अभक्ष्य जानना। ऐसा सुनते प्रमाण चामका घृत तैल, हींग, जल आदि वस्तुका त्याग वे पुरुष कीया। ऐसे और भव्य जीव याकौं त्याग करौ। अब रसोई करनकी विधि कहिये है। जहां जीवकी उत्पत्ति न होई ऐसा स्थानक विषै खाड़ा खोवरा रहित चूनाकी वा माटीकी साफ जायगानै तौ जीव जंतु देख ऊपर चन्दोवा बाँधि गारिका वा लोहका चूला धरिये। चूनाकी जायगा तो जीव जंतु देख कोमल बुहारी-सों बुहार दे फिर तुक्षपानी करि जायगा आला बस्त्रसेती पोंछ नाखै वा धोय नाखै और गारकी जायगानै तुक्ष शुद्ध माटीसेती दयापूर्वक लिपाईये है। ता विषै उजला कपड़ा पहर तुक्ष पानीसूं हाथ पांव धोईये। सर्व बासनोंकूं मांज रसोई विषै धरिये। पूर्वे कह्या ऐसा आटा, सीधा, दाल, चांवल, बलीता सोधि रसोई विषै लै बैठिये। रसोई विषै लागै जेता पानीकी मर्यादा दोय घड़ी हीकी है। तातै

प्रासुक पानी तै रसोई करना उचित है। प्रासुक पानीको दोय पहिर पहिले बरताय देना। आगे राख्या यामें जीव उपजै है जीवानी याकौ होय नाहीं। ऐसे दयापूर्वक क्रिया सहित रसोई निपजे ताकौ उज्जल कपड़ा पहर हाथ पांव धोय पत्राकूं वा दुखित जीवकूं दान देई। राग भाव छोड़ चौकी ऊपर भोजनकी थाली धर थाली ऊपर दृष्टि राखे, जीव जंतु देख मौन संजम सहित भोजन करै। ऐसा नाहींकै दया बिना अघोरीकी नाईं आप तौ खायले पात्र व दुखित जनवारनै आवै आप उठि जाय। ऐसा कृपण महा रागी महा रोगी विषई दंड़ देने योग्य है। तातै धर्मात्मा पुरुष है ते विधिपूर्वक दान दें, पीछे भोजन करै, ऐसे दया सहित रागभाव रहित भोजनकी विधि कही। बहुरि रसोई जीमे पीछे ई विषै कूकरा बिलाई हाड़ चाम मैले वस्त्र सूद्र आय जाय। वा बिशेष औंठ (जूंठन) पड़ी होय तो प्रभात आय वा परसौ आदि हमेसा रसोई कर वा समय पहली चूलाकी राख सर्व काढ़ी नाखिये। नजरासों जीवजंतु देखि कोमल बुहारीसे बुहार देई पीछे चौका दीजे, चौका दिये विना ही राख फेंक कर बुहारी देइ रसोइ करिये विना प्रयोजन चौका देना उचित नाहीं। चौका विषै जीवाकी हिंसा विशेष होवै है। अरु अशुभ जायगा विषै रसोई करिये तो चौकाकी हिंसा बीच भी अक्रियाके निमित्तकरि राग भावका पाप विशेष होय है। तातैं जामै थोड़ा पाप लागै, सो करना। धर्म दयामय जानना दया विना कार्यकारी नाहीं। अरु केई दुर्बुद्धी नाज लकड़ीको धोवै है। तवेला चरू तवा आदि बासन ताका पैदा धोय आरसी समान उज्जल राखै है। मौकला पानी सोसा पड़े वा चौका दै है। स्त्रीके हाथकी

रसोई नाखाइ है । नाना तराकी तरकारी मेवा मिष्टान्न दही, दूध, घृत, हरित काय सहित बार बार भोजन बनवावै है । पीछें राजी होय होय चार बार तिर्यचकी नाईं पेट भरै है । अरु या कहै है मैं बड़ा क्रिया पात्र हूं, बड़ा मैं संजमी हूँ ऐसा झूंठा डिंभधारी धर्म्मका आसरे वापरा भोला जीवांने ठगै है । जिनधर्म विषै तौ जहां जहां निश्चय एक रागादिक भाव छुड़ावनेंका उपदेश है । और याहीके वास्ते अन्न जीवकी हिंसा छुड़ाई है । सो इन पापी राग भाव व अन्य जीवकी हिंसा अपूठा बंधाय दीनी तातैं जा रसोई विषै ज्यों ज्यों रागभाक्की वा अन्य जीवाकी हिंसाका निमित्त नाहीं होवै है, सोई रसोई पवित्र है जा विषै ऐ दोष बँधें सोई रसोई अपवित्र है ऐसा जानना बहुर कुलिंग्या आयनां विषय पोखवाके अर्थ धर्म्मका आसरा लेय । अष्टांनका सोलाकारन दस-लाक्षनी रत्नत्रय आदि पर्व दिना विषै आक्षा आक्षा मन मान्या नाना प्रकार महा गरिष्ट और दिव विषै कबहु मिलै नाहीं । ऐसा तो भोजन खाना अरु चोखा चोखा, वस्त्र आभूषण पहिरना ताका उपदेश दिया पाछें ऐसे ही आय विषय पोखनें लगे तो गृहस्थानिकूं काहेको मनै करैं । सो भादवांके पर्व दिना विषै कखायकूं छोड़ना । संजमको आदरना जिनपूजा, जिन शास्त्राभ्यास, जागरनका करना दानका देना, वैराग्यका बंधावना, संसारका स्वरूप अनित्य जानना । ताका नाम धर्म है, विषय कषाय पोखनेंका नाम धर्म कदापि नाहीं झूंठा मान्या तो गरज काई वाका फल खोटा ही लागसी । आगे कंदोईकी वस्तु खानेंका दोष दिखाईये है । प्रथम तो कंदोईका स्वभाव निर्दई होइ है । पाछें लोभका प्रयोजन परै ताकी विशेष

करि दया रहित होय है ताका किसब ही महा हिंसाका कारन है सो विशेषपनै कहिये है। नाज सस्ता होय सो मोल ल्यावै सो सस्ता तो बीधा घुना पुराना ही मिले सो बीना सोधा बीना नाजनें रात बिना देखें पीसै पाछें वह आटा बेसन मेदा महीनों पड़ा रह जाय ता विषैं अगिनति त्रस जीव उपजै है। पीछे वैसा तो आटा अन छान्या मसकका पानी ताकरि उसने बीधा सूल्या आला गीलाभटी विषै रातनै वलीता बालै। अरु चामका घना दिनका वा सज्या घृत विषै वानें तलें। अरु रात्रितें अग्निका निमित्त करि दूर सो डांस, माक्षर, पतंग, माखी मट्टीमें व कड़ाहीमें आय आय पड़ै व तपत धुवांके निमित्त करि अनेक जीव मकड़ी बिसमरा कानखजूरा भरी कड़ाहीमें परै। पाछे वह मिठाई पकवान तुरत ही तो सारा बिक जाय नाहीं। अनुक्रमसों बिकै सो बिकता बिकता महीना पन्द्रह दिन दो महीना पर्यंत पड़ा रहि जाय। ता विषै अनेक लट ईला आदि परि चालै। अरु अस्पर्श सूद्रकूं वह मिठाई बेंचै ताकी मीठी जूंठी मिठाई पाछी अपना वासनमें डार लै है। अरु धनाक दोई कलारि खत्री आदि अन्य जाति होय है। ताकी दया कहा पाईये। अरु कोई वैष्य कुलके भी कंदोई होय सो भी वा सादस्य जानना अरु जल अन्न नून मिलाय घृतमें तलै सो वह समान ही है। संसारी जीवानै थोड़ा बहुत अटकमें राखनैके अर्थ सखरा निखरीका प्रमाण बाधा है। वस्तू बिचारता दोन्यों एक है जे कोई जैनी कुल विषै रातनै अन्नका भक्षण छोड़ना अरु फलाहार आदि राख्या तो काई वह रात भोजनका त्यागी हुवा? यदि रात्रिकी परवानगी नहीं देसी तों अन्नादि सर्व ही

वस्तुका भक्षण करना, याकै खाया बिना तो रहौय नाहीं। तातै अन्नकी वस्तू छुड़ाय मर्यादामें राख्या अन्नका निमित्त तौ रंकादिकके भी सास्ता पाइये। दूध पेड़ादिक निमित्त कोई पुन्यवानके कोई काल विषै पाइये है। तातें घनी वार घनी वस्तुका रात्रिनै संवर होय है। ऐसा प्रयोजन जानना तातै बुद्धिमान पुरुष क्षै, ते असंख्यात त्रस जीवांकी हिंसा करि निपजी अनेक त्रस जीवकी रासि महा अक्रिया सादृश्य अभक्ष्य ऐसी कंदोईकी वस्तू ताकूं कैसे खाय अरु ठग गई है बुद्धि जाकी आचार रहित है स्वभाव जाका। परलोकका भय नाहीं है जाके ऐसा पुरुष कंदोईकी वस्तू खाइ है। तातें अपना जानै हित चाहिये ते पुरुष हलवाईकी वस्तू सर्वथा तजो। बहुरि कोई अज्ञानी रसना इन्द्रीका लोलपी ऐसे कहै है। कंदोईकी वस्तू बजारका वांसना विषै मद्य मांस वापरै। ऐसा गूजर रजपूत कलार आदि सूद्रके घरका दही, दूध, रोटी आदि वस्तू प्रासुक है तातें निर्दोष है सो महा त्रस थावर जीवाकी हिंसा करि निपजी मद्य मांसके वांसन विषै धरी। ऐसी वस्तू प्रासुक निर्दोष होय तो और उपरांत दोषीक वस्तू कैसे होसी हाड़ चामके देषनैका मृतगके सुननैकाई भोजन विषै अंतराइ गीत ऐ तो प्रतक्ष खायवेका कैसा दोषण गिननौ जाते जे वस्तू हिंसा करि निपजी वा अक्रिया करि निपजी सो धर्मात्मा पुरुष कोई आचरै नाहीं। प्रान जावै तौ जावो पन अभक्ष वस्तू खाना उचित नाहीं। दीनपना सिवाय और पाप नाहीं है। तातै जिन धर्म विषै अजाचीक वृत्ति कही है। आगे सहतका दोष दिखाईये है। माखी, खाट या मीठा रस वा जल ओंट विष्टादि मुख्यमें लै आवै। सो वाके मुख्य

विषै वस्तू लालरूप परनवै। पीछें लोभके अर्थ जैसे कीड़ी नांज ल्याय विलमें एकठा करै। पीछें भीलादिक सकल पहुंचे सो वाके सर्व कुटुम्ब परवार सहित नाजसोर ल्यावै। पीछें सर्व कीड़ाका तो संधार होय नाज भील खाये जायँ तैसे ही मछिका त्रष्णाके वशीभूत हुवा लालकूं एक स्थानक थूंकि थूंकरैंक ढाकैं। पीछे ऐसौ होते होते धनी लाल एकत्र होय घना लालके रहनें करि मिष्ट स्वादरूप परनवै ता विषै समय समय लाखां कोड़ना बड़ा अंडा आंख्या देखिये तातैं आदि दै और असंख्यात सूक्ष्म जीव उपजै हैं। अरु निगोदरास उपजै हैं। अरु तिस ही विषै माख्यां निहार करै है ताकौ भिष्टा भी बाही विषै एकठौ होय है। पीछें भील आदिक महा निर्दई वाकूं पथरादि करि पाडैं है। पाछें वाके बच्चा सुधा अरु माहिला अंडाशुद्धा मसल मसल निचोय निचोय रस काढ़ें है। पीछे पंसारी आदि निर्दय अक्रिय खान लेवें हैं। ता विषै माखीकी डीम कोड़ी आदि अनेक त्रस जीव उड़ा है वा चपि जाय है। अरु दो चार बरस पर्यंत लोभी पुरुष संचय करें हैं ता विषै पूर्ववत् जा समय हालकी उतपत्ति भई ता समय-सूं लगाय तहां तांई सहित रहै। तहां पर्यंत असंख्यात त्रस जीव सासता उपजै है। सो ऐसा सहत पंचामृत कैसे हुवा। अपना लोभके अर्थ न जीव कौन कौन अनर्थ न करें। अरु कांई कांई अषाद वस्तू न खाय तातै ए सहित मांस सादृस्य है। मद्य मांस रहित तीनों एकसां है। सो याका खावा तो दूरी रहौ। औषधि मात्र भी याका स्पर्श करना उचित नाहीं तैसे जानना याको औषधि मात्र भी गृहन किया दीर्घ कालका संच्या पुन्य नासनै

प्राप्त होय है। आगे कांजीका दोष कहिये हैं छांछकी मर्यादा बिलोया। पाछें अथौन ताईं की है, पाछै रह्या अनेक त्रस जीव उपजै हैं ज्यों घनाकाल ताईं रहै त्यों त्यों घना त्रस उपजै। जैसे रात बसाका अनछान्या जल अभक्ष है तैसे रात वसाकी छाछ अभक्ष है। सो एक तो यह दोष अरु छाछि विषै राई परै है। राईका निमित्त करि तत्काल छाछि विषै त्रस जीवाकी उतपत्ति होय है। ताही वास्ते राई छाछिका राय तौ अभक्ष है। एक दोष तो यह और छाछ विषै भुजिया परै है। सो एक बिदलका दोष बहुरि छाछि विषै मोकला पानी अरु लून परै है सोई ताका निमित्त पाय शीघ्र ही घना त्रस जीवकी उतपत्ति होय है। सो एक दोष यह पाछै दस पन्द्रह दिन ताईं याकौ भखवौ करै है। जैसे धोवी छीया नीलगरके कुंडका जीव रहै। तैसे कांजीका जीवा रहा जानना। ज्यों ज्यों घना दिन कांजी रहै त्यों त्यों वाका स्वाद अधिक होय है। सो अज्ञानी जीव इन्द्रीयाका लोलपी राजी राजी होय होय खाय जावै ए स्वाद त्रस जीवोंका मांस कलेवरका है। सो धिक्कार है ऐसे रागभावके ताईं। ऐसा अषाद वस्तूकौ न आचरै। ऐसा ही दोष डोहा किरावका जानना। या विषै भी त्रस जीव घना उपजै है। आगे अथाना संधान ल्यौंजीका दोष कहियेहैं। सो लून, घृत, तैलका निमित्त पाय नींबू आदिका अथाना विषैं दोय चार दिन पर्यंत सरदी मिटै नाहीं। सो लून सरदीका निमित्त पाय त्रस जीवांकी उतपत्ती होय है। वा ही विषै मरै है। ऐसे जन्म मरण जहां ताईं वाकी स्थित रहै तहां ताईं हुवा करै। ऐसे ही लौंजी संधान मुरब्बा विषै जीवाको रासका समूह जानना।

सो नष्ट भई है बुद्धि जाकी ऐसे अनाचारी मूढ़ विषई पुरुष आचरन करै। या जानै नाहीं कि यह अनाचारका मूल है ऐसा दोष जान अवश्य तजना योग्य है। अरु सर्वथा न रहा जाय तो आठ पहरकी खावो निर्दोष है। अथवा सूकी आवौली वा आंवलाकी बनाय ल्यो वृथा ही आपनै संसारसमुद्र विषै मति डोवै। आगे जलेबीका दोष कहिये है। सो रात्र विषै मैदानै माहिं वै है सो षटाई उठे तो जीव प्रत्यक्ष नजर आवै हजारां लाखां लटाका समूह उपजै, सो खट्टा मैदानै कपड़ा ऊपर रह जाय। ऐसी लटा सहित मैदानें स्वादके अर्थ घृत कड़ाहमें तलिये पीछे मिश्री खांडकी चासनीमें बौरे है। वहुरि अघोरीकी नाईं रात वा दिन विषै भोजन करै सोय भोजन कैसा सो हमनै जानै सर्वज्ञ जानै है। आगे भेलै जीमणका दोष कहिये। सो जगत विषै औंढि ऐसी निंद्य है सो मन दोय मन मिठाईकी छाव भरी ता माहींसू एक कनका उठाय मुखमें दीजे तो वा मिठाइनै कोई भेटे नाहीं। अरु या कहै ऐतो ओंठी होगई सो ये तजनें योग्य है। अरु ऐ मूढ़ सरागी पीच सात जना। एकै साथ भेलै बैठ भोजन प्रसादी करै सो मोंहढा मांहिसू साराकी औंठ थाली मांहि परै। वा मुखकी लाल थालीमें परै अथवा ग्रासकी साथि पांचू आंगुरी मुखमें जाय सो मुखमें आगुल्यां लालसों लिप्त होजाय फिर वैसा ही हाथसों ग्रास उठाय मुखमें देय ऐसे ही सारेंकी ओंठि कांसा विषै धिल मिल एक मेक होजाय। सो परस्परि सरावै तो वे वाकी औंठि खाय, वौ वेकी ओंठि खाय परस्पर ए हास्य कौतूहलसूं अत्यन्त स्नेह बंधाय वा मनुहारि करि पूर्न इन्द्री पोखै ताके पोखनें पर काम विकार तीव्र होय। मान

अत्यंत बंधै सो भेलै जीववा विषै ऐसा अनेक तरहका पाप उपजै है। तातें सगा भाई, पुत्र, इष्ट मित्र वा धर्मात्मासा धर्मीके भेले जीमना उचित नाहीं। औठ खावाका स्वभाव तौ चांडालकूं कराका है। भेले खावाका स्वभाव ऊंच कुलकैं पुरुषका नाहीं।

आगै रजस्वला स्त्रीका दोष कहिये। सामान्यपनौ महीनाके माहिं वाकी जो निस्थांन माहिंसूं ऐसो निन्द रुधिर विकार-समूह निकसै है। ताके निमित्तकरि मनुष्य तिर्यंच केई पुरुष आंधा होय जाय। व आंखमें फूली परजाय, पापर, बड़ी, मुगोड़ी, लाल होय जाय इ सादिवाकी छाया देखवा कर कपड़ाका स्पर्स करि करवा कर तीन दिन पर्यंत अनेक औगुन उपजै है। याकै जा समय महा पापका उदय है। ब्रहछा समान है याका हाथकी स्पर्श वस्तु सर्व अलीन है। पीछे चौथे दिन वा केई आचार्य पांचवें दिन छटे दिन कहे हैं। भावार्थः—छटे दिन व पांचवे दिन व चौथे दिन स्नान कर उज्जल कपड़ा पहिर भगवानका दर्शन कर पवित्र होय है। मुख्य पनै चौथा स्नान कर भरतार समीप जाय है। कोई मनुष सूद्र समांन याकूं अपवित्र नाहीं गिने है। सो वह भी चांडाल सादस्य है घना कहा कहिये। आगे दूध दही छांछि वृतकी क्रिया लिखिये हैं। गरडी ऊंट आदिका दूध तो अलीन है। या विषै दोहता दोहता त्रस जीव उपजै हैं। अरु गाय भैंसका लीन है। सो छान्या पानीसूं दोहनेवारेके हाथ धुवाईये गाय भैंसको आंचल धुवाय चोख्या मांजा चरू वासन ताकों जल कर धोयवा विषैं दुहाईये। पीछे दूजे वासनमें कपड़ासूं छानिये पीछे दोह्या पीछे दो घड़ी पहिले पी जाईये अथवा दो घड़ी पहिले उष्ण करिये। दो घड़ी उपरांत

काचां रह जाय तो वा विषै नाना प्रकारके त्रस जीव उपजै हैं। तातै दोय घड़ी पहिला गरम करना उचित है। सो प्रथम ही आंबला आदि खटाई बतातां रुप्या दूध विषै डार जमाईये। वाकी मर्याद आठ पहरकी है। आजका जमाया प्रभात दहीकूं कपड़ा विषै बांध वाकी मुगोड़ी तोड़ सुकाई है। पाछै और ही वाका जांवण दै दूध जमाईये। ऐसे दूध, दही आचरनै योग्य है। सुठ वा और खटाई वा जसद रुपाका भाजन कर जम जाय है। कोई दुराचारी जाठ गूजर अन्य जातका दूध दही षाईये है। ते धर्म्म विषै वा जगत विषै महा निंद्य है। और ऐसा सूद्र दहीकूं लोया पीछे तो तुरत अग्नि ऊपर ताता करि जाईये। छांछि अथोंन ताई उठाय दीजे रात विषै राखेय नाहीं। रातकी राखी सवारै अनछान्या पानी समान है। ऐसे दूध देही छांछि क्रिया जाननी अरु केई विषै लोलुपी क्रियाका आसरा लेय गाय भैंस मोल लै निज घर विषै आरम्भ बंधावै है। सो आरम्भमें बढ़ावै नांही ज्यों ज्यों आरम्भ बन्धै त्यों हिंसा वधै चौपद जात राखवेका विशेष पाप है सोई कहिये है सो वह तिर्यंच काय वा बिना अनछान्या पानी पिया बिना न रहै। अरु सूके त्रन छान्या पानीका मेर मिलना कठिन अरु जो कदाचित्त कठिनपनै वाका साधन राखिये तो विशेष आकुलता उपजै, आकुलता है सो कषायका बीज है। कषाय है सोई महा पाप है, बहुरि कदाचित वाकूं भूंखा तिसाया राखये शीत उष्ण मांछरादिके दुखका जतन न करिये तो वाके प्राण पीड़े जांय, मोहवासो वोल्या जाय नाहीं। अरु याकूं सासती कैसे खबर रहै। अरु शीत उष्णादि वाधा मेटे

नहीं, तातै वां वेद नाहीं होय तातै वाका महा पाप राखनै वारेकौ लगै। बहुरि वाके गोवरमूत्र विषै विशेष त्रस जीवकी रास उत्पन्न होय है। अरु ईंधनका निमित्त कर सासता रातदिन चूला बाल्या करै। चूलाके निमित्तकरि छह ग्राम दाह करवां जितनो पाप लगे। तातै ऐसा जान चौपद राखना उचित नाहीं। बहुरि ताकी तेल्ही खानेका विशेष पाप है। घना दिनको दूध गाय भैंसका पेट विषै रहै है। पीछे वे प्रसूत होय अरु ता समय वाके आंचलसूं रक्त साटस्य निचोय काड़िये। वाकूं उश्चकर जमाइये ताका आकार और ही तरहका होय जाय। ताकूं देख गलान उपजै पीछे वैसो निन्द वस्तुको आचरिए तो वाके रागभावकी काईं पूछनौ। तातै अवश्य याका आचरन न करना। छेलीका परसूत भया, पीछे आठ दिवसका अरु गायका दिवस दस पीछे। अरु भैंसका पन्द्रह दिवस पीछे दुग्ध लैना योग्य है, पहली अभख्य है। अरु आधा दुग्ध वाके बच्छाकों छोड़िये। आगे कपड़ा धुवानें वरिगाबनैका दोष कहिये है। प्रथम तो वा कपड़ा विषै मल निमित्त कर लीख, जुवां आदि अनेक त्रस जीव उपजै हैं। सो वे जीव कूंपमेंतें जीका पानीमें नासनै प्राप्त होय। पीछें वे कपराने दरियाव विषै सिला ऊपर पछाड़ पछाड़ धोवै। सो पछाड़ती वार मींढ़क माछला पर्यंत अनगिनत छोटा बड़ा जीव कपड़ाके ऊपर तिमें आवै ताका कपड़ाकी साथ सिला ऊपर पछाड़तां जाय। सो पछाड़िवाकर जीवका खण्डन होय जाय। बहुरि वे तेजीका खारौ पानी दरियाव विषै घनी दूर फैलैं। वा बहती नदी होय तो घना दूर कहता चल्या जाय तो तहां पर्यंत जीवकों

खारा रस पौंहुचै तहां पर्यंत सर्व जीव मृत्यूकूं प्राप्त होय। बहुरि कपराकौं सावन सेती फेर दरियावमें धोवै। सो वैसे ही जहां तांई सावनका अंस पहुंचै तहां तांई दरियावका दरियाव प्रासुक होय जाय। जैसे एक पानीका मटका विषै चिमटी भर लोंग डोंड़ा लायचीका नाखवा कर प्रासुख होय है। तैसे एक दोय कपड़ाका धोयवा करि सर्व दरियावका जल प्रासुक होय है। अरु केई महत पापके धारक सैकरा हजारा थान छदाम अधेलाके वास्ते धुवाय बेंचें है। तो वाके पापकी बार्त्ता कौन कहै। तातें धर्मात्मा पुरुष सर्व प्रकार धोबीके कपड़ा धुवायवौ तौ तजौ याकौ पाप अगिनित है। अरु कदाच पहिरवेका धोये विना न रहै जाय तो गाढ़ा नातना सूं दरियावके बाहर कुंड़ी आदि विषै पानी छान छान पाछै जीवानां दरियाव व कुवामें विलोय कपराकी जूं लीख सोधि धोईये। भावार्थ-मैला कपरानै डील सूं उतठरया पाछूं दस प्रन्द्रह दिन तो पड़ा राखिये। पीछे फेरि भी वा विषै कोई जूं लीख रही होय ताकूं नेत्रकर देखिये अरु कोई नजर आवे ताकूं लेय और डीलके पुरा या वस्त्र ता विषै मेल्हि और ठौर न नाखिये. नाहीं कपड़ा विषै जुँवे मैंलनै कर घना दिनतांई मरै नांही है। आयु पूरीकर ही मरै है बहुरि ऐसी जागा धोइये कि दरियावके बाहर प्रासुक स्थान विषै जल उहांका उहां ही सूष जाय व भूमि विषै सूख जाय अरु जैसे कदाचि वह पनी वहकर अपूठा दरियाव हीमें जाय, तौ अनछान्या पानी सादृश्य ही धोया करिये। तातें विवेकपूर्वक छान्यापानी सूं धोवना उचित है। बैंचवेका कोई प्रकार धोवना उचित नाहीं। आगै रंगावनैका दोष कहिये है। नीलगर छीपा

आदि रंगरेजके दोय चार व पांच दस वरस पर्यंत रंगके पानीका भांड़ा रहै है। पीछै वा विषै कपराके समूह डुबोय मसलि मसलि रंगै है। सो मसल वाकर सारा कुंडका जीव संगराम सल्या जाय है। ता पीछे दरियावमें जाय धोवै है। ऐसे ही पांच सातवार रंगना धोवना करै सो वा धोवा विषै वैसे ही रंगका पानी जहां पर्यंत दरियावमें फैले तहां पर्यंतका जीव बार बार हन्या जाया तातै ऐसा रंगानेका महा पाप जान सत पुरुषनकों रंगावना त्याज्य है। आगेसे तखानाका दोष कहिये है। एक बार मध्यान्ह समय चौड़े ठौर विषै निहार करिये है। सो ततकाल ही सन्मूर्छन मनुष्य और असंख्यात त्रस जीव सूक्ष्म अवगाहनाके धारक उतपन्नि हौय हैं पीछे दोय चार पहरके आतरै नजर आवै है। ऐसा लटादिकाका समूह जेता बह मल हो य तेता जीवाकी रास उत्पन्न होता देखिये है। सो जहां सांसती गूढ सरदी रहै है। अरु ऊपरा ऊपरी दसबीस पुरुष स्त्री मल मूत्र छेंपै वी सीला ताता पानी कुंड़ेसों ऐसा अशुद्ध स्थान विषै जीवाकी उत्पन्नकी कहा पूंछनी। अरु हिंसा दोषकी कहा पूंछनी, तातें ऐसा पाप महत् जान स्वपनै मात्र भी सेतखाना जाना योग्य नाहीं। आगे निगोद आदि पंच थावरके जीवका प्रमाण दिखाईये है। एक खानकी माटीकी डली विषै असंख्यात प्रथ्वी कायके जीव पाईये है। सो निजाराका दाना दानाका प्रमाण देह धरै तौ जम्बूदीपमें मावै नाहीं वा संख्यात असंख्यात दीप समुद्रामें मावै नाहीं। वा तीन लोक वा असंख्यात लोकमें मावै नाहीं। ऐ ताही एक पानीकी बूंदमें वा अग्निके तिनगामें तुच्छ पवनमें व प्रतियेक वनस्पती काइके अग्र भाग मात्र

गाजर, मूला, शकरकन्द, आधा फूल, जुंवारा, कूपल आद नरम वनस्पति विषै तासूं अनंत गुना जीव पाईये हैं। सो ऐसा जान पाचौं थावरकी भी विशेषपनै दया पालनै, विना प्रयोजन थावर भी नहीं बिरोधना। अरु त्रस सर्व प्रकार नहीं विरोधना थावर की हिंसा बीचसे त्रसकी हिंसामें बड़ा दोष है। सो आरंभकी हिंसा बीच निरापराध जीव हतनका महा तीव्र पाप है। आगे दुवा इतका दोषकौ दिखाय है सो दुवायत विषै दोय चार वरस पर्यंत स्याही रहै है। ता विषै असंख्यात त्रस जीव अनंत निगोद ऐसे सासता उपजै है। सो यह नीलगरकै कुंड़ी सादृस्य होय है। ताके हजार पांचसै वैभाग समान एक छोटी कुंडी ही है। या विषैं जीवाकी हिंसा विशेष होय है तातै उत्तम पानीसों स्याही गाल प्रमाण सो लिखावा करै पीछें साझ समय वह स्याही मिहीन कपड़ामें सुखायले। प्रभात फेर भिंजोईये। ऐसे ही नित्य स्याही कर लेना ऐ प्रासुक है। यामें कोई प्रकार दोष नाहीं थोरौ प्रमाद छोड़वाकर अपरंपार नफा होय है। आगे धर्मात्मा पुरुषके रहनेका क्षेत्र कहीये है। जहां न्यायवान जैनी राजा होय नाज बलीता सोधा होय बिकलत्रय जीव थोरा होय। घरकी बा वारली फौजका उपद्रव न होय। सहरके दोन्यूं गढ़ होय जिन मंदिर होय, साधर्मी होय, कोई जीवकी हिंस्या नहोय, बालक राजा ना होय, राज विषै बहु नायक न होंय, स्त्रीका राज न होय, पंच्याका स्थाप्या राज न होय, अनवैस बुद्धिके धारक राजा न होय औरकी अकलके अनुसार राजा कार्य न करै। नगर दोल्यूं बिरानी फौजका घेरा न होय मिथ्यांती लोगांका प्रबल जोर न होय। इत्यादि दुःखनै

कारण व पापनै कारण एसे स्थानक तानै दूर हीतै तजनै योग्य है। आगे श्री जैन मंदिर विषै अज्ञान वा कखाय कर चौरासी आक्षादान दोष लागै, अरु बिचक्षण धर्म बुद्धि करि नहीं लागै ताका स्वरूप कहिये है। श्लेष मानाषै नाहीं हास्य कौतूहल करै नाहीं। कलह करै नाहीं। कोई कला चतुराई करै नाहीं। नख चाम उपाड़ नाखै नाहीं मलमूत्र छेपे नाहीं स्नान करै नाहीं गाली बोलै नाहीं। केस मुड़ावै नाहीं। नोंह लिवावें नाहीं। लोहू कढ़ावै नाहीं। गूमड़ा पीव आदि बिकार नाखै नाहीं। नीला पीला पित्त नाखै नाहीं। बमन करै नाहीं। भोजन पान करै नाहीं ठांड़े दांत माहसूं अन्नादिक अंस काढै नाहीं। सैनासन करै नाहीं। दांत मल, आंख मल, नख मल, नाक मल काढ़ै नाहीं। गलाका मैल, मस्तकका मैल, शरीरका मल, पगका मैल उतारै नाहीं। गृहस्थपनाकी बातें करै नाहीं। माता, पिता, कुटुंब, भ्राता, व्याही बहिन आदि लोक कि जनता श्रुश्रूषा करै नाहीं। सासु जिठानी ननद आदके पग लागै नाहीं। धर्म शास्त्र उपरांत लेखक विद्या न करै बांचै ही। श्रृंगारका चित्राम चित्रै नाहीं। कोई वस्तुका बटवारा करै नाहीं। दिव्यादिकका भंडार राखै नाहीं। अंगुली चटकावै नाहीं आलस करै नाहीं। भीतका आसरा लेबे नाहीं। गादी तकिया लगावै न हीं। पांव पसारै नाहीं। पग पर पग धरि बैठै नाहीं। छान्या थोंप नाहीं। कपड़ा धोवै नाहीं, दाल दलै नाहीं, साल आदि कूटै नाहीं, पापड़ मुगौड़ी आदि सुखावै नाहीं, गाय भैंस आदि तिर्यंच बांधै नाहीं। राजाके भय करि भाज देहरै जाय नाहीं वा लुकै नाहीं रुदन करै नाहीं, राजा चोर स्त्री भोजन देश आदि विकथा न करै।

भाजन गहना शस्त्रादि बनायें नाहीं। तिर्यंचकी थापना करै नाहीं, रुपया मोहरीरत्न परखै नाहीं, प्रतमाजीकी प्रतिष्ठा हुवा पाछे प्रतमाजीकै टांची लगावै नाहीं, और प्रतमाजीका अंगकै केसर चन्दन आदिका चरचन करै नाहीं, प्रतमाजीके तले सिंघासन ऊपर वस्त्र बिछावै नाहीं ए भगवान सर्वोत्कृष्ट वीतराग है। तातै सरागताके कारण जे सर्व ही वस्तू ताका संसर्ग दूर ही तिष्ठो अरु कोई कुबुद्धी अपना मान बड़ायका पोखनैके अर्थ नाना प्रकारके सरागताके कारण आन मिलावै है ताका दोषका कांई पूंछनी मुन महाराज कै भी तिल तुस मात्र गृहन न कहा तो भगवानकै केसर आदिका संयोग कैसे चाहिये। कोई इहां प्रश्न करै चमर छत्र सिंघासन कमल भी मनै किया होता ताकूं कहिये है। सरागके कारण नाहीं प्रभुत्वताके कारण हैं जल करि अभिषेक कराईये है। सोये स्नानादि विनयका कारण हैं जलकरि अभिषेक कराइये है सो ये स्नानादि विषयका कारण है याके गंधोदकके लगाये पाप धोया जाय है अरु चंबर छत्र सिंघासन निराला है। जातैं जो वस्तू बिनयनै सूचती होय ताका दोष नाहीं। बिपर्य पनै कारण ताका दोष गनिये है। तातें भगवानका स्वरूप निराधार नहीं मानना उचित है ताही को पूजना योग्य है। बहुरि प्रतमाजीके हजूर बैठिये नाहीं। जो पग दूषने लगै तो दूर जाय बैठिये। कांचमें मुख देखिये नाहीं। नक चूटी आदिसूं केस उपाड़िये नाहीं। घरसौं जोड़ा पहरै वस्त्र बांध्या देहरै आवै नाहीं। पांउड़ी पहिरे मंदिर विषै गमन करै नाहीं। वा बेचै नाहीं वा मोल लेय नाहीं। देहराकी बिक्षायण नगारा उनिशान आदि जावन्त वस्तु विवहारादिकके अर्थ बरतै नाहीं।

अथवा देहराका द्रव्य उधार भी ना लेय। व पैसा दै मोल ना लेय। वा आप मनमें ऐसा विचारै, ए वस्तु ए द्रव्य देवगुरु धर्मके अर्थ है। पाछे वह वस्तु द्रव्य संकल्प किया माफक ना चहोड़ै। तौ याका अंश मात्र भी अपनै घर विषै रह्या हुवा निर्मायल सादृश्य जानना। निर्मायलका गृहनका पाप सादृश्य और पाप नाहीं। या पाप अनन्त संसारनै करै है नखसूं ले मस्तक ताईं शरीरका मैल उतारै नाहीं। व्रती पुरुष सचित्त वस्तुसौ पूजा न करै। देहराकी भीतके आदि सरागपर नामके कारण ऐसा चित्राम न करावै। देव गुरु शास्त्रनै देखि तत्काल उठै। हाथ जोड़ नमस्कार करै। स्त्रीजननै एक साड़ी ओढ़ देहरे न आवै। ऊपर उपरनी आदि ओढ़ आवैअरु पूजा विना देहराकी केसर चन्दन आदि तिलक नाहीं करै। स्नान व चन्दनका तिलक अरु आभूषणादि सिंगार बिना सरागी पुरुष तिनकौ पूजा नाहीं करनी। त्यागी पुरुषनै अटकाउ नाहीं। पूजा किया पाछे तिलक घोष नाखना। प्रतिमा-जीके आगै चहोड़नौ फूल सो आप सिरपर धरै नाहीं। वाकागृहण विषै निर्मायलका दोष लगै। गदिरा चौपर शतरंज गंजीफा आदि कोई प्रकारके खेल न खेलै। वा होड़ नाहीं पाटै। देहरामें ववसाखा आदि अशुच क्रिया नाहीं करै। जुहार व्योहार आदि शृष्टाचार न करै। भांड़ क्रिया नाहीं करै। रे कारे नूं काखो कठोर वा तर्क लिये बचन वा मर्म छेद बचन मसकरी कुठा विषाद अदया मृषा कोई न रोकवौ। डांड़वो इत्यादि बचन ना बोलै। कुलांट ना खाय पगाके दरबडी ना दाबै। हाड़ चाम केस आदि मंदिर विषै लै जाय नाहीं। मंदिरमें बिना प्रयोजन आह्या साह्या फिरै नाहीं।

कपड़ा हुई स्त्री तीन दिन व प्रसूत हुई स्त्री डेढ़ महिना पर्यंत देहरा विषै जाय नाहीं। गुह्य अंग दिखावै नाहीं। खाट आदि बिछावै नाहीं। जोतिक वेदिक मंत्र जंत्र तंत्र न करै। जलक्रीड़ा आदि कोई प्रकार क्रीड़ा न करै। लूला, पागला, बिकल अंगी, अधिक अंगी, वा बन्या, अन्धा, बहिरा, गूंगा, काना, माजरा, सूद्र, वरणसंकर वर्ण पुरुष स्नान कर उज्जल कपड़ा पहिर श्री जिनको पखालादि अभिषेक कर अष्टद्रव्यसूं पूजा न करै अरु अपनै घरसूं विनयपूर्वक चोखा-द्रव्य ल्याय कपड़ा पहिर श्री जिनके सन्मुख होय आगे धरि देय, पीछे नाना प्रकारकी स्तुति करि पाठ पठन नमस्कारादि करि उठ जाय ऐसी द्रव्यपूजा वा स्तुति पूजा करै। राते पूजा न करै। मंदिरसूं चारों तरफ गृहस्थका हवेली घर ना होय। सो सर्वत्र मलमूत्र आदि अशुच वस्तु रहित पवित्र होय अनछान्या जल करि जिनमंदिरका काम करावै नाहीं। और जिन पूजन आदि सर्व धर्मकार्य विषै बहुत त्रस थावर जीवोंका घात होय सो सर्व कार्य तजनै योग्य है। ऐसे चौरासी आसादनाका भेद जानना। **भावार्थ**—जिन मंदिर विषै सर्व सावद्य योग लिया जो कार्य होय सर्व तजना। और स्थानक विषै पाप किया ताके निरवृत्य करनैकूं जिनमंदिर करिये है। अरु जिनमंदिर विषै उपाया पाप ताके उपसांत करवानै और कोई समर्थ नाहीं भुगत्यां छूटै है। जैसे कोई पुरुष किसी जनसूं लरे ताकी तकसीर राजा पास माफ करावै। और राजा सूं भी लड़ा ताकी तकसीर माफ करवानै ठिकाना, वाको फल बंदीखाना ही है। ऐसा जान निज हितमान जिहि तिहि प्रकार विनयरूप रहना। विनय गुन है सो धर्म्मका मूल

है। मूल विना धर्मरूपी वृक्षके स्वर्ग मोक्षरूपी फल कदाचि लगैं नाहीं। तीसूं हे भाई! आलस्य छोड़ प्रमाद तजि खोटा उपदेशका वमन कर भगवानकी आज्ञा माफिक प्रवर्तो। घनी कहवाकर कांई ए तो अपना हेतकी बात है जामें अपना भला होय सोकौ करना, सो देखौ अरहंत देवको उपदेश तौ ऐसा है या चौरासी मांहिसूं कोई एक दोय भी लागै तौ नर्क निगोद जाय। अरु कुलिंग्या जिनमंदिरनै अपना घर सादृश्य करि गादी तकिया लगाय ऊंचा चौका चौकी बिछाय ऊपर बैठ बड़े महंत पुरुषानै पुजावै है याका फल कैसा लागैगौ सो हम नाहीं जानें है। अरु गृहस्थयाकी भूल कैसी, ऐसे महंत, पापके धारक, संसार समुद्र विषै खेवटिया बिना पत्थरकी नाव सादृश्य ताकों सतगुरु मानें हैं धर्म्म रूपी अमोलक रत्न मुसावै हैं। तौ भी मान बड़ाईके अर्थ आपनै धन्य ही मानै है। बहुरि गृहस्थानै बरजोरी बुलाय भावना करावै है सो यह तो मुनिकी वृत्ति नाहीं मुनि तो भमरा कीसी नाईं उड़ता फूलकी बास लै फूलनै विरोधै नाहीं त्योंही उदंड उतरै। बिना बुलाया अजाची वृत्य भरे गृहस्थीके बारनै पड़ा छयालीस दोष बत्तीस अंतराय टालि उदासीन वृत्ति कर विरस अल्प आहार लेय तत्काल वनमें उठ जाय है। गृहस्थनै पीड़ै नाहीं ताका नाम भांवर वृत्ति कहिये है। अरु जा कुलिंगाकी भावना कैसी सो हमनै जानै। अणे चौथाकाल विषै बड़े जिन मंदिर कराये अरु पांचवां काल विषै जिनमंदिर कराया ताका स्वरूप व फल वर्णन करिये है। चौथा काल विषै बड़े धनाढ्यके अभिलाषा होती। मेरे बहुत दुःख ताकूं धर्मके अर्थ कछू खरचाईये है। ऐसा विचार कर धर्मबुद्धी पाक्षिक

श्रावक सादृश्य महंत बुद्धिके धारक अनेक जैनशास्त्रके पारगामी बड़े बड़े राजान करि माननीक ऐसे गृहस्थाचार्य हुते ता समीप जाय प्रार्थना करै । हे प्रभु ! मेरा जिनमंदिर करायवे का मनोर्थ है आपकी आज्ञा होय तो मैं ए कार्य करूं । पीछे धर्म्म बुद्धी गृहस्थाचार्य कहै याका उत्तर प्रभात काल दूंगा । अवार तुम डेरै जावौ । पाछे वे गृहस्थाचार्य रात्रिनै मंत्रका आराधन करि सैन करै । पीछे रात्रिने स्वप्ना देखै सो भला शुभ स्वप्ना आया होय तौ या जानै ए कार्य निर्विघ्नताकौ पहुंचसी । अशुभ आया होय तो या जानै ए कार्य निर्विघ्नपनै होनेका नाहीं । पीछे गृहस्थी फेर आवै ताकूं शुभ स्वप्ना आया होय तौ ए कहै विचारयासों करौ सिद्धि होसी । अशुभ आया होय तौ ए कहै थाके धन है सो तीर्थयात्रा आदि धर्मकार्य विषै खरचौ । ए कार्य यासूं होता दीसै नाहीं । जा कार्य बनि आवै सो ही करिये । अरु जो शुभ स्वप्न आवै तो यह कहिये प्रथम तो अपनै परिणाम विषै द्रव्यका संकल्प करै । ऐता द्रव्य मनै याके अर्थ खरचना । पाछै जैसा परिणाम होय तैसा कार्य विचारेंगे । अर या द्रव्य विषै मेरा मंत्र नांही ताकूं अलाधा एक जायगा धरै ऐसा नांही । कै परिमान किऐ बिना देहराके अर्थ अनुक्रमसों खरचै जाय सो याका परमान काई पहली तो परनाम भला होय ताकर बहुत द्रव्य खरचना विचारया है पीछै परिनाम घषि जाय या पुन्य घटि जाय तौ पूर्व विचार माफक खरच सकै नांही, बहुरि जहां मंदिर कराईये सो वह बड़ा नगर जहां जैनी लोग घना बसता होय ताके बीच आस पास दूर गृहस्थयाका घर छोड़ पवित्र ऊंची भूमिका दाम दै मोल लेय बरजोरी नांही लेय । पीछे

भला महूर्त्त देख गृहस्थाचार्य वाके ऊपर यंत्र मांड़ै । पीछै जंत्रका कोष्य विषै सुपारी अक्षत आदि द्रव्य धरै । ताके धरनै कर ऐसा ज्ञान होय फलानी जायगा एता हाथ तलें मसानकी राख है। एता हाथ तलै हाड़ चाम है । पाछें वाकूं खुदाय हाड़ चाम आदि अशुचि वस्तु परी काढ़ै पीछें श्रेष्ठ नक्षत्र लग्न देखि नीव विषै पाखान धरै जी दिन विषै नीव लगावै ती दिनसूं करावने हारा गृहस्थी ब्रह्मचर्य स्त्री सहित अंगीकार करै सो प्रतिष्ठा किये पीछे श्रीजी जिनमंदिर विषै विराजै तहां पर्यंत प्रतिज्ञा पालै और छान्या पानीसूं काम करावै । चूनाकौ भट्टी घरै करावै नाहीं । प्राशुक ही मोल ले और कारीगर मंजूरांसूं कामकी घनी ताकीद नाहीं करै । वाका रोजगार विषै कसर नाहीं करै । वाकै सदीव निराकुलता रहे ऐसा द्रव्य दै मंदिरका काम करावै । ईतौ धर्म्म कार्य विचारया है सो मोटा मोटा काम कराय चोखा काम होय है । मोटी वस्तु मोल लेय चोखी होय है अर कृपणाता तज दुखित भुखितनै सदीव दान दे अर कारीगर मजूर चाकर आदि जे प्रानीजन ता ऊपर कोई प्रकार कषाय ना करै । सदा प्रसन्नचित्त ही रहै सारांकू विशेष हित जनावै । एक बांक्ष वर्त्ते कि कब श्रीजिनमंदिरकी पूर्णता होय । श्रीजिन विनयपूर्वक बिराजै और जिनवानीका व्याख्यान होय ताके निमित्त करि घना जीवाका कल्याण होय । जिन धर्म्मका उद्योत होय धर्म्मात्मा जीव ई स्थानक विषै धर्म्म साधन कर स्वर्ग मोक्ष विषै गमन करै और भी संसारका बंधन तोड़ि मोक्ष जावै । संसारका स्वरूप महा दुःखरूप है । सो फेर जिन धर्मके प्रताप करि न आऊं । बीतराग है सो स्वर्ग मोक्षके

फलनै शीघ्र दे है। ताते जिनदेवकी भक्ति परम आनंदकारी है। आत्मीक सुखकी प्राप्ति याही ते होय है तातैं में स्वर्गादिकके लौकिक सुखने छोड़ि अलौकिक सुखनै वांछू हूं। और म्हारे कोई बातका प्रयोजन नाहीं। संसार सुखसूं पूरे पड़ो धर्मात्मा पुरुषकै तौ एक मोक्ष ही उपादेय है। मैं हूं नै एक मोक्ष हीका अर्थी हूं। सो याका फल मेरे उपजै। भावार्थ–धर्मात्मा पुरुष तौ एक मोक्ष हीनैं चाहै है। मान बड़ाई जस कीर्ति वा गौख वा स्वर्गादिक पुन्यफल नाहीं चाहै है। याकी चाह अधम पुरुषकै होय है याहीकी चाहके अर्थि जिनमंदिर करावै है सो वे जीव अधोगतनै ही जाय है। आगे प्रतमाका निर्मापनके अर्थ खान जाय पाखान ल्यावै ताका स्वरूप कहिये है। सो वह गृहस्थी महां उक्षावसूं खान जावै खानकी पूजा करै। पीछे खानकूं न्यौत आवै। अरु कारीगरनै मेल आवै सो वह कारीगर ब्रह्मचर्य अंगीकार करै। अल्प भोजन ले उज्जल वस्त्र पहिरै। शिल्पशास्त्रका ज्ञानी घना विनयसूं टांकी करि पाखानकी धीरे धीरे कोर काटै। पीछे वह गृहस्थ गृहस्थाचार्य सहित और घना जैनी लोग कुटुंब परवारके लोग और गाजा बाजा बजाते मंगल गावते जिन गुणके स्तोत्र पढ़ते महा उत्सव सूं खान जाय। पीछे फेरि वाका पूजन कर विना चामका संजोगकरि महा मनोज्ञ रूपा सोनाके कामका महा पवित्र मनकूं रंजायमान करनै वारा रथ विषै मोकली रूईका पहलामै लपेट पाखान रथमें धरै। पीछे पूर्ववत् महा उत्सवसूं जिनमंदिर ल्यावै। पीछे एकांत स्थानक विषै घना विनय सहित शिल्पशास्त्र अनुसार प्रतमाजीका निर्मापन करै ता विषै अनेक प्रकार गुण दोष लिख्या

है। सो सर्व दोषानै छोड़ सम्पूर्ण गुण सहित यथा जात स्वरूप निपुणता दोय चार पांच सात बरसमें होय। एक तरफनै तौ जिनमंदिरकी पूर्णता होय। एक तरफनै प्रतिमाजी अवतार धरैं पीछे घनै गृहस्थाचार्य पंडित अरि देश देशका धर्मी ताकूं प्रतिष्ठाका महूर्त्त ऊपर कागद दै दै घना हेतसूं बुलावै। सर्व संघको नित प्रति भोजन होय और सर्व दुखितकूं जिमावै नित प्रति अरु कोई जीव विमुख न होय रात्र दिवस ही प्रसन्न रहै। अरि कुत्ता बिलाई आदि तिर्यंच भी पोख्या जाय वे भी भूख्या न रहै। पीछे भला दिन भला महूर्त विषै शास्त्रानुसार प्रतिष्ठा होय। घनौ दान बटै इत्यादि घनी महिमा होय। ऐसी प्रतिष्ठी प्रतिमाजी पूजना योग्य है। विना प्रतिष्ठी पूजना योग्य नाहीं। अरु जानें भोले सौ बरस पूजता होय तौ वा प्रतिमा पूजनै योग्य ही है। अंग हीन प्रतिमा पूज्य नाहीं उपंग हीन पूज्य है। अंग हीन होय ताकूं जाका पानी कड़ै टूटै नाहीं ता जल विषै पधराय देना याका विशेष स्वरूप जान्या चाहौ तौ प्रतिष्ठा पाठ विषै वा धर्म संग्रह श्रावकाचार आदि और श्रावकाचार विषैं जान लेना। इहां संक्षेप मात्र स्वरूप दिखाया है। ऐसे धर्म बुद्धिनै लिया विनय सौ परमार्थके अर्थ जिन मंदिर बनावै है। वा नाना प्रकारके चमर छत्र सिंघासन कलस आदि उपकरन चहौड़ै तौ वह पुरुष थोरा सा दिनामें त्रैलोकी पद पावै। वाका मस्तक ऊपर भी तीन छत्र फिरैं, अनेक चमर ढुरै और इन्द्रादिक संसारीक सुखकी कहा बात ऐसे चौथा कालके भक्त पुरुष जिन मंदिर निर्मापै ताका फल व स्वरूप कह्या। अब पंचम काल विषै बनावै ताका स्वरूप कहिये है।

मानक या पन्ने लिया घना काल ताईं ना रहै ऐसा अभिप्राय सहित व मत मतांतरका पक्ष न लिया गौरव सहित महंत पुरुषानैं आ बिना अपनी इच्छा अनुसार जिन मंदिरकी रचना जिहि तिहि नगर विषै वा जिहि तिहि थानक विषै बनावै है। देहराके अर्थ द्रव्य संकल्प किये बिना द्रव्य लगावै है। वा संकल्प किया द्रव्यनै आपना गृहस्थपनाके कार्य बिषै लगावै है। अथवा नारियल आदि निर्म्माल वस्तु भंडार विषै एकठा करकै वाका द्रव्य लगावै है वा पंचायतीमें नाम मांड़ि बरजोरी गृहस्थान पै रुपया पइसा मंगाय लगावै पीछे भाड़े दै लेके अर्थ मंदिरके तले मोकली दूकानैं बनावै। तिन विषै कदोय छीया दरजी हरवान्या पसारी गृहस्थी आदि राखै है। वा नाजसूं हाट भर देसी। गृहस्थीतो उठै कुसीलादि सेवै; कदोई रात दिन भट्टी बालै नाजकी नामें जेता नाजका कनका तेता ही जी परै। सो ऐसा पाप जहां पर्यंत मंदिर रहै तहां पर्यंत हुआ करै। वाके भांडेका द्रव्य जिनमंदिरके कार्य लगावै वा पूजा करनै वारे बहुर जिनमंदिर विषै कुलिंग्यानै राख घोरानघोर श्रीजीका अविनय करावै। उहां ही खाय उहां ही पीवै उहां ही सोवै वा मंत्र ज्योतिक वैद्यक कौतुक करै जुवा खेलै स्त्रीयांकी हांसी मसकरी करै। देहराकी वस्तु मन मानी वर्तै। वा बेंच खाय आप पुजावै प्रतिमाजीका अविनय करै। गृहस्थाका घरा ले जाय ऐसा पाप कुलिंग्यानके करावै और कुलिंग्या देहरै आवै सो महा बिकथा कर पाप उपार्जै। प्रतिमाजीकी पृठ दै परस्परि पगा लागै। मालीकूं दैनै कि रोटी श्रीजीकी चहोड़ै, रात पूजा करावै वा तीन लोकका

नायकनै मान बड़ाईका भरचा प्रमादी हुवा बैठा बैठा पूजा करै। राजादिकनै तौ बैठनै पावै ही नाहीं तौ भगवानके निकट बैठना कैसे संभवै। अरु पूजा करता भगवानको अवलोकन छांड़ि स्त्री आदि नै देखै लुगायांकी खुसामदीके अर्थ माथासूं ऊपर बारंबार जलधारा दिखावै। सो भगवानका दर्शन उपरांत जलधारा देखनेका उत्कृष्ट फल कह्या और पंडित जेती जेती अरु जेती पूजा गृहस्थानपै करावै ताका नेग मांग लेय। इत्यादि जेता कार्य होय सो अबिधि सौ होय और पुरुष जेता आवै तेता लौकिक बात करै। वारंबार परस्पर भृष्टाचार करै प्रतिमाजीका वा शास्त्रजीका अविनय ताकी खबर नाहीं और जाजम नगारा आदि देहराकी निर्मायल वस्तु ग्रहस्थी अपना विवाहादि कार्य विषै लै जाय बरतै ऐसी विचारै नाहीं। यामें निर्मायलका दोष लागै है। इत्यादि जहां पर्यंत मंदिर हैं तहां पर्यंत मंदिर विषै अयोग्य कार्य होय धर्मोपदेशका कार्य नाम मात्र भी नाहीं। तातें ऐसा मंदिर करावा बिना तौ नं कराया श्रेष्ठ था। याके पापका पारावार नांही। जे जे अन्यमती अविनय करै तैसा ही जैनी होय अविनय करै अरु मनमें ये मान राखै मैं जिनमंदिर कराया है सो मैं भी धर्मात्मा हौं। सो नाम मात्र धर्मात्मा है। सो याकौ फल तौ उदय आवसी तब खबर परसी। श्रेणिक महाराजा चेलना रानीकी हास्य करनै अर्थ कौतूहल मात्र मुन्याके गलामें मृतक सर्प नाख्या हत्यौ। सो नाखत प्रमाण ही सातवां नरकका आयु बंध किया। पीछे मुन्याका शांति भाव देखकर परिणाम सुलटना महां दरेग उपज्यौ। सम्यक्त्वकी प्राप्ति हुई। वर्द्धमान अंतम तीर्थंकरकै निकट क्षायक सम्य-

त्तव पाय तीर्थंकर गोत्र बांध्यौ सभानायक भया तौ भी कर्म सौं छूटो नाहीं नर्क ही लेगयौ। ऐसा परम धर्मात्मासूं कर्म गम्य न खाय। तो तीर्थंकर महाराजके प्रतिबिंबका अविनय करै तासुं गम्य कैसे खासी। ताते श्रेणिकजीका पाप वीच याका पाप अनंत गुना अधिक जानना। सो धर्मात्मा पुरुष ऐसा अविधि कार्य शीघ्र ही छांड़ौ। अरु केई विरले पुरुष पंचमाकाल विषै भी पूर्व ही अविधि कही ता बिना अपनी शक्ति अनुसार महा विनय सहित धर्मार्थी होय जिनमंदिर निरमापै है। नाना प्रकारके उपकरन चहौड़े है। तो वह पुरुष स्वर्गादिनै पाय मोक्षके सुखका भोक्ता होय है। बहुरि आनमती राजा जिनधर्मका प्रतपक्षी त्याका दरबारसूं नसायरका. चबूतरासूं पांच सात रुपैयाको महीना जिनमंदिरके जाचना करि पूजादिकके अर्थ रोजीना बंधावै है सो ए महापाप है। श्री जिनको अपनै परम सेवकादि बिना औरका द्रव्य लगावना उचित नाहीं। बैरीका पईसा कैसे लगाईये तातै धर्म विषै विवेकपूर्वक कार्य करना। आगे सर्व कुलिंग्याकी उत्पत्ति कहियें है। दस कोड़ा कोड़ी सागर प्रमाण अवसर्पणी काल, ऐता ही उत्सर्पिणी काल ताका नाम कालचक्र है। प्रथमा सुखमा चार कोड़ा कोड़ी सागर प्रमाण ता विषै मनुष्यकी आयु तीन पल्यकी, काय तीन कोस। दूजा सुखमा तीन कोड़ाकोड़ी सागर ता विषै आयु दोपल्यकी, काय दोय कोस। तीजा सुखमा दुखमा दोय कोड़ा कोड़ी सागर प्रमाण ता विषै आयु एक पल्य, काय कोस एक चौथा दुखमा सुखमा व्यालिस हजार बरस घाट एक कोड़ा कोड़ी सागर प्रमाण कोटि पूर्व आयु, सवा पांचसै धनुष

काय। सो प्रथम चौदा कुलकरि भये। तहां पर्यंत नौ कोड़ा कोड़ी सागर ताईं जुगलिया धर्म रह्यौ संयमका अभाव अरि दस प्रकारके कल्पवृक्ष ता करि दिया भोगताकी अधिकता बहुर पीछे अंतका कुलकर आदिनाथ तीर्थङ्कर भये सो जब प्रभु दिक्षा धारी तिनके साथ चार हजार राजा दीक्षा धारी सो ये मुनव्रतके परीखा सहवानै असमर्थ भये नगर अयोध्यामें तो भरत चक्रवर्त्तिके भय कर आये नाहीं और बन फूल अनछान्या पानी भक्षण करनै लगे तब बनकी देवी बोली रे पापी! नग्न मुद्राधार थै अभख्यका भक्षण करौ है। थानै शिख्या है कि जिनधर्म विषै क्षुधादिककी परीखा न सही जाय तौ और लिंग धारौ पाछे वा भ्रष्टि ऐसा ही किया। कैई तौ जटा बांध्या, केई बभूत लगाया, केई योगी, कैई सन्यासी, कनफड़ा एक दंडी, त्रिदंडी, तापसी भये। कैयां लंगोटी राखी इत्यादि नाना प्रकारके भेष धरे पीछे हजार बरस पाछै भगवानकै केवलज्ञान उपज्या सो केतांई सुलट दीक्षा धारी, केतांईक वैसा ही रह्या ताकै ना[illegible]प्रकारके भेद भये बहुरि भरत चक्रवर्ति दान देना विचारा सो द्रव्य तो बहुत अरु लेनेंवारे कोई मात्र नाहीं, तब सब नगरके लोग बुलाये अरु मार्गमें हरित तृण उगाये, कछु मार्ग प्रासुक राखा अरु पुरुषनकौ आज्ञा दीनी। ईठां अप्रासुक मार्ग आयौ तब निर्दयी है हृदय जाका ते तौ बहुत लोग उस ही हरित ऊपर पग दै दै आये। अरु दया सलिल कर भीजा है चित्त जाका ते उहां ही खड़े रहे आगे नाहीं आये। तब चक्रवर्ति कही इस मार्गसे आवो तब वा फेर कही हौं तौ सर्व प्रकार हरित कायकों विरोधौं नाहीं। तब भरतजी उस पुरुषने दयावान जान प्रासुक

मार्गकी तरफ बुलाये। अरु बानें कह्या तुम धन्य हौ सुत हमारे दया भाव पाय ऐसौ अब हम कहैं सो तुम करौ। सम्यक् दर्शनज्ञान चारित्रके चिन्हकी तौ तीन तारकी कंठ-सूत्र कहिये जनेऊ कंठ विषै धारो अरु पाक्षिक श्रावकके धर्मकौ धारौ अरु गृहस्थ कार्यकी धर्मकी प्रवृत्ति चलावौ अरु दान लेवौ दान देवो यामें कोई प्रकार दोष नांही था महा कर माननीक हो सोथौ वेही करता हुवा। सो गृहस्थाचार्य कहाये पीछै ए ब्राह्मन स्थाप केताई काल पीछे श्री आदिनाथ भगवानकों पूछा यह कार्य उचित किया कै अनुचित किया। तब भगवानकी दिव्यध्वनि विषै ऐसा उपदेश हुआ यह कार्य विरुद्ध किया। आगे शीतलनाथ तीर्थंकरकै समय सर्व भ्रष्ट होसी आनमती होय जिनधर्मका विरोधी होसी पीछै भरतजी मनके विषै बहुत खेद पाय कोप करि याका निराकरन करता हुवा। सो वे होतव्यके वश करि प्रचुर फैले। विक्षित्ति नाहीं भई फेर भगवानकी दिव्यध्वनि विषै ऐसा उपदेश हुवा ऐतौ ऐसै ही होनहार है, खेद मत करौ ऐसे ब्राह्मण कुलकी उत्पत्ति भई जानना, सोई अबै विप्र रूप देखिये है। बहुर अंतिम तीर्थंकरके समय भगवानका मौस्याईता भाई ग्यारा अंगके पाठी मसकपूरन नाम भया ताकों महा प्रज्वलित कषाय उपजी त्याणे मलेक्ष भाषा रची। अरु मलेक्ष तुरकीकौ मत चलायौ, शास्त्रका नाम कुरान ठहरायौ। जाकी तीस अध्याय ताका नाम तीस सिपारा नाम ठहराया ऐसे घोरानघोर हिंसा ही में धर्म प्ररूप्या सो कालका दोष कर प्रचुर फैले जैसे प्रलय कालका पवन करि प्रलय कालकी अग्नि फैलै ऐसे तुरकोंकी मतकी उत्पत्ति

जाननी। बहुर वर्द्धमान स्वामीनै मुक्ति गया पीछे इकईस हजार बरस प्रमान पंचमकाल ताके केताइक काल बरस अठाईसके अनुमान गया तब भद्रवाहु स्वामी आचार्य भये। ता समय केवली अवधिज्ञानकी विक्षित्ति भई। ताहीं समय एक चन्द्रगुप्तनाम राजा उज्जैनी नगरीका भया। तानै सोला स्वप्न देख्या ताकौ फल भद्रबाहु स्वामीनै पूछ्या तब वा जुदा जुदा स्वप्नका फल बतायौ सो ही कहै। कल्पवृक्षकी टूटी डाहली देख वाकरि क्षत्री दीख्या भार छोड़सी। सूर्य अस्त देखवाकर द्वादसांगपाठीका अभाव होसी। चंद्रमा छिद्र सहित देखवा कर जिनधर्म विषै अनेक मत होसी, भगवानकी आज्ञासूं विमुख होय घर घर मन मान्या मत स्थापसी। बारह फनहका सर्प देखवाकर बारह बरस काल पड़सी, यती क्रिया आचरणसूं भ्रष्ट होसी। देव विमान आपूढा जाता देखवाकर चारन मुन कल्पवासी देव विद्याधरि पंचमकाल विषै न आवसी। कमल कुंडा विषै ऊंगा देखकर संयम सहित जिनधर्म वैश्य घर रहसी, क्षत्री विप्र विमुख होसी। नाचता भूत देखवाकर नीच देवका मान होसी, जैन धर्मसूं अनुराग मन्द होसी। चमकता अग्निया देखवाकर जिनधर्म कटै अल्प होसी, कोई समय घनौ घटसी कोई समय अल्प बधजासी, मिथ्यामतनै सेइसी। सूका सरोवर विषै दक्षिन दिशाकी तरफ तुच्छ जलकै देखवाकर दक्षिणकी तरफ धर्म रहसी, जहां जहां पंच कल्यानक भये तहां तहां धर्मका अभाव होसी। सोनाके पात्रमें स्वान खीर खाता देखवा करि उत्तम जनकी लक्ष्मी नीचजन भोगसी। हस्ती ऊपर कपि चढ़ा देखवाकरि राजा नीत छांड़ प्रजानै बांध लूटसी। वृषभ तरुण रथकै जुता

देखवाकर नवीन स्थानमें धर्म संयम आदरसी, वृद्धपनै सिथिल होसी। ऊंट ऊपर राजपुत्र देखवाकर यती परस्पर दोषी होसी। काला हस्तीका समूह लड़ता देखवाकर समय समय वर्षा थोरी होसी, मनमान्या मेघ न वरषसी। ऐ सोला स्वप्नाका अर्थ अशुभनै सूचता भद्रबाहु स्वामी निमित्तज्ञानकी बलसूं राजा चन्द्रगुप्तनै याका अर्थ यथार्थ कह्या ताकर राजा भयभीत भया ऐसा स्वप्नाका फल सारा मुन्यां प्रसिद्ध जान्यों। ऐही सोला स्वप्नै चतुर्थ कालके आदि भरत चक्रवर्त्तिनै आये थे। सो वा भी याका फल श्री आदिनाथजीकौ पूछ्या। तब श्री भगवानजी दिव्यध्वनि विषै ऐसा उपदेशभया आगे पंचमकाल आवसी। ता विषै हुंडा सर्पनी काल देखकर अनेक तरहका विपर्जै होसी ता करि या भव विषै वा परिभव विषै जीवनै महा दुःखका कारण होसी। सोला स्वप्ना पंचमकालमें राजा चन्द्रगुप्तनै आए। अरि राजा चन्द्रगुप्त दीक्षा धरी तामें बारा फनका सर्प देखवां थकी बारा बरसको काल पड़ो जान्यौ तब चौबीस हजार मुन्यौका संग छाड़ि यानै कही ई देशमें बारा बारा बरसकौ अकाल पड़ैलौ ये ठहरसी ते भ्रष्ट होसी, दक्षिणमें जासी ता मुनपद रहसी। अकालका अभाव होसी पीछै ऐसा उपदेश सुन भद्रबाहु स्वामी सहित बारा हजार मुन तौ दक्षिण दिशामें विहार किया। अब शेष बारा हजार मुनि इहां ही रहते अनुक्रम तै भ्रष्ट भये। पातर, डोली, पक्षेडी, लाठी राखते भये। ऐसे बारह बरस पूर्ण भये पीछे सुभिक्ष्य काल भया तब भद्रबाहु स्वामी तो परलोक विषै पधारे और दक्षिण दिशातें सर्व मुन आए याकी भ्रष्ट अवस्था देख निंद्या तब केता तौ प्रायश्चित्त दंड लै छेदो-

स्थापित कर शुद्ध हुवा अरु केताइक प्रमादका बशीभूत हुवा विषय कषायके अनुरागी धर्मसूं शिथिल हुवा अरु कायरपनानै धारता हुवा अरु मनमें चिंतवन करता हुवा यह जिनधर्मका आचार तौ अति कठिन तातैं मैं ऐसै कठिन आचारन आचारवे समर्थ नाहीं। ऐसा ही भ्रष्ट होते होते सर्व भ्रष्ट हुआ अरु अनुक्रम तै अधिक भ्रष्ट होते आए सो प्रतक्ष अबै देखिये है बहुर ऐसेई काल दोष कर राजा भी भ्रष्ट हुवे अरु जिनधर्मका द्रोही होय गये। ऐसे ऐसे सर्व प्रकार धर्मकी नास्ति होती जान जे धर्मात्मा गृहस्थी रहे थे ते मनमें विचार करते हुए अब काईं करनौ केवली श्रुतकेवली ताकौ तौ अभाव हुआ अरु गृहस्थाचार्यपूर्व ही भ्रष्ट भये थे अब राजा अरु मुन भी भ्रष्ट भये सो अब धर्म किसके आसरै रहै। तासूं अपनै धर्म राखनै सौ अबै श्रीजीकी ढ़ीला ही पूजा करौ अर ढ़ीला शास्त्र बांचौ। अरि कुवेष्यांनै जिन मंदिर बाहरै निकास दियौ। जे भगवानका अबिनय बहुत करै आपकौ पूजावै अरि देहराकौं घर सादृश्य कर लिया। सो या बातका महत पाप जान जे ग्रहस्था धर्मात्मा कुवेष्यां हलाहल समान खोटा धर्मका द्रोही जान वाका तजन किया अरु श्री वीतराग देव सों अर्ज करते भये, हे भगवान! तौ थाका बचनाके अनुसार चला तातै तेरापंथी होते सिवाय और कुदेवादिककौ हम नाहीं सेवै है, वाका सेवन नर्कादिकके कारन है अरु तुम स्वर्ग मोक्षके दाता हौ तातें तुम ही देव हौ, तुम ही गुरु हौ, तुम ही धर्म हौ तातै तुम हीनै सेवौं हौं औरनै नाहीं सेवौं हौं। तुमें न सेवै है सो वह

हरामखोर है। जो ई तेरापंथी सो तुम्हारे आज्ञाकारी सेवक हैं। अरु तुमनै छोड़ तुम्हारे प्रतपक्षी हैं, कुदेवादिककौ सेवै हैं सो वह हरामखोर है सो हरामखोरी उपरांत संसारमें पाप नाहीं सो वे हरामखोर नर्कादिकके दुःख पावै ही पावै। बहुरि मत होय है सो देवके नाम होय है वा गुरुके नाम होय है सो तेरा प्रकारके चरित्रके धारक ऐसे निर्ग्रन्थ दिगम्बर गुरु ना मानै। अरु और परग्रहधारी गुरुकौ नाहीं मानै ताते गुरुकी अपेक्षा भी तेरापंथी संभवै है। अरि तेरा प्रकारके चरित्र पालनै वारे पूर्व गुरु वर्य ताको भी मानै। अरु सप्त बिसनकै सेवन हारे तीव्र कखाय ताके अवलोकन किये ही भै उपजै मानूं अवार ही प्रान हरैगें ऐसे भयकरि कूरि दृष्टि स्त्रीकेरागी मोह मदराके पान कर उन्मत्त भये। इंद्री विषयके अत्यंत लोलपी मोलके चाकर सादृश्य ते गुरु कहिये है। अरु देवोंके मानसीक आहारकी इच्छा भये कंठमासौ अमृत श्रवै ताकरि तृप्ति होय ताकौ कहिये है। सो चार प्रकारके देव देवांगना ताकै पाइये है। बहुरि मज्जा आहार वीर्य नामा धात शरीरकै सहकारी होय ताकौ कहिये है। सो पंखींनके अंडे ताकें पाईये है सो पंखी गर्भ मासूं अंडा धरै है वे केते दिन पंखीं कवला आहार विना ही वृद्धिनै प्राप्त होय है। सो वा विषै बीर्य धात पाईये है ताके निमित्त करि शरीर पुष्ट होय है। कोईके हस्तादिक लगायै वीर्य गल अंडा गल जाय है। बहुरि लेय आहार सर्वांग शरीर विषै व्याप्त होय ताकौ कहिये है सो एकेन्द्रियादिक चौ थांवराकै पाइये है। जैसे बिरष मृतका जलको

जड़से तो खेंच सर्वांग आचारवे कौ समर्थ है तीसौं अबै सुगम कर या माफिक प्रवरति करिस्यां अरु काल पूर्न करिस्यां। पीछें ऐसा उपाय करता हुवा या जिन प्रतीत शास्त्रका लोप करि जामें अपना मतलब सधै। विषय करवाय पोख्या जाय ती अनुसारने लिये। पेंतालीस शास्त्र पंडिताईका बल कर मनो कल्पत गूंथे। अरु ताका नाम द्वादसांग धरया ता विषै देव गुरू धर्मका स्वरूप अण्यथा लिख्या। देव गुरुकै परग्रह ठहराय धर्म सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्र विना उपवासमें जल मिष्टानादि लैना काय-कलेश वीतराग भाव बिना स्थापन कीन्हैं। सो किया तब तौ लंगोटी पिछौड़ी भोजनका पात्र ये तीन राखे थे द्रव्यादिककै अभाव था पीछे ज्यों ज्यों काल आवता गया त्यों त्यों बुद्धि विशेष रागभावनै अनुसस्ती गई ताही माफक द्रव्य असवारी आदि परिगृह राखते भये। मंत्र जंत्र जोतिष वैद्यक करि मूर्ख गृहस्त लोकानै बस करते भये। आपना विषय कखायनै पोखते हुवे ता विषै भी कखायोंके तीव्र वसीभूत हुवे तपालो बीजमत परतरा आदि चौरासी मत स्थापै। पीछें विशेष काल दोष करि शास्त्रमाहिंका मत विष ही मारवाड़ देश विषै एक चेला लड़कर टूंटार विषै जाय पीछे टूंटया मत चलाया। अरु पेंतालीस शास्त्र माहिं बत्तीस ही शास्त्र राखे ता विषै तौ प्रतमाजीका तो स्थापन है। पूजनका विषै फल लिख्या है आकृतम चैत्यालय वा प्रतमाजी तीन लोक विषै संख्यात है। ताका विशेष महिमा वर्णन लिख्या है। परंतु हिन्दू मुसल्मान दिगंबर वा श्वेतांबर-सूं दोष पालनैके अर्थ प्रतमाजीका वा जिन मंदिरजीका जिन थापन किया। सो काल दोष कर वा मतिकी बृद्धि प्रचुर फैल

गई। सिद्ध धर्मकी प्रवर्त्त बरजोरी भी चाल सकै नाहीं हिंसा ही प्रतिक्ष देषिये ऐसे श्वेतांबरमती उतपत्ति भई। याकौं विशेष जान्या चाहौ तौ भद्रबाहु स्वामी चरित्र विषै देख लैना। बहुर पीछें अविशेष बुद्धि सुद्ध दिगंबर गुरू रहे थे ते केताईक काल पर्यंत तौ वाकी भी परपाटी सुद्धि चली आई। पीछे काल दोषके बसतें कोई भ्रष्ट होने लागे सो बनादिकनै छोड़ रात्रि समय भयके मारे नगर समीप आय रहे हुवे पाछे वा विषै शुद्ध मुनराज थे ते निंद्या करते हुए हाय हाय या कालकौ दोष मुनकी सिंहवृत्त था सो स्यालवृत्त आदरी सिंहनै बनके विषै काहेका भय। त्यों मुन्यांनें काहेका भय स्याल रात्रकै समय नगरके आसरै आय विश्राम लें त्यों ही स्यालवृत जे भ्रष्ट मुन नगरका आसरा ले हैं, प्रभात समय तो सामायक करवे कौ बैठसी अरु नगरकी लुगायां गोवर पानीके अर्थ नगरके बाहर आवसी सो याकी वैराग्य संपदाकू लूट लै जासी तब निधर्न होय नीच गति विषै जाय प्राप्त होसी अरु लोक विषै महां निंद्यानै पावसी। सो नगरके निकट रहनै कर ही भ्रष्टताने प्राप्त होवै। सो और परग्रह धारक गुरूकी कहा बात। सो वे गुरू भी ऐसा ही भ्रष्ट होते होते सर्व भ्रष्ट हुवे। अरु अनुक्रमते अधिक अधिक भ्रष्ट होते आए सो प्रतक्ष अब देखिये है। बहुर ऐसे ई काल दोष कर राजा भी भ्रष्ट होते आये सर्व भ्रष्ट हुवे। अरु जिन धर्मका द्रोही होय गये सो ऐसे सर्व प्रकार धर्मकी नास्ती होती जान देख धर्मात्मा गृहस्थी रहे थे ते मन विचार करते हुवे अब काई करनौ केवली श्रुतकेवलीका तो अभाव ही हुवा अरु गृहस्थाचार्य पूर्व ही भ्रष्ट भये थे। अरु राजा अरु मुन भी

सर्व भ्रष्ट भये सो अब धर्म किसके आसरें रहै। तातें अपने धर्म्म राखने सूं अबै श्रीजीकी ढीला ही पूजा करौ अरु ढीला ही शास्त्र बांच्यौ अरु कुवेष्यानै जिन मंदिर बाहरै निकार द्यौ। ए भगवानका अविनय बहुत करै। आपकौ पुजावै अरु देहराको घर साद्रश्य कर लिया बातका महत पाप जति। ये गृहस्थी धर्मात्मा कुवेष्यानें हलाहल खोटा धर्मका द्रोही जान वाका तजन किया। अरु श्री वीतराग देव सूं अरज करते भये। हे भगवान म्हां तौ थाका बचनाके अनुसार चाल हों तातै तेरापंथी होंते सिवाय और कुदेवादिककौं हम नाहीं सेवै है। वाका सेवन नर्कादिकका कारण है। अरु तुम स्वर्ग मोक्षके दाता हौ ताते तुम ही देव हौ तुम ही गुरू हौ तुम ही धर्म हौ तातै तुम ही नै सेवौ हौ। और नैं नाहीं सेवौ हौ ताते तुम ही नै सेवौ सो तेरापंथी सो म्हां तुमारौ आज्ञाकारी सेवक हौ अरु तुमनै छोड़ तुम्हारे प्रतपक्षी है कुदेवादिक ताको सेवै है सो वह हरामखोर है इस उपरांत संसारमें नाहीं सो हरामखोर नर्कादिकके दुःख पावैं है पावें बहुत सत होय है सो देवनके देव होय हैं वा गुरूके नाम होय है। सो तेरा प्रकारके चारित्रके धारक ऐसे निरग्रंथ दिगंबर गुरु ताकौ ही मानै। अरु और ही परीग्रहीकौ नाहीं मानै ताते गुरूकी अपेक्षा भी तेरापंथी संभवै है। अरु तेरा प्रकारके चारित्रके पालनै वारे पूर्व गुरू भये ताकौ भी मानै। अरु विश्नुके सेवन वारे तीव्र कखाय ताके अवलोकन किये ही भय उपजै मानूं अबार ही प्रानकूं हरेंगे ऐसे भयंकर क्रूरि दृष्टि स्त्रीके रागी मोह मदराका पानकर उन्मत्त भये इन्द्रीनके अत्यंत

लोलपी मोलके लिये चाकर सादृश्य ताकौ भी मानै। अरु श्रावक देवादिक मानै तातैं सर्वपंथी कहिये है। ऐसे याका अर्थ जानता सो तेरापंथी तौ अनादि निधन जिनभाषित शास्त्रके अनुस्वार चले आऐ है। अरु जेते कुमत चालै है सो रिखभनाथ तीर्थकी आदितें लै अब पर्यंत त्यों त्यों तेरापंथीकी पांत वारे निसरते गये। अरु आनमतमें परते गये तैसे दुग्ध घना ही चोखा था परंतु मदराके भाजनमें जाय परे सो वे दुग्ध अलनि कर गया। अब वाका भले मनुष्य कैसे गृहन करैं त्यों ही शुद्ध जैनी होय कुगुरू कुदेव कुधर्म्म सोई भये अलीन भाजन ताकों अंगीकार करै। ताकौ सत्पुरुष जैनी कैसे मानें जैनी तौ सोही है। जो जिनदेव सिवाय और किसहीनै न मानें। ताकी लालन पालन नाहीं कर। जैसे शीलवंती स्त्री होय अपने कामदेवसे भरतारकों छोड़ि अति नीच कुलके उपजे भ्रष्ट पुरुष ताकौ लालन पालन नाहीं करै। अरु वाका लालपाल करै तौ शीलवंती काहेकी। हमारी मां अरु बांझ ऐसे कहता संभवै नाहीं। ऐसा बचन कोई कहै है तौ वाकों बावला मतवाला जानिये स्याना नाहीं त्योंही जैनी होय। जिन-देवको भी सेवै है अरि कुदेवादिकको भी सेवै वाको भी भलौ जाने है। वे पुरुष स्त्री मदरा पीय बावरे कैसी चेष्टा करै है। तातें बावरेका बचन प्रमानीक नाहीं। तातें देव अरिहंत गुरू निर्ग्रंथ धर्म जिन प्रनीत दयामई मानना उचित है। यही मोक्षमारग है अन्य मोक्षमारग नाहीं। केई अज्ञानी और प्रकार भी मोक्षमारग मानै है सो वे कांई करै है सर्पका मुख थकी अमृत चाहै है। वा जल विलोय घृत काढया चाहै है। बालू

रेतकौ पेर तेलकी अभिलाखा करै हैं। वा अग्निके विषै कमलका बीज बोय वाकी शीतल छायामें बैठ आराम किया चाहै है। इत्यादि विरोध कार्य किये फलकी निष्पत्ति, होय नाहीं भ्रम बुद्धि कर मानिये तो म्हां कष्ट ही उपजै। ऐसा प्रयोजन जानना। आगे श्वेतांबर दिगंबर धर्मसों विरोध चौरासी अछेरा मानै है। तिनका नाम व स्वरूप वर्णन करिये है। केवलीकै केवलाहार मानै ऐसा विचार करै नाहीं। संसार विषै क्षुधा उपरांत और तीव्र रोग नाहीं अरु तीव्र दुःख नाहीं अरु जाकै तीव्र दुख पाइये तो परमेश्वर काहेका संसारी सादृश्य ही हुवे तो अनंत सुखपना कैसे संभवै। अरु छयालीस दोष बत्तीस अंतराय रहित निर्दोष आहार कैसे मिलै। केवली तौ सर्वज्ञ है सो केवलीनैं तौ दोषीक निरदोषीक वस्तु सर्व दीसै। अरु त्रिलोक हिंस्यादि सर्व दोष मई भर रहै है। तौ ऐसे दोषकौ जानता सुनता केवली होय दोषीक आहार कैसे करै मनु महाराज भी सदोष अहार न करै तो सर्व मुन्यां कर सेवनीक त्रलोकनाथ इक्ष्या विना सदोष अहार कैसे लहे। अरु एक अहार पीछे क्षुधा १ त्रषा १ रोग १ दोष १ जन्म जरा १ मरण १ शोक १ भय १ विष्मय १ निद्रा १ खेद १ स्वेद १ मद १ मोह १ अरति १ चिंता १ ए अठारा दोष उपजें तौ ऐसे अठारा दोषके धारक परमेश्वर अन्यमती सादृश्य परमेश्वर होय गये। अरु यहां कोई प्रश्न करै तेरहां गुणास्थांन पर्यंत आहार अनाहार दोनों कहा है। सो कैसे ताका उत्तर यह जो आहार छै प्रकारका है। कवल १ मानसीक २ ओझ ३ लेय ४ कर्म ५ नोकर्म ६। ताकौ अर्थ लिखये है सो कवल नाम मुखमें ग्रास

लेनेंका है। सो बेंद्रीं तेंद्री चौइन्द्री असैनी पचेन्द्री येतौ तिर्यंच अरु मनुष्य नारकीनकै पाइये अरु मानसीक आहारकी इक्षा भये कंठमांसूं अमृत श्रवै ताकर तृप्ति होय ताकौ कहिये। अरु उज्झा आहार पंखीनके अंडेन कर पाईये है। सी पक्षी गर्भमासूं बाहर अंडा धरै है वे केते दिन अहार बिना ही बृद्धिनै प्राप्त होय सो वा विषै वीरज्य धान पाइये है। ताके निमित्त कर शरीर पुष्ट होय है। कोईके हस्तादिक लगाय वीर्य्य गलि जाय है। बहुरि लेय आहार सर्वांग शरीर विषै व्याप्त होय। ताकौ कहिये है सो एकेंद्री पांचौ थावरकैं पाइये है। जैसे वृक्ष मृतका जलकौजड़-सेती खेंच सर्वांग अपनै शरीररूप परनवावे है। सो यह चार प्रकारके आहार तौ छुध्याके निवृत्त करनैका कारण है। बहुर नौकर्म्म अहार छै सो पर्याप्ति पूर्ण करनैका कारण है। सो समय समय सर्व जीव नौकर्म्म जातकी वर्गनाका ग्रहन करै। प्रजाप्त रूप परनवावे है सो कारमान कायका तीन समै अंतरालके छोड़ वा केवलीका समुद्घात विषै प्रतरके काल जुगलका दो समय पूरण कर। एक समय बिना, आयुका अंत समय प्रजंत त्रिलोक-के सर्व जीव सिद्ध अर अयोग्य चौदहां गुणस्थानवर्त्ती केवली या गुन लहै। ताकी अपेक्षा तेरा गुणस्थान पर्यंत आहार कहा है। सो तो हम भी मानै है परंतु कवला आहार छटौं गुणस्थान पर्यंत ही है। ताते आहार संज्ञा छटां गुणस्थान पर्यंत कही है। मान-सीक आहार चौथा गुणस्थान पर्यंत ही है। ओझा लेय प्रथम गुणस्थान विषै है है बहुर कर्म आहार आगै कारमानके ग्रहण करनेका है। सो यह संसारी जीव सिद्ध अयोम केवली बिना

प्रथम गुणस्थानतें लगाय तेरमां गुणस्थानके अंत समय पर्यंत आयु सहित आठवां आयु विना सातवां मोह बिनाक्षै। या साता वेदनी एक करमका ग्रहण करै है। ऐसे षट प्रकारके आहारका स्वरूप जानना। तातें केवलीके कवलाहार संभवै नाहीं अर जे पूर्वापर विकल्प कर रहित हैं ते मानैं हैं। स्वेतांबर मत विषै भी आहार संज्ञा छटां गुणस्थान पर्यंत ही कही है। मोहका माता अहंकारका पक्षनैं लिये वाका बिचार ही करै नाहीं। यह आहार कैसा है ऐसा बिचार उपजै नाहीं सो यह न्याय ही है। अपनै औगुण ढाकनैं होय तब आपसूं गुनकर अधिक होय ताकौ औगुण पहली स्थानपै। तैसे सर्व अन्यमत्यां आपने विषयभोग सेवनै आया। तब परमेश्वरकै भी विषयभोग लगाय दिया। त्योंही श्वेतांबर अपने एक दिन विषै बहुत बेर तिर्यंचकी नाईं आहार करता आया तातें केवलीके भी आहार स्थाप्या सो धिक्कार होहु। राग भावांकै ताईं अपनै मतलबके वास्तै ऐसे निरदोष परम केवली भगवान ताकौ दोष लगावै है। ताके पापकी बात हम नाहीं जानै कैसे पाप उपजै सो ज्ञानगम्य ही है[१]। बहुर केवलीकौ रोगै। केवलीकै निहार[३]। केवलीकों केवली नमस्कार करै[४]। केवलीकौ उपसर्ग[५]। प्रतमाकै भूषण ६। अरु तीर्थंकर स्तुति पढ़ै ७। तीर्थंकर पहली देसना अहली जाय ८। महावीर तीर्थंकर देवानंदी ब्रह्मानीकै घर अवतार लियौ पाछै इन्द्र वाका गर्भमेंसूं काढ़ त्रसलादे रानीके गर्भ विष जाय मेला पीछें वाके गर्भथकी जन्म लियो ९। आदनाथ भाई सुनन्दा बहन जुगलिया १०। सुनन्दा बहनको आदनाथ परनी ११। केवलीकों छींक आवै १२। सुदकर ब्राह्मण

मिथ्यादृष्टिकौ गोतमें लीसां भाग गया १३। स्त्रीकौ महांवृत पलै १४। स्त्रीकौ मुक्त १५। तीर्थंकरनें दीक्षा समय इन्द्र स्वेत वस्त्र आनंदे सो मुन अवस्थामें पहरे रहे १६। प्रतमाजीकै लंगोट कंदोरा कोधिहू १७। श्रीमल्लिनाथजीकौ तीर्थंकर स्त्री पर्याय मानै १८। जुल्याकै छोड़ी कायकर देव भरतक्षेत्रमें ल्याये। चौथा कालके आद तासों फिर जुगल्यौ धर्म चलसी १९। जुगलिया सो हरिवंश चल्यौ ॥२०॥ जतीके चौदा उपकरन २१। मुनशुवृत्ति तीर्थंकरकै घोड़ौ गनधर हुवौ २२। मुन श्रावकका घरसों आहार ल्यावै। अरु घरका किवाड़े जोड़ खावै ॥२३॥ अरु दूनौ अहार करै ताका अर्थ यह जौ कोई साधु अहार विहार ल्याय हौ आहार किये पाछै अवशेष बाकी रहौ ते अहारकों वेला आद घनौपवासके धारी और कोई साधु होय ताका पेटमें खवाय दीजिये तौ दोष नाहीं। साधुकौ उदर छै सो रोटी समान छै। भावार्थ—वेला आदि घनौपवासा विषै और साधुको बच्यौ भोजन लैनौ उचित है यामैं उपवासका भंग नाहीं औ निरदोष आहार छै ॥२४॥ नौ पानी आहार करै ताका अर्थ। यह जो जलकी बिधि नाहीं मिलै तौ नित पी अर त्रषा बुझावै। साधाको कैसो स्वाद अरु नौजातका बीधैका भेद सो। घृत १ दुग्ध १ दही १ तेल १ मीठा १ मदमांस १ सहत १ एकेबोरै। अथवा कोई श्रावकानै पानी आहार पचाया होय सो भी साधुको लेना उचित है ॥२५॥ निंद्यक मारयांका पाप नाहीं ॥२६॥ जुगला भी मर नर्क भी जाय ॥२७॥ भरतजी ब्राह्मनी भागनी भागनीकौ परनैके अर्थ अपनै घरमें नाखी ॥२८॥ भरतजी गृहस्त

अवस्था विषै महला आभूषण पहरया, भावना भावता केवलज्ञान उपज्यौ ॥२९॥ महावीर जन्म कल्याणिक विषै बाल अवस्था विषै ही पगके अंगुष्टा सौ सुमेरु कंपायमान कियो ॥३०॥ पांच पंडवा-की द्रौपदी स्त्री पंच भरतारी शीलवंती महासती हुई ॥३१॥ कूवडया चेलाकै कांधे गुरु चढ़ा। और गुरू यों याका दंड किया की चेलाकै माथामें देते जाय। तब चेले छमाय तब छिमाके प्रभाव करि चेलाकौ केवलज्ञान उपज्यां तब चेला सूधागमन करनै लगा। तबै गुरा फुरमाय कोई चेलां सूधा गमन करनै लागा। सो तौनें केवलज्ञान उपज्या तब चेलै कही गुराके प्रशाद ॥३२॥ अरु जै माली जातकौ माली सो महावीर तीर्थंकरकी वेटी परन्यौ ॥३३॥ कपल नारायणनें केवलज्ञान उपज्यौ तब कपिलनारायण नाच्यौ धातकी खंडको यह आयौ छै ॥३४॥ बसुदेवकै बहत्तर हजार स्त्री हुई॥३५॥ मुनीश्वर स्पर्श सूद्रके घर आहार लेय अर कोई मांसा-दिक वैराया होय तौ साधु ऐसा बिचार करै सो साधकी वृत्ति तौ ये है। बहरावै सोई लैना अरु दिभाया पीछे परथी उपरै खैपियै तो वह जीवकी हिंसा होय। तातैं भक्षण ही करना उचित है पीछे गुरु खैपाका दंड प्रायश्चित ले लेंगे॥३६॥, देवता मनुष्यनिसो भोग करैं सो सुलसा श्रावकनीकें देदसौ वेटौ हुवौ ॥३७॥चक्रवर्त्तीकै छह हजार स्त्री हुई ॥३८॥ त्रिपिष्टनारायण छीपाकी कुल विषै उपज्यौ ॥३९॥ बाहुबलकौ सवापांचसै धनुष शरीर उतंग नहीं मानैं घटि मानै ॥४०॥ अनार्य देश विषै बर्द्धमान विहार करम कियौ ॥ ४१ ॥ चौथे अरु असंजमीकौ जति पूजै ॥४२॥ देवकों एक कोस मनुष्यकौ चार कोसा बराबर

छ ॥४३॥ प्रानजातै प्रानकी रक्षाके अर्थ वृतिभंग कीजे तौ दोष नाहीं उपास माहै ओषध खाजै तौ दोष नाहीं ॥४५॥ समोसरनमांही तीर्थंकर केवली नगन नाहीं दीसै कपड़ा पहिरै दीसै ॥४६॥ जती हाथमैं डांडो राखै ॥४७॥ मरुदेवी मातानें हस्ती ऊपर चढ़या केवलज्ञान उपज्यों ॥४८॥ भावार्थ–द्रव्यी चारित्र बिना केवलज्ञान उपजै ॥४९॥ चांडालादि नीचकुली दिक्ष्या धैर मोक्ष जाय ॥५०॥ चन्द्रसूर्य मूल बिमान सहित महावीरस्वामीकौ बंदवा आये ॥५१॥ पहला स्वर्गका इन्द्र दूजा स्वर्गको जाय स्वामी होय ॥५२॥ अरु दूजा स्वर्गका इन्द्र पहला स्वर्ग । मी ॥५३॥ जुगल्याकौ शरीर मुवा पीछें पढ़ाना रहै ॥ ५४ ॥ जिनेश्वरका मूल शरीरकौ दाग देय ॥५५॥ श्रावग जतीकौ स्त्री आन थिरता करावै तौ असतकौ दोष नाहीं उपजै। जती श्रावगका विकारकी बाधा मिटी ॥ ५७ ॥ अठारा दोष सहित तीर्थंकरको मानै ॥५८॥ तीर्थंकरके शरीरसूं पांच थावरकी हिंस्या होय ॥५९॥ तीर्थंकरकी माता चौदा ही स्वप्ना देखै ॥६०॥ स्वर्ग बारा ॥६१॥ गंगादेवीसूं भोगभूमिया पंचांउन हजार प्रजंत भोग भोग्या ॥६२॥ अरु बहत्तर जुगल प्रलयकाल समै देव उठा लै जाय ॥६२॥ बमठाका पानी निरदोष ॥६४॥ घृत पकवान व खरी रसोई वासी निरदोष है ॥६५॥ महावीर भगवानका माता पिता भगवान दीक्षा लिया पहली पर्याय पूरी कर देवगति गये ६६॥ बाहुबल मुगलकौ रूप ॥६७॥ सारा जो फल खाया दोष नाहीं ॥६८॥ जुगल्या परस्परै लरै कखाय करै ॥६९॥ त्रेसठ शलाका पुरुषांकौ निहार मानै॥७०॥चन्द्र चौसठ जातके मानें ॥७१॥

जांदवा मास भक्षौ ॥७२॥ मानषोत्तर आगे मनुष्य जाय ॥७३॥ कामदेव चौवीस नाहीं मानें ॥७४॥ देवता तार्थंकरका मृतक शरीरका मुख माहेकी डाढ़ उपाड़ स्वर्ग लै जाय पूजै ॥७५॥ नाभि राजा मरुदेवी जुगलिया ॥७६॥ नव ग्रेवेयकका वासी जीव देव अनुदसनौ पर्यंत जाय ॥७७॥ चेल्यों आहार ल्यायौ सर्वग्य सेवाका पाता पातरामै थूको। चेलै गुर जूंठ उत्तम जान खाय गयों। तातें केवलज्ञान उपज्यौ ॥७८॥ अरु शास्त्रकौं बांचन वेठनेकौ चौका पटा ताके नीचे धरि देय, या शास्त्रकौ सिरानें दे सोवै अरु या कहै ऐ तौ जड़ है। याका कहा बिनय करिये अरु प्रतमाजीको कहै यह भी जड़ है याका कहा बिनय करिये। अरु प्रतमाजीको भी कहै यह भी जड़ है याकौ पूजै वा नमस्कार करें कहा फल होय ॥८०॥ अरु कुदेवादिकके पूजवामें अटकाव नाहीं वह तौ गृहस्तपनाकौ धर्म है ॥ ८१ ॥ अरु औरानै तौ कहे धर्मके अर्थ अंस मात्र भी हिंसा कीजे नाहीं। अरु मान बड़ाईके अर्थ सैकरा स्त्री पुरुष चैत्र मास आदि तीनौं ऋतु विषै गारा खूंदता खूंदता असंख्यात वा अनंत त्रस थावर जीवकी हिंस्या कराय अपनै निकट बुलावै व आपकौ नमस्कार करावै व चालता हुवा बी जाय। आवता पांच सात कोंस ताईं जाय। इत्यादि धर्म अर्थ नाना प्रकारकी हिंसा करै ताका दोष गनै नाहीं। अरु मूढ़े पाटी राखै कहै पवनकायकी हिंसा होय है। सो मुखका छिद्र तो सासता मुदित रहै है अरु बोलै भी मूर्खकी आड़ी सांसोंसांस निकसता नाहीं। सांसतौ नाककी आड़ निकसै है। ताके तौ पाटी दे नाहीं। अरु मूढ़ाकी लालसों असंख्यात त्रस जीव उपजै ताका दोष

गनै ही नाहीं। जैसे एक स्त्री अपने लघु पुत्रको अपने शरीरके आड़ा पट दै पुत्रकूं अंचल चुखावै मुख सूं या कह ये लड़का पुरुष है ताते याका सपर्श किये कुशीलका दोष लागै है। अरुमें परम शीलवंती हों ताते पुरुष नाम मात्रको भी सपर्श करना मौनें उचित नाहीं। पीछे अपने पतिको निंद्रा विषै सुत मेल्हा वा खांवदकी आंख चुराय दाव घाव कर आधी रात्रके समय वा दिन विषै मध्यान समय आदि चाहै जब अपनै घौड़ेका चिरवादार नीच कुलीकूं बड़ा महांकुरूप निर्दई तीव्र कखाय ऐसे निंद्य पुरुषसूं जाय भोग करै। अरु वह स्त्री कदे जार नखे मोड़ी वेगी जाय तब वेजार ऊनै लाठी मूढी आदसूं मारै तौ भी जारसूं विनयवान होय प्रीति ही करै। काम-देवसे निज भरतारकुं इक्षै नाहीं। तैसे ही स्वेताम्बरकौ प्रकार मुख सूं बोलनै कर त्रसकाय थावर जीवकी बाधा होती नाहीं। जो बाधा होती तौ परम दयाल षट कायके पीहर त्रस कायके रक्षक परम दिगम्बर जोगीश्वर बनोवासी संसार भोगसूं उदासीन निज देहके त्यागी परम बीतरागी शुद्धोपयोगी तरन तारन शांति मूरत इन्द्रादि देवा कर पूज्य मोक्षगामी ताका दर्शन किये ही ज्ञान प्राप्त होय। आप परका ज्ञानपना होय। ऐसे निर्विकार निर्ग्रथ गुरू भी खुले मुख उपदेश काहेको देसी। ताके मुखके कोई प्रकार हस्तादिक कर आछादन देखवे नाहीं। सो जी बातमें कोई प्रकार हिंसा नाहीं। ताकौ तौ ऐसा जतन करै और भील डौंव्या-दिनकी वा सूद्रके घरकी अनछान्यां पानी खालके सपर्से जल मदरा मांसके संयोग सहित ऐसे गारके भाजन ता विषै रात्रसमय

पचाई रसोई दीन पुरुषकी नाई जा सूद्रके घरकी लै आवै वा जैन-धर्मकी द्रोही सो जैनधर्मकी आज्ञा कर रहित विना आदरसूं अहा-र दे सो ऐसे भोजनके रागी ताका भक्षन करतै अंस मात्र भी दरेग मानै नाहीं। कैसे है भोजन त्रस जीवाकी रास है। बहुर ऐसे ई त्रस जीवकी राससई कंदोईकी वस्तु अथाना संधाना नौनी काजी आदि महां अभक्षका आचर्ण करै है। ताकी संसार मैं दोष गनै नाहीं अरु वाकूं प्रासुक कहै है। ए प्रासुक कैसा जैसा सोक हो तातें गृहस्थांका साग त्याग काहेको करते। सो रागी पुरुषोंकी विटंबना कहां ताईं कहिये।॥८३॥ बहुरि चित्रामकी पूतली नखै रह-नैका तो दोष गनै। अरु सैकड़ा स्त्री ताकौ सिखावै वदावै उपदेश देवाके संसर्ग रहे वाका लाल पाल करे। अरु वा नारी देखवेके मिस ही वाका स्पर्श करे। वा ओषध जोतिक वैदक कर मनोरथ सिद्ध करे। बहु द्रव्यक संग्रह करे। ताकरि मनमान्या विषय पोषे। आवाका सेवन करे वाके गर्भ रहा होय तो वाकों औषध दे गर्भका निपात करे। अर कहे मैं जती हों, मैं साधु हों म्हानें पूजो। सो ऐसे साधु भाषा समर्थक कैसे होंय। पत्थरकी नाव समुद्रविषै आप ही डूबे तो ओराने कैसे तारे। बहुर स्त्रीका भलामत वाके वास्ते वाका कपड़ा सहित ही ग्रहस्तपनामे ही मोक्ष वतावे। अर या भी कहे वज्रवृषभ नाराच संहनन विना मोक्ष नाहीं। अर करम भूमकी स्त्रीके अंतका तीन संहनन है तो स्त्री मोक्ष कैसे जाई। ताके शा-स्त्रमें पूर्वापरि दोषते ऐसे शास्त्र परमानीक कैसे अरु परमानीक विना सर्वज्ञका वचन कैसे। तातैं नेमकर अनुमान प्रमान करि यहा जान्या गया शास्त्र कल्पित हैं। कषाई पुरुषां अपना मत-

लब पोषवेके अर्थ रच्या है। बहुर कैई कहे हैं स्त्रीकों मोक्ष नाहीं तो नवां गुनस्थान पर्यंत तीनों वेदका उदे कैसे कहा। ताका उत्तर यह जो ये कथन भाव अपेक्षा है। सो भाव तो मोहकर्मका उदयसूं होय है। अरु द्रव्यां पुरुष स्त्री नपुंसकका चिन्ह नाम कर्मके उदयसे होय है। सो भाव तीनों वेदावारेने तो मोक्ष हम भी माने हैं। द्रव्यां स्त्री नपुंसककों मोक्ष नाहीं। वाकी समर्थता पंचमा गुनस्थान पर्यंत चढ़नेका है। आगे नाहीं यह नेम है। आगे एक द्रव्यां पुरुषको ही मोक्ष है। सो एकेन्द्री आदि असेनी पर्यंत अरु वा संमूर्छन पंचेन्द्री वा नारकी जुगल्यां य.के तो जैसो द्रव्यां चिन्ह है तैसा ही भाववेद पाइये है। अरु सैनी गर्भज पंचेन्द्री मनुष्य वा तिर्यंचके द्रव्यां माफिक भाववेद होय। वा अन वेदका भी उदय होय। यह गोमट्टसारजी विषें कहा है। जैसे उदाहरण कहिये, द्रव्यां तो पुरुष है। अरु बाके पुरुषसूं भोग करनेकी अभिलाषा वर्ते ताका तो भावां स्त्री वेदी द्रव्यां पुरुषवेदी कहिये। अरु एकै काल पुरुष स्त्री भोग करनेकी अभिलासा होय ताका भाव नपुंसक वेद कहिये। अरु द्रव्यां स्त्री पुरुष भोगनेकी अभिलासा वर्ते ताको भाव पुरुष वेदी अरु द्रव्या वेदी कहिये। ऐसे द्रव्या पुरुष भाव तीन वेदवारे जीवकों मोक्ष होइ है। ऐसे ही तीन वेदका उदय द्रव्या स्त्री व नपुंसकके जानना। ताको पंचमा गुनस्थान तक आगे होय नाहीं। ताको ये मोक्ष माने है। ताका विरुद्धपन है। बहुरि दिगम्बर धर्म विषे वा श्वेताम्बर धर्म विषे ऐसा कहा है। अब सम्यक्तमे उत्कृष्ट एकसो आठ जीव मोक्ष जाय। अड़तालीस पुरुष वेदी बत्रीस स्त्री वेदी अठाईस नपुंसक

वेदी मोक्ष जाय। सो यह ऐसे भाव वेदके धारीकी अपेक्षा तो विधि मिलै हैं। अरु द्रव्यांकी अपेक्षा विधि मिलती नांही। पुरुष स्त्री तो आध आध देखनेमे आवे है। द्रव्यां नपुंसक ल खा पुरुष स्त्रीमें एक भी देखवेमें आवे नहीं। तातैं भी तुम्हारे शास्त्रकी बात झूठी भई। बहुरि बाहुबल मुनिके वे ई ऐसे कहें हैं। वरस दिन ताईं केवलज्ञान डोल्यो डोल्यो फिरवो करो परन्तु बाहुबलजीके परिणाम विषें ऐसा कषाय रहवो करया सो यह भूम भरतकी है। ता ऊपरे हम तिष्टे हैं। तो यह उचित नहीं। ऐसे मान कषाय कर केवल ज्ञान उपजा नाहीं। इत्यादि वावला पुरुषकी नाई असंभव कहिये है। तो वे अन्न मतसे कहा घटि है। जिनधर्मकी बात ऐसी विपरीत है नाहीं ऐसी बात तो लड़का भी कहानी मात्र कहै नाहीं। जा पुरुष कदें सिंह देष्या नाहीं ताके भावे बिलाव भी सिंह है त्यों ही जा पुरुष वीतरागी पुरुषाका मुख थकी साचा जिनधर्म कदें सुन्या नाहीं ताके भावे मिथ्याधर्म ही सत्य है। तातै आचार्य कहे हैं अहो लोको, धर्मने परीक्षा कर ग्रहण करो। संसार विषें षोटे धर्म बहुत हैं षोटा धर्मके कहनहारे लोभी आचार्य बहुत है साचा धर्मके कहनहारे वीतरागी पुरुष विरले हैं। सो यह न्याय है अच्छी वस्तु जगत विषे दुर्लभ है। सो सर्वोत्कृष्ट शुद्ध जिन धर्म है सो दुर्लभ होय ही होय। तातै परीक्षा किये विना षोटा धर्मका धारन होय ताके सरधान कर अनन्त सागर विषे भ्रमन करना परे। यह जीव संसार विषे रुले है ताके रुलनेका कारन एक ही है और कोई कारन माने है सो भ्रम है। तातै धर्म अधर्मके निरधार करनेकी अवश्य बुद्धि चाहिये। घनी कहा कहिये। ऐसे श्वेताम्बर

मतकी उत्पत्ति कही। अरु ताका कामरूप कहा। आगे स्त्रीके सिखाये विना सहज सुभाव होय है। ताका स्वरूप विशेष कर कहिये है। मोहकी मूरत है। काम विकार कर आभूषत है। सोक मंदिर है। धीरजता कर रहित है। कायरता कर सहित है। साहस कर निवर्ती है। भयकर भीत है। माया कर हिरदा मैला है। मिथ्यात अरु अज्ञानका घर है। अदया, झूठा, असुच अंग, चपल अंग वा चपल नेत्र अरु अविवेक, कलह, निश्वास, रुदन क्रोध, माया, क्रपनता, हास, गिलानता, ममत्व, अदेसकपनो, अटीमर बुद्धि, बिसर्म, पीवकास्थानक है निगोद, वा क्रम, वा लट, ए सन्मूर्क्षन निमेष आदि त्रस थावर जीवनकी उत्पत्तिकी कोथली वा जोनीके स्थानक है कोईकी अच्छी वा बुरी बात सुना पीछे हृदै विषे राषवाने असमर्थ है। साली मोली बात करवाने परवीन है विकथाके सुनवाने अति आसक्त है। भाड़ विकथा बोलवेको अति अषता है। घरके षट कारज करवे विषें चतुर है। पूर्व परि विचार कर रहित है। पराधीन है। गाली गीत गावनेकी बड़ी बकता है। कुदेवादिकके रात जगावनेको सीत कालादि विषे परीसह सहवाने अति सूरवीर है। गरव कर सारो घर सारो ग्रहवाराके भारने धरवा है। वा भारवाने समर्थ है। पुत्र पौत्रादि ममत्व करनेको बांदरी साटस्य है। धर्म रतनके खोसवाने बड़ी लुटेर है। वा धर्म रतनके चोरवाने परवीन चोरटी है। नरकादि नीच गतिको लेजानेको सहकारी डलाव छै मोक्ष स्वर्गकी आगल है। हाव भाव कटाक्ष कर पुरुषके मन अरु नेत्र बाधनेको पास है। ब्रह्मा विस्नु महेश इन्द्र धरनेन्द्र चक्रवर्त सिंह हस्ती आदि बड़े बड़े तिनको क्रोड़

मात्र वस करनेको मोह विधूलके धरया सादृस्य है। बहुरि मनमें वर्यों ही वचनमें वर्यों ही कोईको बुलावे कोईको सेन दे कोईसूं प्रीत जोरे कोईसूं प्रीत तोरे छिनमें मिष्ट बोले छिनमें गारी देइ छिनमें लुभाय कर निकट आवे छिनमें उदास होय कर जाती रहे इत्यादि मायाचार सुभाव कामके तीव्रताके वस कर स्वयं सिद्ध पाये हैं स्त्रीके कारी साकी अग्नि जाननी सादृस्य कामदाहकी ज्वाला जाननी, पुरुषके त्रणकी अग्नि, नपुंसककै पिजावाकी अग्नि सादृस्य काम अग्न जाननी बहुरि दान देवेको कपला दासी समान रूपन है। सप्त स्थानका मोन्य कर रहित है। चिडीवत चकचकाट किये बिना दुखित है। अंदरायनके सादृस्य फल रूपको धरया है। बाह्य मनोहर भीतर विष समान कड़वा....। देखनेको मनोहर खाये प्रान जाइ। त्योंही स्त्री दीसती बाह्य मनोहर अंतर प्रान हरे है, द्रष्टि विषें सर्पनी सादृस्य है। सवद सुर पाये विचक्षन सूरवीर पुरुषनको विभले करनेको कामज्वर उपजावनेका कारन है। रजुस्वलामें वा प्रसूत होने समय चांडालनी सादृस्य है। ऐसे ओगुन होते संते भी मानके पहार ऊपरे चढ़ी औरनकूं सादृस्य मानै हैं। सो आचार्य कहे हैं धिक्कार होहु मोहके ताईं। सो वस्तुका स्वरूप यथारथ भासे नाहीं। ताही ते अनन्त संसार विषै भ्रमे है मोहके उदैते ही जिनेन्द्र देवने छोड़ कुदेवादिक पूजे है। सो मोई जीव काई काई अकल्यानकी बातें नाहीं करे। अरु अपने संसार विषे नाहीं उपमा पावे। आगे स्त्रीनके बेसर्मका स्वरूप कहिये है। मागकी सर्म होय है। सो तो स्वयमेव ही नांही। मूंछकी सर्म होय है सो मूछ नाहीं। आप्याकी

सर्म होय है सो काली कर नाषी। नाककी सरम होय है सो नाकने वेध काढ्या अरु छातीकी गड़ास होय है सो आड़ी काचली पहिर लीनी अरु भुजाका पराक्रम होय है सो हाथ विषै चूड़ी पहरलीनी अरु लाषी नान्ह जानेका भय होय है सो मेंधी कर लाल कर दीन्ही। काछकी सरम होय है सो काछ खोल नाखी अरु मनका गठास होय है सो मन मोहकर कामकर वेवल होय गया अरु मुषकी सर्म होय है सो मुख वस्त्रकर आक्षादन कीनी मानू ये मुष नाहीं आछादे है ऐसा भाव जनावे ह। सो कामी पुरुष मने मुषने देखकर नरक मत जावो अरु जंघाकी सर्म होय है सो घंघरा पहर लिया। इत्यादि वेसर्मके कारण घने ही है। सो कहां लग कहिये। तातैं स्त्री नपुंसक निर्लज्ज स्वभाव धरया है बाह्य तो ऐसी सर्म दिखावे सो अपने अंग सर्व कपड़ाकर आछादितके अरु पुत्र भ्राता माता पिता देवर जेठ सासु श्वसरा राजा प्रजा नगरका लोगां आदि लोग देखते गावे ता विखें मन मान्या विषे पोषे अंतरंगकी वासना कारन पाय बाहर झलके विना रहै नाहीं। बहुरि कैसी है स्त्री कामकर पीड़ित है मन इन्द्री जाकी अरु नषसूं ले रसना पर्यंत सप्त कुधातमई मूरत बनी है भीतर तो हाड़का समूह है ताके ऊपर मांस अरु रुधिर भरया है ऊपर नसा जारकर वेढ़ी है। ता ऊपर केसनके झुंड है मुख विषे लटा सादृस्य हाड़के दांत हैं। बहुरि भीतर वाय पित कफ मल मूत्र वीरजकर पूरित है उरा अग्र वा अनेक रोगकर ग्रसित है जरा अरु कालकर भयभीत है अनेक तरांके पराधीनताको धरया है। पेनी जायगा सन्मूर्छन उपजे है काख विषे, कुच नीचे, नाभि

तलें, जोन स्थान विषे, वा मल मूत्र विषें असंख्याते मनुष्य उपजे हैं बहुरि दुग्ध द्वारा विषें वा सब शरीर विषें त्रस वा निगोद सदैव उपजो करें हैं। वा वाह्य तनके मैल विषै लीख जुवा अनेक उपजे हैं सो नितका उत देखिये है ही अरु केई निर्दई या मूरंत वाको मारे भी है दया कर रहत है हृदय जाका सो देखो सराग प्रनामाका महातम ऐसी निधि स्त्रीको बड़े बड़े महंत पुरुष उत्कृष्ट निध जान सेवे है आपने कृतार्थ माने है वाका आलिंगन कर जन्म सफल माने है सो आचार्य कहें हैं धिक्कार होहु मोहकर्मके ताईं अरु धिक्कार होहु ऐसी स्त्रीको मोक्ष माने ताको अरु सदा भयवान अत्यंत कायर स्थिल संका सहित स्वभाव जाका ऐसी स्त्रीको मोक्ष कैसे होय सोलवां स्वर्ग छटा नर्क आगे जाय नाहीं अंतका तीन ही संघनन उपरांत संघनन होय नाहीं अन्तका तीन होय है अरु भोगभूमयां जुगलियाके पुरुष वा स्त्री तिर्यंच वा मनषांके एक आदिका ही संघनन है तातैं पुरुषार्थ कर रहित है तो ही तातैं वाके शुक्ल ध्याननकी सिद्ध नाहीं अरु शुक्लध्यान विना मोक्ष नाहीं सो यह निंद्यपना कही सो स्वाधीन रहित वा शील रहित स्त्री है ताका कहा है अरु सरधावान शील-वान स्त्री है सो निंद्या कर रहित है वाके गुन इन्द्रादिक देव गावे हैं अरु मुनि महाराज वा केवली भगवान भी शास्त्र विषै बड़ाई करी है अरु स्वर्ग मोक्षकी पात्र है तो औरांकी कहा बात ऐसी निंद्य स्त्री भी तिनका सो जिन धर्मका अनुग्रह कर ऐसी महमा पावे है। तो पुरुष धर्म साधे ताकी कहा पूछनी। बहु गुन आगे लघु ओगुनका जोर चले नाहीं। ये सर्वत्र न्याय है।

ऐसे स्त्रीका स्वरूप वर्णन किया। आगे दस प्रकार विद्या सीखनेका कारन कहिये है। ता विषै पंच बाहिजके कारन हैं। सिखावनेवाले आचार्य। पुस्तक। पढ़नेका स्थानक। भोजनकी थिरता। ऊपरली चाकरी करनेवाले टहलुआ। आभिंतरके पांच निरोग शरीर। बुद्धि कषायोपषम। विनयवान। वात सल्यत्व अंग। उद्धिम एवं दश। आगे शास्त्रवक्ताका उत्कृष्ट गुन कहिये है। कुलकर ऊंच होय। पुन्यवान होय। पंडित होय। अनेक मतके शास्त्रनका पारगामी होय। श्रोताका प्रश्न पेले ही अभिप्राय जानवाने समर्थ होय। सभाचतुर होय। प्रश्न सहावनै समर्थ होय। अपने जिन मतके शास्त्र घनाके वक्ता होय। उकत जुगत मिलावनेको प्रवीन होय। लोभ कर रहित होय। क्रोध मान माया कर वर्जित होय। उदास चित होय। सम्यक्तदृष्टि होय। संयमी होय। शास्त्रोक्त क्रियावान होय। निसंक होय। धर्मानुरागी होय। अनमतके खंडवाने समर्थ होय। ज्ञान वैराज्ञका लोभी होय। परदोष ढांकवावाला होय। अरु धर्मात्माका गुनका प्रकाशक होय। अध्यात्मरसके भोगी होय। वाशिलत्व अंग सहित होय। दयालु होय। परोपकारी होय। दातार होय। शास्त्र वांच शुभका फलने नाहीं चावे। लोका बड़ाई नाहीं चाहे। एक मोक्ष ही चाहे। मोक्षके अर्थ होय। सुपने उपदेस देवेकी बुद्धि होय। जिनधर्मकी प्रभावना करवे विषैं आसक्त चित्त होय। संयम घनो होय। हृदय कोमल होय। दया जल कर भीगा होय। वचन मिष्ट होय। हित मितने लिया वचन होय। सवद लजित होय। उतंग स्वर होय। और वकतापुरुष शास्त्रके वाचवे समै आंगली कठकावे

नाहीं । आलस मारे नाहीं । घूमे नाहीं । मंद सवद बोले नाहीं । शास्त्रसूं ऊंचा बैठे नाहीं । पांव पर पांव नाषे नाहीं । उकड़ बैठे नाहीं । गोड़ी दो वडिवारे नाहीं । घना दीर्घ शब्द उचारे नाहीं । अरु घना मंद सबद भी बोले नाहीं । भृमायल सवद भी बोले नाहीं । श्रोतानकी निज मतलबके अर्थ खुसामद करे नाहीं । जिनवानीके लखे अर्थको छिपावे नाहीं । जो एक अक्षरको छिपावे तो महापापी होई । अनन्त संसारी होय । जिनवानीके अनुस्वार विना अपने मतलब पोषनेके अर्थ अधिक हीन अर्थ प्रकासे नाहीं । जा शब्दको अर्थ आप सो उपजे नाहीं ता शब्दको अर्थ मान बड़ाई लियां अन्यथा नाहीं कहै । जिनदेव न भुलाय देय । मुखसो सभा विषे ऐसा कहे । या शब्दका अर्थ कछू हमारे ताईं भास्या नाहीं । हमारी बुद्धिकी नूनता है । विशेष ज्ञानी मिलेगा वा को पूंछेंगे । नाहीं मिलेगा तो जिनदेव देख्या सो प्रमान है । ऐसा अभिप्राय हो व हमारी बुद्धि तुक्ष है । ताके दोष कर तत्वका स्वरूप औरका और कहनेमें आवे वा साधनमें आवे । तो जिनदेव मोपर छिमा करो मेरा अभिप्राय तो ऐसा ही है । जिनदेवने ऐसा ही देप्या है तातैं भी ऐसा ही धरो है । अरु ऐसे ही ओरांको आचरन कराऊं हूं । मेरे मान बड़ाई लाभ अहंकार प्रयोजन नाहीं । सूक्ष्म अर्थकूं ओरसे ओर भासे तो मैं कहा करूं । ताहीं ते मो आदि दिगम्बर देवां प्रजंत ज्ञानकी नूनता पाई है । तातैं असत्य वा उभै मनो जोग वा वचन जोग वार-मां गुनस्थान प्रयंत कहो है । सत्य वचन जोग केवलीके भी है ।

तातैं मोने भी दोष नाहीं। सो ज्ञान तो एक केवली ज्ञान सूर्य प्रकाशक है। सोई सत्य है। ताकी महमा वचन अगोचर है। एक केवल ज्ञान ही गम्य है। केवली भगवान विना और के जानवाकी समर्थ नाहीं। तातैं ऐसे केवली भगवानके अर्थ मेरा वारंवार नमस्कार होहु। वे भगवान मोने बालक जान मो ऊपर छिमा करो। अरु मेरे शीघ्र ही केवल ज्ञानकी प्राप्त करो। त्यों मेरे भी निसंदेह सर्व तत्वके जाननेकी सिद्धि होय। ताही माफिक सुखकी प्राप्ति होय। ज्ञानका अरु सुखका जोड़ा है जेता ज्ञान तेता सुख। सो मैं सर्व प्रकारका निराकुलता सुखका साथी हूं। सुख विना और सब असार है। तातैं वे जिनेन्द्र देव मोने सरन होय जन्म मरनके दुख सो रहित करहु। संसार समुद्र सो पार करहुं मेरी तो दया शीघ्र करहु। मैं संसारके दुखसूं अत्यंत भयभीत भया हूं। तातैं संपूर्न मोक्षका सुख देहु घनी कहा कहिये। इति वक्ता स्वरूप संपूर्न। अथां श्रोता लक्षन कहिये है सो श्रोता अनेक प्रकारके हैं तिनके दिशंतकर कहिये है। माटी चालनी, छेली, विलाव, वक, पाषान, सर्प, हंस, भैंसा, फूटा घड़ा, डंस मसकादिक, जौक गाईएक ऐसे ये चौदा दृष्टांत कर या सादृश्य श्रोता चौदे प्रकार जानना। याने कोई मध्यम हैं कोई अधम हैं। आगे परम उत्कृष्ट श्रोताके लक्षन कहिये है। विनयवान होय। धर्मानुरागी होय। संसारके दुखसूं भयभीत होय। श्रद्धानी होय। बुद्धिमान होय। उद्यमी होय। मोक्षभिलाषी होय, तत्वज्ञान चाहक होय। परीक्षा प्रधान होय। हेय उपादेय करनेकी बुद्धि होय, ज्ञान वैराग्यका लोभी होय। दयावान होय मायाचार कर रहित होय,

निर्वीक्षिक हो। क्षमावान होय। कृपनता रहित उदार होय, प्रशमवान होय, प्रफुल्लित मुख होय। सोजरा पगुन रहित होय, सीलवान होय, स्वपर विचार विषे प्रवीन होय। लज्या गर्भ कर रहित होय। ठीभर बुद्धि न होय। विचक्षन होय। कोमल परनामी होय। प्रमादकर रहित होय। वात्सल्य अंगकर संयुक्त होय। आठमदकर रहित होय। आठ समकितका गुन वा आठ अंगकर रहित होय, आठमल दोषकर रहित होय, षट् अनायतन तीन मूढ़ता दोषकर रहित होय। आन धर्मका आरोचक होय। सत्यवादी। जिन धर्मका प्रभावना अंग विषे तत्पर होय। गुरादिकका मुखसूं जिनप्रनीत उपदेश श्रुत एकांत स्थान विषे बैठ हेय उपादेय करवांका स्वभाव होय। गुनग्राही होय। निज ओगुनको हेय होय। बीज बुद्धि रिद्धि साटस्य होय। ज्ञान कषायोपषम विसेश होय। वैनरूनो होय। ऊंच कुल होय अरु किया उपगारने भूले नाहीं। किया उपगारने भूले है सो महां पापी है। या उपरान्त और पाप नाहीं। लोकीक कार्यके उपगारको ही सत्य पुरुष नाहीं भूले हैं। तो परमार्थ कार्य-के उपगारको सत्य पुरुष कैसे भू[illegible]। एक अक्षरको उपगार भूले सो महां पापी है। विसवासघाती है कृतघ्नी कहिये। किया उपगार भूले है सो संसार विषे तीन महा पाप है। समद्रोही। अरु गुरादिक आपसो गुनकर अधिक होय। साक्षात सिष्या दिष्याधि धर्मोपदेस दे नाहीं। दे तो वे सर्व दंड देने ही जोग्य है। बहुरि गुरु आदि अपने बड़े पुरुष गुनकर अधिक होंय। तो उपदेस दे। अरु गुरु आप सन्मुख न बोले तिनके वचनको पोषनेरूप वचन कहै। अरु कदाच गुरांका कहां उपदेसमें कोई

तरहका संदेह वर्ते तो विसेषपने सहित प्रश्नकरताके उत्तर सुन निरसल्य खोय। चुपका होय रह्यो। वार वार गुरांके अगारू वचनालाप करे नाहीं। गुरांके अभिप्रायके अनुस्वार गुरू सन्मुष अवलोकन करे। तब प्रश्नरूप बचन बोले ऐसा नाहीं के गुरू पहिल्यां आप औराने उपदेस देने लाग जाय। सो गुरा पहली है उपदेसका अधिकारी होना ये तीव्र कषायांका लषिन है। यामें मान कषायकी मुख्यता है। अंतरंग विषैं ऐसा अभिप्राय वर्ते है। सो मैं भी विशेष ज्ञानवान होता तो उत्तम शिष्य होय ते पहली अपना औगुन काढ़े आपको वारंवार निंद्यै कि मैषदेरेग करे। हाय मेरा काई होसी हों तीव्र पापसो कब छूटों। कब निवृत हों सो तातैं अपने सदीव नूनताई मांवै पीछे कोई ओसर पाय कंठ सो पुट होई। वचन मिष्ट होय। आजीवकाकी आकुलता कर रहित होय। गुरुका चरन कमल विषै भ्रमर समान सदा लीन होय। साधर्मीकी संगत होय साधर्मी ही है कुटम्ब जाके बहुरि नेत्र नीक डाक सोंटीका पाषान दर्पन अग्रसारसे सरोंता सिद्धान्त रूप रतनके परतनके परिष्या करनेका अधिकारी है बहुरि सुननेकी इच्छा। श्रवन। ग्रहन। धारना। समान एक प्रश्न। ईतर निहचै ये आठ श्रोतानके गुन चाहिये। ऐसे श्रोता शास्त्र विषै सराह-वे जोग्य हैं। सोही मोक्षके पात्र है ताकी महमा इन्द्रादिक देव भी करें हैं। अरु महमा करनेवारे पुरुषके पुन्यका संचय होय है। अरु वाका मोह गले है गुनमानकी अनमोदना किये वाका गुनका लाभ होय है। औगुनवानकी अनुमोदना किये वाके औगुनका लाभ होय है। तातै औगुनवानकी अनुमोदना करनी नाहीं। इति श्रोता

वर्नन। आगे कृत कारित अनुमोदना। मन वचन काय ये तीन करनी अरु तीन जोगाके परस्पर लपटन कर गुनचास भंग उपजे हैं जैसे भागाकार सावद्य जोगका त्याग करना होय। अरु आखड़ी आदि विरतका गृहन करना होय। सोया गुनचास भंग करिये ताको व्योरो कृति कारित अनमोदना ए तो तीन भाग प्रत्येक अनुमोदना रात्र संजोगी भाग एक कहे ऐसे सात भंग ऐ तो तीन करनके भये बहुरि ऐसे ही सात भंग तीन जोगके जानने मन वचन काय ऐ तीन प्रत्येक इकईस जोग भंग है। मन वचन मन काय वचन काय ये तीन दोष जोगी भंग हैं। मन वचन काय ये त्रिसंजोगी भंग हैं। ऐसे ये सात तीन जोगोंका भंग हुआ सो सात करनाका भंग पूर्वे कहा। सो एक एक ऊपर सात सात जोगांका भंग लइये। गुनचास भंग हुये सो याका विशेष कहिये है। कृतकार मन कर। कृतकार वचन कर। कृतकार काया कर मनकर। वचन कर कृतमन काय कर। कृतमन वचन काय कर। सो ये सात तो कृत सौ भंग भये। ऐसेहीं ओर भी जानना कारितमन कर। कारितवचन कर। कारितमन काय कर। कारितवचन काय कर। अनमोदना वचन कर। अनमोदना काय कर। अनुमोदना वचन कर। अनुमोदना मन काय कर। अनुमोदना वचन काय कर। अनुमोदना मन वचन काय कर। कृतकारित मन कर। कृतकारित वचन कर। कृतकारित मन काय कर। कृतकारित वचनकाय कर। कृतकारितमन वचन काय कर। कृत अनुमोदना मन कर। कृत अनुमोदना वचन कर। कृत अनुमोदना काय कर। कृत अनुमोदना मनकर वचन कर। कृत अनुमोदना मनकर काय कर। कृत अनुमोदना वचन

काय कर। कृत अनुमोदना काय कर। कृत अनुमोदना मन वचन कर। कारित अनुमोदना मन काय कर। कारित अनुमोदना वचन काय कर। कारित अनुमोदना मन वचन काय कर। कृतकारित अनुमोदना मन वचन काय कर। ऐसे ये गुणचास भाग जानना। सो ईक भयनो ईक भयनोके भाग। ईक भैनो दो भैनोके भाग। ईक भैनो तिभैनोके भाग। दुभैनो ईक भैनोके भाग। दुभैनो दुभैनोका भाग। दुभैनो तिभैनोका भाग। ईक भैनोका भाग। तिभैनो दुभैनोका भाग। ई तिभौनो तिभोनोका भाग। ए गुनचास भागकी संज्ञा जाननी होय। एवं गुनचास अरु तीन काल सेती गिन्या एकसै सैतालीस भाग संपूर्ण।

आगे षोडस भावनाका स्वरूप कहिए है। दरसन विशुद्धी कहिये दर्शन नाम श्रद्धानका है। सो सरधानका निहचै विवहार विषै पच्चीस मल दोष रहित समकितकी निर्मलता होय ताको नाम दर्शन विशुद्धी कहिये। देवगुरू धर्मका वा आप सो गुनकर अधिक धर्मात्मा पुरषनका विनय करिये ताका नाम विनय संपन्नता कहिए। शील अरु वृत ता विषे अतीचार लगावे नाहीं। ताको शील वृत अनतीचार कहिये। मुन्याके तो पांच महावृत हैं अवशेष मूल तेईस शील है। अर श्रावकके बारा वृत तामें पांच अनुवृत तो वृत हैं। ओर अवशेष सात शील है ऐसा अर्थ जानना। निरंतर ज्ञानभ्यास हो वाको अभीक्षन ज्ञानोपयोग कहिये। धर्मानुराग होय ताको संवेग कहिये। अपनी सक्तके अनुसार त्याग करिये ताको नाम सकतिस त्याग कहिए। अपनी सक्तके अनुसार त्याग करिये ताको सक्तिस तप कहिये। निकषाय मरन करिये ताको

साधसमाध कहिये। दश प्रकारके संगका वैयावृत कहिये चाकरी करिये वा आप सोगुना कर अधिक धर्मात्मा पुरुष होय। ताकी भी पग चापी आदि चाकरी करिये ताको वैयावृत कहिये। अर्हन्त देवकी भगत करिये ताको अर्हत भक्ति कहिए। आचारजकी भगत करिये ताको आचार्य भक्ति कहिये। उपाध्याय आदि बहुत श्रुत कहिये। घना सास्त्रका जामें ज्ञान होय ताको बहुश्रुत भगत कहिये। जिनवानी समस्त सिद्धान्त गृन्थ ताकी भगत करिये। ताको प्रवचन भक्ति कहिये। षट् आवश्यमें दिन प्रति अंतराय न पाड़िये ताको आवस्यका प्रदान कहिये। ज्यों ज्यों धर्मका अंगीकार कर जिन धर्मकी प्रभावना होय। ताको प्रभावना अंग कहिये। जिनवानी सों विशेष प्रीत होत। ताको प्रवचन वात्सल्य कहिये। ये सोलाकारण भावना तीर्थंकर प्रकृति बंधनेको चौथा गुनस्थानसूं लगाय आठवां गुनस्थान पर्यंत बंधनेको कारन है। तातैं ऐसे सोलाकारनके भाव निरंतर राखिये। याका विषेश विनय करिये यासूं विषेश प्रीत राखिये। याके उछवसूं पूजाकर अैठा कराइये अर्घ उतारिये याका फल तीर्थंकर पद है। एवं षोड़सभावना सामान्य अर्थ संपूर्ण।

आगे दशलक्षनीक धर्मका स्वरूप कहिये है। न क्रोध कहिये क्रोधका अभावताको उत्तिम क्षिमा कहिये। मानका अभाव हुये विनय गुन प्रगटै तब कोमल परनाम होय ताको मार्दव कहिये। कुटिलता कहिये दगावाजी मायाचार रहित सरल परनामी होय ताको आर्जव कहिये। झूठ जो असत्य मन वचन कायकी प्रवृर्ति रहित होय ताको सत्य कहिये। निर्लोभता कर आतमा पवित्र

होई ताको सौच कहिये। केवल जलकर स्नान करनेका नाम सौच नाहीं है। असंजमका त्याग संजमका ग्रहन ताको संयम कहिये है। बारह प्रकारके तप ताकर आत्माको तपाय कर्मकलंकको नास करिये ताको तप कहिये। चौवीस प्रकारके परिग्रह आभ्यंतर बाह्यके ताका त्याग ताको त्याग कहिये। किंचित कहिये तिलका तुसमात्र परिग्रह सो रहित नगनस्वरूप ताको आकिंचन कहिये। शीलका पालना तासों बृह्मचर्य कहिये। ऐसा सामान्य दश लक्षण धर्म एवं दसलक्षनीक धर्म संपूर्ण। आगे रत्नत्रय धरमका स्वरूप कहिये है। 'सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः' ऐसा दस सूत्र विषें कह्या है। वा उमास्वाम आचार्यने दर्शन नाम श्रद्धानका कहा है। दर्शनोपयोगका नाम यहां दर्शन नाहीं। दर्शनका अनेक अर्थ है। जहां जैसा प्रयोजन होय तहां तैसा अर्थ जान लेना। सो दर्शनका अनेक नाम है। सुभावे दर्शन कहो वा प्रतीत कहो सरधान कहो। वा रुच कहो इत्यादि जानना। एवमेव ऐसेही है। यही है। अन्य नाहीं और प्रकार नाहीं। ऐसा सरधान होय ताको तो सामान्य दर्शनका स्वरूप कहिये। बहुरि सराहवा जोग्य कहो भावे भले प्रकार कहो भावे कार्यकारी कहो भावे सम्यक प्रकार कहो भावे सत्य कहो जथारथ कहो ये सब एकार्थ हैं। बहुरि यासो उल्टा जाकर स्वभाव होय। तासों विपर्यय वा अजोग्य कहिये। भावे बुरे प्रकार कहो। भावे अकार्यकारी कहो। भावे मिथ्या प्रकार कहो भावे असत्य कहो। भावे अजथार्थ कहो। ये सब कार्य तातैं सप्त तत्वका यथार्थ सरधान होय ताको निश्चय सम्यक दरसन कहिये। अर सप्त तत्वनका अजथार्थ श्रद्धान होय ताको मिथ्या

दर्शन कहिये। तत्व नाम वस्तूके भावका है। अरु अर्थ नाम पदार्थका है सो पदार्थ तो आधार है अरु तत्व आध्येय है। सो यहां मोक्ष होनेका प्रयोजन है। सो मोक्षने कारन मोक्ष मार्ग जोइ रत्नत्रय धर्म है। सो प्रथम सम्यक दर्शन कारण तत्वार्थ सरधान है। सो तत्व सप्त प्रकार हैं। जीव। अजीव। आश्रव। बंध। संवर। निर्जरा। बंध। मोक्ष। यामें पाप पुन्य मिलाये यहीका नाम नव पदार्थ है। सो तत्व कहो भावे पदार्थ कहो। सो सामान्य भेद कहे त्याको तो सप्त तत्वां कहा अरु विशेष भेद कहे ताको नव पदार्थ कहे। याका मूल आधार जीव अजीव दोय पदार्थ हैं अरु जीव तो एक ही प्रकार है अजीव पांच प्रकार है। पुद्गल। धर्म। अधर्म। आकास। काल। याहीकूं षट् द्रव्य कहिये। काल विना पंचास्तिकाय कहिये। याही ते सप्त तत्व नव पदार्थ षट द्रव्य पंचास्तिकाय याका स्वरूप विशेष जान्या चाहिये। सो याका बीस भेदाभेद करिये ताको भेद कहिये। अरु याका विशेष ज्ञान ताको विज्ञान कहिये। दोनोंका समुदायको भेद विज्ञान कहिये। याही ते सम्यक दर्शन होनेको भेद विज्ञान जिन वचन विषें कारन कहा है। तातैं विज्ञानकी वृद्धि सर्व भव्य जीवने कारन उचित है। तिने मूल कारन जिन वानी कर कहा जैन सिद्धान्त ग्रन्थ ताका मुष्य पहली अवलोकन करनो। जेता सम्यक चारित्र आदि और उत्तरोत्तर धर्म हैं। ताको सिद्ध एक सिद्धान्त ग्रन्थके अवलोकनतें ही है। तातें वाचन प्रक्षना। अनुपेक्षा। आमनाय। धर्मोपदेस। ये पांच प्रकारके स्वाध्याय निरंतर करना याका अर्थ बांचना सास्त्रका वांचनेका है। प्रक्षना नाम प्रश्न करवेका है।

अनुपेक्षा नाम वार वार घोषनेका है। आमनाय नाम कालके कल्प पढ़नेका है। जी काल ज्यों पढ़नेका होय सो पढ़े। धर्मोपदेश नाम परमार्थ धर्मोपदेश देनेका है। आगे सप्त तत्व ऐ आदिका स्वरूप कहिये। सो चेतना लक्षनो जीव जामे चेतनपनो होय ताकों जीव कहिये। तामे चेतनपनो नाहीं ताको अजीव कहिये। तातें चेतनपनो रहित कर्म आवनेको कारन ताको आश्रव कहिये। द्रव्य भावकर दोय प्रकार है। सो द्रव्य आश्रव तो धर्मकी सक्ति जो अनुभाग ताको कहिये। तथा भावाश्रव मिथ्यात। अविरत। कषाय। जोग। ये संतावन आश्रवको कहिये। सो यहां चार जातके जीवका भाव लेना बहुरि द्रव्य आश्रव भाव सरवका अभाव होना ताको संवर कहिये। पूर्वे द्रव्य कर्म व सत्ता विषे बंधर्थ तिनकी संवर पूर्वक एकी देस निर्जराका होना ताकों निर्जरा कहिये। बहुरि जीवके रागादिक भावनके निमित्त कारण कर्मकी वर्गना आत्मके प्रदेस विषे बधें ताको बंध कहिये। बहुरि द्रव्य कर्मका उदैका अभाव होना। अरु साताका भी अभाव होना। आपका अनंत चतुष्टय स्वभाव प्रगट होना याको मोक्ष कहिये। मोक्ष नाम द्रव्य कर्म वा भाव कर्म संयुक्त होनेका वा रहित होनेका वा निर्बंध होनेका वा निवृत्त होनेका है। सिद्धक्षेत्रके विषे जाय तिष्टे है आगे धर्मद्रव्यका अभाव है। तातैं धर्मद्रव्यके सहकाकी विना आगे गमन करवेकी सामर्थ नाहीं। तातैं वाहीं स्थित भये उस क्षेत्रमें अरु इस क्षेत्रमें भेद नाहीं। वह क्षेत्र ही सुखका स्थानक होइ तो उस क्षेत्र विषैं सर्व सिद्धोंनकी अवगाहना विषैं पाचों जातके स्थावर सूक्ष्म वादर अनन्ते तिष्टें हैं। ते तो महा अज्ञानी एक अक्षरके अनन्तवें भाग

ज्ञानके धारक तीव्र प्रचुर कर्मोंके उदै सहित सदीव तीन काल पर्यंत सास्वते तिष्टें हैं। ताते ये निश्चै करना सो सुख ज्ञान वीर्य आत्माका निज स्वभाव है। पर संजोगते नाहीं। अरु दुख अज्ञान वीरज ज्यो पराकर्मका नास होना। अरु मोह कषाय आदि जेतेक औदयिक भाव हैं। सो सर्व कर्मके उदैतें आत्मा विषैं सक्त उत्पन्न होय है। सो ये स्वभाव भी जीवका है। या भावा रूप जीव ही परनवै है। और द्रव्य परनमता नाहीं और द्रव्य तो जीवके निमित्त मात्र है। तातैं जो परद्रव्यके निमित पाय जीवके शक्ति उत्पन्न ताको उपादीक विभाव। वा अशुद्ध वा विकल्प वा दुःखरूप भाव कहिये। भावार्थ। जीवको ज्ञानानंद तो असल भाव है। अज्ञान दुख आदि अशुद्ध भाव हैं पर द्रव्यके संजोगते हैं तातैं कार्यके विषैं कारनका उपचार कर परभाव ही कहिये। ऐसे सप्त तत्वका स्वरूप जानना या विषे पुन्य पाप मिलाइये ताको नव पदार्थ कहिये। सामान्य कर कर्म एक प्रकार है। विशेषकर पुन्य पाप रूप दोय प्रकार है। सो आश्रव भी पुन्य पाप कर दोय प्रकार है। ऐसे ही संवर निर्जरा बंध मोक्ष विषैं भी दो भेद जानना। मूलभूत याका षट्द्रव्य है। काल विना पंचास्तिकाय है। ताका द्रव्य गुन पर्याय वा द्रव्यक्षेत्रकाल भाव वा परनाम जीव मूर्त आदि गाथाके अर्थको इहां जाने। सप्त तत्वका स्वरूप निर्मल भासे है। वा प्रमान–नय–नयनिक्षेप–अनुयोग–गुनस्थान–मार्गना–तीन लोकका स्वरूप वा मूल कर्म आठ वा उत्तर प्रकृति एकसै अड़तालीस तिनको गुनस्थान मार्गना विषे बंध उदीर्न सत्ता नाना जीव अपेक्षा वा एक जीव अपेक्षा वा नाना काल

अपेक्षा लगाइये वा त्रेपन भाव गुनस्थानके चढ़ने उतरनेको गैल इत्यादि। नाना प्रकारके उत्तरोत्तर तत्वका विशेष स्वरूप ज्यों ज्यों घना घना भेद भेद निमित नैमित्य आधार आधेय निश्चे विवहार हेय उपादेय इत्यादि ज्ञान विषैं विशेष अवलोकन होय। त्यों त्यों सरधान निर्मल होइ। याहीको छायक सम्यक्तका घाताका काम तो सातवां गुनस्थान ही हुआ सो बारवां गुनस्थान पर्यंत तो क्षायक सम्यक्त ही नाम पाया। अरु केवल सिद्धोंके परम क्षायक सम्यक्त नाम पाया। तातैं सत्यक्तकी निर्मलता होनेको ज्ञान कारन है। तातैं ज्ञान ही वधावना। तासों सर्व विषै ज्ञान गुन ही प्रधान है। इहां कोई ऐसा प्रश्न करे सप्त तत्व ही का सरधान करनेको मोक्षमार्ग कहा। और प्रकार क्यों न कहा ताका उत्तर कहिये है। जैसे कोई रोगी पुरुषको रोगकी निर्वृतिके अर्थ कोई स्याना वैद्य चिन्ह देखे सो प्रथम तो ऊ रोगीकी चाप देष पीछे रोगको निश्चे करे। पीछे यह रोग कौन कारन ते भया सो जानें। अरु कौन कारनसों रोग मिटे ताका उपाय विचार अरु रोग अनुक्रम सो कैसे घटे ताका उपाय जाने अरु इस रोगसों कैसा दुषी है। रोग गये कैसा सुखी होयगा। जैसे पूर्वं निज स्वभाव याका या तें-साही मोकों रोगसों रहित कर देगा। ऐसे सानुबातके जाननहारे वैद्य होंय ताही सो रोग जाय अजान वैद्यसों रोग जाय नाहीं। अजान वैद्य जम समान है। तैसें ही आश्रवादि सदा तत्वका जानपना संभवै सो ही कहिये है। सो सर्व जीव सुखी हुवा चाहे हैं। सो संपूर्न सुखका कारन मोक्ष है। तातैं मोक्ष ज्ञान

विना कैसे बने बहुर मोक्ष तो बंधके अभाव होनेका नाम है। पूर्वे बंध होय तो मोक्ष होय। तातैं बंधका स्वरूप बिशेष जानना। बहुर बंधका कारन आश्रव है। आश्रव विना बंध होता नाहीं। तातैं आश्रवका स्वरूप जान्या विना कैसे बनें। बहुरि आश्रवका अभावने कारन संवर है। संवर विना आश्रवका निरोध होय नाहीं तो संवरको अवस्य जानना योज्ञ है। बहुरी बंधका अभाव निर्जरा विना होय नाहीं। तातै निर्जराका स्वरूप जानना। ऐसे तत्व जान्या विना नेमकर मोक्ष मारगकी सिद्धि कैसे होय। याही तें सूत्रजी विषें तत्वार्थ श्रद्धान सम्यक दरसन कहा है। सो यह सर्वत्र न्याय है। जी कारन कर उनका उपार्ज्या होय तिनसों विपर्ययकारन मेल्यां उलझाउ मिटै जैसे शीतके निमित्त कर बाई उत्पन्न भया। तो वाका विपर्जै उस्नके निमित्तते बाईकी निर्वृत्य होय। ऐसा नाहीं के शीतका निमित्त कर उत्पन्न भया बायका रोगसो फेर सीतके निमित्त कर बाय मिटे सो मिटे नाहीं अधिक तीव्र बंध जाय। त्यों ही परद्रव्यसों रागद्वेष कर जीवनामा पदार्थ कर्मासूं उलटो। सो वीतराग भाव किये विना सुलटे नाहीं। अरु वीतराग भाव होय सो सदा तत्वके स्वरूप जानने ते होय। तातैं सप्त तत्वका जानपना ही निश्चे सम्यक होनेको ऐसा धारन आद्वैत एक ही कान कह्या। ऐसें सम्यक दरसनका स्वरूप जानना। तातैं श्री आचार्य दयाबुद्ध कर कहें हैं वा हेतकर कहें हैं। सर्व जीव ही सम्यक दर्शनको धारो। सम्यक दर्शन विना त्रिकालमें मोक्ष नाहीं। चाहो जेतो तपश्चरन करो जी कार्यका ज्यों कारन होय ताही कारन तें वो कार्यकी सिद्ध होय। ये सर्वत्र नेम है। इति सम्यक्दर्सन प्ररूपन संपूर्ण।

आगे सम्यक ज्ञानका स्वरूप कहिये है। सो ज्ञान ज्ञेयके जाननेका नाम है। सो ज्ञानावर्नी दर्शनावर्नीके क्षपोपसमतैं जाननें। सम्यक्त सहित जानपनाको सम्यकज्ञान कहिये। सो मिथ्यातके उदै सहित जानपनाको मिथ्याज्ञान कहिये। यहां ज्ञान विषें दर्शनको गर्भित जानना। सामान्यकर दोन्याको समुदायको ज्ञान ही कहिये। सो सप्त तत्वके जानपना विषैं संसय विमोह विभ्रम होय ताको मिथ्या ज्ञान कहिये और उत्तरोत्तर पदार्थ वा अजथार्थ वा जाने तो वाके जान्याने ते समकित नाम वा मिथ्या नाम पावै नाहीं। तातैं सप्त तत्व ह्मल पदार्थका जानपना संसै विमोह विभ्रम कर रहित होय सम्यक ज्ञान नाम पावै है। अरु निश्चे विचारता मूल सदा तत्वका स्वरूप जान्या विना उत्तरोत्तर तत्वका स्वरूप जान्या जाय नाहीं कारन विपर्जै भेद विपर्जै स्वरूप जेथ कसर रह जाय। जैसे कोई पुरुष सोनाने सोना कहे है। रूपाने रूपा कहे है। षोटा षरा रूपैयाकी परीक्षा करे है। इत्यादि लोकीक विषें घना ही पदार्थका यथार्थ स्वरूप जाने हैं। परंतु कारन विपर्जै है। मूल कृत याका पुद्गलकी परमानू चाहे। ताको जानता नाहीं। कोई परमेश्वरको कर्ता बतावे है कोई यास्त बतावै है। कोई पांच तत्व प्रथ्वी अप तेज वायु आकास मिल जीव नाना पदार्थकी उत्पत्ति कहे है। या प्रमान दा भिन्न भिन्न जुदा जुदा बनावे है। तातैं कारन विपर्जै जानना। बहुरि जीव पुद्गल मिल मनुष्यादिक अनेक प्रकार अस्मन जातकी पर्याय बनी है। ताको एक ही वस्तु माने है। सो भेद विपर्जै है। बहुरि ह आकाश धरती लग्या दीसे। एगर छोटा दीसे, जोतषीदेवाका विमान छोटा दीसे। वा चसमा

वा दुरबीन पदार्थका स्वरूप छोटा बड़ा दीसे इत्यादि स्वरूप विपर्जै जानना। अरु सम्यक् ज्ञान हुआ वस्तूका स्वरूप जैसे जिनदेव देष्या है। तैसे ही सरधान करनेमें आवे। तातैं पदार्थका स्वरूपका जानपना भी सम्यक् ज्ञानीके ही संसै विमोह विभ्रम रहित है। बहुरि संसे विमोह विभ्रमका स्वरूप कहीये जैसे चार पुरषां सीपके षंडका अवलोकन किया। सो एक पुरुष तो ऐसे कहने लागे न जाने सुवर्न है न जाने रूपा है ताको संसो कहिये। बहुरि एक पुरुष ऐसे वहते भये यातैं सीपका खंड है। ताको पूर्व त्रदोष रहित शुद्ध वस्तुका स्वरूप जैसा था तैसा ही जानपनाका धारी कहिये। त्यों ही सप्त तत्वके जानपना विषें वा अपरकी जानवा विषें लगाय लैना सोई कहिए है। आत्मा कौन है वा पुद्गल कौन है ताको संसो कहिये बहुरिमें तो ररठा ही हीं ताकों बिमोह कहिये। बहुरिमें वनुक्षु ताको विभ्रम कहिये। बहुरिमें चिद्रूप आत्मा हूं ताको समयक् ज्ञान कहिये। मुखसो कहना ती माफिक मन विषें धारना होय सो मनका धारन जैसा जैसा होय तैसा तैसा ही ज्ञान वाको कहिये है। ऐसे सम्यकज्ञानका स्वरूप जानना। सम्यकज्ञान सम्यकदर्शनका सहचारी है। सहचारीका साथ ही विरले लाग्या है वा विना नाहीं होय। ताके उदै होता वाको भी उदै होय। वाका नास होते उनका भी नास होय। ताको सहचारी कहिये। सो सम्यकदर्सन होते सम्यकज्ञान भी होय। सम्यकदर्शनके नास होते सम्यकज्ञानका भी होय। सम्यकदर्शन विना सम्यकज्ञान होय नाहीं। सम्यकदर्सन सम्यकज्ञानको कारन है। ऐसे सम्यक

ज्ञानका स्वरूप जथार्थ जानना। इति सम्यकज्ञान संपूर्ण। आगे सम्यक चारित्रका स्वरूप कहिये है। चारित्र नाम सावद्य जोगके त्यागका है। सो सम्यकज्ञान सहित त्याग किये सम्यक चारित्र नाम पावे है। सो सम्यकदृष्टिके सरधानमें वीतराग है। प्रवृत्तिमें किंचित राग भी है। ताको चारित्र मोह कारन अरु सरधानके भावाको दर्सन मोह कारन। सो सम्यकदृष्टिके अल्प कषाय नाहीं गनि वीतराग भाव ही कहिये। तातैं सम्यकदृष्टिको बंध निर्बंध निराश्रव ही कहिये है तो दोष नाहीं विवस्था जान लेनी। या कथा एक जांयगा सास्त्र विषैं कही है। मिथ्यादृष्टिके सरधानमें वीतराग भाव नाहीं। वीतराग भाव विना निर्बंध निराश्रव नाहीं। निर्बंध निराश्रव विना सावद्य जोगका त्याग कारजकारी नाहीं। सुरगादिकने तो कारन है। परन्तु मोक्षने कारन नाहीं। तातैं संसारका ही कारन कहिये। जे जे भाव संसारका कारन हैं ते ते आश्रव हैं। यह कार्यकारी है। अरु सम्यक् विना सावद्य जोगका त्याग करे है सो नरकादिकके भयका दुःख थकी करे है। परन्तु अंतरंग विषैं कोई द्रव्य इष्ट लागे नाहीं। केई द्रव्य अनिष्ट लागे है। तातैं सरधान विषे रागद्वेष प्रचुर जीवे है। सम्यकदृष्टि पर द्रव्यने असार जान तजे है। ये परद्रव्य कोई सुख दुखने कारन नाहीं निमित्त भूत हैं। दुखने कारन तो अपने अज्ञादिक भाव हैं। सुखने कारन अपने ज्ञानादिक भाव हैं। ऐसा जान सरधान विषैं पर द्रव्यका त्यागी हुवा है। तातैं याके पर द्रव्य सो राग नाहीं। जैसे फटकरी लोदकर कषायला किया वस्त्र वाके

ही रंग चढ़े। विना कषायला किया वस्तर दीर्घकाल पर्यंत रंगके समूहमें भीगा रहे तो भी वाके रंग लागे नाहीं। ऊपर ऊपर ही दीस्या करे। वा वस्त्रको पानीमें धोइये तो रंगत उतर जाय। कषायला किया वस्त्र रंग्या हुआ ता रंग कोई प्रकार उतरे नाहीं। त्यों ही सम्यक दृष्टिके कषाय कर रहित जीवका प्रनाम है। ताके दीर्घ काल पर्यंत परिग्रहके भारमे रहें तो भी कर्म मल लागे नाहीं। यह मिथ्या दृष्टिके कषायकर प्रनाम कषायला है। तातैं कर्माकर सदीव लिपत होय है। बहुरि साह गुमस्ता माता धाय बालकको एकसा षलावे एकसा लाडपाल करे। परन्तु अंतरंग विषैं राग भावाका विषेश पड़त है। त्योंही सम्यक्दृष्टि मिथ्या दृष्टिके अंतरंग भावाका अल्प बहुत्व विषेश जानना तातैं वीतराग भावा सहित सावद्य योगका त्याग सोही सम्यक चारित्र जानना। इति चारित्र कथन संपूर्न। आगे वारा अनुपेक्षाका स्वरूप कहिये है। बारा नाम बारहका है अनुपेक्षा नाम चिंतवन करनेका है। सो इहां बारा प्रकार वस्तुका स्वरूप निरंतर विचारना और नाहींके वारयांका स्वरूप जान स्थित होइ पर हरना। भावार्थ। यह जीव भ्रम बुद्धिकर अनादि कालसे वारा स्थान विषैं आसक्त हुआ है। तातैं याकी आसक्तता छुड़ावनेके अर्थ परम वीतराग गुरू यह बारा प्रकार भावना याके आसक्तता सुभावसूं विरुद्ध दिखाय छुटाया है। जैसे मदवा हस्ती सुछंद हुआ जहां जहां स्थानक विषैं अटके। अपना वा विराना हिमार बहुत करे ताकों चरषा वा भालावारे सांट मार बहुत हस्तीको बहुत मार देय छुड़ावै हैं। सोई कहिये

है प्रथम तो जीव संसारका स्वरूप थिर मान रमत्या है। ताको अध्रुव भावना कर संसारका स्वरूप अथिर दिखाया। शरीर सों उदास किया। बहुरि ये जीव माता पिता कुटुम्ब राजा देव इन्द्र आदि बहुत सुभटनकी मरन वांक्षता संता निरभै अमर सुखी हुवा चाहै है। काल करम सो डरप थकी सरन वांक्षे है। ताको असरन भावना कर सर्वत्र लोकके पदार्थ ताको असरन दिखाय सरन एक निश्चे चिद्रूप आत्मा ही दिखाया। बहुरि ये जीव जगत जो संसार वा चतुर गत ताके दुःखका याको खबर नाहीं। संसार विषैं कैसा कैसा दुःखे है। ताको जगत भावना कर नरकादि संसारके भयंकर तीव्र दुःखकी वेदनाको सहे ई दिखाय संसार दुःख सों भयभीत किया। अरु संसारके दुःखकी निर्वृत होनेका कारन परम धर्म ताका सेवन किया। बहुरि यह जीव कुटुम्ब सेवा कर पुत्र कलित्र धन धान्य शरीर आदि अपने माने है। ताको एकत्व भावना कर एक कोई जीवका नाहीं। जीव अनाद कालका एकला ही है। नरक गया तो एकला तिर्यंच गतिमें गया तो एकला, मनुष्य गतिमें गया तो एकला, देवगतिमें गया तो एकला। पुन्य पापकी सार्थ है। और कोई याके साथ जाय आवे नाहीं तातैं जीव सदा एकला है। ऐसा जान कुटुम्ब परवारादिकका ममत्व छुड़ाया। बहुरि यह जीव शरीरने अरु आपने एक ही मान रहा है। ताको असत्य भावनाको वस करतें न्यारा दिखाया जीवका द्रव्य गुन पर्याय न्यारा बताया। पुद्गलका द्रव्य गुन पर्याय न्यारा बताया। इत्यादि अनेक तरहसो भिन्न भिन्न दिखाय निज स्वरूपकी प्रतीत अनाई। बहुरि ये जीव शरीरको बहुत पवित्र

माने है। पवित्र मान्या सो बहुत असक्त होय। ताकी आसक्तता छुड़ावने अर्थ अशुभ भाव ताकरि शरीर विषैं हाड़-मांस-रुधिर चाम-नसा जाल वाय पित्त कफ मल मूत्र आदि सप्त धात वा सप्त उपधातमय शरीरका पिंड दिखाया। शरीर सों उदास किये अरु अपना चिद्रूप शरीर महापवित्र शुच निर्मल पर्म्म ज्ञान सुखका पुंज अनन्त महमा भंडार अवनासी अषंड केवल कलोल कर दैदीप्यमान निःकषाय शांत मूरत सबको प्यारा सिद्ध स्वरूप देवाधिदेव ऐसा अद्वैत ध्रुव त्रिलोक कर पूज्य निज स्वरूप दिखाय आप विषै ममत्व भाव कराया। बहुरि यह जीव संतावन आश्रव कर पाप पुन्य जल कर डूबे है। ताको आश्रव भावनाका स्वरूप दिखाया। आश्रव है तिनतै भयभीत किया। बहुरि यह जीव आश्रवके छिद्र मूंदनेका उपाय नाहीं जानता संता ताको संवर भावनाका स्वरूप दिखाया। संतावन संवरके कारण केस्या सो कहिये। दसलक्षनीक धर्म। बारा तप। बाईस परीसह। तेरा प्रकार चारित्र। नाकर संतावन किये। आश्रवके मूंदनेका उपाय बताया। बहुरि यह जीव पूर्वोक्त कर्म बंध होते ताका निर्जरा होनेका उपाय न जानता संता ताके निर्जरा भावनाका स्वरूप दिखाय चिद्रूप आत्माका ध्यान होसी। भया पर्म तप ताका उपाय बताया। बहुरि संसार विषें मोह कर्मका उदय कर संसारी जीवके यह मिथ्या भ्रम लग रहा है। केईकतो ईश्वरकर्ता माने हैं। केई नास्ति माने हैं। केई पुन्य माने हैं। केई वास किये जाके आधार इत्यादि नाना प्रकारके भ्रम सोई हुवा मोह अंधकार जीव भ्रम रहा ताके भ्रम दूर

करनेको कांत भावनास्वरूप दिखाय मोह भ्रम जिनवानी किरन्या कर दूर किया। तीन लोकका करता षट् द्रव्य है। षट् द्रव्य समुदायका नाम लोक है। जहां षट् द्रव्य नाहीं एक आकास ही है ताका नाम अलोक है। इस लोक एक पदार्थ करता नाम ही ए लोक अनादि निधन अकृतम है। अवन्य जी सास्वता स्वयं सिद्ध है। वहुरि ये जीव अधर्म विषे लग रहा है अधर्म कर्ता तृती होता नाहीं। अधर्म क्रियाका बुरा होय है महा क्लेस पावे है। ऐसे ही अनादिकाल वीता परन्तु याके धर्म रुच कवहुं न भई तातैं अधर्म छुड़ावनेके अर्थ धर्म भावना स्वरूप दिखाय धर्ममें लगाय अरु धर्मको सार दिखाया और सब असार दिखाया। धर्म विना या जीवका कबहुं भला होय नाहीं तातैं सर्व जीव धर्म चाहें हैं। परन्तु मोहके उदय कर धर्मका स्वरूप जाने नाहीं धर्मका लक्षन तनक ज्ञान वैराज है। अरु यह जीव अज्ञानी हुआ सराग भावा विषें धर्म चाहे है अरु परम सुखकी वांक्षा करे है। सो यह वांक्षा कैसे है जैसे कोई अज्ञानी सर्पके मुखसों अमृत पान चाहे वा जल विलोय घृत काढ्या चाहे वा वज्राग्नि विषें कमलके बीज वोय वाकी छाया विषें विश्राम किया चाहे। अथवा वांझ स्त्रीके पुत्रके विभावके विषें आकासके पुण्यका सेहरा गूंथ मुवा पीछें वाकी सोभा देख्या चाहे है। तो वाकी मनोर्थ कैसे सिद्ध होय। अथवा सूरज पच्छिम विषें उदय होय, चंद्रमा उस्न होय। सुमेर चलाचल होय। समुद्र मर्यादा लोपे वा सूख जाय। वा सिला ऊपरे कमल ऊंगे। अग्नि शीतल होइ। पानी उस्न होय। वांझके पुत्र होय। आकासके पुष्प लागें। सर्प निर्विष होय।

अमृत विष रूप होय इत्यादि इन वस्तुका सुभाव विपर्जै हुआ न होय न होसी परन्तु कदाच ए तो विपर्जै रूप होंय तो होंय। परन्तु सराग भावमें धर्म कदाचि न होय। यह जिनराजकी आज्ञा है। तातैं सर्व जीवा सराग भावने छोड़ वीतराग भावने भजो। वीतराग भाव है सो ही धर्म है। और धर्म है सो ही दया है। दयामें अरु वीतराग भावमें भेद नाहीं। सराग भाव है सो ही अधर्म है। और धर्म मांही यह नेम हैं। सराग भाव सो हिंसा जाननी। और जेता धर्मका अंग है सो वीतराग भावने अनुसारता है। वा वीतराग भावाने कारन है। ताही तें धर्म नाम पावे है। और जेता सराग भाव है सो पापका अंग है वा सराग भावने कारन है। ते अधर्म नाम पावे हैं। और अन्य जीवकी दया आदि बाह्य कारन विषें धर्म होय व न होय। जेवा क्रिया विषें वीतराग भाव मिलें तो ता विषें धर्म होय। और वीतराग भाव नाहीं मिलें तो धर्म नाहीं। अरु हिंसा अस्त आदि बाह्य क्रिया विषें कषाय अंस मिले तो पाप उपजे नाहीं। तातैं यह नेम ठहरया वीतराग भाव ही धर्म है। वीतराग भावने कारन रत्नत्रय धर्म है। रत्नत्रय धर्मने और अनेक कारन हैं। तातैं वीतराग भावांके मुलाझे। कारनका कारन उत्तरोतर सर्व कारनको धर्म कहिये तो दोष नाहीं। ऐसे ही सराग भाव ही अधर्म है। याको कारन मिथ्या दर्शन ज्ञान चारित्र वाको उत्तरोतर ये कारन अनेक हैं। ताको अधर्म कहिये तो दोष नाहीं। सम्यक दर्शन सम्यक ज्ञान वीतराग भाव यह तो जीवका निज स्वभाव है। सो मोक्ष पर्यंत सास्वता रहे है। यासों उल्टा जीव भावका विभाव है। सो ही संसार मार्ग है स्वभाव

मोक्ष मार्ग है।

अरु मोक्षरूपी भी सम्यक चारित्र मोक्ष मार्ग है। मोक्षरूपी नाहीं। तातैं सिद्धाके नहीं कह्या है। अरु सयोग अयोग केवलीके चारित्र कहया है। सो ही उपचार मात्र कहा है। चारित्र नाम सावद्य योगके त्यागका है। वीतराग भावाने कारन है। वीतराग भाव कार्य ही कारजकी सिद्ध हुआ पाछे कारन रहित नाहीं। तातैं ज्ञानकी छयोपसम अवस्था बारवां गुनस्थान ही है। ताहीं ते ही हेय उपादेयका विचार है। तब ही हेय उपादेयका विचार संभवे केवली कृत हुआ कारज करनो छो सो करि चुक्या। तासों वाके सावद्ययोगका त्याग संभवे नाहीं। ऐसा मोक्ष मार्ग धर्म ताही के प्रसाद कर जीव परम सुखी होय है। ऐसे अधर्मको छुड़ाय धर्म भी सन्मुख कीया। बहुरि यह जीव सम्यक-ज्ञानको सुलभ माने है। ताको दुर्लभ भावनाका स्वरूप दिखाय सम्यकज्ञान विषें सन्मुख किया सो कहिये है। प्रथम तो सर्व जीवाका घर अनादि ते नित्य निगोद है। तिन मांहीसूं नि-करना महा दुर्लभ है। उहांसे निकलनेका कोई प्रकार उपाव नाहीं। जीव हीन सक्त भया है आत्मा जाका सो सक्तहीन जीव सूं कैसे निसर्नेका उपाय आवे। एक अक्षरके अनन्तमें भाग ज्ञानका क्षयोपसम रहा है। अरु अनेक पाप प्रकृति समूहका उदय पाइये है। अरु वहां सो छे महीना आठ समयोंमें छेसौ आठ जीव निकरे हैं। ता उपरांत अधिक हीन मीसरे ही अनादिकालके ऐसे निकर व्यवहार राशि विषें आवें हैं। उतना ही विवहार राशिमें सौ मोक्ष जाय हैं। सो यह काल लब्धि महात्म

जानूं पूर्वे अनादि कालके जेते सिद्ध भये वा नित्य निगोदमें सो निकसे विनतें अनन्त गुन एक समै विषें अनादि काल सो लगाय साश्वते नित्य निगोदमें सूं निकसवो करें। तो भी एक निगोदके सरीर मांहि ता जीवका अनन्तवें भाग एक ऐसेमें खाली होय नाहीं। तो कहो राजमारग बटवारा माफिक निगोद मांसू जीवका निकसना कैसे होय। अरु कोई भाग उठे वहां सो निकसता आगे भी अनेक घाटा उलंघ मनुष्य विषे भी ऊच कुल, सुक्षेत्र वास, निरोग शरीर, पांचों इंद्री वा निर्मल दीर्घ आयु, संगति जिनधर्मकी प्राप्ति इत्यादि परंपरनामोंकी महमा कहा कहिये। ऐसी सामग्री पाय सम्यकदर्शन रत्नको नाहीं वांछे है। तिन दुर्बुधीका कहा पूछनो। अरु वाके अपजसकी कहा पूछनों। तीसूं एकेन्द्री पर्यायसूं पंचेन्द्री पर्याय पावना महादुर्लभ है। वे इन्द्री पर्यायसूं तेइन्द्री पर्याय होना महादुर्लभ है। तेन्द्री पर्यायसूं चौइन्द्री पर्याय पावना अति कठिन है। चौइन्द्री पर्यायसूं पंचेन्द्री असेनी पर्याय पावना अति कठिन है। असेनीसूं सेनी तामें भी गर्भज पर्याप्तन होना महादुर्लभ है। सो ये पर्याय अनुक्रमसों महादुर्लभ था सो भी अनन्त वार पाया। परन्तु सम्यकज्ञान अनादकाल लेय अ:तक एकवार भी नाहीं पाया। सो सम्यकज्ञान पाया होता तो संसार विषें क्यों रहता मोक्षके सुखको भी जाय प्राप्त होता। तीनों भव्य जीव शीघ्र ही सम्यकज्ञान परम चिन्तामनि रत्न महा अमोलक परम मंगल कारन मंगल रूप सुखकी आकृत पंच परम गुरुकर सेवनीक त्रिलोकके पूज्य मोक्ष सुखके पात्र ऐसा सर्वोत्कृष्ट सम्यकज्ञान महादुर्लभ,

परम उतकृष्ट परम पवित्र ऊंचा जान याको भजो। घनी कहा कहा कहिये कदाचित ऐसा मोसर पायकर ईहसों चूकता भया तो बहुरि ऐसा मोसर मिलनेका नाहीं। अवर और सामग्री तो सर्व पाइये है एक रुच करनी ही रही है। सो तू या पाया विना ऐसी सामग्री पाई हुई अहली जाय। तो याका दरेग सत्पुरुष कैसे न करें। अरु कैसे सम्यकज्ञान होनेके अर्थ उद्यम नाहीं करें परन्तु करे ही करें। यह जीव फेर एकेन्द्री पर्याय विषें जाय पड़े तो असंख्यात पुद्गल परवर्तन पर्यंत अनुत्कृष्ट रहै। एक पुद्गल परवर्तनकी संख्या अनन्त है। अनंते सागर अनन्ते सर्पनी वा काल चक्र अनन्तानन्त प्रमान एक पुद्गल पर्वर्तनके अनन्तमें भाग एक अंस भी पूर्न होय नाहीं। अरु एकेन्द्री पर्याय विषें दुःखका समुद्र अप्रमित है। नरकतें भी अधिक दुख पाइये है सो ऐसा अपरंपार दुःख ऐसे दीर्घकाल पर्यंत सास्वता कैसे भोगे जांय। परंतु कर्मके वस पड्या जीव कहा उपाय टरे। उहा अनेक रोग विषें कोई काल विषें एक रोगकी वेदना उदै होय। ताके दुख कर जीव कैसो आकुल व्याकुल परनवै है। अपघात कर मुवा चाहे सोये सताई पर्याय विषें सर्वमाहीं ही प्रवर्ते है। वा सर्व तिर्यंच पुन्यहीन पुरुष दुखःमई प्रत्यक्ष देखनेमें आवें हैं। तिनके एक एक दुःखका अनुभवन करऐ तो भोजन रुचे नाहीं। परन्तु यह जीव अज्ञान बुद्धिकर मोह मदरापान कर भूल रहा है। सो कहुं एकांत बैठ विचार ही करे नाहीं। जे जे पर्याय वर्तमान विषैं पावे तिन पर्याय सों तनमय होय एकत्व बुद्धि कर परनमें है पूर्वापर कुछ

विचार नाहीं ऐसा जाने नाहीं के यह वा अन्य जीव कह अवस्थामें वा सर्व पूर्व अनन्त वेर भोगी है। अरु धर्म विना बहुरि भोगेगा। यह पर्याय छूटा पाछें। धर्म विना नीच पर्याय ही पावना होयगी। तातैं गाफल न रह, नाहीं तो गाफल बहु दगा खाय है। मारा जाय दुःख पावे है और वैरी वस परे छे इत्यादि विचार कर सम्यक्ज्ञान सम्यकचारित्र रत्नत्रय धर्म पर्म निधान है सर्वोत्कृष्ट उपाध्येय जान महा दुर्लभ याकी प्राप्ति जान जिह तिहि प्रकार रत्नत्रय धर्मका सेवन करना। ऐसे दुर्लभ भावना सम्पूर्ण। इति बारानुपेक्षा स्वरूप वर्णन सम्पूर्ण।

आगे बारा प्रकार तपका स्वरूप कहिये है तप अनसन कहिये इनका अर्थ चार प्रकार, असन। पान। खादि। स्वादि। असन नाम पेटभर खानेका है। पान नाम जलदुग्धादि पीवनेका है। खादि नाम सोपाड़ीका है। स्वाद नाम मुखसोदिका है। यह चार जिह्वा इन्द्रीका भी विषय जानना और इन्द्रियनका नाहीं और इन्द्रीनका विषें और है। बहुरि आमोदर्य कहिये क्षुधा निवृत्य विषें एक ग्रास घाट दोय ग्रास घाट आदि घटिता घटिता एक ग्राम पर्यंत भोजनकी पूर्णता विष ऊन भोजन करे ताको ऊनोदर तप कहिये। आज इहि विध भोजन मिले तो लेनी। नाहीं मिलें तो हमारे आहार पानीका त्याग है। ऐसी अटपटी प्रतिज्ञा करे। मन बोले वाके अर्थि आदि छहों रस पर्यंतका त्याग है ताको रस परित्याग कहिये। बहुरि आराम प्रमुख छोड़िये कथनका विषें जाय बैठे ताको विविसन कहिये। बहुरि सीत काल विषें नदी तलाव चौपटा

आदि सीत विशेष परनेका स्थानक तिष्टे विषैं, ग्रीष्मकाल विषैं पर्वतके सिखिर, रेतके स्थान वा चोपट आदि मारग विषैं तिष्टे। वरषाकाल विषैं वृक्ष तले तिष्टे इत्यादि तीनों रितके उपाय कर मन भी कस्या जाय है। परन्तु किंचित् कसा कहा जाय है। मनके कसे विना तो तप नाम पावे नाहीं। अरु अभ्यंतर तप कर मन संपूर्ण कस्या जाय है। तातैं बाह्य तप बीच अभ्यंतरके तपका फल विषेश कहा है। ऐसा अर्थ जानना। आगे छह प्रकारके अभ्यंतर तपका स्वरूप कहिये है। तिन विषैं अपनसूं आखड़ी व्रत संयम विषैं भूलवाजान कर अल्प बहुत दोष लागे है। ताको श्री गुरू पास जी प्रकार मन वचन कर कृत कारित अनुमोदना कर पाप लागा होय ताको ज्योंका त्यों गुराने कहैं है। अंस मात्र भी दोष छिपावे नाहीं। पाछें श्री गुरुजो दंड दें ताको अंगीकार कर फेरसूं आखड़ी व्रत संजमादिकका छेद हुए स्थापन करें। ताको प्रायश्चित् तप कहिये। बहुरि श्री अरहंतदेव आदि पंच परमगुरु वा जिनवानी, जिन धर्म, जिन मंदिर, जिनविम्ब तिनका परम उत्कृष्ट विनय करे। वा मुनि अर्जिका श्रावक श्राविका चतुर प्रकार संघ ताका विनय करें। वा दस प्रकार संघताथा विनय करे। वा आपसूं गुना कर अधिक होय, अव्रत सम्यकदृष्टि आदि धर्मात्मा पुरुष होय ताका विनय करिये। ताको विनय तप कहिये। बहुरि आप सो गुनाकर अधिक होय ताको वैयावृत तप करिये। वाकी पग चापी आदि चाकरी करिये आहार दीजिये। वाका उनके खेद होय ताको जीती प्रकार निवृत्य करिये। रोग होय तो ओषद दीजिये इत्यादि

विषेश चाकरी करिये ताको वैयावृत तप कहिये। बहुरि वांचना। प्रक्षना, अनुपेक्षा, आमनाय, धर्मोपदेश। ये पांच प्रकार स्वाध्यायके भेद हैं। सो वांचना कहिये शास्त्रको वाच जाना, प्रक्षना कहिये प्रश्न करना, अनुपेक्षा कहिये काव्य श्लोक आदि जो पाठ ताका वारंवार कंठाग्र करनेके अर्थ घोखना। आम्न.य कहिये जी काल जोग स्वाध्याय होय। वा जो शास्त्रपाठ पढ़ने जोग्य होय। तिनका तिन काल विषें अध्ययन करे। और धर्मोपदेश कहिये धर्मका उपदेश देना ऐसे पंच प्रकार स्वाध्याय करना ताको तप कहिये। बहुरि जब जीव वा प्रमान शरीरका त्याग करना, त्याग कहिये शरीरका ममत्व छोड़ना। बाहूबलि मुनिकी सी नाईं शरीरका कोई प्रकार शोक सर नाहीं करना। अंग उपंगको चलाचल अपनी इच्छा करना ताको विउत्सर्ग व उत्सर्ग तप कहिये। बहुरि एकाग्र चित निरोधोध्यान इसका अर्थ यह है। आरत रौद्र ध्यानको छोड़ धर्म ध्यान शुक्लोधायका करना ताको ध्यान तप कहिये। ऐसें बारा प्रकार स्वरूप जानना। आगे बारा प्रकार तप तिनका फल कहिये है। आगां अनसनादि चार प्रकारके तप कर यह जीव स्वर्ग विषें कल्पवासी देव पुनीत पावे है। थोड़ीसी भोग सामग्री मनुष्य पर्याय विषें छोड़सी ताको फल अनन्त पायो। सो असंख्यात कालपर्यंत निर्विघ्नपने रहसी। अरु महा सुन्दर शरीर अमृतके भोगकर अत असंख्यातका पर्यंत निरोग एकसा गुलाबके फूल सादृश्य महा मनोज्ञ डहडात करत आयु पर्यंत निर्भै रहसी। ताकी महमा वचना अगोचर है कहां लो कहिये। आगे स्वर्गनके सुखका विशेष वर्णन करेंगे तहां ते

जान लेना। बहुरि विव्यक्त सैयासन काय क्लेस येक कर अत्यंत अतसेवंत महा दैदीप तेज प्रताप संयुक्त इन्द्र चक्रवर्त कामदेव वा महतपुरुषका शरीर पावै है। यह तो बाह्य प्रकार षट् तप तिन विषें प्रायश्चितका फल है। बाह्यके तप कर तो शरीर दम्या जाये है। अरु शरीर दम्याकर किंचित् मन दमा जाय है। ताहीतें भीत प्रनाम पावे है। अरु मन नाहीं दम्या जाय तो एक शरीरको दव्यां तप नाम पावे नाहीं। धर्मात्मा पुरुष एक मनकी बुद्धि ताके अर्थ वहरंग तप करे हैं। अरु आनमती शरीरमें तो घनों ही कसो है। पुन मन अंस मात्र दम्या जाय नाहीं। तातैं वाको अंसमात्र भी तप न कहा। अरु अभ्यंतरके तप कर मन दम्या जाय है। मनके दमवाकर कषायरूपी पर्वत गले है। ज्यों ज्यों कर्माकी हीनता विषेश जान तपकर होय है। त्योंही तपका फल विशेष जानना। जिन धर्म विषें कर्माकी मंदता सो ही परनामाकी विशुद्धता ताहीका नाम तप है धर्म है। वे ही मोक्ष मार्ग है वो ही कर्माके बालवाने ध्यानाग्नि छे संपूर्न सर्व सास्त्रांका रहस्य कर मोह कर्मके मंद पाड़नेका वास्ता नास करनेका है। और जेता संयम ध्यानाध्ययन ज्ञान वैराज्ञ आदि अनेक कारन बताये हैं। सो एक रागादिक भावां सो वधे हैं। अरु वीतराग भावांकर खुले हैं। तातैं सर्व प्रकार तीन काल तीन लोक विषें एक वीतराग भावहै सोई मोक्ष मार्ग है। सम्यक दर्शन, ज्ञान, चारित्रको मोक्ष मार्ग कहा है। सो यह वीतराग भावांने कारन है तातैं कारनके विषें कार्यको उपचार कहा है। कारन विना कार्यकी सिद्धि होय नाहीं। तातैं कारन प्रधान है सो प्रतक्ष यह बात अनुभवमें

आवे है। आगममें ठौर ठौर सर्व सिद्धान्त ता विषें एक सिद्धान्त भाव ही है। कर्म वर्गना सों तीन लोक घीका घड़ावत भरया है। सो कर्म वर्गनासों ही बंध होय है तो सिद्ध महाराजके होय। अरु विषें भोग परिग्रहके समूहसों ही बंध होय तो अवृत सम्यकदृष्टि चक्रवर्त तीर्थंकर आदि ताके होय। भरत चक्रवर्त क्षायक सम्यकदृष्टि था, तातैं सम्यक्तिके महात्म कर षट् खंडकी विभूत छियानवे हजार स्त्री योगने कर ही बंध निराश्रव ही रहा ताही तें दिक्षा धरे पछें अंतमुहुर्तकाल वाने केवलज्ञान उपार्ज्या सो सम्यकका महात्म अद्भुत है। यहां प्रश्न तुम कहते हो मुनि महाराज अवृत सम्यकदृष्टिके बंध नाहीं। तो चौथा गुनस्थानसूं लगाय दसवां गुनस्थान पर्यंत अनुक्रमतें घटता घटता बंध कैसे कह्या। ताकर उत्तर यह कथन है। सो तुरति सम्यक्त की अपेक्षे है। सो बंधने मूलभूत कारन एक दर्शन मोह है। जैसा दर्शन मोहते बंध है तातैं नाहीं गने। निश्चे विचारता दसमां गुनस्थान पर्यंत रागादिकोंमें बंध पाइये है। यह भी शास्त्र विषें कहा है। सो यह न्याय ही है। जी जी स्थानक विषें जेता रागभाव है। तेता तेता ही बंध है यह बात सिद्ध भई। एक असाधारन कारन अष्टकर्म बंधनेको मोहकर्म है तातैं एक मोह हीको नास करनको प्रायश्चित तप विषें धर्मबुद्धि विषेश होय है। अरु जाके धर्मबुद्धि विषेश होय संसारके दुखका भय होय सोई गुरुनपे जाय प्रायश्चित दंड लेय याका मनकी बात कौन जाने था याके आखड़ी भंग गई है। परन्तु यह धर्मात्मा परलोकका भय थकी प्रायश्चित अंगीकार करें हैं। यातें अनन्त गुनाफल विनय तपका है। या

विषें मन विषेश लगे है। यातें अनन्त गुनाफल स्वाध्याय तपका है। या विषे च्यारू कषाय मोह सहित विषेश गले है। अरु पाचों इन्द्री वस होय हैं। मन वस होय है। चित्तकी एकाग्रता होय है सोही ध्यान है। ध्यानसों मोक्ष विशेष है। संम्यक-दर्शन ज्ञान चारित्र निर्मल होय है। अरु पुन्यका संचय अतिशय सहित होय है। जेता धर्मका अंग है ते सर्व ज्ञान चारित्र निर्मल होय है। अरु पुन्यका संचय अतिशय सहित होय है। तेता धर्मका अंग है ते सर्व ज्ञानभ्यास ते जान्या जाय है। तातैं सर्व धर्मका मूल एक सास्त्रभ्यास है। याका फल केवल ज्ञान है। बहुरि स्वाध्याय ने व्युतसर्ग अरु ध्यान वाका फल भी अनंतानंत गुना है। याका फल मुख्यपने एक मोक्ष ही है। बहुरि बाह्य तप कहें हैं सो भी कषाय घटावनाके अर्थ कहें हैं। कषाय सहित बड़ा तप करे तो वह तप संसारका ही बीज है। मोक्षका बीज नाहीं ताहीं ते अज्ञान तप कहा है। सो ही आन मतमें है। जिन मतमें नाहीं। ऐसे बारा प्रकारके तप ताके फल जानना। अागे तपका फल विशेष कहिये है। सो देखो आनमत बारे वा तिर्यच मंद मंद कषायके महात्म कर सोलवा स्वर्ग पर्यंत जांय हैं। तो जिन धर्मके सरधानी कर्म काट मोक्षको न जाय। तातैं तप कर कर्मोका निर्जरा विशेष होय है। सो ही दस सूत्र विषें कहा है। तपतैं निर्जरा तातैं अवश्य आभ्यंतर वा बाह्य बारा प्रकारके तप तिनको अंगीकार करना। तप विना कदाचि कर्म कटें नाहीं। ऐसा तात्पर्य जानना। एवं संपूर्ण। आगे बार प्रकार संयम कहिये

है। ताका स्वरूप कहिये है। संजमेतिया संयम सो संयम दोय प्रकार है। एक इंद्रिय संयम एक दूसरा प्रान संयम सो इन्द्रिय संयम छः प्रकार है अरु प्रान संयम भी छः प्रकार है। पांच इन्द्री छटा मनको निरोध करे। षट् कायकी हिंसा त्यागे ताको इन्द्रिया संयम प्रान संयम निःकषाया होनेको कारन है। निःकषाय है सो ही मोक्षका मारग है। संयम विना कदाचि निःकषाय होय नाहीं। निःकषाय विना बंध उदै सत्ताका अभाव होय नाहीं। तातैं संयम ग्रहन करना योग है। एवं संयमका स्वरूप संपूर्न। आगे जिनबिम्बका दर्सन तथा नमस्कार कर कहा भेंट धरिये कैसे अस्तुत वा विनय करिये ताका स्वरूप विशेष कर कहिये है। दोहा—मैं वन्दों जिन देवको कर अति निर्मल भाव। करम बंधके छेदने और न कोई उपाव। या भांत चिंतवन कर प्रभातकी समायक किये पीछे लघु दीर्घ वाधा मेटि जल शुच करि पवित्र वस्त्र पहरे। अरु मनोज्ञ पवित्र य दोय आदि अष्ट द्रव्य पर्यंत रकेवी विषें धर तंदुल धो रकेबीमें ले आप उ वयनायगा। चाम ऊनका स्पर्श विना महा हर्ष संयुक्त जिन मंदिर आवे। अरु जिन मंदिरमें घसता तीन सब्द ऐसे उच्चारे। जय निःसही। जय निःसही। जय निःसही। ताका अर्थ यह जो देवादिक कोई गुप्त तिष्टे होंय ते दूर हूजो। बहुरि तीन सब्द पीछे ऐसे उच्चारे। जय, जय, जय, पीछे श्रीजीके सन्मुख खड़ा होय। जो द्रव्य ल्याये तिनको रकेबीमें धर तीन वार फेर श्रीजीके सन्मुख खेपिये। पीछे रकेबीको दूर मेल दोनों हस्त जोड़ न्याले अरु पोले हाथ राख तीन आ-

वर्तन कर एक श्रोनित कीजे पीछे अष्टांग नमस्कार ताका अर्थ तीन। मन वचन काय शुद्ध, दोय हाथ, दोय पग अरु माथो नवावे वाको अष्टांग नमस्कार कहिये। नमस्कार कीजे अरु तीन प्रदक्षना पहली दीजे। भावार्थ—अष्ट कर्मको ही नवाइये। अष्ट अंग कोन तिनके नाम। हाथ दोय। पग दोय। मस्तग। मन। वचन। काय। तीन ऐसे आठ अंग ताके उत्तर अघय अवयव मुख आंख कान अंगुली, आदि उपंग जानने। भगवान सर्वोत्कृष्ट हैं तासको सर्व ही अंग उपंग नमाय नमस्कार करिये। सर्वोत्कृष्ट बिनै संधै है। बहुरि जिनवानी वा निर्ग्रन्थ गुरू तिनको पंचांग नमस्कार करिये। पंचांग कौन दोन्यों गोड्या धरती सूं लगाय दोन्यो हस्त जोड़ मस्तकसो लगाय हस्त सहित मस्तक भूम सूं लगाय। यामें छाती पीठ नितंब विना पंच ही अंग नए तातैं पंचांग कहिये। बहुरि पीछा खड़ा होय तीन प्रदक्षना दीजे एक एक प्रति एक दिसाकी तरफ पहली तीन आवर्त सहित एक एक श्रोनित कीजिये। पीछे सन्मुख खड़ा होय। स्तुत्यादि पाठ पढ़िये। पीछे अष्टांग दंडोतकर पीछे पगाही पगा होय। अपने घरको उठ आइये। अरु निर्ग्रन्थ गुरू विराजे होंय तो नमोस्तु कीजे वाका मुख थकी धर्मोपदेस सुनीजे प्रस्नका निवारन करीजे अरु मंदिर विषें जिनबानीका उच्चार होता होय तो सरधानी पुरुष मुख थकी शास्त्र श्रवन कर अपने डेरे आइये। असरधानी पुरुषका मुखसों शास्त्र सुनना जोग्य नाहीं। शास्त्र श्रवन किये विना न आइये। भावार्थ— जिन दर्शनकी क्रिया विषें तो अष्टांग नमस्कारवाला श्रोनित बत्तीस आवर्ति

करिये। अब स्तुति करनेका विधान कहिये। जैसे राजादिक बड़े महंत पुरुष निकट कोई दीन पुरुष अपने दुःखकी निर्वृति अर्थ जाय सन्मुख खड़ा होय मुख आगे भेंट धर ऐसे वचनालाप करे। पहिले तो राजाकी बड़ाई करे पीछें निकट जाय है आपको दुःख होय तो कै वार युक्तकर कहे। पीछें वाकी निर्वृतको वांछता संता ऐसे कहे। ये मेरे दुःखकी निर्वृति करो सो ही ये संसारी परम दुखित आत्मा दीन मोह कर पीड़ा हुवा श्रीजीके निकट जाय खड़ा होय भेंट आगे धर पहले तो श्रीजीकी महमा वर्णन करे। गुनावाद श्रीजीका गावे। पीछे आपको अनाद कालको मोहकर्म घोरान घोर निगोद नर्कादिकके दुःख देवे ताका निर्नय करे। पीछे वाकी निर्वृतिके अर्थ ये प्रार्थना करे। सो हे भगवान यह अष्ट-कर्म मेरी लार लागे है। मोको महा तीव्र वेदना उपजावे है। मेरा स्वभावको घात मेली है। ताके दुःखकी बातमें कालों कहूं सो अबै ऐसे दुःखनका निपात करिये। अरु मोकों निर्मोह स्थान मोक्ष ताको दीजिये। सो मैं चिरकाल पर्यंत सुखी हूं। पीछे भगवानका प्रताप कर यह जीव सहजा ही सुखी होय है। अरु मोहकर्म सहज ही गले है। अबै याका विशेष बर्नन करिये है। जय जय त्वं च जय त्वं च जय जय भगवान जय प्रभू जय नाथमय करुनानिधि जय त्रिलोकनाथ जय संसारसमुद्रतारक जय भोगसूं परान्मुख जय वीतराग जय देव जय साचा देव जय सत्यवादी जय अनोपम जय बाधा रहित जय सर्वत्र प्रकाशिक केवल ज्ञान मूरत जय त्रिलोकित्रलोक जय सांत मूरत जय अविनासी जय निरंजन जय निराकार जय निर्लोभ जय अतुल महमा भंडार जय

अनन्त दर्शन अनन्त ज्ञान अनंत वीर्य अनंत सुखकर मंडित संसार सिरोमणि गनधरदेवा कर वासौ जातके इन्द्रांकरि पूज्य तुम जय वंत प्रवर्तो तुम्हारी जय होय तुम बड़ा वृद्धि होहु जय परमेश्वर जय पर्म ईश्वर जय जय अनंदपुंज मय अनंदमूर्त्ति जय कल्यान पुंज जय संसार समुद्रके पारगामी जय भव जलद जिहाज जय मुकति कामनी कंत जय केवल ज्ञान केवल दर्शन लोचन परम पुरुष परमात्मा जय अवनाशी जय टंकोतकीर्ण जय विस्व-रूप जय विस्वत्यागी विस्व ज्ञायक जय ज्ञान करि लोकालोक प्रमान वा तीन काल प्रमान अनन्त गुण खान जय चोसट रिद्धि भंडार अनन्त गुनके ईश्वर जय सुख सरोवर मान जय संपूर्न सुखकर त्रप्ति सर्व दोष दुखकर रहित जय अज्ञान तिमिरके विध्वंसक जय मिथ्या वज्रके फोड़नेको चकचूर करनेको परम वज्र जय त्वंग शीस जय त्वंग ज्ञानानंद वरसाने भव तापको दूरवाने वा भव्य जीव खेतीके पोषने या भव्य जीव खेतीके ज्ञान दर्सन सुख वीर्य आंगो पांग तीन लोकके अग्रभाग तिष्टे हैं। परन्तु तीन लोकने एक प्रमानके भाग मात्र खेद नाहीं उपजावैं हैं। भगवानके उपगारने नाहीं भूलें हैं। तातैं बुद्धिकर अल्प तिष्टे हैं। तव में भगवानके अनन्तवीर्य जाके भार मस्तग ऊपर कैसे धारोगे। याका भार मेरे बूते कैसे रहा जायगा भगवान अनन्त वली में असंख्यात वली असंख्तातवली ऊपर अनन्त वलीका भार कैसे ठहरे। तिन अगारू जाय भगवानकी सेवा कहिये तो भगवान परम दयाल हैं। सो मेरे ताई खेद न उपजावेंगे। सो अबै प्रत्यक्ष देखिये भगवान वृद्धि होनेको मेघ सादृश्य है। अहो भगावनजी

आकास विषें ये सूरज तिष्ठे है। सो कहिये है मानो तुम्हारी ध्यानरूपी अग्निका कनका ही है। अथवा तुम्हारे नखकी लल्लाई आकाशरूपी आरसी विषें ये प्रतिबिंब ही। अरु हो भगवानजी तुम्हारे मस्तग ऊपरै तीन क्षत्र सोभे हैं। सो मानू छत्रका मिस कर तीन लोक ही सेवनेको आये हैं। अरु हो भगवानजी तुम्हारे ऊपर चौसट चमर ढुरे हैं सो मानू चमरीका मिसकर इन्द्रके समूह गोप्य ही नमस्कार करें हैं। अहो भगवानजी जे तेरे सिंहासन कैसे सोभे हैं यह सिंहासन नाहीं मानू ये तीन लोकका समुदाय एक लोक होय तुम्हारे चरनकमल सेवनेकूं आये हैं। सो कैसे होत संते सेवे हैं। यह भगवान अनन्त चतुष्टयको प्राप्त भये हैं। सो सिद्ध अवस्था विषें मेरे ऊपर तिष्ठेंगे। अहो भगवानजी तेरे असोक वृक्ष ऊपर तिष्ठे है। सो त्रिलोकके जीवाने शोक रहित करे है। बहुरि हे भगवानजी आपके शरीरकी क्रांत जैसा जैसा शरीर होय तैसा तैसा ही भामंडल कियो दसों दिसाने उद्योत किया है। ता विषें सात तो देखने हारेका प्रतभासे है। बहुरि हे भगवानजी तुम्हारे आभ्यंतरके आत्मीक गुन तो अनंतानंत हैं। ताकी महमा तो कौनपै कही जाई है। परंत आपाके प्रतिसय कर शरीर भी ऐसा अतिशयरूप प्रणम्या है। ताका दर्शन किये विकार भाव विलै जाय। काम उपसांत होय। मोह जड़ मूलो उड जाइ। ज्ञानावरनादि घातिया कर्म सिथिल होंय। पाप प्रकृति प्रलेतैं प्राप्त होय। सम्यकदर्शन मोक्षका वीर्य उत्पन्न होय। इत्यादि सर्व आभ्यंतर बाह्य विप्र विलै जाइ। सो हे भगवान ऐसे शरीरकी महमा

सहस्र जिह्वां कर इन्द्रादिक देव क्यों नाहीं करें। अरु हजार नेत्र कर तुम्हारे स्वरूपका निरूपन क्यों नाहीं करें। अरु इन्द्रायाका समुह अनेक सरीर बनाई भक्त आन दरसकी भीगी क्यों नाहीं नृत्य करें। बहुरि केसो है तुम्हारा शरीर ता विषें एक हजार आठ लक्षने पाइये है। तिनका प्रतबिम्ब आकाश रूपी आरसी विषें मानू नाहीं परया है। सो तुमारे गुनोंका प्रतिबिम्ब तारेनके समूह प्रतभासे है। बहुरि हे जिनेन्द्र देव तुम्हारे चरनारबिंदके नखकी ललाई कैसी है मानू केवल ज्ञान दिसका उदय करवाने सूरज ही उहां ऊगा है। वा भव्य जीवके वर्म्म काष्ट बाने तुमा नाम्रिके तिन ज्ञान होय आन नाहीं प्राप्त भया वा मंगल वृक्ष तिनके कूपल ही नाहीं है। वा तप रूपी गज ताके मस्तगका तिलक ही नाहीं हैं। अथवा चिन्ता मन रत्न कल्पवृक्ष चित्रामवेल कामधेन रसकूप पारस वा इन्द्र धर्नेन्द्र नारायण बलभद्र तीर्थंकर चतुर प्रकारके देव राजाने समूह यह समस्त उत्कृष्ट पदार्थ अरु मोक्ष देनेका एक भाजन परम उत्कृष्ट निधान ही है। भावार्थ। सर्वोत्कृष्ट वस्तुकी प्राप्ति तुमारे चरनाके आराध्याये मिलै है। तातै तुमारे चरन ही उत्कृष्ट निध हैं। बहुरि भगवानजी तेरा हृदय विस्तीरन कैसे सोभे है मान् लोकालोकके पदार्थ ही अभ्यंतर समाय गये हैं। ताते विस्तीर्न है। अरु तुमारी नासका ऐसी सोभे है मानू मोक्ष चढ़नेकी नसेनी है। अरु तुमारा मुख ऐसा सोहे है मानू गुलाबका फूल ही विगस्या है अरु तुमारे नेत्र ऐसे सोभे हैं मानू रक्त कमल विकसायमान है। अरु तुम्हारे नेत्रामें ऐसा

आनंदरूप है। ताके एक अंस मात्र भी आनंदका निर्मापन ताकर जानके देव तिनके शरीर उत्पन्न भये हैं। इत्यादिक तुम्हारे शरीरकी महमा कहने समर्थ त्रिलोकमें कोई नाहीं। लाड़ला पुत्र माता पिताकू चाहे त्यों बोले पीछे माता पिता बापे बालग जानकर तासू प्रीति ही करे। अरु मन वंक्षित मिष्ट वस्तु वान खावा मगाय देय। तासू हे भगवान तुम हमारे उचित माता पिता हो। अरु में लघु पुत्र हों सो लघु बालक जान मोपर क्षिमा करिये। हे प्रभूजी तुम समान मेरे और वल्लभ नाहीं। अरु हे भगवानजी मोक्ष लक्षमीके कंथ थें ही हो। अरु जगतका उधारक थेई हीं अर भव्य जीवाने उद्धारवां समर्थ थेई हो। तुमारे चरनारबिन्दको सेय सेय अनेक जीव तिरे और तिरेंगे अरु तिरे हैं। अहो भगवान दुख दूर करने थेंई समर्थ हो। अरु हे भगवान हे प्रभू हे जिनेन्द्र तुम्हारी महमा अगम्य है। अरु हे भगवान समोसरन लक्ष्मीसूं विरक्त थेंई हो। कामवानके विध्वंसक थेंई हो। मोह मल्लको जीतवाने अभूत मल्ल हो। अरु जरा वा मरनसू रहित होइ कालरूप दानाका जपने तुम ही प्राप्त भया हो। काल निर्दई अनाद कालको त्रिलोकका जीवाने निगलतो निपात करतो सो जाका निवारवाने कोई समर्थ नाहीं समस्त त्रैलोक्यके जीव कालका गालमें वसे है। तिनकू निर्भै हूवो दातातें चगल चगल नगलै है। लोभी त्रिप्त नाहीं होय। ताकी दुष्टता अरु प्रलबताने जीतवा कोई समर्थ नाहीं ताको तुम छिन मात्रमें जीता सो हे भगवान तुमकू हमारा नमस्कार होहु। बहुरि हे भगवानजी तुमारे चरनक सन्मुख आवता मेरा पग पवित्र भया अर तुम आगे हस्त

जोड़ता हाथ पवित्र भया अरु तुमारा रूप अवलोकन करता नेत्र पवित्र भया। तुमारे गुनकी महमा वा स्तुति करता जिह्वा पवित्र भई। अरु तुमारे गुननकी पंकति सुमरन करता मन पवित्र भया। तुमारे गुनानुवाद श्रवन करता श्रवन पवित्र भया। तुमारे गुननका अनमोदना कर मन पवित्र भया। तुमारे चरननकू अष्टांग नमस्कार करता सर्वांग पवित्र भया। हो जिनेन्द्रदेव धन्य आजकी घड़ी धन्य आजका दिन धन्य आजका मास वा संवत्सर सो या कालमें दर्शन करनेकूं सन्मुख भया। हे परमेश्वरजी मेरे आपका दर्सन करता ऐसा आनन्द भया मानू निधि पाई। चिन्तामन रत्न पाया वा कामधेन वा चित्रावेल घरमें आई। मानू कल्प वृक्ष मेरे द्वारे भया। वा पारसकी प्राप्ति हुई। सम्यक रतन तो मेरे सहज ही उत्पन्न भया। सो ऐसे सुखकी महमा मैं कौन कहों। अहो भगवानजी तुमारे गुनकी महमा करता जिह्वा त्रप्ति होय नाहीं। तुम्हारे गुन अनमोदना करता मन त्रप्ति होय नाहीं। अरु तुमारे रूपको अवलोकन करता नेत्र त्रप्ति होंय नाहीं। हे भगवानजी मेरे ऐसा उत्कृष्ट पुन्य उदय आया अरु ऐसी काल लब्धि आय प्राप्त भई जाके निमित्तकर सर्वोत्कृष्ट त्रैलोक्य पूज्य सो आज ऐसे देव पाये। सो धन्य मेरा मनुष्य भव सो आपके दर्शनकर सफल भया। पूर्वं अनन्त पर्याय तुमारे दर्शन विना विफल गये। अहो प्रभूजी तुम पूर्वं तीन लोक पूज्य पवित्र नव तू छोड़ संसार देहसू विरक्त होय भो भगवान भोग भाव असार जान मोक्ष उपादेय मान स्वमेव अर्हंती दिक्षा धरी। ततकाल ही मन पर्यय ग्यान भया। पीछे शीघ्र ही केवल ज्ञान सूर्यका निरावर्न

उदै होय। लोकालोकके अनन्ते तत्व पदार्थ द्रव्य गुन पर्याय संयुक्त द्रव्य क्षेत्र काल भावने लिया तीन काल मध्य चराचर पदार्थ एक समयमें तुम्हारे ज्ञान रूपी आरसीमें स्वयमेव ही विना इन्द्रिय आन झलका ताकी महमा कहवाने सहस्र जिह्वासुं इन्द्र भी समरथ नाहीं। वा वचनवल रिद्धके धारक गनधरादि महा जोगीसुर भी नाहीं। बहुरि भव्यजीवाका पुन्यके उदयते तुमारी दिव्यध्वनि निकसी सो एक अंत महूर्तमें ऐसा तत्वोपदेस खिरे ताकी रचना शास्त्रमें लिखिये। तो उन शास्त्रोंसो अनन्त लोक पूर्न होयं। हे भगवान तुम्हारे गुनकी महमा कैसे करिये। बहुरि हे भगवान तुमारी वानीका अतिशय कहा कहिये। जो ऐसा खिरे अनक्षर रूप अनेक भेद लिया पीवे भव्यके कर्न संपुष्टमें पुद्गलकी वर्गना सब्द रूप प्रवर्ते। असंख्यात ऐसे चतुरन कायके देव देवांगना असंख्यात वर्ष पर्यंत प्रश्न विचारे थे। अरु असंख्याते मनुष्य वा तिर्यंच घना काल पर्यंत प्रश्न विचारें थे तिनको अपनी भाषामें प्रश्नके उत्तर हुवे और जिन उपरान्त अनेक वाक्यका उपदेश देय तिस उपरान्त अनन्तानन्त तत्वके निरूपन अहला गया जूंघ त्यूं अपरंपार एक जातके जलरूप वर्षा करे पीछे आम नारियल इत्यादि अनेक वृक्ष अपनी अपनी समर्थ माफिक जलका ग्रहन करे। अपने अपन स्वभाव रूप परनवे। बहुरि दर्याव तलाव कुआ वावड़ी आदि निवान अपने अपने माफिक जलका ग्रहन करे अरु अवषेस मेघका जल योंही जाय है। त्यों ही जिनवानीका उपदेश जानना बहुरि ता बिषें हे भगवानजी तुम ऐसा उपदेश दिया। ये षटद्रव्य अनादि निधन हैं। तामें पांच द्रव्य तो

अचेतन जड़ है। जीव नाम द्रव्य चेतन है तामे पुद्गल मूर्तीक है अवशेष पांच अमूर्तीक हैं। येही छहों द्रव्यका समुदाय सो ही लोक कहिये। जहां एक आकास द्रव्य ही पाइये पांच न पाइये तासूं अलोक कहिये। लोक अलोकका समुदाय आकाश एक अनन्त प्रदेशी तीन लोक प्रमान असंख्यात प्रदेशी एक एक धर्म अधर्म द्रव्य है। अरु कालकी कालानु असंख्यात एक एक प्रदेस मात्र है। जीव द्रव्य एक एक तीन लोकके प्रमान असंख्यात प्रदेश समूह तें है जिनसो अनन्तगुने एक प्रदेस आकाशको धरै पुद्गल द्रव्य अनंत है। सो चार द्रव्य अनादके थिर ध्रुव तिष्टें हैं। जीव पुद्गल ये गमनागमन भी करें हैं। सो दुहरा तीन लोक आकास द्रव्यके बीच तिष्ठे है। याका करता कोई और नाहीं। ये छहों द्रव्य अनन्तकाल पर्यंत स्वयं सिद्ध बन रहे हैं। अरु जीवनके रागभावन करि पुद्गल पिन्डरूप प्रकृति प्रदेसस्थित अनुभाग चार प्रकार वंध तासूं जीव बंधे है। वाके उपदेसने जीवकी दशा एक विभावरूप होय है। निजभाव ज्ञानानंदमय धारया जाय है। जीव अनन्त सुखका पुंज है। कर्मके उदयतें महा आकुलतारूप परनवे है ताके दुखकी वार्ताको कहनेको समर्थ नाहीं। या दुखकू निवारवे अर्थ सम्यकदर्सन ज्ञानचारित्र-का उपदेस भगवान देते भये। तुमही संसार समुद्रमें डूबते प्रानीनको हस्ता लंवन हो। तुमारा उपदेस न होता तो ए सर्व प्रानी संसारमें डुवे हीं रहते तो बड़ा नल लहो तातै तुम धन्य हो अरु तिहारा उपदेश धन्य है। अरु तुमारा सासन धन्य है। तुमारा बताया मोक्षका मार्ग धन्य है। अरु धन्य तुमारे अनुसारी

मुन्यादिक सत्पुरुष ताकी महमा करने समर्थ हम नाहीं। कहां तो नर्क वा निगोदादिकके दुख वा ज्ञान वीरजकी नूनता अरु कहां मोक्षका सुख अरु ज्ञान वीर्यादिककी अनन्तता सो हे भगवान तुमारे प्रसाद कर यह जीव चतुर गतिके दुखको छोड़ मोक्षके सुखने पावे है। ऐसे परम उपगारी तुम ही हो। तातैं हम तुमारे ताईं वारंबार नमस्कार करें है। बहुरि भगवानजी म ऐसा तत्वोपदेसका व्याख्यान किया ये अधो लोक है, ये मध्य लोक है, यह ऊर्द्ध लोक है, तीन बात विलैकर वेष्टित है। वा तीन लोकका एक महा स्कंध है। ता विषें अष्ट प्रतमा स्वर्ग विमान जड़ रहे है। बहुरि एकेन्द्री जीव बे इन्द्री जीव ऐते ते इन्द्री ऐते पंचेन्द्री ऐने तिर्यंच ऐते मनुष्य ऐते देव ऐते पर्याप्त ऐते अपर्याप्त ऐते सूक्ष्म वा बादर ऐते नित्य निगोदके जीव ऐते अतीत कालके समय अनन्ते तासू अनन्त वर्गना स्थान गुने जीव रासका प्रमान है। अरु तासो अनन्त वर्गना स्थाना गुने पुद्गल रासका प्रमान है अरु तासू अनन्त वर्गना स्थान गुने अनन्त कालका प्रमान है। तासू अनन्त वर्गना स्थान गुने आकास द्रव्यका प्रदेसनका प्रमान है। तातैं अनन्त वर्गना स्थान गुने धर्म द्रव्य अधर्म द्रव्यका अगुर लघु नामा गुन ताका अविभाग प्रतिक्षेद है। तातैं अनन्त वर्गना स्थान गुने सूक्ष्म निगोदिया अलब्धि अपर्याप्तनके सर्व जीवांसू घाटिसुं घाटि एक छोटे अक्षरके अनन्तवें भाग ज्ञान कोई ऐसा निरास पाइये है। ताका नाम पर्याय ज्ञान है वासूं कोईके ज्ञान त्रिकाल त्रिलोकमें घाट न होय। वह ज्ञान निरावरन रहे है वापर ज्ञानावरनीका

आवरन आवे नाहीं। जे आवरन आवे तो सर्व ज्ञान घात्या जाय। सर्व ज्ञान घातवा कर जड़ होय जाय सो होय नाहीं। सो वह पर्जाय ज्ञान विषें अविभाग प्रतिक्षेप पाइये है। तातैं अनन्त वर्गना स्थान गुने जघन्य छायक सम्यकके अविभाग प्रतिछेद पाइये है। तातैं अनन्त वर्गना स्थान गुने केवल ज्ञान केवल दर्शनका आविभाग प्रतिछेद पाइये है। सो ऐसा भी उपदेश तुम ही देते भये और भात उपदेस तुम दिया जो एक सुईकी अनीका डागला ऊपर असंख्यात लोक प्रमान अषध पाइये है। एक एक सखंदमें असंख्यात लोक प्रमान अंडर पाइये है। एक एक अंडा विषें असंख्यात लोक प्रमान आवास पाइये है। एक एक आवामें असंख्यात लोकप्रमान पुलवी पाइये है। एक एक पुलवी विषें असंख्यात लोक प्रमान शरीर पाइये है। एक एक शरीर विषें अंतकालके समयासूं अनंतानन्त वर्ग स्थान गुन जीव नामा पदार्थ पाइये। एक एक जीवके अनन्त अनन्त कर्म वर्गना लागी है। एक वर्गना विषें अनन्त अनन्त परमान पाइये है। एक एक परमानूके साथ अक्रम निसर सो पचये जीव राससो अनंतानन्त गुनी प्रमान विषें अनन्त अनन्त गुण वा पर्याय पाइये है। एक एक गुन वा पर्यायका अनन्त अविभाग प्रतिछेद है। ऐसी विचित्रता एक सुईकी अनीका डागरा ऊपर निगोद रासके जीवा विषें पाइये है। सो ऐसे जीव ऐसो परमानू कर वेढ़त वा वर्गना कर अक्षादित जीवांसू तीन लोक घीका घड़ावत अतिसय कर पूर्न भरया है। सो एक निगोद शरीर माहिला जीव ताके अनन्तवें भाग भी निरंतर मोक्ष जाने कर तीन कालमें घटे नाहीं और

ऐसा उपदेस भी तुम ही देते भये। बहुरि वेई सुईकी अनीका डागला ऊपर पूर्वे कहे जीव तीन लोकके लाया कर्म व अकर्म रूप अनंता अनन्त गुनी प्रमान वा एक सुईकी अनीका डागला ऊपर आकास पाइये है। ता विषें अनन्तानंत प्रमान वाषुली तिष्टें हैं। अनंता सखंध दो दो प्रमान वाका तिष्टे है। ऐसे है। एक एक परमानू अधिक अधिक स्कंध तीन परमानू वाका स्कंध सो लगाय अनंत परमानू वाका स्कंध पर्यंत अनंत जातके सकंध एक एक जातके स्कंध सो भी अनंत अनंत सुईका अग्र भागमें अनंत परजाय अनंत गुण अनंत अविभाग प्रतिछेद तीन काल सम्बंधी उत्पाद व्यय ध्रुवकी अवस्था सहित एक समयमें जिनेन्द्रदेव तुमही देखे अरु तुमही जाने अरु तुमही कहे। अरु या परमानू वाके परस्पर रूख सचिखन दूनाकादि वार्ता नाहीं। दो दो अंसांसू अधिकता ये संग कर सत्रबंध विषयबंध सुजातिबंध विजातिबंध ऐसे परमानू वाका परस्पर बंध। वा निःकारन रूख सचिकन अंसाका समूह ताकी परपाटी लियां बंधने कारन है। वा अकारनका स्वरूप भी तुमारे ज्ञान विषें झलके। अरु दिव्यध्वनि कर कहते भये सो हे जिनेन्द्रदेव तुमारा ज्ञान रूपी आरसी कैसी बड़ी है। ताकी महमा कहा लग कहिये। बहुरि हे भगवान हे कल्याननिध हे दयामूरत हम कहा करे प्रथम तो हमारे सरूप ही हमने दीसे नाहीं। अरु हमने दुःख देनेवारे दीसे नाहीं। अरु वाका कहा अपराध हम पूर्वे किया। ताकर हमारे ताई कर्म तीव्र दुःख देहें। अरु ये कर्म किसी भांत सों उपसांत होंय सो ही हमने दीसे नाहीं। अरु हमारा

निज स्वरूप कहा है। कैसा हमारा ज्ञान है कैसा हमारा दर्सन है। कैसा हमारा सुखवीर्य गुन हम कौन हैं। हमारा द्रव्य गुन पर्याय कहा है। पूर्वं हम किस क्षेत्रमें किस पर्यायकूं धरें तिष्टे थे। अब इस क्षेत्र ई पर्यायमें कौन मित्रने ल्याय प्राप्त किये। अरु अब हम कहा कर्तव्य करें हैं अरु कौनका परनाया परनवे हैं। सो जाके फल अच्छे लागेंगे वा बुरे लागेंगे हम कहां जायगें कैसी कैसी पर्याय धरेंगे सो हम किछू जानते नाहीं। तो हमारे खुशीका उपाय जो ज्ञान सो कैसे पावें जो हमारे ही ऐता ज्ञानका क्षयोंपसम होते परम सुखी होनेका उपाय भासे नाहीं तो एकेन्द्री आदि अज्ञानी तिर्यंच जीव वा नारकी महा कलेस कर पीड़त जाके आंखके फरकने मात्र भी निराकुलताका कारन नाहीं। तो उन जीवनकूं कहा दोष परन्तु धन्य है आपकी दयालुता। धन्य है आपका सर्वज्ञ ज्ञान। धन्य है आपका अतिशय अरु धन्य है आपकी परम पवित्र बुद्धि। धन्य आपकी प्रवीणता अरु विचक्षनता सो आप दया बुद्धि कर सर्व ही वस्तुको भिन्न भिन्न बतावो हो। अरु आत्माका निज स्वरूप अनन्त दर्शन अनन्त ज्ञान अनन्त सुख अनन्तवीर्यका धनी आप सादृस्य बताया अरु द्रव्यसों रागादिक भावको उपजावन बताओ। राग-द्वेष मोह भावनकर कर्मनसू जीव बंधते आये। पीछे वा काल विषैं जीव महा दुखी होते दिखाये। वीतरागता कर कर्मनसू निर्बंध निराश्रव होना दिखाया। वीतराग भावोंसू ही पूर्व संचित दीर्घकालके कर्म ताकी निर्जरा होनी बताई। निर्जराके कारन कर निज आत्माकी जाति केवलज्ञान केवल सुख प्रगट होना दिखाया।

ताहीका नाम मोक्ष है। बंध आश्रवतें छूटनेका नाम मोक्ष है। वा मुक्त है। वा हित है वा भिन्य कहो। अरु नर्क तिष्ठते जे जीव तिने मोक्ष की सिद्ध होती तो सर्व सिद्धांकी अवगाहना विषें अनन्ते पाचों थावर सूक्ष्म वादर बताइये है तो महा दुखी क्यों होते। तातैं निरनै कर आपना ज्ञानानंद सुभाव धारया गया छे। वाहीका नाम बंध था सो ज्ञानावर्नादिक कर्म अभाव होतें सु-फुरायमान हुआ जैसे सूर्जका प्रकाश वादर मूं रुक रहा था) वादलके अभाव होते संपूर्न प्रकास विगसाय मान होय त्यों ही कर्म पटल विगसे ते ज्ञान सूर्य विगसाय मान भया अरु ऊर्ध जाय तिष्ठा सो जीवाका ऊर्द्ध गमन स्वभाव है तातैं ऊर्ध गमन किया। अरु आगे धर्म द्रव्य नाहीं। तातैं धर्म द्रव्यके कारन विना आगे गमन किया। उहां ही तिष्टे सो अनंतकाल पर्यंत साश्तता सुख रूप तीन लोकके नेत्र वा तीन काल लोकालोकके देखने रूप ये ज्ञान दर्शन नेत्र अनंत बल अनंत सुखके धारी सिद्ध महाराज तीन लोक कर तीन काल पर्यंत पूजित तिष्टसी सो हे भगवान ऐसा उपदेश भी तुमही दिया सो प्रभू इह उपगारकी महमा कहा तांई कहिये अरु कहा तुमारी भगत पूजा वंदना स्तुति करें। तातैं हम सर्व प्रकार कर-नेको असमर्थ हैं। अरु तुमतो परम दयाल हो तातैं मो पर क्षिमा करो। तासों हे भगवान मेतो और किछू समझता नाहीं। में तो महा अज्ञान महा मूर्ख अविवेकी तुमारी कहा भक्ति करें यह मेरे तांई बड़ी असंभव फिकर है। जो हम तुमारी स्तुति महमा करने लज्जायमान हों हैं। परन्तु कहा करें तुमारी भक्ति महा हठ पने कर जौवरी वाचाल करै है। सो तुमारे चरनारविंद विषें नम्री-

भूत करे है। तातैं तुमारा चरनाने वारंवार नमस्कार होहु। ये ही चरन जुगल मोने संसार समुद्र विषें परसी राषसी। बहुरि अग्नि कायके जीव असंख्यात लोक प्रदेस समान है। तातैं असंख्यात लोक वर्ग स्थान एक निगोदके शरीरके प्रमान है। तातैं असंख्यात लोक वर्ग स्थान गये निगोद एक शरीरकी स्थितका प्रमान है। तातैं असंख्यात लोक वर्ग स्थान गये योगाके अविभाग प्रतिच्छेद है। सो भी असंख्यातके ही भेद हैं। सो हे भगवानजी ऐसा उपदेश तुमही दिया। बहुरि जे असंख्याते दीप समुद्र हैं। ए अढाई दीप प्रमान मनुष्य क्षेत्र है ताका भी निरूपन तुमही किया। यह जोतिक पटल है। ताके प्रमान जुदे जुदे दीप समुद्र तुमही कहे। बहुरि पुद्गल परमानू वा इनका स्कंधका प्रमान महां स्कंध पर्यंत तुम कहा इत्यादि अनंत द्रव्योंके तीन काल संबंधी द्रव्य गुनपर्याय वा द्रव्यके क्षेत्रकाल भाव सहित और स्थान लिये अनंत विचित्रता एक समयमें लोकालोककी तुमही देखी। सो तुमारे ग्यानकी अद्भुत महिमा तुम्हारे ही ज्ञान गम्य है। तातैं तुमारे ही ज्ञानकूं फेर भी हमारा नमस्कार होहु। अहो भगवान तुम्हारी महिमा अथवा तुम्हारे गुणनकी महमा देख अति अचरज उपजै है। अरु आनन्दका समूह उपजै है। ता करि हम अति त्रप्त हैं। तातैं हे भगवान जीव दया अमृत कर भव्य जीवांने तुमही पोखो हो। तुमही त्रप्ति करो हो तुमरे वचन विना सर्व ही लोक अलोक सून्य भये हैं। तातैं समस्त जीव भी सून्य हो गये सो अब तुमारे वचन रूप किरनन कर अनादका मोह तिमिर मेरा विलय गया अब मोने तुमारे

प्रशाद कर तत्व अतत्वका स्वरूप प्रतिभासो। ज्ञान लोचन मेरे उघटे ताके सुखकी महिमा मोपे न कही जाय। तासूं हे भगवानजी संसार संकटसे निकालनेको निःकारन परम वैद्य थे मोने अद्भुत दीखो हो तातैं तुमारे चरनार बिन्दु सू बहुत अनुराग वर्तै है। सो भव भवके विषें पर्याय पर्यायके विषें एक तुमारा चरननकी सेवा ही पाउं जे पुरुष धन्य है जो तुमारे चरनाने सेवे हैं। तुमारे गुनाकी अनुमोदना करें हैं। तुमारे रूपने देखें हैं तुमरे गुनानुवाद गावें हैं। तुमरा वचनका नाम सुने हैं। मनविषें निश्चे धारे हैं। तुमारा चरन पूजें हैं। तुमारा ध्यान करें हैं। तुमारे गुनानुवाद गावें हैं तुमारा वचनका नाम सुने हैं। मनविषें निश्चै धारें हैं। तुमारा चरनाने अर्घ दे हैं तुमारी महमा भावे हैं। तुमारे चरना लताकी रज व गंधोदक मस्तकादि नाभि पर्यंत उत्तम अंग तामें लगावें हैं। तुमारे सन्मुख खड़े होय हस्तांजुली जोड़ नमस्कार करें हैं। अरु तुम ऊपर चमर ढोरे हैं ते पुरुष धन्य हैं। वाकी महमा इन्द्रादिक देव गावें। वे ही कृत कृत्य हैं वे ही पवित्र हैं। वाहीने मनुष्य जनम सफल किया। ताही ने भवविलांकू जला जल दिया बहुरि हे जिनेन्द्र देव हे कल्यानके पुंज हे त्रैलोकके तिलक अनंत महमा लाईक परम भट्टारक केवल ज्ञान केवल दर्शन ये जुगल नेत्रके धारक सर्वज्ञ वीतराग तुम जयवंत प्रवर्तो तुमारी महमा जयवंत प्रवर्तो तुमारा सासन जयवंत प्रवर्तो धन्य यह मेरी परजाइ में तुम सारषें अद्भुत पदार्थ पाये ताकी अद्भुत महिमा कौन कर सके अरु तुमही माता. तुमही पिता तुमही बंधव तुमही मित्र तुमही परम उपगारी तुमही, हैं

कायकी पीर हरी तुमही भवसमुद्रमें पड़ते प्रानीनको आधार हो और कोई त्रैकालमें नाहीं। आवागमन सों रहित करवाने तुमही समर्थ हौ। मोह पर्वतके फोड़वाने तुम वज्रायुध हो घातिया कर्मनका चूर करवाने तुम अनन्त बली हो अहो भगवान तुम दोऊ हाथ लांबा किया अरु भव्य जीवाने संसार समुद्रमाहींसू काढ़िवाने हस्तालंवन दिया है। बहुरि हे परमेश्वर हे पर्मजोति हे चिद्रूपमूर्ति अनन्त चतुष्टयकर मंडित अनन्त गुनाकर पूरित तुमारी कैसी वीतराग मूरत आनन्दमय आनन्द रसकर अहलादित महामनोग अद्वैत अकृत अनादि निधन त्रिलोकपूज्य कैसी सोहे ताका अवलोकन कर मन वा नेत्र सीघ्र होय हैं। बहुरि हे केवलज्ञान सूर्ज षट द्रव्य नव पदार्थ पंचास्तिकाय सप्त तत्व चौदह गुनस्थान चौदह मार्गना वीस प्ररूपना चौवीस ठाना ग्यारा प्रतिमा बारा वृत दस लक्षनीक धर्म षोड़स भावना बारा अनुपेक्षा चार भावना अठाईस मूल गुन चौरासी लाख उत्तर गुन तीनसै छत्तीस मतिज्ञानके भेद अठारा हजार सीलके भेद साढ़ा सेतीस हजार प्रमादके भेद अरहन्तके छयालीस गुन आचार्यके छत्तीस गुन उपाध्यायके पच्चीस गुन साधुके अट्ठाईस गुन श्रावकके एकवीस गुन समकितके आठ अंग तिनके पच्चीस दोष मुनि आहारके छयालीस दोष तिनमें बत्तीस अंतराय चौदह मलदोष नोधा भक्ति दातारके सप्त गुन चार प्रकार आहार चार प्रकार दान तीन प्रकार पात्र एकसो अड़तालीस कर्मप्रकृति बंध उदय सत्ता उदीरना अरु आश्रवका सत्तावन भेद अरु त्रेपन क्रिया इनके षट त्रिभंगी सो पाप प्रकृति अड़सट पुन्य प्रकृति सैंतालीस अघातिया प्रकृति एकसो एक घातिया प्रकृति

इकवीस सर्व घातिया छवीस देसघातियाकी प्रकृति षेत्रविपाकी चार भवविपाकी चार वहत्तर जीवविपाकी उनसठ पुद्गलविपाकी प्रकृति दस कर्नचूलका नव प्रस्तचूलका पाच प्रकार भागाहार प्रति प्रदेस संस्थित अनुभाग बंध इत्यादिक इनका भिन्न भिन्न सरूप तुमही प्रगट किया अरु उपदेस देते भये। बहुरि प्रथमानुयोग करनानुयोग चरनानुयोग द्रव्यानुयोग चार सुकथा चार विकथा तीनसे त्रेसठ कुवाद वा कुवादके धारक जोतिक वैद्यक मंत्र यंत्र पांच वा आठ प्रकार निमित्तज्ञान, न्याय नीत छंद व्याकर्न गनित अलंकार आगम अध्यात्म शास्त्र निरूपन भी तुमही करते भये चौदे धारा तेईस वर्गना जोतिगी व्यंतर भवनवासी कल्पवासी सप्तनर्क तिनका पूर्वला पराक्रम सुखदुखका विशेष निरूपन तुमही करते भये। अढाईद्वीपके छेत्र कुलाचल द्रह कुंड नदी पर्वत नव क्षेत्रकी मर्यादा आर्य अनार्य कर्मभूमि भोगभूमि कुभोगभूमिकी रचना आचरन अवसर्पनी उत्सर्पनी कालकी फिरन पल्य सागर आदि आठ असंख्यात संख्यात अनन्तके इकीस भेद पंच प्रकार परवर्तन इनका निरूपन भी तुमही कहते भये। मनुष्यक्षेत्र त्रसनाड़ी सिद्धक्षेत्र लोक अलोकके भेद तुमही कहते भये। सो हे भगवान हे जिनेन्द देव हे अरहंत देव हे त्रैलोक गुरु तुमारा ज्ञान कैसा है ऐता ज्ञान तुमारे एक समयमें कैसे भया मेरे या बातका आश्चर्य तुमारे ज्ञानके अतिशयकी महमा हजार जिह्वा कर न कही जाय हम तो एक ज्ञेयने ऐके काल तुच्छ वस्तु ने नीउ जान सके तातैं हे दया मूरत आप सारषे हमकूं भी कीजिये मेरे ज्ञानकी बहुत चाह है। तुम परम दयालु हो मनवंक्षित वस्तूके देनहारे हो। तातैं मेरा मनोरथ

सिद्धि कीजिये। या बात मैं ढील न करोगे हे संसार समुद्रके तारक मोह मल्लके विजई घातिया कर्मके विध्वंसक काम सत्रुके नाशक समोसरन लक्ष्मी सों विरक्त आपको सर्व प्रकार समर्थ जान तारन वृद्धिकू मान आपके चरननकी सरन आयो हूं सो हे जगत बंध हे सरनागत प्रतिपाल हे पितर हे दया भंडार मोने चरनकी सरन जान रक्ष रक्ष मोह कर्मते छुड़ाय छुड़ाय कैसा है मोह कर्म लोकका समस्त जींवाने आपना पौर पकर ज्ञानानंद पराक्रम आदि समस्त जीवांका स्वभाव निधि लक्ष्मीको लूट शक्ति हीन कर जेलमें राख दिये केईक तो एकेन्द्री जात भावसीमें परे छे महा घोरान घोर दुख पावे है ताके दुखका अर्थ के तो ज्ञानी पुरुषाने भासे है। वचनन कर न कहा जाय अरु केईक जीव वेइन्द्री पर्यायमें महा दुखद हैं। केईक जीवांने ते इन्द्री चौइन्द्री असेनी सन्मूर्छन ताके महादुख भोगवे है सो तो दुख प्रत्यक्ष इन्द्री गोचर आवे हैं। सो तुम ही सिद्धांतमें दुखनका निरूपन किया तातैं तुमारे वचन अनुमान प्रमानकर सत्य जान्या बहुरि कैई जीव नर्कमें पड़े पड़े बहुत विछावे हैं रोवे हैं हाय हाय शब्द करें है। आपतो आनकू मारे हैं। औरां कर आप हत्या जाइ है। तहां छेदन भेदन मारन तारन तापन सूलारोपन ऐ पांच प्रकारके दुखकर अत्यंत पीड़ित भूमिकी दुःस्सह वेदना कर परम आकुलता पाइए हैं। कोटान रोग कर शरीर दग्ध होय है ऐसे दुख सहनेकूं नारकी असमर्थ हैं कायर हैं दीर्घ आयु सागरा पर्यंत दुःख भोगवे हैं। ऐसे मोह दुष्टके वसी हूआ फेर मोह ही करे है। अरु मोह हीने भला माने है। मोह ही के सरन रहा चाहे

है। अरु परम सुखने बांछे है। सो यह भूल केवल तुमारे उपदेश विना वा तुमारे गुन जाने बिना तुमारी आज्ञा सिरपर धारे बिना त्रिकाल त्रिलोकने दुखका कारसा मोह ताने जीत सके नाहीं। अरु मोहने जीत्या बिना दुखकी निर्वृति होय नाहीं निराकुल सुखकी प्राप्ति नाहीं तातैं तुम शीघ्र ही मेरा परम वैरी मोह ताका विनाश करो, यह कारज आपहीने करनो आयो, ताका विचार कहा करना अरु मो औगुन दिस कहा देखना, में तो औगुनका पुंज हूं सो अनादिका बन्या हूं। सो मेरा औगुन देखो तो परम कल्यान कारजकी सिद्धि नास हुई। औगुन ऊपर गुन तुम हीसे सत्पुरुष करें है। कुदेवादिक नीच पुरुष हैं ते गुन ऊपर औगुन ही किया में तो वाने भला जान सेया पूज्या वंद्या स्तुति कीनों तो भी मोने अनन्त संसारमें रुलाय महा त्रास दीनो ती वेदनाकी वारता बचनान कर न कही जाय सो कैसे हैं सत्पुरुष ताका दिष्टान्त दीने हैं। तैसे पारसने लोहका घन सो ठोके सो पारस ऊने सुवर्णमई करे। चंदनने ज्यूं ज्यूं घिसे त्यूं त्यूं सुवास देय ईखने ज्यूं ज्यूं छेदे त्यूं त्यूं अमृत रस देय। जल आप ज्ले दुग्धने वचाय लेय। सो ऐसा जाका जात सुभाव है। काहूका मेटा मिटे नाहीं सर्प दुग्ध दधि पिये परन्तु वह प्रान ही हरे सन आपना चाम उपड़ाइ अन्यकू बांधे माखी अपना प्रान देय ओराने बाधा उपजावे सो ये कुदेवादिक जे दुर्जन पुरुष ताके स्वभाव सम जानना याका सुभाव भी मिटै नाहीं। मंत्र यंत्र तंत्र नाहीं तातैं सुभाव तर्कनासे सो अब जिनेन्द्रदेव तुमारे प्रसाद कर कुदेवादिकका स्वरूप भली भांति जान्या सो

अब हम बिध रिचतु दूर हीने तज्या धिक्कार होहु ऐसा विषफल खावाने अरु कुदेवादिकका आचरने अरु हमारी भी पूर्व अवस्थाने धिकार होय अरु अब मेरे हे जिनेन्द्र देव थाकी सरधा आई सो मेरी बुद्धि धन्य है अरु मैं धन्य हों मेरा जनम सफल भया मैं कृत कृत्य भया मेरे चाह थी सोई भई अब कार्य करना कछू रहा नाहीं। संसारके दुखते तीन चूल जरु दिया ऐसा तीन लोकमें वा तीन कालमें पार कौन है, सो भगवानका दर्सनतें वा पूजातें वा ध्यानतें वा सुमरनतें वा स्तुतितें नमस्कारतें अरु ज्ञानतें जिन सासनका सेवनतें जाय नाहीं। ज्यों कोई अज्ञानी मूर्ख मोहकर ठगाई है बुद्धि जाकी ऐसे अरहन्तदेवकूं छोड़ कुदेवादिकने सेवे हैं वा पूजे हैं अरु मन वांछित फलने चाहे हैं सो मनुष्य नाहीं पसु हैं या लोकमें वा परलोकमें ताका बुरा होना है। जैसे कोई अज्ञानी अमृतने छोड़ व चिन्तामनने छोड़ काच खंडने पल्ले बांधे कल्पवृक्षने छोड़ धतूरो बोवे त्योंही मिथ्यादृष्टि श्री जिनेन्द्रने छोड़ कुदेवादिकका सेवन करे हैं घनी कहा कहिये बहुरि हे भगवान ऐसी करहु जो गर्भ जन्म मरनका दुखकी निर्वृत्य होय अब मेरे बूते दुख सहा जाता नाहीं वाका सुमरन किये ही दुख अपने तो सहा कैसे जाय तातैं कोट बातकी एक बात ये है मेरा अवगुन निवारिये अष्ट कर्मा तें मोक्ष करिये केवल ज्ञान केवल दर्शन केवल सुख अनंत वीर्य यह मेरा चतुष्टय स्वरूप घाता गया है। सो ही घातिया नासने प्राप्त होहु मेरे सुर्गादिककी चाह नाहीं मेंतो परमानू पर्यंतका त्यागी हूं मेरे तो त्रैलोकमें स्वर्ग चक्रीपद कामदेव तीर्थंकर पद पर्यंत चाह नाहीं। मेरे तो मेरा स्वभावकी वाछां है। चाहे जैसे स्वभा-

वकी प्राप्ति होय। सुख छे सो आत्म स्वभावमें छे सो में स्वभाव सुखका अर्थी हूं तातैं निज स्वभावकी प्राप्तिको अवश्य चाहूं हूं सो तुमारे अनुग्रह विना व सहकारी विना यह कार्य सिद्ध होय नाहीं तातैं और सर्व कुदेवादिकने छोड़ तुम्हारे ही सरन प्राप्त भया हूं मेरा करतव्य था सों तो कर चुकया अब करतव्य तुम्हारा है। तुमने तरन तारन विरध धरया है सो अपना विरध राप्या चाहो हो तो मोने अवश्य तारो त्यों तारने तेंही तुमारी कीर्ति लोकमें फैली है। आगे अनंत काल पर्यंत रहेगी सो हे प्रभू आप उद्धत विरध धरयो है। अरु अनंत जीवाने मोक्षदीनी अंजनचोर सारखा अधम पुरुष ताको थोड़े ही कालमें शीघ्र ही मोक्ष पहुंचाया और भरत चक्रवर्त्त सारखा बहु परिग्रही ताने एक अंतर महूर्तमें केवलज्ञान पाया श्रेणिक महाराजने गुरू-का अविनय किया मुनका कंठ विषें सर्प डारया बौधमती हूवो ता पाप कर सातवां नर्ककी आयु बंधी ताकूं तुम मिहरवानी कर आप सारखा एका भवतारी कर लिया इत्यादि घनाही जीवांने तारे सो अब प्रभूजी मेरी वेर क्यों ढील कर राखी है। सो यह कारन कहा है। हमने जाने तुम वीतराग परमदयालु कहावो सो मेरी दया क्यों न करो मेरी वेर ऐसा कठोर परनाम क्यों किया सो आपने यह उचित नाहीं। अरु में घना पापी था तो भी तुम पास पूर्वेही क्षमा कराई तातैं मेरा अपराध क्यों भी रहा नाहीं। तीसों अबमें नेम कर ऐसा जानो हो। जो मेरे भी थोरे भव बाकी रहे हैं। सो परताप तुमारा ही है। सो तुमारे जस गायवेकर कैसे त्रप्त हूजिये सो धन्य तुमारा केवलज्ञान धन्य तुमारा केवल सुख

धन्य तुमारा अनन्त बीर्य धन्य तुमारी परम वीतरागता धन्य तुमारी उत्कृष्ट दयालुता धन्य तुमारा उपदेश धन्य तुमारा जिनसासन धन्य तुमारा रत्नत्रय धर्म धन्य तुमारे गनधरादि मुनि व श्रावक व इन्द्रादि अवृत सम्यकदृष्टी देव मनुष्य सो तुमारी आज्ञा सिरपर धारें हैं। तुमारी महिमा गावें हैं तातैं घनी महिमा तुम्हारी कहां तक कहिये। तुम जयवंत प्रवर्तो अरु हम भी तुमारे चरननके निकट सदैव तिष्टें महा प्रीतसों भी जयवंत प्रवर्तो। इति श्रीजिन दर्शन संपूर्न। बहुर मार्गमें जेती वार जिन मंदिर आगे होय निकसिये तेती वार श्रीजिनका दर्शन करे विना आगे न जाइये। अथवा बहुवार जिनमंदिरके निकट आह्या समागवन करना पड़े तब बहुवार दर्शनका साधन सधे नाहीं तो बाह्य सों नमस्कार कर आगे जाना नमस्कार करे विन न जाना अरु मंदिरके विषें जेतीवार प्रतिमाजी आमू सामू गमन करता दृष्टि पड़ें तेतीवार दोनों हस्तक मस्तकको लमाय नमस्कार करिये। बहुरि जो असवारी चढ़ आया होय अरु जिनमंदिर दृष्टि पड़े तो असवारी तें उतर पयादे गमन करे अरु चढ़ा जिनमंदिर पर्यंत चला जाय तो यामें बड़ा अविनय है। अरु अविनय सोई महापाप है। अरु विनय सोई धर्म है देवगुरु अरु धर्म इनके अविनय उपरान्त अरु कुदेवादिकके विनय उपरान्त पाप तीन लोकमें हुवा न होसी न है। त्यों ही जासू उल्टा देवगुरु धर्मका विनय उपरान्त अरु कुदेवादिककी अवज्ञा उपरान्त धर्म तीन लोक तीन कालमें हुवो न होसी न है। तीसों देव गुरु धर्मके अविनयका विशेष भय राखना यामें चूके कही ठीकाना नाहीं। घनी कहा लिखिये।

कोड़ उपवास किये कैसा फल एक जिनदर्शन किया होय है। अरु कोड़ वार जिनदर्शन किये बराबर एक दिन पूजन किये कर फल होय है। तातैं निकट भव्य जीव हैं ते श्रीजीका नित दर्शन पूजन करो दर्शन किया बिन कदाच भोजन करना उचित नाहीं। अरु दर्शन किया बिन कोई मूढ़ बुद्धि सठ अज्ञानी रोटी खाय है सो वाका मुख सेत खाना बराबर है। अथवा सर्पकी वामी बराबर है जिह्वा है सोई सर्पनी है मुख है सो विलहै अरु कुभेषी कुलिंगी जिनमंदिर विषें रहते होंय ते वा मंदिर विषें भूलकर भी जियें नाहीं। वहां गये सरधानरूपी रतन जाता रहे वहां विशेष अविनय होय सो अविनय देखवे कर महापाप उपजे जहां जहां जो भेषी रहे तहां श्रीजीकी विनयका अभाव है। सो विनय सहित एक ही वार श्रीजीका दर्शन करिये तो महा पुन्य बंध होय अरु अविनय सहित ज्यों ज्यों घनीवार दर्शन करे त्यों त्यों घना घना पाप उपजे अपने माता पिताने कोई दुष्ट पुरुष अविनय करे जो आप समर्थ होय तो वाका निग्रह करे अरु अपने माता पिताने छुड़ाय विशेष बिनय करे अरु जो अपनी समर्थता न होय तो वा मार्ग न जाय वाका बहुत दरेग करिये तैसे ही श्री वीतराग देवका जिनबिम्बका कोई दुष्ट पुरुष अविनय करे तो वाका निग्रहकर जिनबिम्बका विशेष विनय करिये। अरु अपनी समर्थता न होय तो वा अविनयके स्थान कदाच न जैये। जहां कुवेष्या रहै तहां घोर अनेक तरहको पाप होय है। उहां जाने वारे कुवेष्याके पास गृहस्थ भी वाका उपदेश पाय वा सारषे ही अज्ञानी मूढ़ कषाई वज्रमिथ्याती होय

हैं। तातैं वाका संसर्ग दूर ही ते तजना योग्य है जो पूर्वै हल्का मिथ्यात कषाइ होय तो वहां गये अपूर्व तीव्र होय जाय तो धर्म कहां ते होय धर्मका लुटेरा यसु कोई धर्म चाहे तो वह मोहकर बावला होय जाय जैसे सर्पकू दूध प्याय वाका मुखसेती अमृत चाहे सो अमृतकी प्राप्ति कैसे होय। त्योही कुवेष्याकी संगति-सों अधर्म होय वे धर्मके निंदक परमवैरी हैं अधर्मके पोषक मिथ्यातका सहायक हैं एक अंसमात्र प्रतिमाजीका अविनय होय तो नेमकर नर्कका बंध पड़े अरु जाके घोरानघोर अनेक तरहका अविनय पाइये तो वाका कहा होनहार है। सो हम न जाने सर्वज्ञ जाने अरु भेषी या कहे हैं के प्रतिमाजीके केसर चन्दन लगायवो योग्य है ताका नाम विलेपन है। अनेक सास्त्रनमें कहा है। अरु भवानी भेरु आदि कुंदेवादिक की मूरत आगे स्थाप पहले वाका पूजन करे नमस्कार करे अरु प्रतिमाजीकूं गने भी नाहीं। आप सिंहासन ऊपर बैठ जगतमें पुजावे अरु मालीनसे अनछान्या पानी मगाय मैला कपड़ा-सू प्रतिमाका प्रक्षाल करे जेते पुरुष स्त्री आवे तेता सर्व विषै कषायकी बार्ता करे धर्मका लेस भी नाहीं इत्यादिक अविनयका वर्नन कहां लग करिये सो पूर्व विशेष वर्नन कहा है। अरु प्रतक्ष देखनेमें आवे है। ताकू कहा लिखिये सुभूम चक्रवर्त हनुमंतकी माता अंजनी श्रेनिक महाराज नवकार प्रतिमा निर्ग्रंथ गुरु ताका तनक सा अविनय किया था सो वाकूं कैसा पाप उपज्या अरु मिड़क वा माली शूद्रकी कन्या श्री जिनके आगे फूल चढ़ाया सो योग्य ही है। सो फूल चढ़ायवाका वाके तनकसा अनुराग

था सो स्वर्गका पद पाया तीसूं जिन धर्मका महात्म अलौकीक है। तातैं प्रतिमाजीका वा सास्त्रका वा निर्ग्रंथ गुरूका इनके अविनयका विशेष भय राखना। कोई यह प्रश्न करे प्रतिमाजी तो अचेतन हैं ताके पूजे कांई फल निपजै ताका सामाधान मंत्र तंत्र जंत्र औषद् चिन्तामन रतन कामधेन चित्रावेल पारस कल्प वृक्षने अचेतन हैं अरु वांछितफल दे हैं अरु चित्रामका स्त्री विकार भ व उपजावे हैं पीछे वाका फल नर्कादिक लागे है। त्योंही प्रतिमा जान निर्विकार शांति मुद्रा ध्यान दशाकूं धरें तिनका दर्शन किये वा पूजन किये मोह कर्म गले राग दोष विलय जाय ध्यानका स्वरूप जान्या जाय तीर्थंकर महाराज वा समान केवलीकी छवी याद आवे है सो वाके निमित्तकर ज्ञान वैराज्ञकी विशेष वृद्धि है। ज्ञान वैराज्ञ ही मोक्ष मार्ग है। अरु शास्त्र भी अचेतन है। ताका अवलोकन कर आत्म ज्ञान वैराज्ञकी वृद्धि होती देखिये है। जे ते धर्मके अंग हैं ते ते सर्व शास्त्रनतें जानिये ता जानवे कर यह वस्तु त्यांग सहज ही होय जाय उपादेयका ग्रहन कर लेय पीछें मोक्ष होय जाय सो वह निर्वान अविनेस्वर है। तात यह बात सिद्ध भई। इष्ट अनिष्ट फल कारन एक शुभाशुभ परनाम हैं। अरु इन परनामनके कारन अनेक ज्ञेय पदार्थ हैं। कारन बिना कारजकी सिद्धि त्रिकालमें न हीं जैसा कारन मिले तैसा कार्य निपजै तातैं प्रतिमाजीका पूजन सुमरन ध्यान अविषेक परम उछव विशेष महिमा करनी उचित ही है। जो कोई मूर्ख अज्ञानी अवज्ञा करे ते अनन्त संसार विषें भ्रमें हैं। चतुर गतिके जीवकूं मुख्य धर्म श्री जिन प्रतिमाका पूजन कहा है। तातैं सर्व

प्रकार त्यारा वारंवार त्रैलोकमें जिनबिम्ब है। तिनकूं नमस्कार होहु अरु भवभवमें इनहीका सरन होहु। याहीकी सेवा प्राप्ति होहु याकी सेवा विन एक समय भी मत जावो मोनें अनादि कालते संसारमें भ्रमन करता भाग्य उदें काल लब्धिके जोगतें यह निध पाई सो दीरघ कालका दरिद्री चिन्तामन रतनतें पाय सुखी होय त्यों में श्री जिन धर्म पाय सुखी हूवो सो अब मोक्ष होने पर्यंत यह जिन धर्म मेरा हृदामें सदैव अंतर रहित तिष्टो यह मेरी प्रार्थन श्री जिन बिम्ब पूर्न करो घनी कहा अर्जी करै दयालु पुरुष थोड़ी अर्जी किये बहुत मांगेगे। इति दर्शन संपूर्ण। आगे अपने इष्टदेवकूं विनयपूर्वक नमस्कार कर सामायिकका स्वरूप कहे हैं। सो हे भव्य तू सुन। दोहा—सात भाव जुत वंदके तत्व प्रकाशन सार। वे गुरु मम हिरदे वसो भवदधि पार उतार॥ सो सामायिक नाम समभावका है। सामायिक कहो भावे समभाव कहो। भावे सुद्धोपयोग कहो भावे वीतराग भाव कहो। भावे निकषाय कहो ये सब एकार्थ हैं। सो यह कारन कार्यकी सिद्धि होनेके अर्थ बाह्यकी क्रिया साधन कारनभूत है। कारन विना कार्यकी सिद्ध नाहीं। तातैं बाह्य कारनका संजोग अवश्य करना योग्य है। सो द्रव्य क्षेत्र काल भाव चार प्रकार है। द्रव्य तो श्रावक एक लंगोट तथा एक औछीस बड़ा पनाकी तीन हाथकी धोवती अरु एक मोरपिछका राखे बहुरि सीतकालमें सीतकी परीषह उघड़ा शरीर सों न सही जाय। एक स्वेत वस्तर इह नोटे सूतका तासू डील ढांके यह उपरान्त परिग्रह राखे नाहीं चौकी वा पड़ाषा शुद्ध भूमपर बैठकर सामायिक करे अरु शुद्धक्षेत्र जामे कोलाहल शब्द न होय

बहुरि पुरुष स्त्री तिर्यंच इनका संचार न होय। अगल बगल भी इनका शब्द न होय। ऐसा एकान्त निर्जंतु स्थान अपनी अटारीमें व जिनमंदिरमें वा सूना ग्रहमें वा वन पर्वत गुफा विषें ऐसे शुद्धक्षेत्रमें सामायिक करे अरु कालका प्रमान कर लीजिये जा क्षेत्रमें तिष्टा होय सो क्षेत्र उठना बैठना नमस्कार करता दसों दिसा सपर्सनमें आवें। सो तो क्षेत्र मोकलो होय सो अपने प्रमाणसूं उपरान्त क्षेत्रका सामायिक काल पर्यंत त्यागे अरु काल जघन्य दोय घड़ी मध्य चार घड़ी उत्कृष्ट छह घड़ी प्रमान करे, प्रभात एक घड़ीका तड़कासूं लेय एक घड़ी दिन चढ़े पर्यंत वा दोय घड़ीका तड़कासूं लेय दोय घड़ी दिन चढ़े पर्यंत वा तीन घड़ी दिन चढ़े पर्यंत जघन्न मध्य उत्कृष्ट सामायकका काल है। ऐसे ही मध्यान समै एक घड़ीसू लगाय तीन घड़ी पर्यंत पूर्ववत् भांत करें। अरु सांझ समय एक घड़ी दिनसू एक घड़ी रात पर्यंत वा दोय घड़ी दिनसू दोय घड़ी रात पर्यंत ऐसे सांझ समय करे या भांत तीन काल सामायक करे कालकी जेती प्रतिज्ञा लेनी होय तासूं सिवाय सवाया टोटा अधिका काल वीते तोलू ग्रहसं अपना पन निश्चल होय तब सामायक नाम पावै बहुरि सामायक विषें आर्तरौद्र ध्यानने छोड़े धर्मध्यान वा शुक्ल ध्यानकूं ध्यावे ऐसे द्रव्य क्षेत्र काल भावकी शुद्धता जाननी बहुरि पद्मासन वा कायोत्सर्ग आसन राखे अंगने चलाचल न करे इत उत देखे नाहीं अंग संकोचे नांहीं घूमे नाहीं ऊँघे नाहीं उतावला बोले नाहीं ऐसे शब्द करे धीरा जो आपका शब्द आपही सुने और का शब्द आप रागभाव कर न सुने औरकूं राग भाव सहित देखे नाहीं आंगुली

उठावे नाहीं इत्यादि शरीरकी प्रमाद क्रिया छोड़े अरु सामायक विषें मौन राखे जिन वानी विना ओर कछू पड़े नाहीं विशेष विनय सहित सामायिक करे सामायिक करनेका अगाऊ उक्षव रहै कि ये पीछे पढिताय दोय चार घड़ी निरर्थक काल गमाया ऐसा भाव न करे जो एती वेर लागी नातर कछू गृहस्तीका कार्य सिद्ध करना अरु ऐसा भाव राखे मैं अवार वृथा ही उठा अवे मेरा परनाम घना शुद्धता जो बैठा रहाता तो कर्मनकी निर्जरा विशेष होती बहुरि सामायिकमें दोयवार पंच नमस्कार पंच परमगुरु को करे बारा आवृतनि सहित चार श्रोनित करे नो वार नमोकार मंत्र पढ़े ऐते काल पर्यंत एकवार खड़ा होय कायोत्सर्ग करे सो नमस्कार तो सामायिकका आदि अंतमें करे। भावार्थ। चार श्रोनित वारा अवृतन सहित अरु एक कायोत्सर्ग ये तीनों क्रिया सामायिकका मध्यकाल विषें ताकी व्यौरा सामायिक पाठका चोईस संस्कृत वा प्राकृत पाठी है। तामें या विध है तासूं समझ लेना बहुरि सामायक करती वार प्रभातका सामायक करने बैठती वेर रात्र सम्बन्धी कुशीलादिक क्रिया कर उत्पन्न भया जो पाप ताके निर्वृत्यके अर्थ श्री अरहन्त देवसूं छिमा करावे अपनी निन्दा करे में महा पापी छूं मो इह पाप कार्य छूटतावे में कब आवेगा जबमें जाका तजन करूंगा याका फल उदें आये अत्यंत कटुक लागेगा सो हे जीव तू कैसे भोगसी यह तो तनकसी वेदना सहवेकूं असमर्थ है। तो परभोमें नरकादिकके घोरान घोर तीव्र वेदनाके दुःसह दुःख दीर्घ काल पर्यंत कैसे सहेगा जीवका पर्याय छाड़ने ते तास होता नाहीं यह तो अनादि निधन अविनाशी ताने परलोक अवश्य आपहीकूं

भोगने परेंगे। परलोकका गमन ऐसे हैं जैसे गावसो गावान्तर क्षेत्रसो क्षेत्रान्तर देससो देसान्तर कोई कारजकू गमन करिये सो जो क्षेत्र छोड़ा तहा तो किछू उस पुरुषका अस्तित्व रहा नाहीं अरु जो क्षेत्रमें जाय प्राप्त भया तहां उस पुरुषका अस्तित्व ज्योंका त्यों है तो वह पुरुषकूं क्षेत्र छोड़े कछू वा पुरुषका तो नाश न भया अरु कोई क्षेत्र विषें जाय प्राप्त भया तो तहां तिसकूं उपजान कहिये परजायकी पलटन है पूर्व क्षेत्र विषें तो वृद्ध हुवा उत्तर क्षेत्रमें बालक भया अथवा पूर्वे दुःखी था पीछे सुखी भया अथवा पूर्वे सुखी था पीछे दुःखी भया ऐते ही परभवके शरीरका स्वरूप जानना। पूर्वे मनुष्य क्षेत्रमें था पीक्षे नर्क क्षेत्रमें गया पूर्वे सुखमई पर्याय थी अब ये दुखमई पर्याय भई पूर्वे कोई मनुयभवमें दुखी था अब पीछे देव पर्यायमें सुखी भया ऐसे ही भव भवमें अनेक पर्यायकी फिरन जाननी जीव पदारथ सास्वता है तीसों हे जीव ये पाप कार्य छोड़े तो भला ही है। ऐसा दरेग करता संता दोऊ हस्त जोड़ मस्तकने लगाय श्री जिनेन्द्र देवकूं परोक्ष नमस्कार कर ऐसे प्रार्थना करे हे भगवान ये मेरे पाप निर्वृत्य करो तुम परम दयालु हो सो मेरे औगुन न हेरो मेरी दया ही करो मोने दीन अनाथ जान मोपे छिमा ही करो माता पिता आप ही हो सो पुत्र चाहे जैसा औगुनग्राही होय परन्तु माता पिता छिमा ही करे। अरु वाका जिहं तिहं प्रकार भला ही करे सो ए जिनेश ए जिनेन्द्र देव मोपर अनुग्रह करो। अरु यह पाप मलिनताको हरो तुमारे अनुग्रह विना पाप पर्वत गले नाहीं तातैं मो ऊपर विशेष प्रीत

करो सर्व पापनका छय करो ऐसे पूर्वले पापकूं हल्का पाड़ जरित कर पीछे द्रव्य क्षेत्र काल भावका मानवा स्वरूप पूर्वे यहां ही कह आये ताके अनुसारपूर्वक त्याग कर पूर्व दिसाने वा उत्तर दिसाने मुख कर पीछी कर भूमि सोध पंच परम गुरुने नमस्कार करे पद्मासन मांड बैठ जाय पीछे तत्वनका चिन्तवन करे वारानुपेक्षाका चिन्तवन करे आपा पर का भेद विज्ञान करे निज स्वरूपका भेदरूप वा अभेदरूप अनुभवन करे वा संसारका स्वरूप दुखमई विचारे सिंसारे सो भयभीत होय बहुरि वैराज्ञ दसा आदरे अरु मोक्षका उपाय चिन्तवे संसारके दुखकी निर्वृति वांच्छता संता पंच परम पदने सुमरे ताके गुनकी वारंबार अनुमोदना करे गुनानुवाद गावे वाका स्तोत्र पढ़े वाका आत्म ध्यान करे वा विषेश वैराज्ञ विचारे म्हारे कोई नाहीं में या संसारके घोरान घोर भयानक दुःख सों कब छूटों वो समय मेरे कब होसी तब दिगम्बरी दीक्षा धर परिग्रहके भयानक दुख सो छूटसी परिग्रहके भारने पटक निर्दुंद होसी पान पात्र अहार करसी बाईस परीसह जीतसी दुद्धर तप आदरसी मोह बज्रने फोर पंचा चार्न करसी अरु अपने निज सुद्ध स्वरूपको अनुभवन करसों ताका अतसय कर वीतराग भावांकी वृद्धि होसी तब मोह कर्म गलसी घातिया कर्म सिथिल होसी वा खिर जासी अनन्त दर्शन अनन्त ज्ञान अनन्त सुख अनन्त वीर्य ये अनंत चतुष्टय प्रगट होसी सो में सिद्ध सादस्य लोकालोकका देखन जानन हारा अनन्त सुख वीर्यका पुंज कर्म कलंक सूं रहित महा निराकुल आनन्दमय सर्व दुःखोंसों रहित कब होसी कहां तो मेरी यह दशा नर्क निगोदादि महा पापकी

मूर्ति दुखमई आकुलताका पुंज नाना प्रकार पर्यायके धरन हारे सो जिनधर्मके अनुग्रह बिना अनादि कालसूं लेय सिंह सर्प काग कूकर चिटी कबूतर कीड़ी मकोड़ी आदि महां भृष्ट पर्याय सर्व धारी एक पर्याय अनन्त अनन्तन वेर धरी तो भी जिन धर्म बिना संसारके दुखका अन्त न आया अब कोई महा भाग्यके उदै श्री जिनधर्म सर्वोत्कृष्ट पर्म रसायन अद्भुत अपूर्व पाया ताकी महमा कौन कह सके केतो मैंने जान्या के सर्वज्ञ जाने सो यह वीतराग परनतमय जिनधर्म जयवंत प्रवर्तो नंदो वृद्धो म्हांने समुद्र सों काढो घनी कहा अर्ज करें ऐसा चिन्तवनकर महा वैराग्य भाव सहित सामायक काल पूर्ण करे कोई प्रकार राग द्वेष न करे। आरत ध्यान रौद्र ध्यानकू छोड़ आपा परकी सम्हार कर यह साक्षात चिन्मूर्ति सबका देखनहारा ज्ञाता दृष्टा अमूर्तीक आनन्दमई सुखका पुंज स्वसंख्यात प्रदेशी तीन लोक प्रमान पर-द्रव्यसूं भिन्य अपने निज स्वभावका कर्ता भोगता परद्रव्यका अकर्ता ऐसा मेरा स्वसंवेदन स्वरूप ताकी महमा कौनकूं कहिये यह जीव पुद्गल द्रव्यका पिण्ड ताका कर्ता भोगता नाहीं मोह कर्मके उदै कर्मकी बुद्धिकर जहां ही अपना जाने था ताकर भव भवमें नर्कादिक परम क्लेसने प्राप्त भया सो अब में सर्व प्रकार पर वस्तुका ममत्व छोड़ हुई पुद्गल द्रव्य चाहों त्यों परनवो मेरे ऐसा रागद्वेष नाहीं सोये पुद्गल द्रव्यका पसारा है। सो भावे क्षीजो भावे न क्षीजो भावे प्रलय होय भावे एकट्ठा होय जा कामें मुजाम नाहीं। याके ममत्व सो मेरे ज्ञानानंदकी बुद्धि नाहीं ज्ञाना-नन्द तो मेरा निज स्वभाव है सो वृथा पर द्रव्यके ममत्व सूं घाता

गया ज्यों ज्यों परद्रव्यका निर्वृत्य होय त्यों त्यों ज्ञानानंद स्वरूपकी वृद्धि होय सो प्रतक्ष अनुमानमें आवे है। तातैं विवहार मात्र मेरे वैरी चार घातिया कर्म हैं। निश्चे विचारतें मेरा अज्ञानभाव वैरी है। मेरा मैं ही वैरी मेरा में ही मित्र सो मैं अज्ञान भावां कर कार्य किया सो ताके वस तेंसा ही आकुलतामय फल निपज्या ताकर मैं दुखी भया सो वे दुखकी बात कौनसे मित्रसो कहिये सर्व जगतके जीव मोह कर्मरूप परनमें हैं। भ्रम कर ही अत्यंत प्रचुर अनादि कालका ही महा दुख पावें मैं भी वाहीके साथ अनादकालका दुख पावूं था अब कोई महा शुभ भागके उदैसे श्री अरहंतदेवके अनुग्रह कर श्री जिनवानीके प्रतापसे मुनि महाराजने आदि दे परम धर्मात्मा दयालु पुरुषनका मिलाप भया अरु वाके वचनरूपी अमृत पान कराया ताके अतसय कर मोह जुर मिट कषायनकी आताप मिटी अरु सांत परनामतें कामरूपी पिशाच भाग गया अरु इन्द्रीं भी ज्ञानरूपी जालतें पकरी गईं अरु पांच अवृतनका नाश भया अरु संयम भावकर आत्मा शीतल भया सत्यकूटष्टि ज्ञान लोचनतें मोक्षका सुख लख्या अब हम धीरज धर शीघ्र ही मोक्षमार्गकूं चाहूं हूं मोहकी सेन्या लुट जाय है। घातिया कर्मनका जोर घटता जाय है मेरी ज्ञान जोति उदै होय है। मेरा अमूर्तीक निर्मल असंख्यात प्रदेश ता ऊपरसूं कर्म रज उड़ती जाय है। ताकर मेरा स्वभाव हंस अंस उज्जल होता जाय है। सो अब में जती पद लेसी ताकर मोहका नाश होसी तपरूपी वज्रकर मोहरूपी पर्वतका खंड खंड नासकरसी घातिया कर्मनकूं परवार सहित ध्यानरूप अग्निमें भस्म करूंगा

ऐसे मेरे परम उछाह प्रवर्ते है। केवल लक्ष्मीका देखवांकी अत्यंत अभलाषा भई है। सो कब यह मेरा मनोरथ सिद्ध होय मैं या घररूप वंदी गृहने छोड़ निर्वृत्य होय। अनन्त चतुष्टय संयुक्त तीन लोकका अग्र भाग विषें सिद्ध भगवान मेरा कुटुम्ब तहां जाय तिष्ठोंगा अरु लोकालोकके तीन काल संबंधी द्रव्य गुण पर्याय सहित समस्त षट्द्रव्य नव पदार्थ ताका एक समय में अवलोकन करूंगा ऐसी मेरी दसा कब होयगी जो ऐसा में परम जोतिमय आप द्रव्य ताकूं देख औरकौनकू देखूं और तो समस्त गेय पदार्थ जड़ हैं। तिन सूं कैसा स्नेह अरु उनसू कहा प्रयोजन जैसे की संगति करे तैसा फल लागे सो जड़सू प्यार किया सो मुझने भी जड़ सारखा करना कहां तो मेरा केवल ज्ञान स्वभाव अरु कहां एक अक्षरके अनन्तवें भाग ज्ञान अरु कहां पूर्न सास्वता सुख अरु कहां नर्क पर्यायमें सागरा पर्यंत आकुलतामें दुख अरु कहां वीर्य अंतरायके नास भये केवल दसा भये अनन्त वीर्य पराक्रम अनंतानंत लोकके उठाय लेवे सारखा सामर्थ कहां एकेंद्री पर्यायका वीर्य सो रुई के तारके अग्रभाग ताके असंख्यातवें भाग सूक्ष्म एकेन्द्रीका सरीर सो इन्द्री गोचर नाहीं। वज्रादिक पदार्थमें अटके नाहीं। अग्नितें जले नाहीं। पानीते गले नाहीं। इन्द्र महाराजके वज्र दंड कर हन्या जाय नहीं ऐसा सूक्ष्म शरीर ताकूं लेवा समर्थ एकेन्द्री नाहीं। या कारन कर याकूं थावर संज्ञा है। अरु वेइन्द्री आद पंचेन्द्री पर्यंत ज्यों ज्यों वीर्य अंतरायका क्षयोपसम भया त्यों त्यों वीर्य प्रगट भया सो वेइन्द्री अपना सरीरकूं ले चाले अरु किंचित मात्र अपना मुखमें वा वाका वस्तु भी ले चाले ऐसें ही सर्वार्थ

सिद्धके देव वा तीर्थंकर महाराज वा रिद्ध धारी मुनि इन पर्यंत वीर्यकी अधिकता जाननी सोई केवली भगवानके संपूर्न वीर्यकी प्राप्ति जानना जेता आकाश द्रव्यका प्रमान है जेते मनका लोक होय तो भी ऐसे अनंतानंत लोकके उठायवे की सामर्थता सिद्ध महाराजके है। एती ही सामर्थता सब केवलीनके है। दोनों हीके वीर्य अन्तरायके नास होने ते संपूर्न सुख प्रगट भया है। सो मेरे स्वरूपकी महिमा भी ऐसी है सो मेरे प्रगट होय। अब तक मेरी अज्ञानताने अनर्थ किया कैसी पर्याय धार पर्म दुःखी भया धिक्कार होहु यह मेरी भूलकूं अरु मिथ्यातमतीनकी संगतिकूं अरु धन्य है यह जिनधर्म अरु पंच परम गुरु अरु सरधानी पुरुष इनके अनुग्रह कर मैं अपूर्व मोक्षमार्ग स्वाधीन है। तातैं अत्यंत सुगम है मैं तो महा कठिन जान्या परन्तु श्री गुरु सुगम बताया सो अब मोकूं यह मारग चालता खेद नाहीं। में भ्रम कर खेद माने था अहो परम गुरू थांरी महिमा वा अनमोदना कहा करों। मैं मेरी महिमा सिद्ध सादस्य तुमारे निमित्त ते जानी। ॐ नमः सिद्धेभ्यः। आगे अपने परम इष्ट देवकूं विधि पूर्वक नमस्कार वा गुनस्तवन कर सामान्यपने स्वर्गनकी महमा वर्नन करिए है। सो हे भव्य सावधान होय सुन दोहा। जिन चोवीसों वंदके वंदों सारद मात। गुरु निर्ग्रंथ सुवंद पुन ता सेवैं अघ जात॥ पुन पुन कर्म विकारतें भये देव सुर राय। आनन्दमय कीड़ा करें बहु विध भेष बनाय॥ स्वर्ग संपदा लक्षमीको कव कहे बनाय। गनधर भी जाने नहीं जाने सब जिनेर य॥ श्री गुरुसों शिष्य प्रश्न करे है। विनयवान होय काई प्रश्न करें है। सोई कहिए है हे स्वामी, हे नाथ, हे पा--

निध परम उपगारी है। संसार समुद्रके तारक हे दयामूर्ति हे कल्यान पुंज, हे आनन्दस्वरूप सर्व तत्व ज्ञायक हे मोक्ष लक्ष्मीके अभिलाषी संसार सूं परान्मुख परम वीतराग जगत बंध वधे कायके पिता मोह विनई अपरन सरन मोपर अनुग्रह कर स्वर्गनके सुखका स्वरूप कहो सो का है। सिष्य परम विनयवान है आतम कल्यानका अर्थी है संसारके दुखतें भयभीत है व्याकुल भया है वचन जाका कंपायमान है मन जाका वा कोमल भया है मन जाका ऐसे होत संता श्री गुरुकी प्रदक्षना देय हस्त जुगल जोर मस्तककूं लगाय श्रीगुरांके चरननकू वारंवार नमस्कार कर मस्तग उनके चरन निकट धरया है अरु चरन तलकी रज मस्तगको लगावे है। आपने धन्य माने है। वा कृत कृत्य माने है विनय पूर्वक हस्त जोड़ सन्मुख खड़ा है। पीछे श्री गुरांका मोसर पाय बारंबार दीनपनाका वचन प्रकाश स्वर्गनके सुखका स्वरूप बूझे बहुरि कैसा है सिष्य अत्यंत पुन्यके फल सुन वाकी अभिलाषा जाकी जब ऐसा प्रश्न होते संते अब वे श्री गुरु अमृतरूप वचन कर कहे हैं बहुरि कैसे हैं परम निर्ग्रंथ बनोवासी दया कर भीज्या है चित्त जाका या भांत कहते भये हे पुत्र हे शिष्य हे भव्य हे आर्ज तेने बहुत अच्छा प्रश्न किया बहुत भली करी अब सावधान होइ सुन में तोह जिनवानीके अनुसार कहूं हूं। ए जीव श्री जिनधर्मके प्रभाव कर स्वर्गके बिमाननमें जाय उपजे है यहां की पर्यायका नास कर अंतर्मुहर्तकालमें उत्पन्न होय है। जैसे मेघ पटल विघटते देदीपमान सूर्य वादल बाहर निकसे तैसे उपपादक सिज्याके पट दूर

होते वह पुन्याधिकारी संपूर्न कला संयुक्त जोतिका पुंज आनंद सौम्य मूर्ति सबको प्यारा सुन्दर देव उपजे है बहुरि जैसे बारा बरसका राजहंस महाअमोलक आभूषन पहरे निद्रा ते जाग उठे कैसा है वह देव संपूर्न छहों पर्याप्ति पूर्न कर शरीरकी क्रान्ति सहित रतनमय आभूषन वस्त्र पहिरें सूर्न वत उदय होय है अनेक प्रकारकी विभूतिको देख विसमय सहित दसों दिसानकूं अवलोकन करे मनमें यह विचारे मैं कौन हूं कहां था ? कहां आया यह स्थानक कौन है ? यह अपूर्व और रमनीक अलौकिक मन रमनेका कारन अद्भुत सुखका निवास ऐसा अद्भुत स्थान कौन है। यह जगमग रत्नोंकी जोति कर उद्योत हो रहा है अरु मेरा देव सारखा सुन्दर आकार काहेतें भया अरु जहां तहां ये सुन्दराकार मनोज्ञ मनकूं प्यारा देवन सारखा कौन है। अरु विना बुलाये मेरी स्तुति करे है। नम्रीभूत होय नमस्कार करे हैं अरु मीठा विनयपूर्वक वचन बोले हैं। सो ये कौन है सो यह संदेह कैसे मिटे ऐसी सामग्री कदाच साची होय अरु कैसे है ये स्त्री पुरुष गुलाबके फूल सारखे मुख जिनके अरु चन्द्रमा सादृस्य है सौम्य मूर्ति जिनकी सूर्य सादृस्य है प्रकाश जिनका रूप लावन्य कर अद्भुत है सबहीकी दृष्टि एकाग्र मो तरफ है मोने स्वामी सादृस्य मान हाथ जोड़ खड़े हैं अरु अमृतमई मीठा कोमल विनय सहित म्हारा मन माफके वचन बोले है। ताकी महमा कौनकू कहिये धन्य है ए स्थान अरु धन्य ये पुरुष वा स्त्री धन्य है याका रूप धन्य है। प्रवीनता धन्य याका विनय गुन वा सज्जनता वात्सल्यता बहुरि कैसे हैं पुरुष स्त्री पुरुष तो सर्व कामदेव सादृस्य अरु

स्त्री इन्द्रानी सादृस्य तिनकी सुगंध फैल रही है। तिनके शरीरका प्रकाश कर सर्व ओर उद्योत है। जहां तहां रतन मानिक पन्ना हीरा चिन्तामन रतन पारस कामधेनु चित्रावेल कल्पवृक्ष इत्यादिक अमोलक अपूर्व निधके समूह दीसें हैं। अरु अनेक प्रकारके मंगलीक वादित्र बाजे हैं। केई गान करें हैं केई ताल मृदंग बजावें हैं, केई नृत्य करे हैं, केई अद्भुत कौतूहल करें हैं। केई रतनकें चूर्न कर मंगलीक देवांगणान सो स्थान पूरे हैं। केई उत्सव वर्तें हैं केई जस गावें हैं केई धर्मकी महिमा गावे हैं केई धर्मका उत्सव करें हैं सो बड़ा आश्चर्य है। ए कहा है, मैं न जानू ऐसी अद्भुत चेष्टा आनन्दकारी अपूर्व अब तक देखनेमें न आई। सुननेमें न आई मानू यह परमेश्वरपुरी है वा परमेश्वरका निवास ही है। अथवा मेरे तांई भ्रम उपज्या है। ऐसा विचार करते संते वे पुन्याधिकारी देवताके सर्व आत्म प्रदेशों विषें सो उपग्रही अवधिज्ञान फुरायमान है ताके होते पूर्वला भवकूं निश्चय करि यथार्थ देखें है। ताके देखवे कर सर्व भ्रम विलय जाय तब फेर ऐसा विचार है। में पूर्वे जिनधर्म सेवन किया था ताका ये फल है सुप्न तो नाहीं अरु भ्रम भी नाहीं इन्द्रजाल भी नाहीं। मरा पीछे प्रत्यक्षमें कलेवरकूं ले जाय कुटुम्ब परवारके लोग मसान भूंममें दग्ध करें हैं। ऐसा निसंदेह है यामें संदेह है नाहीं बहुरि कैसे हैं वे देव देवांगना अरु कैसा है विभूत अरु कैसे हैं मंगलाचरन कैसे हैं जन्मका जान शीघ्र ही उछव संयुक्त आवता भया अरु दीनपनाका विनयपूर्वक वचन लघुनाई कर प्रकासता भया कैसा वचन प्रकासता भया जय जय स्वामिन जय नाथ

जय प्रभू थे जयवंत प्रवर्तो नंदो वृद्धो आजकी घड़ी धन्य जामें उत्पन्न भये हम ऐते दिन अनाथ रहे सो अब सनाथ भया अरु अब मैं तुम्हारा दर्सन कर कृत कृत्य भया पवित्र भया सो हे प्रभू संपदा तुम्हारी अरु यह राज तुम्हारा अरु यह विमान तुम्हारे अरु ये देवांगनानके समूह तुमारे अरु ये हस्ती घोड़ा तुम्हारे अरु विद्या नाटशाला आभूषन सुगंध माला ये चमर छत्र ये वस्त्र रतनादि सर्व तुम्हारा ऐ सात जातिकी सेन्या वा गुनंचास जातकी सेना ये रतननके मंदिर ये दस जातके देव ये गिलमई बिछाई रतनानके भंडार तुमारा है। हे प्रभू हे नाथ हम तुमारा दास हैं। सो म्हां ऊ र आज्ञा कीजे सोई हमने प्रमान है। हे प्रभू हे नाथ दयामूर्ति हे स्वामिन कल्यान पुंज तुमने पूर्वे कौन पुन्य किया था अरु कौन शील पाल्या कौन सुपात्रनें दान दिया कौन पूजन किया कौन सामायिक वा प्रोषध उपवास किया कौन षट् कायकी दया पाली कौन सरधानका ठीक किया अरु कौन अनुव्रत वा महाव्रत पाल्या कैसा सास्त्र अभ्यास किया के एकाविहारी होय ध्यान किया के तीर्थ जात्रामें गमन किया के वनोवास हो तपश्चरन किया वा बाईस परीसह सहीं वा जिन गुनमें अनुरक्त भया के जिनवानीका माथा ऊपर सरधा राखी इत्य दि जिन प्रनीत जिन धर्म ताके बहुरि अंग आचरन किये वाके प्रसाद कर तुम हमारे नाथ अवतरे सो हे प्रभू ये स्वर्ग स्थान है अरु हम देव देवांगना हैं। तुम पुन्यके फल कर मनुष्य लोकसू जिन धर्मके प्रभाव कर पर्याय पाई है। जामें संदेह मत करो सो अब हये काई कहां आपही अवधि ज्ञान कर सारो वृतान्त जानोगे धन्य आपकी बुद्धि

अरु वह मनुष्य भव धन्य जो संसार असार जान निज आत्म कल्यानके अर्थ श्री जिन धर्म आराध्या ताका फल अब ऐसा पाया धन्य है यह जिनधर्म ताके प्रसाद कर सर्वोत्कृष्ट वस्तु पाई है। जिन धर्म उपरान्त संसारमें और पदार्थ नाहीं तातें संसार सुख है सो एक जिन धर्म ही तें है। तातें परम कल्यान रूप एक जिन धर्म है। ताकी महमा वचन अगोचर है। सहस्र जिह्वा कर सुरेन्द्र भी पार पावे नाहीं। वा मुनेन्द्र भी पार न पावें सो यह काई आश्चर्य है जिनधर्मका फल तो सर्वोत्कृष्ट मोक्ष ही है तहां अनन्त काल पर्यंत अविनासी अतेन्द्री अनोपम बाधारहित निराकुलित स्वाधीन संपूर्न सुख पाजे अरु लोकालोक प्रकाशक ज्ञान पाजे ऐसे अनन्त चतुष्टय संयुक्त आनन्द पुंज अरहन्त सिद्ध ऐसे मोक्ष सुख अंतर रहित भोगवें हैं। ताकर अत्यंत त्रप्त है। जगत पूज हैं। वाके पूजने वारे वा सारखे ह्वे हैं। सो हे प्रभू जिनधर्मकी महमा हमतें न कही जाय। अरु धन्य हो आप, सो ऐसे जिनधर्मको पूर्वे आराधा ताके फल कर यहां आय अवतार लिया सो आपकी पूर्व कमाई ताको फल जानो ताकूं निर्भै चित्त कर अंगीकार करो अरु मनवंछित देवो पुनीत सुखने भोगवो अरु मनकी संका दूर ही तें तजो हे प्रभू हे नाथ परमदयालु जिनधर्म वात्सल्य सबको प्यारा म्हां सारखे देवनकर पूज्य असंख्यात देवदेवांगना के स्वामी अब तुम होहु अपने किया कार्यका फल अब धारो हे प्रभू हे सुन्दराकार हे देवनके प्यारे हमपर आग्या करो सोई हम सिर ऊपर धारेगें अरु ये असंख्यात देवांगना आपके दास हैं। तिनकू अपने जान अहंकारो यह जिनधर्म विना ऐसी संपदाको पावे नाहीं जासूं हे प्रभू अब शीघ्र ही

अमृतके कुंडमें स्नान कर अनोपम वस्त्र आभूषन पहिर अन्य अमृतके कुण्डमें रतनमई जारी भर और उत्कृष्ट देवों पुनीत अष्ट द्रव्यकूं हस्त जुगलमें धार मन वचन कायकी शुद्धता कर महाअनुराग संयुक्त महाआडंबरसूं जिनपूजनकूं पहली चालो पीछे और कार्य करो जासूं पहिले जिनपूजन कर पाछें अपनी संपदाकू सम्हार अपने आधीन करो सो अपने निज कुटुम्बका उपदेश पाय वा पूर्वली धर्मवासना सों स्व इच्छासूं उठ महा उछाहसों जिन पूजनकूं जिनमंदिर विषें जाता हुआ सो कैसा है जिनमंदिर अरु जिनबिम्ब सोई कहिये है। सौ जोजन लांबा पचास जोजन चौड़ा अरु पचहत्तर जोजन ऊंचा ऐसा उतंग जिनमंदिर अद्भुत सोभे है। ताके अभ्यंतर एक सो आठ गर्भग्रह हैं। एक एक गर्भग्रहमें तीन कटनी ऊपर गंधकुटी निर्मापित है तामें एक एक जुदे जुदे श्रीजी पांचसै धनुष प्रमान उतंग पद्मासन सिंहासन ऊपर विराजमान हैं बहुरि वेदी ऊपर ध्वजा अष्ट मंगल द्रव्य धर्म चक्र आदि अनेक अचरजकारी वस्तुके समूह पाइये है। ऐसी गंधकुटीमें श्रीजी अद्भुत सोभा सहित विराजे हैं। एक एक गर्भग्रह विषें एक एक सास्वते अनादि निधन अकृतम जिनबिम्ब स्थित हैं सो कैसे हैं जिनबिम्ब समचतुरसंस्थान है। अरु कोट सूर्यकी जोतिने मात करता तिप्टे हैं गुलाबके फूल सारखे महामनोज्ञ हैं। शान्त मूर्ति ध्यान अवस्थाकू धरें नासा दृष्टिकूं धारे परम वीतराग मुद्रा आनन्दमय अति सोभे है। सो कैसे हैं जिन विम्ब ताया सोना सारखी रक्त, जिव्हा वा होंठ वा हथेली वा पगतली हैं। फटक मन सारखे दांतोंकी पंकति वा हस्त

पगके नख अत्यंत उज्जल निर्मल हैं। अरु स्याम मनमई महां नरम महां सुगंध ऐसे मस्तकपै केसकी अगी है। मुखकी वक्र रेखा तीर्थंकरवत् सोभे है। बहुरि कैसे है जिनविम्ब केई तो सुवर्नमई हैं। केई रक्तमणिके हैं केई नील वर्नके है। केई पन्नाके हैं केई स्याम वर्नके हैं। केई स्वेत फटक मनके मस्तक ऊपर तीन छत्र विराजे हैं मानू छत्रके मिस कर तीन लोक ही सेवाने आये हैं। चौसठ यक्ष जातके देवताका रत्नमई आकार है। ताके हस्त विषें चोसठ चमर हैं। सो श्री जी ऊपर बत्तीस दाहनी तरफ बत्तीस वाईं तरफ लियें खड़े हैं। अनेक हजारा धूपका घड़ा धरया है। लाखा कोड्या रत्न मई क्षुद्र घंटका है लाखा कोड्या रत्नके दंड रत्नमई कोमल वस्त्र सहित महा अनंग सोभे है। अनेक चंद्रकांत मणि सिलानकी वावड़ी वा सरोवर कुंड नदी पर्वत महलोंकी पंक्ति सहित वन वा पुप्प वटी जिनमंदिर सोभे हैं। बहुरि कैसे जिनमंदिर एक बड़ा दरवाजा पूर्वदिसा सन्मुख चौखूटा है दोय दरवाजा दक्षिन उत्तर दिसी चौखूटा है बहुरि पूर्व सन्मुख रचना सैकड़ा हजारा जो जन पर्यंत आगाने चली गई है। विशेष इतना पूर्वके द्वारा आदि रचनाका लांबा चौड़ा उतंगका प्रमान है। तातैं आधा दक्षिन उत्तर द्वार आदिका प्रमान है। ताही तैं दक्षिन उत्तर द्वारको मूल्यद्वार कहें हैं। बहुरि सर्व रचना कर बाहु चार चार द्वार सहित तीन महा उतंग कोट हैं। वहुरि तिन मंदिरके लाखा कोड़्या अनेक रत्नान सहित निर्मापित महा उतंग स्थंभ लागे हैं। बहुरि तीन तरफ अनेक प्रकारके सैकड़ा हजारां योजन पर्यंत रचना चली गई है। कठै ईतो सामान्य मंडप है कहीं

सभा मंडप है। कहीं ध्यान मंडप है। कहीं जिनगुन गान वा चरचा स्थान है। कहीं छत्र है कहीं महलनकी पंक्ति हैं। कहीं रतननके चौतरा हैं दरवाजेके तोरन द्वार हैं। कहीं द्वाराके आगे मानस्थंभ हैं। तिनकूं देखते महां मानीनका मान दूर होय है। तातैं अत्यंत ऊंचे हैं। आकासकूं सपर्से हैं। सब जाइगा हजारां सेनाकी रतनानकी माला लूमे हैं। जहां हजारा धूप घड़ानमें धूप खेवें हैं जागा जागा हजारां महलोंकी पंक्ति वा धुजानकी पंक्ति सोभै हैं। कैसी ध्वजा अरु कैसा है महल स्वर्ग लोकके इन्द्रादिक देवनकों वस्त्रके हालने कर मानूं सेनकर बुलावे है। कहाकर बुलावे है। कहे यहां आवो यहां आवो श्रीजीका दर्सन करो महां पुन्य उपार्जे पूर्वला कर्म कलंकने धोवो, कहीं रतनानका पुंज जगमगाट करे है कहीं हीरानकी भूमि है कहीं मानिककी कहीं सोनाकी कहीं रूपाकी कहीं पांच सात वर्न रतनानकी भूमिका है। कोई महलके थंभ हीराका है। कोईके पन्नाका कोईके मानिकका कोईके अनेक रतनाका कोईके सोना रूपाका कोई स्थानमें कल्प वृक्षोंका बन है। कहीं समान वृक्षोंका बन हैं। कहीं पहुप वाड़ी छे तिनमें रतनानका पर्वत सिला महल वावड़ी सरोवर नदी सोभे है। चार चार अंगुल हरयाली दूव पन्ना सादृस्य महा सुगंध कोमल मीठी सोभे है। मानों श्रावन भादोंकी हरयाली सादृस्य है। अथवा आनंदके अंकूरा ही हैं। कहीं जिनगुन गावे हैं कहीं नृत्य करे हैं। कहीं राग अलाप जिनस्तुति करे हैं। कहीं देव द्रव्यकी चरचा करे है कहीं ध्यान करें कहीं मध्य लोकके धर्मात्मा पुरुष वा स्त्रीका गुनाकी बड़ाई करे ऐसे जिन मंदिरमें

संख्यात व असंख्यात देवांगना दर्सन वास्ते आवे व जांय हैं। तार्की महमा वचन अगोचर है देखतेही आवे तातैं ऐसे जिन देवकू हमारा नमस्कार होय वारंवार घनी कहवाकर पूर्नता होहु, बहुरि कैसे हैं जिनबिम्ब मानू बोले हैं कि मुलकें हैं कि हंसे हैं कि स्वभावमें तिष्टे हैं। मानूं ऐसा स्यात तीर्थकर ही हैं। भावार्थ— नख सिख पर्यंत जिनबिम्बका पुद्गल स्कंध तीर्थंकरके शरीरवत अंग उपंग शरीरकी अवयव हाथ पग मस्तक आदि सर्वांग बर्न गुन लक्षनमय स्वयमेव अनादि निधन परनवे है। तातैं तीर्थंकर सादृश्य है विशेष तीर्थंकर महाराजके शरीर विषैं केवल ज्ञानमय आत्मा द्रव्य लोकालोकके ज्ञायक अनन्त चतुष्टय पंडित विराजें हैं। जिन बिम्बको वे देव पूजे हैं। अरु मैं भी पुज्यूं हूं और भी भव्यजीव पूजन करो एक नयकर तीर्थंकरका पूजने बीच प्रतिमाजीके पूजनेका फल बहुत है। सो कसो कहिये है। जैसे कोई पुरुष तो राजाकी विद्यमान सेवा करे है। अरु कोई पुरुष राजाकी छबीकू पूजे तब राजा देशान्तरसे आवे तब ई पुरुष सो बहुत राजी होय अरु या विचारे जाने हमारी छबीकी सेबा करी सो हमारी करे ही करे तातैं ऐसा भक्त जान बहुत प्रसन्न होय। त्योंही प्रतिमाजीके पूजनमें बहुत अनुराग सूचे है। फल है सो एक परनामाकी विसुद्धताका ही है। अरु परनाम होंय सो कारनके निमित्तसे होंय जैसा कारन मिले तैसा कार्य उत्पन्न होय निःकषाय पुरुषके निमित्त ते पूर्व कषाय गल जाय जैसे अग्निके निमित्तसे दूध उवल भाजनमें सूं निकसे अरु जलके संयोगसे भाजनमें निरूप पररनमें त्योंही प्रतिमाजीके सांत दसाने देख निर्मल परनाम निर्विकार

सांत रूप हो है। सोई परम लाभ जानना ऐसा ही अनाद निधन निमित्त नैमित्तने लिया वस्तुका स्वभाव स्वयमेव बने है। जाके निवारने समर्थ कोई नाहीं। बहुरि और भी उदाहरन कहिये है। जैसे जलकी बूंद ताता तवा ऊपर परे तो नासने प्राप्त होय अरु सर्पका मुखने पड़े तो विष होय। कमलका पात्र ऊपर पड़े तो मोती सादृस्य सोभे सीपमें पड़े तो मोती ही होय। अमृत कुण्डमें पड़े तो अमृत होय इत्यादि अनेक निमित्त कर अनेक प्रकार जलकी बूंद परनवती देखिये। और भी अनेक पदार्थ नाना प्रकारके कारन कर और सों और परनवते देखिये है ताकी अद्भुत विचित्रता केवली भगवान ही जाने लेस मात्र सम्यक दृष्टि पुरुष ही जाने यहां कोई प्रश्न करे प्रतिमाजी तो जड़ अचेतन हैं स्वर्ग मोक्ष कैसे देसी ताकूं कहिये है रे भाई प्रत्यक्ष ही संसारमें अचेतन पदार्थ फलदाई देखिये है। चिंतामन पारस कामधेनु चित्रावेल नव निधि जे अनेक वस्तु देते देखिये है बहुरि भोजन खाये क्षुधा मिटे है जल पिये तृषा मिटे औषधके निमित्तकर अनेक रोग सांत होंय पाचों इन्द्रीनके विषयसे ये सुख होय चित्रामकी वा काष्ठकी पाषानकी अचेतन मूर्ति देखनेमें चेतन स्त्रीके निमितवत विकार परनाम होय हैं। साची स्त्री सरीखा पाप लागे है। त्योंही प्रतिमाजीकी पूजा स्तुति करना है। सो तीर्थंकर महाराजके गुनाकी अनुमोदना है। जा पुरुषके गुनाकी अनुमोदना करे तो वाके गुन सादृस्य फल उत्पन्न होय औगुन-वान पुरुषकी अनुमोदना किये पापका फल नरकादिक लागे त्यों ही धर्मात्मा पुरुषकी अनुमोदना किये धर्मका फल स्वर्ग मोक्ष

लागे तातैं प्रतिमा जो साक्षात् तीर्थंकर महाराजकी छवी है ताकी पूजा भक्ति किये महा फल उपजे है। यहां कोई फेर प्रश्न करे जो अनुमोदना करे तो वाका सुमरन ही करवो करे मूर्ति काहेको बनावे ताको कहिये है सुमरन किये तो वाका परोक्ष दर्सन होय। सादृस्य आकार बनाये प्रतिदर्शन होय सो परोक्ष बीच प्रतक्ष विषें अनुराग विशेष उपजै है। अरु आत्मा द्रव्य है। सो डीला कभी दीसे नाहीं डीलाका भी वीतराग मुद्रा स्वरूप शरीर ही दीसे है तातैं भक्त पुरुषने तो मुखपनों वीतराग सरीर ही का उपगार है। भावे जंगम प्रतमा होय भावे थावर प्रतमा होय दोन्याका उपगार सादृस्य है। जंगम नाम तीर्थंकरका है। थावर नाम प्रतमाका है। जैसे नारद रावन ने सीताका रूपकी वार्ता कही तबतो रावन थोरा आसक्त भया प्रीछे वाका चित्रपट दिखाया तब विशेष आसक्त भया ऐसा प्रतक्ष परोक्षका तातपर्ज जानना सो वे तो चित्रपट जथावत न था अरु प्रतिमाजीका यथावत रूप है। तातै प्रतिमाजीका दर्सन किये तीर्थंकरका स्वरूप आद आवे है। ऐसा परमेश्वरकी पूजा कर बहुरि वे देव कांई करे अरु कैसा कहे है सो कहिये है। जैसे बारा वरसका राजहंस पुत्र सोभायमान दीसे है। तासूं भी असंख्यात असंख्यात अनन्त गुना तेज प्रतापकूं लिया सोभे है बहुरि कैसे है शरीर जाका हाड़ मास मल मूत्रके संसर्ग कर रहित कोट सूर्य्यकी जोतने लिया महा सुन्दर शरीर हैं। वा वहु मोलो अन्तर तासूं भी अनन्त गुनी सुगंधमई शरीर है। अरु ऐसे ही सुगन्धमई उस्वास आवे है। बहुरि सोवर्नमई पीत तपाया सोना समान लाल अथवा

ऊगता सूर्य समान लाल वा फटक मन मई स्वेत ऐसा है वर्न जाका बहुरि अनेक प्रकारके आभूषन रतनमई पहिरे है। अरु मस्तक ऊपर मुकट सो धारे हैं। अरु हजारां वरस पीछे मानसीक अमृतमई अहार ले हैं। अरु केतेक मास पीछे सांस उस्वास ले हैं। अरु कोड्या चक्रवर्त सारखे वल है। अरु अवधि ज्ञानकर आगला पीछला भवके वा दूरवर्ती पदार्थका वा गूढ़ पदार्थकूं वा सूक्ष्म पदार्थकूं निर्मल पुष्ट जाने है। अरु आठरिद्ध वा अनेक विद्या वा वैक्रियाकर संयुक्त है जैसी इच्छा होय तैसा ही करे। बहुरि रेशम सों असंख्यात गुनी विमानकी भूमिका है अरु अनेक प्रकार रतनीका चूर्न सादृस्य कोमल चूल है। अरु गुलाब अंबरी केवड़ा केतुकी चमेली जाय सेवती नर्गसराय वेलसोन जुही मोगरा सुगंधरा चंपा आदि दे पहुपनका चूर्न समान सुगंधमई रज है। अरु कहीं अनेक प्रकारके फूल तिनकी वाड़ी सुगंध वाड़ी सोभे है। अरु कोटक सूर्य सारखो ताप रहित सात मई प्रकाश है। अरु मंद सुगंधि पवन बाजे है मानू पवन नाहीं बाजे देवतानके आनन्द उपजावे हैं। अनेक प्रकारके रतनमई चित्राम हैं। अरु अनेक प्रकारके रतन भी सोभे हैं। तेठे वनमें अनेक बावड़ी निवान पर्वत सिला सोभे हैं। तेठें देव कीड़ा करें हैं। बहुरि देवनके मंदिरके अनेक प्रकारके रतन लागे हैं। रतनमई है। महामनोहर दंडनपर लागी धुजा हाले हैं। सो मानूं धर्मात्मा पुरुषनकूं सेनकर बुलावे है। कांई कह बुलावे हैं या वहे है आवो आवो ऐसा यहां सुख है जो और ठौर दुर्लभ जासूं इठां आय सुख भोगो आपना किया करतव्य ताका फल ल्यो बहुरि

कोड़चा जातके वादित्र बाजें हैं अरु नृत्य होय है अरु नाटक होंय हैं अरु अनेक कला चतुराई वा हावभाव कटाक्ष करि देवांगना कोमल हैं। शरीर निर्मल सुगंधमई है अरु चन्द्रमाकी किरनसूं असंख्यात गुना निर्मल प्रकाशमई मुख है। बहुरि कैसी है देवांगना महा तीक्षन कोकला सारखा केट जिनका अरु मीठा मधुर वचन बोले हैं अरु तीक्षन मृग सारखा नेत्र है अरु चीता सारखी कट है अरु फटकमनी समान दंत अरु ऊगता सूर्य हथेली वा पग थली है बहुरि कैसी है देवांगना जैसे बारा वरसकी राजपुत्री सोभे तासूं असंख्यात गुना अतुलने लियां पर्यंत एकादस रूप रहे है। भावार्थ—यह तरुन वा वृद्धपनाने न प्राप्त होय बालदसा सादृस्य ही रहे है बहुरि कैसी हैं देवांगना मानूं यह सर्व सुख बोयके पिन्ड ही है। सर्व गुनानके समूह हैं सर्व विद्याके ईश्वर हैं सर्व कला चतुराईकी अधपति है। सर्व लक्ष्मीके स्वामी हैं। अनेक सूर्यकी क्रांतिको जीते हैं। अनेक कामका निवास है शरीर जिनका बहुरि केसे हैं देव देवी देवता तो देवीनके मनकू हरे हैं अरु देवी देवनके मनकू हरे हैं हंसनीकी चालकू जीतें हैं चाल जिनकी अनेक विक्रियामय है शरीर जिनका अनेक तरह सू नृत्य करें हैं अरु देव अनेक शरीर बनाया पुषत अनेक देवांगनासूं अनेक भोग भोगवें हैं। अरु जुदे महांन महासुगंधमई कोटक चन्द्रमा सादृस्य सातमई मनकूं रंजाय मान करवावाले महादेदीप्यमान अनेक प्रकारके कल्पवृक्ष तिनके फूलन कर भूसित ऐसी सेज ऊपर देव तिष्ठें हैं। पीछे देवांगना अनेक आभूषन पहिरें जुदे जुदे महलनमें जाय हैं। पीछे दूर हीते हस्त

जोर सीस नमाय तीन नमस्कार करे हैं। पीछे देवकी आज्ञा पाइ सेज्या ऊपर जाय तिष्टे है। पीछें देव कभी गोद पर धोर हस्तादिक सपर्से वा नृत्य करने आज्ञा करे पीछें देव देवांगना अनेक प्रकारके शरीर बनाय व नृत्य करे वा गांन करें तामें ऐसा भाव ल्यावें हे प्रभो हे नाथ मैं कामवान कर दग्ध हूं ताकूं भोगदान कर सांत करो आप म्हांके कामदाह मेटवेकूं मेघ साटस्य हौ। बहुरि कभी वे देवका गुनानुवाद गावें हैं। कभी कटाक्ष कर जानी रहे है। कभी आइ एकठी होय कभी याइ तले लोटै जाय कभी बुलाय बुलाय भी न आवे सो पहर आंका मायाचार जात स्वभाव ही है। मनमें तो अत्यंत बाह्य अरु वाहू अचाह दिखावे बहुरि कभी नृत्य करती धरतीमें झुक जाइ है। आकाशमें उठ जाय वा चकफेरी देइ वा भूम ऊपर पगांकूं अति शीघ्र चलावे व कभी देव दिसाप्रति हेरे। वा तली दृष्टि देखे देवांगना वस्त्र कर मुख आछादित कर देय वा उघाड़ देय जैसे चन्द्रमा वादल कर आछादित होय कभी वादल सो रहित दिखाई देय बहुरि कभी देव देवांगना ऊपर उछाले सो वे भयकर भाग जाइ पीछे अनुराग कर देवके शरीरसू आय लिपटे फेर दूर जाय है कभी इन्द्र सहित देवांगना मिल चकफेरी देय कभी ताल मृदंग वीन बजाय देवकूं रिजावे कभी सेजपर लोट जाय कभी उठ भागे पीछे आकासमें नृत्य करे। मानू आकासमें विजुली चमके अथवा आकाशमें तारान सहित चन्द्रमा सोभे है। अथवा चन्द्रमा साथ चन्द्रकला गमन करती सोभे। तैसें देवके साथ देवांगना मिल कौतूहल करे बहुरि देवांगना नृत्य करती थकी पावन भूमि ऊपर वा आकासमें नेवर आदि पगनके

गहने ताके झनकार सहित चलावे है सो कहिये है। झिम झिम झिन झिन छिन छिन तिन तिन आदि शब्दनके समूह अनेक रागने लियां गातके गहनेनके शब्द होय मानूं देवकी स्तुति करें हैं। पीछें कोमल सेजपर देवका आलिंगन करें सो परस्पर देवका संयोग कर ऐसे सुख उपजे मानूं नेत्र मूंद कर सुखने आचरे है। अरु तिर्यंच मनुष्यकी नाईं भोग किये सिथिल होय नाहीं। अत्यंत त्रप्त होय जैसे पंचामृत पिये होय। बहुरि वह देवमें ऐसी सक्ति पाइये कभी तो शरीरकूं सूक्ष्म कर लेय कभी हलका शरीर करे कभी भारी शरीर करे कभी आंखके पल मात्रमें असंख्यात् जोजन चाले कभी विदेह क्षेत्रमें जाय तीर्थंकर देवकूं वंदे हैं स्तुति करे हैं। कोई स्तुति करे है जय जय भगवानकी जय प्रभूकी जय त्रिलोकी नाथकी जय करुनानंदजी जय संमार समुद्र तारक जय परम वीतराग जय ज्ञानानंद जय ज्ञान स्वरूप जय परम उपगारी जय लोकालोक प्रकाशक जय सुभावमय मोदित जय। स्वपर प्रकाशक जय ज्ञान स्वरूप जय मोक्ष लक्ष्मीके कंत जय सिद्ध स्वरूप जय आनन्द स्वभाव जय चेतन्य जय अखंड सुधारसपूर्न जय ज्वलित मुचलित योति जय निरंजनजय निराकारजय अमूर्तीक जय परमानंदैककारन जय सहज सुभाव जय सहज स्वरूप जय सर्व विघ्ननासक जय सर्व दोषरहित जय निःकलंक जय परम सुभाव नित्यं जय भव्यजीव तारक जय अष्ट कर्म रहित जय ध्यानारूढ़ जय चैतन्य मूर्ति जय सुधारसमई जय ज्ञान मई जय अनन्त सुख मई जय अनन्त दर्शनमई जय अनन्त वीर्यमई जय अतुल जय अव नासी जय अनूपम जय सुखपिन्डजय सर्व तत्व ज्ञायक जय

अनन्त गुनभंडार जय निज परनतिमें रमनहार जय भव समुद्रके तरनहार जय सर्व दोषके हरनहार जय धर्मचक्रके धरनहार हे प्रभूजी परम देव थें ही हो अरु हो प्रभूजी देवांका देव थे हीं हो आनमतके खंडनहार थें ही हो अरु हो प्रभूजी मोक्षमारगके चलावनहारे थें ही हो। भव्य जीवनकूं प्रफुल्लत थें ही हो अहो प्रभूजी जगतका उद्धारक थें ही हो। जगतका नाथ थें ही हो अरु कल्यानके कर्ता थेई हो दयाभंडार थें ही हो अहो प्रभूजी समोसरनकी लक्ष्मीसूं विरक्त थेंई हो। प्रभूजी जगत मोहवाने समर्थ थेंई हो अरु उद्धार करवाने भी थेंई समर्थ हो प्रभूजी थाका रूप देखकर नेत्र त्रिप्त न होयं अहो भगवानजी आजकी घड़ी धन्य है। आजका दिन धन्य है। सो में थांको दर्शन पायो सो दरसन करवा थकी बहु कृत कृत्य हूवो अरु पवित्र हूवो कारज करनो हो आज में कियो। अब कार्य करनों क्यों रहो नाहीं। अहो भगवानजी थाकी स्तुति कर जिह्वा पवित्र भई अरु बानी सुन श्रवन पवित्र भयो अरु दर्शन कर नेत्र पवित्र हुआ अरु ध्यान कर मन पवित्र हुआ अष्टांग नमस्कार कर सर्व अंग पवित्र हूवो और हे भगवानजी मेरे ताईं ऐते प्रश्नका उत्तर कहो आपके मुखारविन्द तें सुन्या चाहूं हूं सोई कहिये है हे प्रभू हे देव सप्त तत्वका स्वरूप कहो अरु पंचास्तिकायका स्वरूप कहो अरु षट द्रव्य नव पदार्थका स्वरूप अरु चौदह गुनस्थान वा चौदह मार्गनाका स्वरूप अरु अष्टकर्म स्वरूप वा उत्तर कर्मका स्वरूप हे स्वामी मोने कहो। प्रथमानुयोग करनानुयोग चरनानुयोग द्रव्यानुयोग इनका स्वरूप कहो स्वामी तीन काल वा तीन लोकका स्व-

रूप श्रावक मुनिका आचरन वा मोक्षका मारग हे स्वामी थें कहो पुन्य पापका स्वरूप वा चार गतिका स्वरूप वा जीवदयाका स्वरूप वा देवगुरु धर्मका स्वरूप वा कुदेव कुगुरु कुधर्मका स्वरूप हे नाथ मोने कहो सम्यकदर्शक ज्ञान चारित्रका स्वरूप अतेंन्द्री आनन्दमय निराकुलित अनोपम वाधा रहित अखंडित सास्वतो अवनासी आत्मीक सुखका स्वरूप हे भगवानजी थेंहीं कहो धर्म ध्यान शुक्ल ध्यान आरतध्यान रौद्रध्यान हे प्रभूजी इनका स्वरूप कहो। जोतिष वा वैदिक वा मंत्र तंत्र जंत्र इनका स्वरूप कहो वा चौसठ रिद्ध वा तीनसे त्रेसठ कुवादिका स्वरूप भी कहो। अरु वारा अनुपेक्षा दसलक्षनी षोड़स भावनाका स्वरूप अरु नोनय वा सप्तभंगी वानी अरु द्रव्यका सामान्यगुन अरु विसेष गुन ताका स्वरूप कहो वा अधोलोक वा मध्यलोक वा ऊर्धलोक ताकी रचना वा द्वादशांगका स्वरूप वा केवलका स्वरूप याने आदि दे सर्व तत्वका रूप जान्या चाहूं हूं अरु हे भगवानजी नर्क किसा पाप सो जाय है। तिर्यंच कैसा पाप सूं होय मनुष्य कैसा परनाम सूं होय। देव पर्याय कैसे परमान सूं होय निगोद क्यों कर जाय एकेन्द्री विकलत्रय क्यों कर होय असैनी कैसा पाप सूं होय सन्मूर्छन अलब्धि पर्याप्त सूक्ष्म वादर कैसा खोटा परनाम सूं होय आंधों बहरो गूंगो लूलो कैसा पाप कर होय वावन कूवड़ो विकलिंगी अधिकअंगी कैसा पाप कर होय कोढ़ी दीर्घ रोगी दरिद्री कुरूपी शरीर कसा पाप सूं होय मिथ्याती कुविस्नी अन्यायमार्गी चोर निर्दई अदयावान धर्मसूं परान्मुख पाप कार्यसो आसक्त अधोगामी कैसा पाप सूं होय। शीलवान संतोषी दयावान संयमी त्यागी वैरागी कुल-

वान पुन्यवान रूपवान निरोगी विचक्षन बुद्धिमान पंडित अनेक शास्त्रको पारगामी धीर वीर साहसी सज्जन सबका मन मोहन सबकूं प्यारा दानेश्वरी अर्हंत देवका भक्ति सुगतिगामी कैसा पुन्य सों होय इत्यादि प्रश्नका दिव्यध्वनि करि स्वरूप सुन्या चाहूं हूं। सो मो पर अनुग्रह कर वा दया कर मेरे तांई कहो अहो भगवानजी हमारा पूर्वला भव कहो अरु अनागत भव कहो अरु हे भगवानजी अब मेरे संसार केतो बाकी रहा अरु दिक्षा धर कब थां सारखा होहुंगा सो मोने यथार्थ कहो हमारे यह जानवाकी घनी वांछा छै। वा घनी अभिलाषा छै। ऐसा प्रश्न पाइ श्रीभगवानजीकी वानी खिरती हुई अरु सर्व प्रश्नका उत्तर एक साथ ज्ञानमें भाषता भया ताके मुखकर सुनि अत्यंत तृप्ति भया पीछे स्वर्ग लोक गया पीछे कभी नन्दीश्वरद्वीपमें जाय वा मेरुका चैत्याला जाइ प्रतिमाजीने बंद कभी अनेक प्रकारका भोग भोगवे कभी सभामें सिंहासनपर बैठे अरु राज्यकाज करै कभी धर्मकथा करै। कभी चार जात वा सात जातकी सेन्या सज भगवानका पंचकल्याणकमें जाय वा वनादिमें क्रीड़ा करवाने जाय कभी देवांगना देव अंगुष्ट ऊपर नृत्य करें। कभी हथेली ऊपर कभी भुजा ऊपर कभी आंखकी भौंह ऊपर कभी आकाशमें नृत्य करें कभी धरतीमें झुक जाय कभी अनेक शरीर बनाय लेय कभी बालक हो जाय कभी देवकी स्तुति करे। कांई स्तुति करे हे देव थाने देखवा कर नेत्र त्रप्त न होंय हे देव थांका गुनका चिन्तवन कर मन त्रप्ति नाहीं होंय। अरु हे देव था विना म्हांने कौन प्रीति उपजावे है। हे देव थांका दर्शन कर अत्यंत त्रप्ति होय। हे देव थांका संयोगको अंतर कभी मत करो। थांकी सेवा

जयवंती प्रवर्तो अरु थें जयवन्ता प्रवर्तो थें म्हाने कल्यानके कर्ता हो। अरु थें म्हांका मन वांछित मनोरथने पूरो। बहुरि कैसे हैं देव देवांगना जाके आंखका टमकार होय नाहीं। अरु शरीरकी छाया नाहीं अरु क्षुधा तृषा रोग नाहीं हजार वरस पीछे किंचित् मात्र क्षुधा लागे सो मनहीकर त्रप्ति होय हैं तातैं क्षुधा नाहीं वे केई देव अनेक तरेका स्वांग ल्यावे अरु केईक देव सुगंध-मई जल वरसावे हैं। अरु केई इन्द्र ऊपर चमर ढोरे हैं। कैसे ढोरे मानू चमरके मिसकर नमस्कार करे हैं। कैईक छत्र लिया केई देव आयुध लियें दरवाजा तिष्टें है। कैईक देव माहली सभामें तिष्टें। कैईक वारली सभामें तिष्टें कैईक विरदावली बोलें हैं। कैईक देव स्तुति करें हैं कैईक हाथ जोड़ वीनती करें हैं। कैईक देव अमोलक निधि ल्याइ नजर करें हैं। कैईक देव ऐसे कहें हैं हे प्रभो कौन धर्म किया था तासूं ऐसी रिद्ध पाई अरु मैं भी कौन पुन्य किया था ताकर ऐसा नाथ पाया अरु कैई देव तीखा कण्ठ सों राग गावें सो रागने गावे मानू या कहें हैं हे प्रभूजी म्हांपर प्रसन्न होहु हमारी सेवा दिस देखो अरु कैईक प्रश्न करे हैं हे प्रभू जीवको कल्यान कौन बात कर होय सो मोने कहो थें सबनमें ज्ञाता हो अरु विशेष पुन्यवान हो याने आदि देय अनेक प्रकारके कौतूहल कर वा नृत्य करवावे गान करि स्तुति करि अपन स्वामीने रिझावे या जानेके कोई प्रकार देव म्हांपर प्रसन्न होय बहुरि स्वर्गामें रातदिनका भेद नाहीं रतननकी जोति वा कल्प-वृक्षनकी जोति वा सुभाव कर आकास निर्मलताके प्रभाव एकसां कोट्यां सूर्यका प्रकासने लियां सास्वता है। कैसा

है प्रकास मानो यह प्रकास नाहीं आनन्द बर्षे है। मानूं देवका पुन्य एकठा होय आया है कि मानू त्रैलोककी सुभ परमानू आन एकठी भई है। बहुरि कभी वे देव धर्मकी चरचा कर अपना देवांने पोषित करे है। अरु आनन्द उपजावे है अरु महा मनोहर वचन बोले अरु या जाने है के ऐ देव म्हारा चाकर है। मैं याका स्वामी हों सो मोने याकी रक्षा कर करनी हूं या देवकर सोभायमान दीसूं देखो यो धर्मको महातम तीसू विना बुलाया वा विना प्रेरचा देव आन स्तुति करै है। अरु सेवा करे है यो अद्भुत कोतूहल स्वर्ग लोक विना और ठौर तो नाहीं होसी। देखो या विमानकी सोभा और देखो देवांगनाकी सोभा अरु देखो राग वा नृत्य वादित्र वा सुगन्ध उत्कृष्ट ऐठे ही आन एकठी हुई है। कैसे ईकठी हुई है। कहीं तो देवांगना नृत्यगान करे कहीं क्रीड़ा करे कहीं देवांगना आन इकट्ठी भई हैं। कि मानू सूर्य चन्द्रमा नक्षत्र ग्रह ताराकी अंकित एकठी होय दसों दिसा प्रकासित कीनी हैं कहीं देवांगना रतनोंका चूरन कर मंगलीक साथिया पूरे हैं। कोई देवांगना मीठा मीठा सुरसूं मंगल गावे मानू मंगलके मिसकर मध्य लोकसू धर्मात्मा पुरुषाने बुलावे हैं। कोई देवांगना देव आगे हाथ जोड़े ऊभी है। कोई देवांगना हाथ जोड़े स्तुति करे हैं। कोई हाथ जोड़ प्रार्थना करे हैं कोई देवांगना लज्याकर नीची दृष्टि करे है कोई देवांगना देवका तेज प्रतापने देख भयवान होय है। कोई देवांगना थरथर धुनती जाय है। हाथ जोड़े मधुर मधुर वचन बोलती जाय हैं। अरु कैई देवांगना या कहे हैं। हे प्रभू हे नाथ हे दया

मूर्ति कीड़ा करवा चालो म्हाने त्रप्ति करो बहुरि कैसा है स्वर्ग कहीं तो धूपकी सुगन्ध फैली है। कहूं देवांगनाका समूह विचरे है। कहीं धुजानका समूह चाले है। कहीं पन्ना सादृस्य हरयाली होय रही है। कहीं पहुपवाड़ी फूल रही है कहीं भ्रमर गुंजार कर रहे हैं। कहीं चंद्रक्रांति मनिकी सिलानकर सौभित है। तामें देव तिष्टे हैं। कहीं कांच सादृस्य निर्मल वा जल सादृस्य निर्मल पृथ्वी सोभे हैं। मानू जलके दर आयुती है। ताके अवलोकन करतें ऐसी संका उपजे हैं। मत यामें डूब जाय कहीं मानिक सारखी लाल सोना सारखी पीत भूमि वा सिला सोभे है कहीं तेल कर मथो काजल सादृस्य वा काली वादरी सादृस्य भूमि सोभे मानू पापके छिपावे पापकी माता छै इत्यादि नाना प्रकारके वर्न लियां स्वर्गाकी भूमि देवताके मनकू रमावे हैं। ओर सर्वत्र पन्ना सारखे हरी अमृत सारखी मीठी रेशम सारखी कोमल वावन चंदन सारखा सुगन्ध सावन भादवांकी हरयाली सादृस्य पृथ्वी सोभे सदा एकसी रहे है। बहुरि ठौर ठौर ज्योतिषी देवनका विमान सादृस्य उज्जल आनन्द मंदिर वा सिला वा पर्वतनके समूह तामें देव तिष्टें हैं। कहीं सोवर्न रूपाके पर्वत सोभे हैं। कहीं वैडूर्यमन पुष्पराग मोतनके समूह नाजके ढेरवत परे हैं। कहीं आनन्दमंडप है कहीं कीड़ा मंडप है। कहीं सभामंडप है कहीं चरचा मंडप हैं कहीं केवल मंडप है कहीं ध्यान मंडप है। कहीं चित्रामवेल कहीं कामधेनु कहीं रसकूप कहीं अमृत कुंड भरया है। कहीं नील मन आदि मन्यां-के ढेर परे हैं। ऐसे सोभाके समूह कर व्याप्त हैं।

बहुत सुगंध वा अगनित वादित्र कर विमान व्याप्त हैं। सो याने आदि दे सुख सामग्री स्वर्गमें सर्व है और खोटी सामग्रीका अभाव है। ऐसी सुख सामग्री संसारमें नाहीं। जोमें स्वर्गमें पाजे अवे तो मध्यलोक आदि विषें सुख सामग्री है से स्वर्ग लोककी नकल एक अंसमात्र इहां पुन्यके फल लेस मात्र दिखावा निपजा है। सो स्वर्ग लोकका सुख बर्नन करवां समर्थ श्री गनधर देव भी नाहीं केवल ज्ञान गम्य है। सो यो जीव धर्मका प्रभाव कर सागरां पर्यंत ऐसा सुख पावे है, जांसू हे भाई तू धर्म सेवन निरंतर कर धर्म विना ऐसा भोग कदाच न पावे तासूं अपना हित वांक्षने पुरुषको धर्म सेवना जोग्य छे। कैसो छे धर्म परंपराय मोक्षको कारन छे सो ऐसा सुखमई आयुने पूरा कर पुन्य पूरा होवे कर ऊठा सोचवे है सो मास छै आयुमें बाकी रहे तब वह देवता अपना मरन जाने है। सो माला व मुकट व शरीरकी क्रान्ति मंद पड़वा थकी सो देव मरन जान बहुत झूरे है। कैसे झूरे है हाय हाय अब मैं मर जासी ये भोग सामग्री कौन भोगसी अरु मैं कौन गत जासी मोने राखवा समर्थ कोई नाहीं। अब में कांई करूं कौनकी सरन जाऊं हमारो रक्षक कोई नाहीं हमारा दुखकी बात कोनें कहूं। ये भोग हमारा वैरी था सो सब एकठा होय मोनें दुख देवे आया है। सो योनके सारखो यो मानसीक दुख कैसे भोगऊं। कहां तो ये स्वर्ग सारखा सुख अरु कहां एकेन्द्री आदि पर्यायका दुख सो कौड़ीके अनन्ता जीवके अरु कहां हाड़ान सूं छेदे हैं हाड़ी मेरा वा राधे सो ऐसी पर्यायमें पावासी हाय हाय यो काई हूवो। ऐसानकी ऐसी दसा होय जाय है। फेर वह देव अपने परवारके

देवनसों कहे हैं देव हो आज मो ऊपर कालका किंकर कोप्या सो मोपर सों ऐसा सुरपदका सुख छुड़ावे है अरु खोटी गतिमें नाखे छै ई दुख सहवाने मैं समर्थ नाहीं। घनीमें काईं काईं कहूं म्हांरा दुखकी बात सर्वज्ञ देव जाने छै और जानवा सक नाहीं ऐसा दीनपनाका वचन सुन परवारका देव तामें कोई बुद्धिवान देव शास्त्रका परगामी कहता हूवो हे नाथ हे स्वामी हे प्रभो ऐसा दीनपनाका वचन क्यों कहो। या दसा तो सबन की होनी ही है। जो कालसूं काहूको जोर नाहीं ई कालका बस त्रैलोकका जीव है। जासूं अब एक धर्म ही सरण है। सो थें भी धर्मको सरन लेहु आरतने छोड़ो आर्तध्यान तिर्यंच गतको कारण छै। अरु परंपराय अनन्त संसार करे छै तीसूं अबार किछू गयो नाहीं अब सावधानी सहित भगवानकी पूजा करो। वारा अनुपेक्षाको चिंतवन करो अरु अर्हंत देवको सुमरन करो। अरु आपना सहजानन्दका सम्हार करो स्वरसने पीवो जासूं जामन मरनका दुख विलय जाय अरु सास्वता सुखने पावो ई संसारसूं श्री तीर्थंकर देव भी डरया शीघ्रतासूं राजसंपदाने छोड़ बनमें जाय वस्या, तीसों थांने भी यो करनो जोग्य है। अरु सोक करनो जोग्य नाहीं पीछे वारंवार श्रीजीने याद करता हूवा अरु धर्ममय बुद्धि करता भया अरु वारा अनुपेक्षा चिंतवतो हूवो। काई चिन्तवतो हूवो देखो भाई कुटुम्ब परवार है सो बादरकी नाई विलय जासी तथा जैसे साझ समै वृक्षपे दसूं दिससूं अनेक पक्षी आन वसे प्रात समैं दसूं दिस जाते रहे अथवा जैसें हाटमें अनेक व्यापारी हटया भेले होंय पीछे दोय चार दिनमें जाका काम होय

सोई जाता रहे अरु तमासगीर हू जाते रहें तैसे कुटुम्ब परवारका चरित्र है। अरु माया है सो विजुलीके चमत्कार समान चंचल है। अरु जोवन है सो सांझकी ललाई समान है। सो जाने आदि दे सर्व ठाठ विनासीक है छिन भंगुर हैं कर्मजनित हैं पराधीन हैं। ई सामग्रीमें हमारो कोई नाहीं। हमारो चैतन्य स्वरूप सासतो अविनासी है। हूं कौनको सोच करूं और कौन सो राच्यों अब असरन अनुपेक्षा चिन्तवे छै। देखो भाई था संसारमें देव विद्याधर वा इन्द्र धरणेन्द्र वा नारायन प्रति नारायन वा बल्देव वा रुद्र वा चक्री कामदेवने आदि दे कोई सरन नाहीं। ऐ भी सबकालके बस हैं। तो और कौने सरन राखसी तासूं वाह्य मोने पंचपरमेष्टी सरन है। अरु निश्चे सरन हमारो निज स्वरूप है। और त्रिकालमें सरन नाहीं। अब संसारानुपेक्षा चिंतवे हैं। देखो भाई यो जीव भूलकर मोहके बस हूवो ई संसारमें जामन मरनादि दुख सहे है। तासूं या संसारसूं उदास होय निश्चे धर्म हीको निरंतर सेवन करनो। अब एकत्वानुपेक्षाको चिंतवन करें हैं। देखो भाई यो जीव अकेलो है ईके कुटुम्ब परवार है नाहीं नर्क गयो तो अकेलो ऐठा आयो तो एकलो अरु ऐठासूं भी एकलो जासी तीसूं हमारे अनन्त दर्शन अनन्तज्ञान अनन्तसुख अनंतवीर्य यो परवार सास्वती छै। सो म्हारे साथ छै। अब अनित्यानुपेक्षाको चिन्तवन करे छे। देखो भाई छहों द्रव्य अनादि निधन अरु न्यारा न्यारा एक क्षेत्र अवगाही भेला तिष्टे है। कोई द्रव्य काहूं सो मिले नाहीं। ऐसा ही वस्तुका स्वभाव है जामें संदेह नाहीं। चैतन्य स्वरूप अमूर्तीक अरु जो

शरीर जड़ मूर्तीक तासूं मेरा काईं मेल ईको स्वभाव न्यारो म्हारो स्वभाव न्यारो ईका प्रदेश न्यारा म्हारा प्रदेश न्यारा ईका द्रव्य गुन पर्याय न्यारा म्हारा द्रव्य गुन पर्याय न्यारा। तासूमें यासूं भिन्न त्रिकालका हूं। अब अशुचित्वानुपेक्षाका चिन्तवन करें हैं। देखो भाई यो सरीर महा असुच है। अरु घिनावनो है। ऐता दिन या सरीरने पोषता भया काम पड्यो तब दगा ही दिया ई सरीरने सागर भरपानी सो धोवो तो भी पवित्र न होय। यो जड़ अचेतन ही रहे तासूं बुधजन ऐसा सरीर सूं कैसे प्रीति करें कदाचि न करें। अब आश्रवानुपेक्षाको चिन्तवन करें हैं। देखो भाई यो जीव मिथ्यात अविरति प्रमाद कषाय योग इनकर उपजा जो भावत द्रव्यत कर्म ताकर संसार समुद्रमें डूबे हैं। कैसे डूबे है जैसे छिद्र सहित जिहाज जलमें डूबे। अब संवरानुपेक्षा चिन्तवें हैं। देखो भाई जिहाजका छिद्र मूंदे जल न आवे तैसे तप संयम धर्म कर संवर होय है। अब निर्जरानुपेक्षाको चिन्तवन करे है। देखो भाई आत्माका चिन्तवन कर पूर्वला कर्म नासकूं प्राप्त होय। जैसे जिहाजमेंका पानी उछाल दीजे जिहाज तीर पार होय वैसे आत्माकू कर्मरूप बोझ करि रहित कर मुक्तिकी प्राप्त करे। अबलोकानुपेक्षाका चिंतवन करें हैं। देखो भाई यह लोक षट् द्रव्यनका पसार है। कोईका किया नाहीं। अब धर्मानुपेक्षाका चिंतवन करें। देखो भाई धर्म ही संसारमें सार है। अरु धर्म ही मित्र है। अरु धर्म ही बड़ो हितू है। अरु धर्म विना कोई सरन नाहीं तातैं धर्म हीको साधन करनो अरु धर्म ही आराधनों जेता त्रैलोकमें उत्कृष्ट सुख है सो धर्म हीका प्रसाद कर पावे है।

अरु धर्म ही कर मुक्ति पावे सो धर्म ही हमारो निज लक्षन है। निज स्वरूप है म्हारो स्वभाव है। सोई म्हाने गृहन करनो और कर प्रयोजन नाहीं। अब दुर्लभानुपेक्षाकूं चिन्तवे छै। देखो भाई संसारमें एकेन्द्री पर्याय सूं बेन्द्री दुर्लभ है। बेन्द्री-सूं तेन्द्री, तेन्द्री सूं चौन्द्री, चौन्द्री सूं पंचेन्द्री तामें मनुष्य पर्यायमें भी धर्मीनकी संगति धर्म संयोग यह अनुक्रमसे दुर्लभसे दुर्लभ जानना, तामें भी सम्यक ज्ञान महां दुर्लभ जानना ऐसे वह देव भावना भावता हुवा पीछे आयु पूर्नकर मनुष्य पर्यायमें उच्च पद पावता हुवा अरु विना धर्म वेइन्द्रीन कर घटे है। तातैं हे भाई हे पुत्र हे वक्ष धर्मका सेवन निरंतर कर धर्म ही संसामें सार है धर्म समान और हितू नाहीं। अरु मित्र नाहीं तातैं सीघ्र ही पाप कार्यने छोड़ अपना हित वांक्षित पुरुषाने धर्म ही सेवनो ढील न करनो घनी बातकर कांई। ऐसे गुरु उत्तर दिया सुन्दर उपदेस कर आसीर्वाद दिया यह सुभावकूं ज्ञाता जानें हैं। इति स्वर्ग वर्नन संपूर्न। ॐ नमः सिद्धेभ्यः। आगे अपने इष्टदेवको नमस्कार कर समाधि मरनका स्वरूप वर्नन करिये है। सो हे भव्य तू सुन। सोई अब लक्षन वर्नन करिये है। सो समाधि नाम कषायका सांत परनामका है। ऐसा याका स्वरूप जानना आगे और विशेष कहिये है। जे सम्यकज्ञानी पुरुष हैं ताका यह सहज सुभाव है। जो समाधि मरन ही कूं चाहे हैं ऐसी निरंतर सदैव भावना वर्ते पाछे मरन समय निकट आवे तब ऐसा सावधान होय मानूं सूता जो सिंह ताके तांई कोई पुरुष ललकार ऐसा कहे है। सिंह अपना पुरषार्थ सम्हार थां पर

वैरीनकी फौज आई, सो गुफा माह सूं निकसो, जेते वैरीनका वृंद कहिये समूह केतीक दूर है ते ते तुम सावधान होय वैरीनकूं जीतो महंत पुरुषांकी यही रीति है। जो वैरी आया कायर न होय सो सिंह ततक्षन ही उठतो हूवो अरु ऐसो गुंजारो मानो असाड़ माहमें मेघ गाजो सो ऐसा सिंहका शब्द सुन वैरीनकी फौजका हस्ती घोड़ा पुरुष सबही कंपायमान भया वा सिंहका जीतवाने असमर्थ भया हस्तीका समूह आगे पांव न धारता हूआ कैसा हस्ती डरया मानूं याका हृदामें सिंहका आकार पैठ गया है। सो हस्तीनका धीरज न रहा क्षिन क्षिन मोने हार करे तापरि सिंहका पराक्रम सहा न जाय। तैसे ही सम्यक ज्ञानी पुरुष सोई भया सिंह ताके अष्ट कर्महो वरी सो मरन समय कर्म जीत वाका उद्यम विशेष करे वह सम्यकज्ञानी सिंह समान सावधान होय कायरपनाने दूर ही ते छोड़े बहुरि कैसा है सम्यक् दृष्टि पुरुष ताका हृदामें आत्मास्वरूप दैदीपमान प्रगट प्रत्यक्ष भास्या है कैसा भास्या है ज्ञान ज्योतिने लिया आनन्द रस भर तो ऐसा साक्षात पुरुषाकार अमूर्तीक चैतन्य धातुको पिन्ड अनन्त गुनकर पूर्ण ऐसा चैतन्य देव आपको जाने ताका अतिशय कर पर द्रव्यसूं अंसमात्र भी रंजित कहिये रागी न होय है। क्यों न होय है। अपना निज स्वरूप तो वीतराग ज्ञाता दृष्टा परद्रव्य सों भिन्न स्वास्वता अविनासीक जान्या है। अरु परद्रव्यका गलन पूर्व छिन भंगुर असाता अपना स्वभाव सूं भिन्न भलीभांति नीके जान्या है। तातैं सम्यक ज्ञानी मरनतें कैसें डरै अरु वह ज्ञानी पुरुष मरन समय ऐसा विचारे अब इस शरीरका आयु तुक्ष रहा है। ऐ चिन्ह मोने प्रत्यक्ष भासे। तातैं

अब सावधान होना उचित है। ढील करना उचित नाहीं जैसे सुभट पुरुष रनभेरी सुन्या पीछें वैरीन ऊपर जावामें ढील छिन मात्र भीत करे अरु घना रोस चढ़ आवे ततछिन जाय झुके अरु वैरीका समूहने जाय जीते ऐसा जाका चित्त अभिलाषी है त्योंही हमारे भी अभिप्राय कालका जीतवाको है। सो हे कुटुम्बके लोक तुम सुनो अरु देखो ये पुद्गल पर्यायका चरित्र जो देखता देखता ही उत्पन्न भया अरु देखता देखता ही अब विलय जायगा सो में तो पहिले ही याका विनासीक सुभाव जान्या था सोई अब औसर पाय विलय जासी अब याका आयु तुक्ष रहा है तामें भी समय समय गलता जाय है। सो में ज्ञाता दृष्टी भया देखों हों। में याका पड़ोसी हों सो में अब देखो या शरीरकी आयु कैसे पूर्न होय। अरु कैसे नस जाय सो या हेतु कर रहा हों। अरु जाकर तमासगीर हीं याका चरित्र देखों हों। जो असंख्यात कुलकी परमानू एकठी होय सरीर निपज्या है। अरु मेरा स्वरूप चैतन्य स्वभाव सास्वता अविनासी है। ताकी अद्भुत महिमां सो मैं कौनकूं कहूं बहुरि देखो इस पुद्गल पर्यायका महातम जो अनंत पुद्गल परमानूका एकसा परनमन ऐते दिन रहा। सो यह बड़ा विसमय है सो अब यह पुद्गल परमानू भिन्य भिन्य होंय और रूप परनमेंगे सो जाका आश्चर्य नाहीं। जैसे लाखों मनुष्य एकठे होय मेला नाम पर्यायकू बनावे अरु केताइक काल पर्यंत मेला नाम पर्याय बन्या रहे तो याका आश्चर्य गिनिये ऐता दिन ताईं लाख्यां मनुष्यनका परिनाम एकसा रहा। ऐसा विचार देखनेवाले

पुरुषनकूं अचरज उपजै है। पीछें मेलाके पुरुष जुदा देसने गमन कर जांय तब मेला नास होय सो ऐते मनुष्यनका अन्य अन्य परनाम छां ऐता काल एकसा रहा सो अचरज है। त्यों ही यह शरीर और भांति परनवे है। सो या सुभाव ही है थिर कैसे रहे। अब यह शरीरका राखवाने कोई समर्थ नाहीं। सो क्यों समर्थ नाहीं सोई कहिये है। जेते त्रिलोकमें पदार्थ है सो अपना स्वभावरूप परनमें हैं। कोई किसीकूं परनमावे नाहीं। अरु कोई किसीका भोक्ता नाहीं आप ही आवे आप ही जाय आप ही विछुरे आप ही गले आप ही पूरे तो मैं इसका कर्ता भोगता कैसे मेरा राख्या शरीर कैसे रहे अरु मेरा दूर कहा यह शरीर दूर कैसे होय। मेरा कर्तव्य कछू है नांहीं आगे झूठा ही कर्तव्य माने छा मैं तो अनादिकालका खेद खिन्न आकुल व्याकुल होय महां दुख पावूं था सो यह बात न्याय ही है। जाका कर्तव्य तो क्यों चले नाहीं। वे परद्रव्यका कर्ता होय परद्रव्यकूं आपना स्वभावके अनुसार परनमामें ते खेद पावे ही पावे तातैं मैं तो एक ज्ञायक स्वभाव ही का कर्ता अरु भोक्ता अरु ताहीकूं वहु अरु ताहीको अनुभवो छूं अब जा शरीरके जाते मेरा किछू बिगार नाहीं अरु शरीरके रहे मेरा सुधार नाही यह तो परद्रव्य जैसा काठ पाखानमें भेद नाहीं शरीरमें यह जानपनेका चमत्कार है सो मेरा गुण शरीरका गुन नाहीं शरीर तो प्रत्यक्ष मुरदा है। जो मैं शरीरसूं निकसा सो याकों मुर्दा जान दग्ध किया मेरे ईके मिलाप तें जाका जगत आदर करे हैं। जगतके ताईं ऐसी खबर नाहीं जो आत्मा न्यारा है अरु शरीर न्यारा है। तातैं जगत भ्रम कर ई शरीरकूं

अपना जान ममत्व करे हैं। अरु जाके जाते बहुत झूरें हैं अरु विशेष शोक करे हैं कांई शोक करे हैं हाय हाय मारा पुत्र तूं कहां गया हाय हाय म्हारा खाविंद तू कहां गया हाय हाय पुत्री तू कहां गई हाय हाय माता तू कहां गई हाय हाय पिता तू कहां गया हाय हाय द्रष्ट भ्राता तू कहां गया इत्यादि वे अज्ञानी पुरुष ऐसा विचार करे हैं अहो कौनका पुत्र कौनकी पुत्री कौनका खावंद कौनकी स्त्री कौनकी माता कौनका पिता कौनकी हवेली कौनका मंदिर कौनका धन कौनका माल कौनका आभरन कौनका वस्त्र इत्यादि सर्व सामग्री झूठी है। ऐ सामग्री किछू वस्तु नाहीं जैसे सुवा को राज वा इन्द्रजालका तमासा जैसे भूतकी माया जैसे आकास विषें वादरानकी सोभा ये सामग्री देखते तो नीकी लागे परन्तु वस्तु स्वभाव विचार तांकू भी नाहीं। जो वस्तु होती तो थिर होती नासने प्राप्त न होती तासूं मैं ऐसा जान सर्व त्रैलोकमें पुद्गलकी जेती ईक पर्याय है। ताका ममत्वने छोड़ू हूं तैसे ही सरीरका ममत्व छोड़ू हूं जा सरीरके जाते मेरा परनाममें अंस मात्र भी खेद नाहीं। ऐ सरीर दसा सामग्री है। सो चाहो ज्यों परनमो मेरा कछू भी परोजन नाहीं भावे क्षीजो भावे भीजो भावे परलेने प्राप्त होय भावे एकठां आन मिलो भावे जाती रहो हमारी क्यों भी मतलब नाहीं। अहो देखो मोहका महातम परतक्ष यह सामग्री पर वस्तु हैं। अरु तामें विनासीक है। अरु पर भवमें दुखदाई है। तो भी यह संसारी जीव अपना मान राख्या चाहे है। सो यह चरित्र मैं ज्ञाता भया देखूं हूं मेरा तो क्षोक्षा ज्ञान स्वभाव है ताह अवलोकों हों। अरु कालके आगमन सूं नाहीं

डरूं हूं। काल तो या शरीरका ग्राहक है मेरा ग्राहक नाहीं। जैसे माखी दौड़ दौड़ मीठी वस्तुपै बैठे अरु अगनिमें कदाच बैठे नाहीं त्योंही यह काल दौड़ दौड़ शरीरकूं ग्रसे है अरु मोसूं दूर भागे मैं तो अनादि कालका अविनासी चैतन्य देव त्रलोक कर पूज्य ऐसा पदार्थ हूं। तापर कालका जोर नाहीं सो अब कौन मरे कोन जीवे। कौन मरनका भय करे म्हांने तो मरन दीसता नाहीं। मरे छै सो पहिले ही मुवा क्षा अरु जीवे छै सो पहले ही जीवे क्षा जीवे सो मरे नाहीं मरे सो जीवे नाहीं मोह दृष्टि कर अन्यथा भासे छै अब मेरे मोह कर्म क्षय भया सो जैसा ही वस्तुका स्वभाव था तैसा ही मोकों प्रतिभास्या ताके जामन मरन सुख दुःख देख्या नाहीं। तो मैं अब काहेका सोच करों मैं तो एक चैतन्य मूर्ति सास्वता बन्या हूं। ताका अवलोकन करना, मरनादिकका दुख कैसे व्यापे बहुरि कैसा हूं मैं ज्ञानानंद रस कर पूर्ण भरा हूं अरु सुद्धोपयोगी हुवा ज्ञान रसने आरू चाहूं वा ज्ञान अंजुली कर अमृतने पीवूं हूं यह सुधामृत मेरा स्वभाव थकी उत्पन्न भया है। तातैं स्वाधीन है पराधीन नाहीं बहुरि कैसा हू मैं अपना निज स्वभावने स्थित हो अडौल हूं अकंप हूं बहुरि कैसा हूं मैं स्वरस कर निरभर कहिये अतिशय कर भरचा हूं अरु ज्वलित कहिये दैदीपमान ज्ञान जोतकर प्रगट अपने हीं निज स्वभाव मैं तिष्टूं हूं देखो अद्भुत ई चैयन्य स्वरूपकी महिमा ताका ज्ञान स्वभावमें समस्त ज्ञेय पदार्थ स्वयमेव झलके हैं। पर ज्ञेयरूप नाहीं परनवे हैं ताके जानता विकल्प कास्ता अंस भी न होय है। तातैं निर्विकल्प अभोगति अतेन्द्री अनोपम

बाधारहित अखंडित सुख उपजे है । अरु परवस्तु कर संसारमें दुख ही है । सुखका आभास अज्ञानी जीवांकूं भासे है । बहुरि कैसा हूं मैं ज्ञानादि गुण कर पूर्न भरया हूं । सो ज्ञान अनन्त गुनकी खान है । बहुरि कैसा है मेरा चैतन्य स्वरूप जहां तहां चैतन्य सर्वांग व्यापी है । जैसे लूनकी डलीका पिन्डमें सर्वांग खार रस व्याप्त है । अथवा जैसे सक्कराकी डलीका पिन्डमें सर्वांग मीठा कहिए अमृत रस व्याप्त रहा है । वे सक्कराकी डली एक क्षोक्षा ज्ञानका पुंज है। मोमें सर्वांग ज्ञान ही ज्ञान है विविहारमें शरीर प्रमाण हूं । निश्चे नयकर विचार सेती तीन लोक प्रमान मेरा आकार है । अवगाहन सक्ति कर आकास समान हूं । एक प्रदेशमें असंख्यात प्रदेश भिन्न भिन्न तिष्ठें हैं। सर्वज्ञ देव जुदा जुदा देखे हैं जीवमें संकोच विस्तार सक्ति है । बहुरि कैसा है मेरा निज स्वरूप अनन्त आत्मीक सुखका भोक्ता है । एक सुख ही की मूर्ति हों चैतन्य पुरुषाकार हों । जैसे माटीका सांचामें एक सुद्ध रूपामय धातुका बिम्ब निर्मापिये है। तैसे ही आत्माका स्वभाव शरीरमें जानना माटीका सांचा काल पाई गल जाय वर-जाय फूट जाय तब बिम्ब ज्योंका त्यों आवर्न रहित प्रत्यक्ष दीसे सांचेका नास होते बिम्बका नास नाहीं वस्तु पहले दो ही थीं एकका नास होते दूजीका नास कैसे होय त्योंहीं काल पाइ शरीर गले तो गलो मेरे स्वभावका विनास है नाहीं । मैं काहेका सोच करूं । बहुरि कैसा है चैतन्य स्वरूप आकासवत निर्मल है । आकासमें कोई जातका विकार नाहीं एक स्वक्ष निर्मलताका पिण्ड है । अरु कोई आकाशने खड़ग कर क्षेदा भेदा चाहे अरु अग्नकर

घाल्या चाहे पानीमें घोल्या चाहे तो आकास कैसे क्षेद्या भेदा जाय अरु कैसे जले गले कदाच आकासका नास नाहीं बहुरि कोई आकास केतांई पकड़ा चाहे तोडा चाहे सो कैसे तोड़ा पकड़ा जाय त्योंही मैं आकाशवत अमूर्तीक निर्मल निराकार स्वच्छताका पिण्ड हों। मेरा नास निसी काल कोई प्रकार होय नाहीं। यह नेम है जो आकासका नास होय तो मेरा भी नास होय ऐसा जानना पन आकासमें अरु मेरे स्वभावमें एक विशेष है। आकास तो जड़ अमूर्तीक है अरु मैं चैतन्य अमूर्तीक पदार्थ हों। जो मैं चैतन्य था तो ऐसा विचार भया सो यह आकास जड़ है अरु मैं चैतन्य हूं मेरे विद्यमान यह जानपना दीसे है। आकासमें दीसे नाहीं यह निसंदेह है बहुरि मैं कैसा हूं जैसा निर्मल दर्पन होय। वाका निर्मल शक्ति स्वयमेव ही घट पटादि पदार्थ आन झलकें हैं। तैसे ही मैं एक स्वच्छ सक्ति प्रगट हों मेरा निर्मल ज्ञानमय समस्त ज्ञेय पदार्थ स्वयमेव झलके है। ऐसी स्वक्ष सक्तिसू तदात्म व्याप्ति कर स्वभावमें तिष्ठुं हूं सर्वांग स्वक्षता भर रही है अरु ज्ञेय पदार्थ न्यारा है। सो तुक्षताका यह स्वभाव ही है। जो सर्वतें न्यारा रहे उस विषें सकल पदार्थ प्रतिबिम्बत हैं। बहुरि कैसा हूं मैं अत्यंत अतिशय कर निर्मल साक्षात प्रगट ज्ञानका पुंज हूं अरु अत्यंत शांति रस कर पूर्न भरया हूं। अरु भेद निराकुल कर व्याप्त हूं। बहुरि कैसा हूं मैं चैतन्य स्वरूप अपनी अनंत महिमा कर व्राजमान हूं कोईका सहाय नाहीं चाहूं हूं। ऐसा स्वभावने धरूं हूं स्वयंभू हूं अखंड ज्ञान मूरत पर द्रव्य सू भिन्य सास्वता अविनासी परम देव हूं।

और ई उपरांत उत्कृष्ट देव कौनकूं मानिये। जो त्रिलोक त्रिकाल विषें होय तो मानिये बहुरि कैसा है यह ज्ञान स्वरूप अपने स्वभावकूं छोड़ अन्य रूप नाहीं परनवे है। निज स्वभावकी मर्यादा नाहीं तजै है जैसे समुद्र जलके समूह कर पूर्ण भरया है। पन स्वभावकं छोड़ और ठौर गमन करे नाहीं। अपनी तरंगावली जो लहर ता कर अपने स्वभाव ही में भ्रमन करे है त्यों ही यह ज्ञान समुद्र सुद्ध परनत तरंगावली सहित अपने सहज स्वभावमें भ्रमन करे है। ऐसा अभूत महिमा कर व्राजमान मेरा स्वरूप परम देव ई शरीर सूं न्यारा अनादि कालका तिष्टे है। मेरे अरु ई शरीरके पड़ोसी कैसा संजोग है। मेरा स्वभाव अन्य प्रकार याका स्वभाव अन्य प्रकार याका परनमन अन्य प्रकार सो अब इस शरीर गलन स्वभाव रूप परनवे है। तो मैं काहेका सोक करूं अरु काहेका दुख करूं मैं तो तमासगीर पड़ोसी हूवा तिष्टों हों इस शरीर सों राग द्वेष नाहीं सो जगतमें अरु परलोकमें महां दुःखदाई है। यह रागद्वेष एक मोह हीने उपजे है जाका मोह वि य गया ताका राग द्वेष भी विलय गया। मोह कर पर द्रव्य विषें अहंकार ममकार उपजे है। सो ये द्रव्य हैं सो ही मैं हूं ऐसा तो अहंकार अरु ये द्रव्य मेरा है ऐसा ममकार उपजे वे सामग्री चाहे तो मिले नाहीं। अरु दूर किये जाय नाहीं। तब यह आत्मा खेद खिन्न होय है अरु जे सर्व सामग्री पर जानें तो काहेका विकलप उपजे तातैं मेरा मोह पहले विलै गया अरु पहिले ही सरीरादिक सामग्री विरानी जानी हैं। तो अब भी मेरे ई शरीरके जाते काहेका विकल्प उपजै। कदाच न उपजे विकलप उपजानेवाला मोह ताका

नाश किया तासूं मैं निर्विकल्प आनन्दमय जिन स्वरूपने वारंवार संभालता वा आदि करता स्वभावमें तिष्ठूं हूं। यहां कोई कहे यह शरीर तुमारा तो नाहीं। परन्तु याके निमित्त कर इही मनुष्य पर्यायमें शुद्धोपयोगका सा धन भली भांति होय तासूं याका यह उपगार जान्याकूं पोषना उचित है। यामें टोटो नाहीं ताकूं कहिये है हे भाई तू ऐसा कहा सो या बात हम भी जाने हैं मनुष्य पर्याय विषें सुद्धोपयोगका साधन अरु जानका साधन अरु वैरागकी बधवारी इत्यादि अनेक गुनाकी प्राप्ति होय है ऐसा अन्य पर्यायमें दुर्लभ है परन्तु अपना संयम गुन रहा अरु शरीर है तो भला ही है। म्हांके कोई जा शरीर सूं वैर नाहीं अरु न रहे छे तो अपना संयमादि निर्विघ्नपने राखना अरु शरीरका ममत्व अवश्य छोड़ना शरीरके वास्ते संयमादि गुन कदाच खोवना नाहीं। जैसे कोई पुरुष रतनका लोभी परदेश जो रतन दीपमें फूसकी झोंपड़ी बनावे अरु उस झोंपड़ीमें रतन ल्याय ल्याय एकटा करे अरु जो उस झोंपड़ीके आग लागे तो वह विचक्षन पुरुष ऐसा विचार करे जो कोई इलाज कर अग्नि बुझावनी अरु रतन सहित झोंपड़ी-कू राखनी जो यह झोंपड़ी रहसी तो फेर या झोंपड़ीके आसरे फेर भी रतन भेला कर सूं। सो वह पुरुष झोंपड़ी बुझती जाने तो रतन राख बुझावे अरु कोई कारन ऐसा देखे जो रतन गया झोपड़ी रहे तो कदाच भी झोंपड़ी राखनेका उपाय न करे जो झोंपड़ीने वरवा देय अरु अपना सर्व रतन ले घर उठ आवे पांछे एक दोय रतनने बेंच अनेक तरहकी विभूतने भोगवे अनेक प्रकारके सुवर्न रूपामई मंदिर कराय महल वा हवेली वा-

गादि बनवावै पांछे वामें थितकर रागरंग सुख वोई संयुक्त आनन्द क्रीड़ा करे अरु निर्भे भया अत्यंत सुखसूं तिष्टे सोई भेद वा ज्ञानी पुरुष है ते शरीरके रहने वास्ते। संयमादि गुननमें अतीचार भी लगावे नाहीं ऐसा विचारे संयमादि गुन रहसी तामें विदेह क्षेत्रामें जाय औतार लेस्यां अरु जन्म जन्मका संचित पाप ताका अतिशय कर नास करस्या अरु अनेक प्रकारके संयम ताका ग्रहन करस्यूं अरु श्री तीर्थंकर केवली भगवान ताका चरनार विद विषें क्षा एक सम्यक्तका ग्रहण करस्यूं अरु अनेक प्रकारके मन वंक्षित प्रश्न करस्यूं अरु तिनके अनेक प्रकारके यथार्थ तत्वाको स्वरूप जानसूं। अरु राग द्वेष संसारका कारन ताकूं शीघ्रपने अतिशय कर जरा मूलसों नास करसूं। अरु परम दयालु आनन्दमय केवल लक्ष्मी कर संयुक्त ऐसा जिनेन्द्र देव ताका स्वरूपके देख देख दरसनरूपी अमृत ताका अतिशय कर आचमन करस्यूं। ताका अरचन कर हमारा कर्म कलंक धोया जासी तब मैं पवित्र होसी ताका अतिशय कर शुद्धोपयोग अत्यंत निर्मल होसी तब निजरूपने अत्यंत लागसी तब क्षपक श्रेनी चढ़वाने सन्मुख होसी पीछे कर्म सत्रूसों रारकर भव भवके कर्म जड़ मूरसों नास कर केवल ज्ञान उपवासूं। पीछे एक समयमें समस्त लोकालोकके त्रिकाल संबंधी समस्त पदार्थ देखस्यूं। पीछे ऐसा ही स्वभाव सास्वता रहसी ऐसी लक्ष्मीका स्वामी है तो ई शरीर सूं ममत्व कैसे रहे। सम्यक ज्ञानी पुरुष ऐसा विचार करता तिष्टे है। हमारे दोनों ही तरह आनन्द है। अब जो शरीर रहसी तो फेर सुद्धो-

पयोगने आराधसी सो हमारे कोई प्रकारसे सुद्धोपयोगका सेवनमें कमी नाहीं तो हमरे परनामोंमें संकलेसता कोईकी न उपजे अरु म्हारा परनाम सुद्धस्वरूपसूं अत्यंत आसक्त ताकूं छुड़ावने ब्रह्मा विस्नु महेश इन्द्र धरनेन्द्र आदि कोई चलावाने समर्थ नाहीं। एक मोह कर्म समर्थ था त्यानें तो मैं पहिलेही हत्या सो अब मेरे तो त्रैलोक्यमें कोई वैरी रहो नाहीं। अरे वैरी नाहीं तो त्रिलोक त्रिकालमें दुख नाहीं। तोहे कुटुम्बके लोग हो मेरे इस मरनका भय कैसे होय तासों मैं आज सर्व प्रकार निर्भै भया हूं थें या बात नीके कर जानों अरु जामें संदेह मत जानों ऐसे सुद्धोपयोगी पुरुष शरीरकी स्थित पूरन जानें। तब ऐसा विचार कर आनंदमें रहें हैं। कोई तरहकी आकुलता उपजावे नाहीं। आकुलता है सोई संसारका बीज है। इस ही नीति कर संसारकी स्थित है। आकुलता कर अनेक कालका संच्या हुवा संजमादि गुन अग्निमें रूई भस्म होय तैसे भस्म होय है तातैं सम्यकदृष्टि पुरुष हैं ताके कोई प्रकार आकुलता होय नाहीं निश्चे एक स्वरूप हीका वारंवार विचार करना वाहीकूं वारंवार देखना वाहीके गुणकूं चिंतवन करना वाहीकी पर्यायका विचार करना अरु वाहीका सुमरन करना वाही विषें थिर रहना कदाच सुद्ध स्वरूप सूं उपजोग चले तो ऐसा विचार करे यह संसार अनित्य है। ई संसारमें कोईका सरन नाहीं। जो सार होता तो तीर्थंकर देव क्यों छोड़ता तासूं मेरे निश्चे तो हमारो स्वरूप ही सरन है। बाह्य परमेष्ठी जिनवानी वा रत्नत्रय धर्म सरन है। अरु कदाच स्वप्न मात्र भी वा भूले विसरे हमारे और कोई

सरन नाहीं। हमारे यह नेम है ऐसा विचार कर फेर स्वरूपमें उपजोग लगावे फेर वहांसू उपयोग चले तो अरहन्त सिद्ध ताका द्रव्य गुन पर्याय विचारे तन वाका द्रव्य गुन विचारता उपयोग निर्मल होय तब फेर आपना स्वरूपमें लगावे अरु आपना स्वरूप सारखा अरहंत सिद्ध जाने सो कैसे द्रव्यत्व स्वभावमें फेर नाहीं है। अरु पर्याय स्वभाव विषें फेर है। अरु मैं हूं सो द्रव्यत्व स्वभावका ग्राहक हूं तासूं अरहंतका ध्यान करता आत्माका ध्यान भली भांति सधे अरहंतका स्वरूपमें अरु आत्म स्वरूपमें फेर नाहीं भावे तो अरहन्तका ध्यान करो भावे आत्माने ध्यावो ऐसा विचार करे तो सम्यकदृष्टि पुरुष सावधान हूवो स्वभावमें तिष्ठे हैं। आगे अब काईं बिचार करें अरु कैसे कुटुम्ब परवारादिकसों ममत्व छुड़ावें सोई कहिये है। अहो ई शरीरके माता तुम नीके कर जानों यह शरीर एते दिन तुम्हारा क्षा अब तुम्हारा नाहीं अब जाका आयु पूर्न भया सो कौनका राख्या रहे कभी न रहे याकी येही स्थित थी सो अब जासों ममत्व छोड़ो अब जासों ममत्व करवा कर काईं अब जासों प्रीति करवो दुखका कारन छै अरु शरीर तो इन्द्रादिक देवांको भी बिनसे छै जब मरन समय आवे तब इन्द्रादिक देव जुलक जुलक मुख चोघताई रहे सर्व देवाका समूह देखता कालका किंकर ले जाई ऐसो न सुनो जो कोई कालसूं बचायो यो काल सर्वभक्षी छै अरु जे अज्ञान ताकर कालके वस रहसी त्याकी याही गति होसी सो थें मोहके वसकर संसारको झूठो चरित्र देखो नाहीं। अब थें मोहका वसकर विनासीक शरीरसूं ममत्व करो छो। अरु जाने एक चाहो सो

पैलाको शरीर तो राख वोई दूर रही थे थांको शरीर तो पहिले राखो पाछे और का राखवाको उपाय कीजो था कीया भरम बुद्धि छे सो वृथा दुख हीके अर्थ छै थांने प्रत्यक्ष दीसे नाहीं। आज पहले ही लेही संसारमें कालसों कोई बचो अरु आगे बचसी हाय हाय देखो आश्चर्यकी बात थे निर्भै भया तिष्ठो हो सो थांके कौन अज्ञानपनो छै अरु थांको कोई होनहार छैं तासूंमें थाने पूछू हूं थांने आपापरकी किछू खबर छै जो मैं कौन छा अरु किठासूं आया छा अरु पर्याय पूरी कर कहां जासी अरु पुत्रादिकसूं प्रीत करे छा सो कौन छा ऐते दिन पुत्र किठे छो अरु म्हांके पुत्रकी क्षति हुई ताकर याका वियोगको म्हाने सोक उपजो, तासूं अब थें सावधान होय विचार करो भूममें मत परो थैं अपनो कार्य बिचारो ताका सुख पावो परको कार्य अकार्य पेलाके हाथ है। थारों करतव्य क्यों भी नाहीं थें वृथा ही खेद खिन्न क्यो भया अरु थें अपनो आत्मा मोह कर संसारमें क्यों डूब्यो है संसार विषें नरकादिक दुख सब थेंने ही सहना पडेला जाका बदले किछू और न होसी जिनधर्मको ऐसो उपदेश है नाहीं। जो पाप करे कोई और भोगवे कोई और तासों मोने अपूठी थांकी दया आवे है। सो थें हमारो उपदेश ग्रहन करो थांने महा दुखदाई होय लो कैसे दुखदाई है। सो कहिये है म्हे तो यथार्थ जिन धर्मको स्वरूप जानो छो तीसों थांने भी मोह दुख देय छे अरु मैं मोहने जिन धर्मका प्रताप कर सुलभपने जीतो सो यह जिन धर्मका अतिशय जानो तासों थाने भी जिन धर्मको स्वरूप विचारवो कार्यकारी छै। देखो थें प्रतक्ष ज्ञाता दृष्टा छो अरु ये शरीरादि

परवस्तु छे आपना स्वभावरूप स्वयमेव परनवे छे काहूका राख्या है नाहीं भोला जीव भरम खाय छे तासों थें भरम बुद्धि छोड़ो अरु आपा परकी ठीक एकता करो। तासों अपनो हित सधे सोई करो। विचक्षन पुरुषांकी याही रीति छे एक आपना हितने ही चाहें। विना प्रयोजन एक पैंड़ भी धरे नाहीं अरु थें मोह सों ममत्व जे तो घनो कररयो ते तो घनो दुख होसी जो जीव अनन्तवार अनन्त पर्यायमें न्यारा न्यारा माता पिता पाया, सो अब वे कहां गया अरु अनन्तवार ई जीवकी स्त्री पुत्र पुत्रीका संजोग भया सो वे कहां गया अरु पर्याय पर्यायमें भ्राताकुं आप माने अरु पर्याय सूं तनमय होय रहो या जाने जो विनासीक पर्याय स्वभाव छे। अरु म्हाको स्वरूप सास्वतो अविनासी छै ऐसो विचार उपजे नाहीं सो थांने दूषन काईं नाहीं यो मोहको महांतम छे परतक्ष सांची वस्तु झूठी दीसे अरु झूठी वस्तुने साची देखे अरु जाको मोह गल गयो ऐसो भेद वेज्ञानी पुरुष छे। तेई पर्यायसूं कैसे आयो माने अरु कैसे याकूं सत्य जाने अरु कौनको चलायो चले कदाच भी न चले तासूं मेरे ज्ञान यथार्थ भया है अरु आपा पर ठीकता भई सो मो ठगवाने कौन समर्थ है। अनादि काल सो पर्याय पर्यायमें घनों ही ठगायो ताहीतें मव भवमें जन्म मरनका दुःख सहा तासूं थें अब नीका कर जानो थांको अरु म्हांको ऐते दिनको संबंध छो। सो अब पूरो हूवो सो थानें भी अब आतम काज करवों जोग छे जो मोह करनो उचित नाहीं तातैं निज स्वरूप अपनो सास्वतो छे। त्याने सम्हालो तामें कोई तरहको खेद नाहीं अपने ही घटमें महां अमौलिक निधि है।

त्यांने जाने जन्म जन्मका दुख जाय त्यों जेई संसारमें दुख छे तेता आप्य जान्या तांसू एक ज्ञानने ही ध्यावो ज्ञानमई ही आपनो निज स्वभाव छे ताकूं पाया ही महां सुख छे। ताके पाया विन महां दुखी छे। तासूं यो परतक्ष देखने जानने हारा ज्ञायक पुरुष शरीरसूं भिन्न ऐसो अपनो स्वभाव ताने छोड़ और किस वस्तुसूं प्रीत उपजे जैसे सोला स्वर्गको कल्पवासी देव कौतुक वास्ते मध्य लोकमें आय एक रंक पुरुषको भेष धर रहो फेर वे रंक कैसी क्रिया करवां लागो काई क्रिया करवां लागो कभी तो काठका भार माथें धर बजारमें वेचवां जाय अरु कभी माटीको कथोरा माथे मेल स्त्रियां कने रोटी मागवा जाय। कभी मार्गमें दीनताका वचन कह रोवे। कभी राजापे जाय या भांति कहे महाराज आ जीवका कर महां दुखी छूं हमारी प्रत पालना करो कभी दांतरो ले घास काटवां जाय कभी भायाकर वृथा ही रोवे अरु ऐसा वचन कहे वाहरे वाहरे अब में कांई करूं हमारा धन चोर ले गया मैं नीठ नीठ कमाइ कमाइ भेले कियो छो सो आज जातो रहो सो अब हूं कैसे काल पूरो करस्यों अरु कभी नग्रमें भाग न पड़े तब वे पुरुष एक लड़काकूं काधे चढ़ावे अरु लड़कीकी आंगरी पकरें अरु स्त्रीकूं आगें कर ताका माथा पर क्षाजलो रांधवाकी हांड़ी झारवांकी बुहारि आदि सामग्री टोकरो भर दीयो अरु आपने गोदड़ा गुदड़ीकी पोट माथा लीनी। पाछे आधी रात नग्र सूं निकस्या पाछे मार्गमें कोई वेढ़ो ईतें पूछता हूवा रे भाई तू कठें चाल्या तब पुरुष कहे ई नग्र विषें वैरियोंकी फौज आई सो मैं आपनो धन लेय भागूं छूं

जासों और नगर जाय गुजरान करसूं इत्यादि नाना भांति चरित्र कर तो वह कल्पवासी देव आपना सोलह स्वर्गकी विभूति ताने छिन मात्र भी न विसारे । वह विभूतका अवलोकन कर महां सुखी हूवां विचरैं है । वे रंक पुरुषकी पर्यायमें भई जे नाना प्रकारकी विवस्था ता विषें कदाच अहंकार ममकार करे नाहीं । सो वे सोलवें स्वर्गकी देवांगना आदि विभूत अरु आपना देवो पुनीत सुख ता विषें नमस्कार आवे है । सोई में सिद्ध समान आत्म द्रव्य पर्यायमें नाना प्रकारकी चेष्टा करता थका अपनी मोक्ष लक्ष्मीने नाहीं विसरूं छूं । तो हो लोक हो मैं काहे । भय करो अब ऐठां स्त्री सूं ममत्व छुड़ावें हैं, अहो शरीरकी स्त्री तू ई शरीरसों ममत्व छोड़ तेरा अरु इस शरीरका ऐता ही संयोग था सो अब पूरा हुवा तेरी गर्ज ई शरीरसूं अवे सरे नाईं तासूं तू अब मोह छोड़ बिना प्रयोजन अब खेद मत करे, जो थांरा राखया यो शरीर रहे तो राख में बरजों नाहीं विना प्रयोजन खेद क्यों करूं अरु जो तूं विचार कर देखे तो तू भी आत्मा है । अरु मैं भी आत्मा हों स्त्री पुरुष पर्याय सो पुद्गली कहै तासूं कैसी प्रीति । ये जड़ आत्मा चैतन्य ऊट बैल कैसा जोड़ा सो यह संयोग कैसे बनें । तेरा पर्याय है सो भी तू चंचल जानता सूं आपना हित क्यों न विचारे थें ऐते दिन भोग किया ताकर काई सिद्ध हुई अरु अब सिद्ध काईं होनी छे वृथा हीं भोगं कर आत्माने संसारमें डुबोयो जो मरन समय जानों नाहीं । अर मुवां पीछे तीन लोककी संपदा झूठी तासूं हमारी पर्यायको सोक करतो जोग्य नाहीं । नो तूं प्यारी म्हाकी छे तो म्हाने धर्म उपदेश द्यो या धर्म साधवाकी

विरिया छे। अरु जो तू मतलबकी संगी छे तो थांरी तू जानें मैं थांरा डिगाया क्यूं डिगशी म्हें तो थांरी दया कर तूने उपदेश दियो छे माने तो मान न मानें तो थांरी होनहार होसी सोही म्हारो तो कछू मतलब नाहीं। तासूं अब तू म्हारा नषासूं जावो अपना परनाम शांत राख आकुलता मत करे। आकुलता हीं संसारका कारन छे ऐसे स्त्री समझाकर सीख दीनी अब निज कुटुम्ब परवारको बुलाय समझावे अहो कुटुम्ब परवारके अब ई शरीरकी आयु तुच्छ रही है। अब म्हारे परलोक नजीक छे तासूं अब में थाने कहा छा ते म्हांने कोई बातका राग करो मति थांके अरु म्हांके चार दिनका मिलाप छे। जादा छे नाहीं। जैसे सराईके विषें राहगीर रात्रि भेला तिष्टे पछे वीछुरता दुख करे यह कौन सयान तासूं छिमा भाव धारते सघला आनन्द रूप तिष्टो अनुक्रम थकी सारानकी यही रीति होनी छे। सो यह संसारको चरित्र जान ऐसा बुद्धिवान कौन है सो जासूं प्रीति करै। ऐसे कुटुम्ब परवारकूं समझाय सीख दीनी अब पुत्रकूं बुलाय समझावे है। अहो पुत्र ते स्याना छै म्हासों कोई तरहको मोह कीजो मत अरु श्रीजिनेश्वरको भाषो धर्मनीके पालजो। थाने धर्म ही सुखकारी होयगो माता पिता सुखकारी नाहीं। अरु कोई मातापिताने सुखका कर्त्ता माने छे सो यह भी मोहका महातम छे। कोई किसीका कर्ता नाहीं कोई किसीका भोक्ता नाहीं सर्व ही पदार्थ अपना अपना स्वभावका भोगता करता छे। तासूं अब म्हें थांने कहा छा जो थें विवहार मात्र हमारी आज्ञा मानो छो तो मैं कहो सो करों प्रथम थें देव अरु गुरु धर्मकी अब गाढ़ी

प्रतीत करो। अरु साधर्मीनसूं मित्रता करो अरु दान तप शील संयम इन सों अनुराग करो अरु स्वपर भेद विज्ञान ताका उपाय करो। अरु संसारी पुरुषासूं प्रीत कहिये ममत्व भाव ताकूं छोड़ो। अरु सरागी जीवाकी संगति छोड़ो अरु धर्मात्मा पुरुषांकी संगति करो यह लोक परलोकमें धर्मात्मा पुरुषांका संगति सुखदाई छे। ई लोकमें तो निराकुलता सुखकी प्राप्ति होय अरु जसकी प्राप्ति होय अरु परलोकमें स्वर्गादिकका सुखने पाइ मोक्षमें सिव रमनीको पति होय। निराकुल अतेन्द्री अनोपम बाधा रहित सास्वता अविनासी सुखने भोगवो जासूं हे पुत्र थांने म्हारा वचन सत्य दीसे अरु यामें थांको भला होवो दीखे तो ये वचन अंगीकार करो अरु थाने म्हांको वचन झूठा दीखे अरु यामें थाको भलो होवो न दीसे तो म्हांको वचन मत मानो म्हारो तो थासूं कछू बातको प्रयोजन नाहीं। दया बुद्धि कर थांने उपदेस दियो थो मानो तो मानो न मानो तो थांकी थें जानों। अब वे सम्यक दृष्टि पुरुष अपनी आयु तुच्छ जाने तब दान पुन्य करनो होय सो अपना हाथसूं करें हैं। पाछे जेता पुरुषासों बतलावना होय तिनसूं बतलाय निसल्छ होय है पाछे सर्व कर्मका नाता काजे पुरुष स्त्रीनिने आप निकटतें सीख देय अरु धर्मका ताका पुरुषाने आपना निकट राखे। अरु आपना आयु निःकपट पूरा हूवा जाने तो सर्व प्रकार परिग्रहका जीवन पर्यंत त्याग करे। अरु चार प्रकारके अहारका त्याग करे। सर्व घरका भार पुत्रनपै डालकर आप विशेषपने निशल्य होय वीतराग परनाम धरे, अरु आपना आयुका नेम जाने पूरा होय या न होय यह संदेह रहे तो दोय

चार घटी आदि कालका मर्यादा कर त्याग करे। जावत जीवे तावत धीरां धीरां त्यागे जब खाट तें उतर भूमिमें सिंहकी नाईं निर्भै तिष्टे जैसे वैरीनके जीतवेको शुभट उद्यमी होय रनभूमिमें तिष्टे कोई जातकी अंस मात्र भी आकुलता न उपजावे। बहुरि कैसा है वह सुद्धोपयोगी सम्यक दृष्टि जाके मोक्ष लक्ष्मीका पाणि गृहनकी वाक्षां वरते छे ऐसा अनुराग है जो अवार ही मोक्षकूं जाय वरों ताका हृदामें मोक्ष लक्ष्मीका आकार वर्तै है। ताकी प्राप्तिकूं शीघ्र चाहे है। अरु ताहीका भय थकी राग परनतिको आवने देय है ऐसा विचारे है जो कदाच हमारा स्वभाव विषैं राग परनतिने प्रवेश किया तो मोक्ष लक्ष्मी मोने वरचे कूं सन्मुख हुई है सो जाती रहसी तातैं मैं राग परनतिकूं दूर ही तैं छोड़ो हों ऐसा विचार करतो काल पूर्न करे ताका परनामोंमें निराकुलित आनन्द रस वरसे है। तो सांतीक रस कर तामें तृप्ति है। ताके आत्मीक सुख विना कोई बातकी वाक्षां नाहीं। एक अतेन्द्री अभोगत सुखकी वाक्षां है। ताहीकूं भोगवे है अरु स्वाधीन सुख है सो यद्यपि साधर्मी संयोग है। सो मेरा यो पास है। ऐसे आनन्द मई तिष्टतो सांत परनामों संयुक्त समाधि मरन करे पाछे समाधिमरनका फल थकी इन्द्रादिक विभूतिने पावे पाछे वहां थकी चय कर राजाधिराज होय पाछें केताइक काल राज विभूतने भोग अर्हती दीक्षा धरै। पाछे क्षपक श्रेणी चढ़ चार घातिया कर्मोंको नास करके केवल ज्ञान लक्ष्मीने पावे कैसा है तामें समस्त लोकालोकके पदार्थ तीन काल संबंधी एक समयमें आन झलके हैं। ता सुखकी महिमा वचन अगोचर है। इति

समाधि मरन स्वरूप संपूर्न। आगे मोक्षका सुख वरनन करिये है। श्री गुरां पास शिष्य प्रश्न करै है। कांई प्रश्न करे है हे प्रभू हे स्वामिन हे नाथ हे कृपानिधान हे दयानिधि हे परम उपगारी हे संसार समुद्रके तारक भोगनासूं परान्मुख आत्मीक सुखमें लीन तुम मेरे ताईं सिद्ध परमेष्ठी सुखनका स्वरूप कहो, कैसा है शिष्य महां भक्तिवान है अरु विनयवान है। अरु मोक्ष लक्ष्मीकी प्राप्तिका अभिलाषी है। सो वह श्रीगुरांका तीन प्रदक्षना देय हस्त कमल मस्तकके लगाय हस्त जोर गुरांका मौसरने पाइ वारंवार दीनपनाका वचन विनयपूर्वक प्रकासितो हूवो अरु मोक्ष लक्ष्मीका सुखने पूछतो हूवो तब श्री गुरु कहें हे शिष्य हे पुत्र हे भव्य हे आर्य तें बहुत भला प्रश्न किया अब तू सावधान होय कर सुन यह जीव सुद्धोपयोगका महात्म कर केवल ज्ञान उपाय सिद्ध क्षेत्रमें जाय तिष्टें सो चरम शरीरतैं किंचित ऊन प्रदेशोंकी आकृतनै धरे सास्वतो मोक्ष विषे तिष्टे है सो कैसे हैं सिद्ध एक एक सिद्धकी अवगाहनामें अनन्त अनन्त सिद्ध भगवान न्यारे न्यारे तिष्टे हैं कोई काहूसों मिले नाहीं। बहुरि कैसे हैं सिद्ध भगवान तिनके आत्मीक ज्ञानमें लोकालोकके समस्त पदार्थ तीन काल संबंधी द्रव्य गुन पर्यायने लियां एक समयमें जुगपत आइ झलकें हैं। ताके चरन जुगलकूं मैं नमस्कार करूं हूं बहुरि कैसे हैं सिद्ध भगवान परम पवित्र हैं परम शुद्ध हैं अरु आत्मीक स्वभावमें लीन छै अरु परम अतेन्द्री अनोपम बाधारहित निराकुल रसने निरंतर पीवें हैं तामें अन्तर परे नाहीं बहुरि कैसा हैं सिद्ध भगवान असंख्यात

चैतन्य धातुके पिन्ड न गुरु न लघु अमूर्तीक हैं सर्वज्ञ देवने प्रत्यक्ष विद्यमान न्यारे न्यारे देखें हैं बहुरि कैसे हैं सिद्ध प्रभू निःकषाय आचरन रहित हैं। बहुरि कैसे हैं सिद्ध महाराज जिन धोया है घातिया अघातिया कर्मरूप मल बहुरि कैसे हैं सिद्ध भगवान अपना ज्ञाइक स्वभावने प्रगट किया है। अरु समय समय षट् गुनी हानि वृद्धिरूप समुद्रकी लहरवत परनमें हैं अनंतानंत आत्मीक सुखकूं आचरे हैं वा अस्वादे हैं पर तृप्ति नाहीं तोई वा अत्यंत तृप्ति हैं अब कछू चाह रही नाहीं। बहुर कैसे हैं परमात्मा देव अखंड हैं। अजर हैं अमर हैं निर्मल हैं शुद्ध हैं चैतन्य स्वरूप हैं ज्ञान मूर्ति हैं। ज्ञाइक हैं वीतराग हैं सर्वज्ञ हैं सब तत्वके जानन हारे हैं अरु सहजानन्द हैं। सर्व कल्यानके पुंज हैं त्रैलोक कर पूज्य हैं। सर्व विघ्नके हरन हारे हैं। श्री तीर्थंकरदेव ताकूं नमस्कार करें हैं। सो मैं भी वारंवार हस्त मस्तककें लगाय नमस्कार करूं हूं। सो क्या वास्ते नमस्कार करूं हूं वाहीके गुनाकी प्राप्तिके अर्थ बहुरि कैसे हैं सिद्ध भगवान देवाधिदेव हैं। सो संज्ञा सिद्ध भगवान विषें ही शोभे है अरु चार परमेष्टीने गुरु संज्ञा है देव संज्ञा नाहीं। बहुरि कैसे हैं सिद्ध भगवान सर्व तत्वके प्रकाश ज्ञेयरूप नाहीं परनमे हैं। आपना स्वभाव रूप ही रहें हैं अरु ज्ञेयको जाने हैं। कैसे जाने हैं। समस्त ज्ञेय पदार्थ हैं सो मानूं सिद्ध ज्ञानमें पैठ गया है। मानूं उखारने लग गया है। कि मानूं अवगाहनास्ति कर समाय गया है। कि मानूं आचमन कर लिया कि मानूं स्वभावमें आन वसा है। कि मानूं तदात्म होय परनमें

है। कि मानूं प्रतिबिम्बित है। कि मानूं पाषानके उकीर काढ़े है। कि मानूं चित्रामकी चितेरें है कि मानूं स्वभावमें आन प्रवेश किया है कि मानूं स्वभावमें आन झलके है कि मानूं अभिन्न रूप ही प्रतिभासे है ऐसा स्वभावने लियां श्री सिद्ध भगवान आपना स्वच्छ निर्मल स्वभावरूप परनवे है। बहुरि कैसे हैं सिद्ध महाराज सांतीक रस कर असंख्यात प्रदेश भरे हैं। अरु ज्ञानरस कर आहलादित हैं। अरु सुद्ध अमृत कर श्रवें हैं प्रदेस जाका व अखंड धारा प्रभाव वहे है। बहुरि कैसे हैं चंद्रमाका विमानमें सूं अमृत श्रवे है। अरु औरांकू अहलादित बढ़ावे अरु आताप दूर करे अरु मन प्रफुल्ल करे है त्यों ही सिद्ध महाराज आप तो ज्ञानामृत पीवें आचरे अरु औरांने आनन्दकारी ताको नाम लेत ही वा ध्यान करता ही भवताप विलय जाय अरु परनाम सांत होय आपा परकी शुद्धता होय अरु ज्ञानामृतनें पीवे अरु निजस्वरूपकी प्राप्ति होय सो ऐसा सिद्ध भगवानके हमारा नमस्कार होहु। अरु सिद्ध भगवान जयवंत होहु अरु हमें संसार समुद्रतें काढ़ो। अरु म्हांकी संसारमें पड़वातैं रक्षा करो अरु म्हारा अष्ट कर्मने हरो अरु हमारा कल्यानका कर्ता होहु। अरु म्हाने मोक्ष लक्ष्मीकी प्राप्ति करो अरु हमारे हृदयमें निरंतर वसो। अरु म्हांने आप सारखो करो बहुरि कैसा है सिद्ध भगवान जाके जन्म मरन नाहीं। जाके शरीर नाहीं ज्ञान वा जीवका प्रदेश है। बहुरि कैसे हैं सिद्ध भगवान अस्तित्व वस्तुत्व वा प्रमेयत्व व अमेयत्व प्रदेसवत्व अगुरुलघुत्व चैतन्यत्व अमूर्तित्व निरंजन निराकार भोगतृत्व अभोगतृत्व द्रव्यत्व याने आदि देय

अनन्त गुनाकर पूरन भरचा है। तातैं औगुन आवने जागा नाहीं। ऐसे सिद्ध भगवानकूं फेर भी हमारा नमस्कार होहु। ऐसे श्री गुरयां शिष्यने सिद्धाका स्वरूप बताया अरु ऐसा उपदेश दिया अरु आसीर्वाद दिया हे शिष्य हे पुत्र तू सिद्ध सादस्य है यामें संदेह मत करे, सिद्ध-नका स्वरूपमें अरु थारा स्वरूपमें फेर नाहीं। जैसा सिद्ध है तसा ही तू है तू निश्चे विचार कर देख सिद्ध समान छे की नाहीं। देखता ही परम अनोपम आनन्द उपजेलो। सो कहवामें आवे नाहीं। तासूं तू अब सावधान होय एकचित्त कर साक्षात् ज्ञाता दृष्टा तूं परका देखन जाननहारा तू देख ढीज मत कर ऐसा अमृत रूप वचन श्री गुरुका सुन अरु शीघ्र ही अपना स्वरूपको विचार शिष्य करतो हूवो श्री गुरु परम दयालु वारंवार मुने याही बात कहा अरु योही उपदेश दियो सो याके कांई प्रयोजन छे एक म्हारा भला करवाका प्रयोजन छे। तासूं मोने वारंवार कहे छे सो देखो हूं सिद्ध समान हूं विना ही देखो यो जीव मरन समै ई शरीर माहिं सूं निकस परगतिमें जाय तब ई शरीरका आंगोपांग हाथ पग आंख कान नाकादि सर्व चिन्ह ज्योंका त्योंही रहे है। अरु चैतन्य रहे तातैं यह जान्या गया, देखवांवाला जानवांवाला कोई और ही था या शरीरमें चैतन्य शक्ति नाहीं। यह निर्धार भया ई बातमें चेतनपनाकी शक्ति अवश्य आई बहुरि देखो मरन समै यह जीव परगतिमें जाय तब कुटुम्ब परवारका मिलई घनो पकड़ पकड़ कर राखे अरु ऊंड़ा भोंहरामें गाड़ा किंवाड़ जड़

राखे अरु वह आत्मा सर्व कुटुम्बको देखते ही घर फोड़ निकर जाय। सो किसीने भी देखे नाहीं तातैं यह जान्या गया कि आत्मा अमूर्तीक छे। जो मूर्तीक होता तो शरीरकी नाईं पकड़ा रह जाता तातैं आत्मा प्रत्यक्ष अमूर्तीक ही है। यामें संसय नाहीं यह आत्मा नेत्र इन्द्रीके द्वारा पांच प्रकारके वर्णकूं देखे हैं। अरु श्रोत इन्द्रीके द्वारा तीन प्रकार वा सात प्रकार शब्दोंकी परिक्षा करे है। बहुरि यह आत्मा नासिका इन्द्रीके द्वारा दोय प्रकारकी सुगन्ध दुर्गंध ताकूं जाने है। बहुरि रसना कर पांच प्रकारके रसकूं स्वादे है। बहुरि यह आत्मा सपरस इन्द्रीके द्वारा आठ प्रकारके सपरसकू वेदे है वा अनुभवे है वा निरधार करे है। सो ऐसा जानपना ज्ञायक स्वभाव विना इन्द्रीनमें नांही। इन्द्री तो जड़ हैं अनन्त पुद्गलकी परमानूं मिल कर बन्या है। सो जहां जहां इन्द्रियोंके द्वार दर्सनज्ञान उपयोग आवता है सो वह उपयोगमय मैं हूं और नाहीं भरमतैं और भासे छे। तब श्री गुरांके प्रसाद कर मेरा भरम विलय गया मैं प्रत्यक्ष ज्ञाता दृष्टा अमूर्तीक सिद्ध सादृस्य देखू हूं अरु जानू हूं अनुभवू हूं। सो अनुभवनमें कोई निराकुलत्व सुख शान्तीक रस उपजे है। अरु आनन्द श्रवे है सो यह आनन्द प्रभाव मेरे अखंड असंख्यात आत्मीक प्रदेशमें धारा प्रवाहरूप होय चले है। ताकी अद्भुत महिमा मैं जानू हूं के सर्वज्ञदेव जाने वचनगोचर नाहीं। बहुरि देखो मैं बहुत ओंड़ा तैखानामें बैठ कर विचारूं मेरे ताईं वज्र मइ भीति फोड़ कर पदार्थ दीसे है ऐसा विचार होते मेरी यह हवेली देखो

प्रत्यक्ष मोने मनद्वार कर दीखे। अरु यह नगर प्रत्यक्ष दीखे यह भरतक्षेत्र मोनें दीसे अरु असंख्यात दीपक समुद्र मोने दीखें। अरु पृथ्वी तले तिष्ठता नारकी जीव मोनें दीसे वा सोला स्वर्ग वा नवग्रेवक व उत्तर वा सर्वार्थसिद्धि वा सिद्धक्षेत्र विषें तिष्ठते अनन्तानंत सिद्ध महाराज वा समस्त त्रैलोक वा अमूर्तीक धर्म द्रव्य वा ऐते ही मान अमूर्तीक एक अधर्म द्रव्य वा ऐते ही मान एक एक प्रदेश विषें ऐक ऐक अमूर्तीक कालानु द्रव्य एक एक प्रदेश मात्र तिष्टें हैं। बहुरि अनन्तान्त निगोदके जीवनसूं त्रैलोक भरया है। बहुरि चारों जातिके सूक्ष्म स्थावरनसूं त्रैलोक भरया है। बहुरि जात चारके त्रस त्रसनाड़ीमें तिष्टें हैं। अरु नरक विषें नारकीनके महादुःख है। अरु स्वर्गन विषें स्वर्गवासी देव कीड़ा करें हैं। अरु इन्द्री जनित सुखकूं भोगवें हैं। अरु एक एक समयमें अनन्त जीव मरते उपजते दीसें हैं। बहुरि एक दोय प्रमानूका स्कंध आदि देय अनन्त प्रमानूं वा त्रैलोक प्रमानूका महास्कंध पर्यंत नाना प्रकारके पुद्गल पर्याय मोकूं दीखें हैं। अरु समै समै अनेक स्वभावने लियां परनवता दीसे हैं। अरु दसों दिसाने अवलोकाकास सर्वव्यापी दीसे है। अरु तीन कालके सम्बन्धी सर्व पदार्थके पर्यायकी पलटनी दीसे है। केवल ज्ञानका जान पना प्रत्यक्ष मोकूं दीसे है। सो ऐसा ज्ञानका धनी कौन है ऐसा ज्ञान किनके भया ऐसा नायक पुरुष तो प्रत्यक्ष साक्षात विद्यमान मोने दीसे है अरु यह जहां तहां ज्ञान ही ज्ञानका प्रकाश मोनें दीसे है। किसू शरीरका ही सो ऐसा जानपनाका स्वामी और नाहीं। मैंही हूं जो और होता तो मेरे तांई ऐसी खबर कैसे

होती औरका देख्या और कैसे जाने तातैं यह जानपना मेरे ही उपज्या है। अथवा यह जानपना है सो मैं हूं। तातैं जानपनामें अरु मोनें दुजायगी नाहीं। मैं एक ज्ञानका निर्मल शुद्ध पिन्ड बन्या हूं। जैसे नोनकी डली खारका पिन्ड बन्या है। अथवा जैसे सर्कराकी डली मिष्टान अमृतका पिंड बन्या है। तैसे ही मैं साक्षात प्रगट शरीर भिन्न ज्ञायक स्वभाव लोकालोकका प्रकाशक चैतन्य धातु सुखका पिंड अखंड अमूर्तीक अनन्त गुन कर पूरन बन्या हूं। यामें संदेह नाहीं देखो मेरे ज्ञानकी महिमा सो अवार हमारे कोई केवल ज्ञान नाहीं। कोई मनपर्यय ज्ञान नाहीं कोई अवधि ज्ञान नाहीं। मति श्रुतज्ञान प.वजे छे सो भी पूरा नाहीं। ताका अनन्तवें भाग क्षयोपसम भया है। ताही तैं ऐसा ज्ञानका प्रकाश भया अरु ताही माफिक आनन्द भया सो या ज्ञानकी महिमा मैं कौनकूं कहूं। सो यह आश्चर्यकारी स्वरूप हमारो छे। कोई और को नाहीं। ऐसा अपना निज मित्रने अवलोक और कौनसूं प्रीति करूं कौनकूं आराधूं अरु कौनको सेवन करूं अरु कौन पास जाय जाचना करूं ईश्वर रूप पाया विना मैं करना था सो किया सो यह मोहका प्रभाव छो मेरा स्वभाव नाहीं। मेरा स्वभाव तो एक टंकोत्कीर्न ज्ञायक चैतन्य लक्षन सर्व तत्वका जाननहारा निज परनतका रमन हारा स्वस्थानका वस करनहारा राग द्वेषका हरनहारा संसार समुद्रका तारनहारा स्वरसका पीवनहारा ज्ञानपनाका करनहारा निरावाध विराग मन निरंजन निराकार अभोगत ज्ञान रसका भोगता वा परस्वभावका अकरता निज स्वभावका कर्ता सास्वता अब शरीरसूं भिन्न अमूर्तीक निर्मल पिन्ड पुरुषाकार

ऐसा देवाधिदेव मैं ही हूं ताकी निरंतर सेवा करवो मोने जोग्य है। ताके सन्मुख रहना अरु वार वार अवलोकन करना सो ताका अवलोकन करता हीं सांत रस धारा रूप अमृतकी छटा उछले अरु आनन्द श्रवे ताके रसकूं मैं पीकर अमर हुवा चाहूं हूं। सो यह मेरा स्वरूप जयवंत प्रवर्तो अरु इसका अवलोकन वा ध्यान जयवन्त प्रवर्तो इस कर अंतर छिन मात्र हू मत होहु ई स्वरूपकी प्राप्त विना कैसे सुखी होहु। कदाच न होय बहुरि जैसे काठकी गनगोरकुं आकाशमें थापिये सो स्थापित प्रमाण आकाश तो गनगोरके प्रदेशमें पैठ जाय अरु गनगोर आकाशमें पैठ जाय सो क्षेत्रकी अपेक्षा एकमेक होय तिष्टे भेला ही समै समै परनवे मन स्वभावकी अपेक्षा न्यारा न्यारा भाव लिये तिष्टे। जुदा जुदा परनवे कैसे परनमे जो आकास तो समै समै अपना निर्मल अमूर्तीक स्वभावरूप परनवे सो काठकी गनगोर आकासके प्रदेशोंमें सो उठाय दूर स्थापे तो आकासका प्रदेश तो वहांका वहां ही रहे काठका प्रदेप चला जाय आकासका प्रदेश एक भी ताकी लार लागे नाहीं। तासूं जे भिन्न भिन्न स्वभावरूप परनमे ते न्यारा न्यारा करता न्यारा हूवा तैसे मैं भी ई शरीरसूं क्षेत्रकी अपेक्षा एक क्षेत्र अवगाही होय भेला तिष्टूं हूं। पन स्वभावकी अपेक्षा न्यारो छे ई को स्वरूप न्यारो छे ये तो परतक्ष जड़ अचेतन अमूर्तिक गलानि पूर्न स्वभावने लियां समै समै परनमें अरु मैं चेतन अमूर्तीक निर्मल ज्ञायक सुखमई आनन्द स्वभावने लियां समै पर नमूं छूं। अरु शरीरकूं न्यारा होते न्यारा हूं। शरीरके अरु हमारे भिन्नपनो प्रत्यक्ष है। जो ईका द्रव्य गुन पर्याय न्यारा म्हारा द्रव्य

गुन पर्याय न्यारा ईका प्रदेश न्यारा म्हारा प्रदेश न्यारा ईका स्वभाव न्यारा हमारा स्वभाव न्यारा और कोई ऐसे कहे पुद्गल द्रव्यसों तो वारंवार भिन्नपनो भयो पन अवशेष चार द्रव्यासों अथवा परजीव द्रव्यसों तो भिन्नपनो भयो नाहीं। ताका उत्तर ऐ हे वे चार द्रव्य तो अनादि कालसे ठिकाना बांध अड़ोल तिष्टे हैं। पर जीवांका संयोग प्रत न्यारा है। सो भिन्न होय तासों कांई भिन्न कहिये एक पुद्गल द्रव्य ही का उरझाव है। तातैं याही कूं भिन्न करना उचित है। घना विकल्प कर काई जानवावाला थोड़ा हीमें जानें। अरु न जानवावाला घनीमें भी न जाने तातैं यह बात सिद्ध भई यह बात कला कर साध्य है। बलकर साध नाहीं। बहुरि यह आत्मा शरीरमें बसता इंद्रियोंके द्वार अरु मनके द्वार कैसे जाने। सोई कहिये है जैसे एक राजा कूं काहू बलवान बैरीने बड़ा महलमांहि बंदीखाने दिया सो उस महलमें पांच तो झरोखा है। अरु एक बीचमें सिंहासन हैं। सो कैसे है झरोखा अरु सिंहासन सो ऊ झरोखाके ऐसी शक्तिने लिया चसमा लगा है। अरु ऐसी सक्तने लियां सिंहासनके रतन लागा है सो कहिये है। सो राजा अनुक्रम सो सिंहासन पर बैठो हुवो झरोखा ओर देखतो हूवो सो प्रथम झरोखामांहिं देखता तो सपरसके आठ गुनने लियां पदार्थ दीसे है। अरु सेस पदार्थ दीसें नाहीं। बहुरि दूजा झरोखा मांहि निरखो सिंहासन ऊपर बैठ तब पांच जातके रस दीसे हैं। अवशेष और कछू न दीसा बहुरि सिंघासन ऊपर बैठ तीजा झरोखा माह देखो तब गंध जातके दोय पदार्थ देखे शेष देख्या नाहीं। बहुरि चौथा झरोखामाहिं देखा

तब पांच जातके वर्न देख्या। अवशेष कछू न देखा। बहुरि पांचमां झरोखा सिंहासन ऊपर बैठा देख्या तब सात जातके शब्द देख्या अवशेष किछू न देख्या सो जब सिंहासन ऊपर बैठ दृष्टि पसार बिचारे तब वासूं जाके पदार्थ तो यह मूर्तीक अरु आकार अमूर्तीक सर्व दीसे। अरु झरोखा बिना वा सिंहासन बिना कोई पदार्थनें जानें नाहीं। अरु वह राजा जब बंदीखाने छोड़ा अरु महलबारें काढें तो वे राजानें दसूं दिसाका पदार्थ अरु मूर्तीक अमूर्तीक विना विचार सर्व प्रतभासे—सो ये स्वभाव देखवाका राजाका है। कोई महल ताको नाहीं। अपूठा महलका निमित्त कर ज्ञान आछाद्या जाय है। अरु कोई इक ऐसी निर्मल जातकी परमानूं वा झरोखा अरु सिंहासनके लागी है। ताका निमित्त कर किंचित् मात्र जानपना रहे है। दूजा महलका प्रभाव तो सर्व ज्ञानको घातवा का ही है। त्योंही ई शरीररूपी महल विषें यह आत्मा कर्मन कर बन्दीखाने दिया है। त्योंही ऐठें पांच इन्द्रीरूप तो झरोखा हैं। अरु मनरूप सिंहासन है। तब यह आत्मा जो इन्द्रीके द्वार अवलोकन करे तिहिं तिंहि इन्द्रीके विषें ई माफक पदार्थकूं देखे अरु मनके द्वार अवलोकन करे तब मूर्तीक व अमूर्तीक सर्व पदार्थ प्रतिभासे है अरु यह आत्मा शरीर रूपी बंदीखानेसूं रहित होय तब मूर्तीक अमूर्तीक लोकके त्रिकालमें बंधी चराचर पदार्थ एक समयमें युगतीय प्रतभासें है ये स्वभाव आत्माका है कोई शरीरका तो नाहीं। शरीरका निमित्त कर अपूठा ज्ञान घाता जाय है। अरु इन्द्री मनका निमित्त कर किंचित मात्र खुलया रहे है। ऐसे ही निर्मल जातकी परमानूं इन्द्री वा मनकूं लागी हैं।

ताकर किंचित मात्र दीसे है। अरु शरीरका स्वभावका ज्ञानकूं भी घातवा काही हैं। बहुरि जातैं निज आत्माका स्वरूप जान्या है। ताका यह चहु होय है। सो और तो गुन आत्मामें घना ही है। अरु घना हीनें जानें है। परन्तु तीन गुण विशेष हैं। ताको जानें तो आपना स्वरूप जानें ही जानें अरु ताका जान्या विना कदाच त्रिकालमें भी स्वरूपकी प्राप्ति होय नाहीं अथवा तीन गुन विना दोय गुन ही को नीका जानें तो भी निज सहजानंदकी पिछान होय गुनकी पिछान विना स्वरूपकी प्राप्ति नाहीं सोई कहिये है। प्रथम तो आत्माका स्वरूप ज्ञाता दृष्टा जानें यह जानपना है। सोई मैं हूं सोई जानपना है। ऐसा निःसंदेह अनुभवनमें आवे है सो तो यह अरु दूजा यह जाने यह तो रागी द्वेषीरूप आकूल होय परनवे है। सोई मैं हूं कर्मनका निमित्त पाय कषायरूप परनाम हुवा है। अरु कर्म निमित्त हलका पड़े तब परनाम सांतरूप परनमें हैं। जैसे जलका स्वभाव निर्मल है सो अग्निका निमित्त पाइ जल उष्नरूप परनवे कदाचका निमित्त है पाय वह जल गंधरूप परनवे त्योंही यह आत्माका ज्ञानावरनादिका निमित्त कर ज्ञान घाता जाय अरु कषायनका निमित्त कर निराकुलित गुन घाता जाय है ज्यों ज्यों ज्ञानावरनादिका निमित्त हलकापरे त्यों त्यों निराकुलित परनाम होता जाय। सो यह स्वभाव जिननें प्रत्यक्ष जान्या अरु अनुभवा सो ही सम्यक दृष्टि निजस्वरूपका भोगता है। बहुरि तीजा स्वभाव यह भी जाने कि मैं असंख्यात प्रदेशी अमूर्तीक आकार हूं। जैसा आकास अमूर्तीक है तैसा ही मैं अमूर्तीक हूं परन्तु आकास सुनइ

है मैं चैतन्य हूं। सो कैसा है आकाश काटा कटे नाहीं तोड़ा टूटे नाहीं पकड़ा आवे नाहीं रोका रुके नाहीं छेदा छिदे नाहीं भेदा भिदे नाहीं गाला गले नाहीं बाल्या बले नाहीं याने आदिदे कोई प्रकार भी नास नाहीं। मैं असंख्यात प्रदेशी प्रत्यक्ष वस्तू छूं अरु मेरा ज्ञान गुन अरु परनमन गुन प्रदेसनके आश्रय है जे प्रदेश नाहीं होंय तो गुन किसके आसरे रहें। प्रदेश विना गुनकी नाश होय तब स्वभावकी नास होय जैसे आकासके विषें कोई वस्तु नाहीं त्यों होय जाय सो मैं छूं नाहीं। मैं साक्षात् अमूर्तीक अखंड पदने धरचा हूं। अरु ता विषें ज्ञान गुनकूं लिया हूं, ऐसी तीन प्रकार लक्षन संयुक्त मैं मेरा शरीरकूं नीका जानूं हूं। अनभवूं हूं कैसे अनभवूं हूं। सो या तीन गुनाकी मेरे आज्ञा कर प्रतीत है। अरु ज्ञान अरु परनामनकी मेरे अनुभवन कर प्रतीत है कैसे प्रतीत है सोई कहिये है कोई मेरे ताईं आय ऐसा झूठ ही कहे के तूं चैतन्य स्वरूप नाहीं यह बात फलाना ग्रन्थमें कही है। ऐसा मोकूं कहे तब मैं उसकूं ऐसे कहूं रे दुरबुद्धि रे बुद्धि कर रहित रे मोह कर ठगाया हुवा तेरे ताईं कछू सुध नाहीं। तेरी बुद्धि ठगी गई है तब वह कहे मैं कांई करूं फलाना ग्रन्थमें कही है ऐसा कहे तो भी प्रतक्ष चैतन्य वस्तु परका देखन जाननहारा सो कैसे मानूं तब यह जानें जो शास्त्रमें ऐसा मिथ्या कहे नाहीं अरु आगे होसी नाहीं अरु मेरे ताईं या कहे आज सूर्य शीतल ऊगा तो मैं कैसे मानूं फिर कदाच या तो मानूं परन्तु मेरे ताईं झूठा कहे तू चैतन्य नाहीं तेरे परनमन शक्ति नाहीं। सो कदाच मानें नाहीं ये दोई गुनका

मेरे अनुभव है। ये दो गुन ही का मैं पिन्ड हूं। सो या दोय गुणाकी मेरे आज्ञाकर भी प्रतीत है। अरु अनुभवन कर प्रमान है। कैसो मैं या जानूं सर्वज्ञका वचन झूठा नाहीं। तातैं तो आज्ञा प्रमान है अरु मैं या जानूं मेरे ताईं मेरा अमूर्तीक आकार मोकूं दीसता नाहीं तो आज्ञा प्रमान है परन्तु मैं अनुमान कर ऐसा प्रदेसनके आश्रय विना चैतन्य गुन किसके आसरे होइ। प्रदेश विना गुन कदाच भी न होय। यह नेम है जैसे भौमिका विना रूखादिक किसके आश्रय होंय त्यों ही प्रदेश विना गुन किसके आश्रय होय ऐसा विचार कर अनुभवनमें भी आवे है अरु आज्ञा कर प्रमान ह बहुरि प्रमान है। बहुरि कोई मेरे ताईं आनकर झूठी कहे फलाना ग्रन्थमें या कही है। ये आगे तीन लोक प्रमान आत्म प्रदेशका श्रद्धान किया था मैं ऐसे निःसहाय जो आत्माका प्रदेश धर्म द्रव्यका प्रदेशा सों घाट है। तो मैं ऐसा विचारूं सामान्य शास्त्र सो विशेष शास्त्र बलवान है। सो ऐसा होयगा मेरे अनुभवनमें तो कोई निरधार होता नाहीं अरु विशेष ज्ञानी यहां दीसे नाहीं। तातैं सर्वज्ञका वचन प्रमाण करू हूं। परंतु मेरे ताईं या कहे तूं जड़ अचेतन है वा मूर्तीक है। वा परिनमनतैं रहित है तो यामें किछू मानें नाहीं यह मेरे संदेह है। जासों ब्रह्मा विष्णु नारायन रुद्र कोड़ कोड़ आय कहैं। यामें याही जानों कि ये सब बावला भया है। के मोने डिगावा आया है। के मेरी परीक्षा लेहे मैं ऐसा मानूं। भावार्थ—यह जो ज्ञान परनति आपहीके होय है। सो जाकूं जानें सोई सम्यकदृष्टि है। याकूं जाने विना मिथ्यादृष्टि है। और अनेक प्रकार गुनाका स्वरूप क

पर्यायका स्वरूप ज्यों ज्यों२ ज्ञान होइ त्यों जानवो कार्यकारी है। परन्तु मुख्यपने या दोयका तो जानपना तो अवश्य चाहिये। ऐसा लक्षन जानना बहुरि विशेष गुन ऐसें जानना सो एक गुनमें अनन्त गुन हैं। अरु अनन्त गुनमें एक है। गुन गुनसो मिले नाहीं। अरु सब गुनमें मिल्या है जैसे सोवर्नमें पीला चकनाने आद देय अनेक गुन हैं। सो क्षेत्रकी अपेक्षा तो सर्व गुनामें तो पीला गुन पाइये। अरु पीला गुनमें क्षेत्रकी अपेक्षा सर्व गुन पाइये। अरु क्षेत्रकी अपेक्षा गुनसो गुन मिल रहा है। अरु सर्वका प्रदेश एक ही है। अरु स्वभावकी अपेक्षा सर्व न्यारे न्यारे हैं। सो पीलाका स्वभाव और ही है अरु चीकनाका स्वभाव और ही है। सो ऐसे आत्मामें जानना वा ऐसा द्रव्यामें भी जानना वा अनेक प्रकार अर्थ पर्याय वा विंजन पर्यायका स्वरूप यथार्थ शास्त्रोंके अनुसार जानना उचित है। अवसेस जानपना कर सम्यक निर्मल होता जाय है। बहुरि या जीवके सुखकी बधवारी वा घटवारी दोय प्रकार होय है सोई कहिये है। जेता ज्ञान है तेता सुख ही है। सो ज्ञानावरनादिका उदय होते तो सुख दुख दोन्योका नास होय अरु ज्ञानावरनादिकका तो क्षयोपशम होय अरु मोह कर्मका उदय होय तब या जीवकें दुख विशेष उत्पन्न होय सो सुख तो आत्माके निज गुन कर्म उदय विना है। अरु दुख कर्मोका निमित्तकर होय है सो जीवसक्ति कर्म उदय दब गई अरु दुखसक्ति कर्मका उदय ते प्रगट होय है तातैं वस्तुका द्रव्यत्व स्वभाव है। बहुरि फेर शिष्य प्रश्न करे है। हे स्वामी हे प्रभू तेरे ताईं

द्रव्यकर्म वा नोकर्मसों तो मेरा स्वरूप भिन्न तुम्हारे प्रसाद कर दरस्या अब मेरे ताईं रागद्वेष सूं न्यारा दिखावो सो अब श्रीगुरु कहे हैं हे शिष्य तू सुन जैसे जलका स्वभाव तो शीतल है अरु अग्निके निमित्त कर उस्न होय तब अपना शीतल गुनने खोवे आताप रूप होय परनवे औरानें भी आताप उपजावे पाछे काल पाय अग्निका संयोग मिटे त्यों जलको स्वभाव शीतल होय औरांकूं आनन्दकारी होय त्योंही यह आत्मा कषायोंका निमित्त कर आकुल व्याकुल होय परनमें तब निराकुलित गुन दबि जाय तब अनिष्ट रूप लागे बहुरि ज्यों ज्यों कषायाका निमित्त मिटता जाय त्यों त्यों निराकुलित गुन प्रगट होय तब इष्टरूप लागे सो थोड़ासा कषायको मेटनेतैं भी ऐसा शान्तीक सुख प्रगट होय तो न जाने परमात्मा देवके संपूर्न कषाय मिटे अरु अनन्त चतुष्टय प्रगट भया कैसा सुख होसी अरु थोड़ासा निराकुलित स्वभावको जान्या संपूर्न निराकुलित स्वभावकी प्रतीत आये सुद्धात्माके ऐसा संपूर्ण निराकुलित स्वभाव होसी ऐसा अनुभवनमें नीका आवे है। बहुरि फेर शिष्य प्रश्न करे है हे प्रभू बाह्य आत्मा अन्तर आत्मा परमात्मा इनका प्रगट चिन्ह कहा ताका स्वरूप कहो सो गुरु कहे हैं। जैसे कोई जनम तांई बालकने तैखानामें राख्या तैठा ही बधायो केताक दिन पीछे रात्र समय बारें काढ़ो अरु बालकने पूछो सूर्य किस दिसाने ऊँगे छे ताको प्रकास कैसो होय छे अरु सूर्य कैसो छे। तब वे कहें मैं तो न जानो दिसा व प्रकास व सूर्यका बिम्ब कहा कहावे। तब हठकर पूछो तब और सूं और बतावे पाछे सूर्य ऊगो तब फेर कही तब बाने कही जहां

पहिले प्रकाश भयो ते तौ पूर्व दिसा छे, अरु तेठी यह सूर्य है सो सूर्न विना ऐसा प्रकाश होता नाहीं। त्यों त्यों सूर्य ऊंचा चढे है त्यों त्यों प्रकास निर्मल होता जाय है। कोई आइने जा कहे सूर्य दक्षिन दिसामें है अठीने सूर्य नाहीं तो कदाच मानें नाहीं औरनकुं बावला गिने कि प्रतक्ष राह सूर्यका प्रकास दीसे है। मैं याका कहा कैसे मानूं यह मेरे संदेह है। सूर्यका बिम्ब तो मेरे ताईं निजर आवता नाहीं पन ई प्रकार सूर्यका अस्त होय है। सो नियमकर सूर्य आठा ही हैं ऐसी अब गाढ़ प्रतीत आवे है। बहुरि फेर सूर्यका बिम्ब संपूर्ण महातेज प्रतापने लियां देदीपमान प्रगट भया तब प्रकास भी संपूर्ण भया पदार्थ भी जैसा था जैसा प्रतिभासवा लागा तब पूंछना ताछना रहा नाहीं। निर्विकल्प होय चुक्या ऐसे दृष्टांके अनुसार दृष्टान्त जानना सोई कहिये है मिथ्यात अवस्थामें पुरुषने पूंछा तू चैतन्य है ज्ञानमई है तब वे कहें चैतन्य ज्ञान कहा कहावेका चैतन्य ज्ञानमई हूगो कोई था शरीरमें अरु मोमें क्या भेद है। शरीर है सोई मैं हूं वा सर्वज्ञका ये ये अंस हूं वा छिन छिनमें उपजे विनसे है वा सून्य है। तो ऐसे ही मानें ऐसे होयगा मेरे ताईं किछू खबर नाहीं यह बहिरात्माका लक्षन है। बहुरि कोई गुरुका उपदेश कर ऐसा श्रद्धान आवे जो मैं प्रगट ज्ञानमई आत्मा यह मेरा ज्ञानका प्रकाश प्रगट सबका देखन जान-नहारा मैं ज्ञान विना ऐसा जानपना शरीरमें तो नाहीं। यह ज्ञानका प्रकास जहांसू आया है। तहां ही आत्मा है ज्यों ज्यों ज्ञान प्रकास बधता जाय त्यों त्यों तत्वका जानपना निर्मल होय

ऐसा श्रद्धानवे सो अंतरआत्मा है। बहुरि केवल ज्ञानरूपी सूर्य देदीपमान (उदोत) होय तब लोकालोकके चराचर पदार्थ निर्मल जैसाका तैसा प्रतिभासे है। अरु अपना असंख्यात प्रदेस भी त्यों-का त्यों प्रतिभासे सो यह परमात्माका लक्षन है। ऐसा तीन प्रकार आत्माका स्वरूप जानना बहुरि फेर शिष्य प्रश्न करे है हे प्रभू मोक्षमें और सुख तो छे पन इन्द्रीजनित सुख नाहीं तब श्री गुरु कहे हैं। हे शिष्य संपूर्न इन्द्रीजनित सुख मुक्तिमें संपूर्न छे। ऐसो और ठौर नाहीं। कैसे है सो कहें हैं। इन्द्रीनको सुख ज्ञानते जानों तब सुख होय सो सिद्ध महाराजके संपूर्न जानपना छे इन्द्रीनका विषय व मनका विषयरूपी पदार्थ एक समयमें सर्व जाने हैं। सो इनका सुख औरनके न जानना तब फेर शिष्य कहे है हे प्रभू आत्मज्ञान ऐसा ही है सो बारबार ज्ञाता दृष्टांकूं अवलोकना। भावार्थ—जो आत्माको ज्ञानमें देखना इह देखन जानन-हारा है सोई मैं हूं। मैं हूं सोई देखन जाननहारा है। मोमैं अरु जामें दुजायगी नाहीं। एकत्व तदात्मपना है। जैसा अवलोकन निरंतर लगा रहे। फेर फेर बाहीकूं देखे जैसे गाय अपना वक्षाको देखता छिनमात्र भी नाहीं भूले वारंवार वाहीकूं देखे ज्यों ज्यों देखे त्यों त्यों अत्यंत आनन्द ही होय। सो आनन्दकी बात गौही जाने तैसे सम्यक्दृष्टि वारंवार अपना रूपने देखतो तृप्ति नाहीं। अरु अपना स्वरूपका अवलोकन करता गदगद शब्द होय अश्रुपात चल आवे अरु रोमांच होय अरु चित्त शान्ति होय मानूं ग्रीष्म ऋतुमें मेघ छूटा ऐसी शान्तिता होय आवे सो ज्ञान ही गम्य है कहवां मात्र नाहीं और शिष्य प्रश्न करे है हे प्रभू

आत्माके कर्म कैसे बंधहैं। श्रीगुरु कहे हैं जैसे एक सिंह उजाड़में तिष्टे था तहां एक मंत्रवादी अपनी इच्छा सों भ्रमेंछो सो सिंह वह मंत्रवादीकूं देख कोपित हूवो। तब मंत्रवादी एक धूलकी चिमटी मंत्री नाहरका सरीर ऊपर नाख दीनी सो ताकर नाहरकी देखन शक्ति विलय गई। अरु दूसरी चिमटी कर बावलो सारखो हूवो या जाने मैं स्याल हूं। एक चिमटी कर चलनशक्ति नास गई सो चल न सके अरु एक चिमटीका निमित कर नाहरको आकार ही और भयो अरु एक चिमटीका निमित्त कर नाहर आपने नीच ऊंच मानवा लागो अरु एक चिमटीका निमित्त कर अपना वीर्य क्षीन जानतो हूवो ऐसे आठ प्रकार ज्ञानावरनादि कर्म जीव रागद्वेष कर जीवाका ज्ञानादि आठ गुनको घाते हैं। ऐसे जानना ऐसे शिष्यने प्रश्न किया ताका गुरु उत्तर दिया सो ऐसे भव्य जीवांने अपना स्वरूप विषें लीन होनों उचित है। सिद्धांका स्वरूपमें आपना रूपमें साटस्यपनो है। सो सिद्धांका स्वरूपने ध्याय अरु निज स्वरूपका ध्यान करना घनी कहवांकर काई ऐसे ज्ञाता स्वभावकू ज्ञाता जानें हैं। संपूर्न। आगे कुदेवादिकका स्वरूप निर्णय करिये है। सो हे भव्य तुं सूण सो देखो जगमें भी यह न्याय है। के तो आपसों गुनकर अधिक होयके आपनो उपगारी होय ताकों नमस्कार करिये वा पूजिये जैसे राजादिक तो गुणाकर अधिक हैं। अरु माता पिता उपगारी हैं। ताकरि जगत पूजे है अरु वंदे है। ऐसा नाहीं कि राजादिक बड़े पुरुष रैयत वा रंक पुरुषने वंदे वा पूजे अरु माता पिता पुत्रादिकूं वंदे या पूजें सो तो देखिये नाहीं अरु कदाच मतिकी मंदता

कर राजादिक बड़े पुरुष होय कर नीच पुरुषको पूजे अरु मातापिता भी बुद्धिकी हीनता कर पुत्रादिककूं पूजे तो वह जगतमें हास्यकर निन्दाकू पावे कौन दृष्टान्त जैसे सिंह होय अरु स्यालकी सरन चाहे। तो वह हास्यने पावे ही पावे यह जुगत है ही तासूं धर्ममें अरहंतादिक उत्कृष्ट देवने छोड़ अरु कुदेवने पूजे तो काई ई लोकमें हास्यने न पावे पावे ही पावे। अरु परलोकमें नाना प्रकारके नर्कादिकके दुख अरु क्लेसकूं नाहीं सहे अवस्य सहे। सो क्यों सहे सो कहिये है। जो आठ कर्मोमें मोह नामा कर्म सर्व कर्मोका राजा है। ताके दोय भेद हैं एक तो चारित्रमोह एक दर्शनमोह सो चारित्रमोह तो ई जीवको नाना प्रकारकी कषायां कर आकुलता उपजावे है। सो कैसी है आकुलता और कैसा है याका फल सो कोई जीव नाना प्रकार संयम कर संयुक्त है। अरु वा विषें कषाय पावजे हैं तो दीर्घकालके संयमादिक कर संचित पुन्य जैसे अग्निमें रुई भस्म होय तैसे कषायरूपी अग्नि विषें पुन्यरूपी रुई भस्म होय है अरु कषायवान पुरुष ई जगतमें महां निन्दाने पावे है। बहुरि कैसी है कषाय षोटी स्त्रीका सेवनसूं भी ताका पाप अनन्त गुना पाप मिथ्यातका है। अरु यो जीव अनादिकालको एक मिथ्यात कर ई संसार विषें भ्रमें है। सो मिथ्यात उपरान्त और संसार विषें उत्कृष्ट पाप है नाहीं। अरु सास्त्रों विषें एक मिथ्यातको ही पाप लिख्या है। सो जाने मिथ्यात्वका नास किया ताने सर्व पाप नास किया अरु संसारका नास किया सो ऐसा जान सर्व प्रकार कुदेव कुगुरु कुशास्त्रका त्याग करना। सो त्याग कहा कि देव अर्हंत गुरु निर्ग्रंथ तिल तुसमात्र परिग्रहसों रहित ऐसे

अरु धर्म जिनप्रनीत दयामयी वीतराग सिवाय सर्वको दूर हीं तैं तजना प्रान जाय तो जावो पन नमस्कार करना उचित नाहीं। आगे अर्हंतादिकका स्वरूप वर्नन करिये है। सो कैसे हैं अरहन्त प्रथम तो सर्वज्ञ हैं। जाका ज्ञानमें समस्त लोकालोकके चराचर पदार्थ तीन काल संबंधी एक सययमें झलके हैं। ऐसी तो ज्ञानकी प्रभुत्व शक्ति है। अरु वीतराग हैं। सर्वज्ञ होता अरु वीतराग न होता तो राग द्वेष कर पदार्थका सरूप और सूं और कहता तो वा विषें परमेश्वरपना संभवता नाहीं। अरु वीतराग होता सर्वज्ञ न होता तो भी पदार्थका स्वरूप यथार्थ न कहता तो ऐसा दोष कर संयुक्त ताको परमेश्वर कौन मानता तासूं तामें ये दोष होय एक तो रागद्वेष अरु अज्ञानपनों ते परमेश्वर नाहीं तातैं ये दोषन कर रहित अर्हंत देव ही हैं। सोई उत्कृष्ट हैं सोई सर्व प्रकार पूज्य हैं। अरु सर्वज्ञ वीतराग होता अरु तारवाने समर्थ न होता तो भी प्रभुत्वपनामें कसर पड़ती। सो तो जामें तारन शक्ति ऐसी है। जो कोई जीव तो भगवानका सुमरन कर ही भव समुद्रतें तिरे कैई भक्ति कर तिरें कैई स्तुति कर तिरें इत्यादि एक एक गुनकूं आराध मुक्ति पधारें परन्तु प्रभूकूं खेद रंच भी न भया सो महंत पुरषनकी अचिंत सक्ति है। जो आपने तो उपाय करनो पड़े नाहीं। अरु ताका अतिशय कर सेवकजनाका स्वयमेव भला हो जाय। अरु प्रतिकूल पुरषांका स्वयमेव बुरा हो जाय अरु शक्तिहीन पुरुष हैं ते डीला जांय अरु पेलाका भला बुरा करे तब वेसूं कार्य सिद्ध होय। सो भी नेम नाहीं होय व न भी होय।

इत्यादि अरहन्तदेव अनेक गुन कर सोभित हैं। बहुरि आगे जिनवानीके अनुसार ऐसा जो जैन सिद्धान्त सर्व दोष कर रहित ता विषें सर्व जीवांका हितकारी उपदेस है। अरु तामें सर्वतत्वका निरूपन है। अरु ता विषैं मोक्षमार्गका मोक्षस्वरूपका वर्नन है। अरु पूर्वापरि दोष कर रहित है इत्यादि अनेक महिमां कर सोभित जिन सासन है। आगे निर्ग्रन्थ गुरुका स्वरूप कहिये है सो राजलक्ष्मीने छोड़ मोक्षके अर्थ दीक्षा धरी है। अरु अणिमा महिमा आदि दे रिद्धि जाके फुरी हैं। अरु मति श्रुति अवधि मनःपर्यय ज्ञान कर संयुक्त है। अरु महां दुद्धर तपकर संयुक्त है। अरु निःकषाय है दयालु है छयालीस दोष टाल आहार लेहे। अरु अठाइस मूल गुन ता विषें अतीचार भी न लगावे है ईर्या समितिने पालता थका साड़ा तीन हाथ धरती सोधता विहार करे। भावार्थ—काहू जीवने विरोधे नाहीं। भाषा समिति कर हित मित वचन बोले है। ताका वचन कर कोई जीव दुख न पावे ऐसे सर्व जीवाकी रक्षा विषें तत्पर है ऐसा सर्वोत्कृष्ट गुरुदेव धर्म ताने छोड़ विचिक्षन पुरुष हैं ते कुदेवादिकने कैसे पूजें परतक्षही जगतके विषें जाकी हीनता देखिये है। जे जे जगतमें रागद्वेष आदि औगुन हैं ते ते सर्वसे हिंसा झूठ चोरी कुसील आरंभ परिग्रह आदि जे महां पाप ताकर ही स्वर्गादिकका सुखने पावे तो नर्कादिकका दुख कौन कर पावे सो तो देखिये नाहीं। और कहिये है देखो भाई जगतमें उत्कृष्ट उत्कृष्ट वस्तु थोरी है। सो प्रतक्ष देखिये है। हीरा मानिक पन्ना जगतमें थोड़ा है कंकर पत्थर बहुत है। बहुरि राजा पातशाह

आदि महंत पुरुष थोड़ा है रंक आदि शूद्र पुरुष बहुत हैं। अरु धर्मात्मा पुरुष थोड़ा हैं पापी पुरुष बहुत हैं ऐसा ऐसा अनादि निधन वस्तुका स्वभाव स्वयमेव बन्या है। ता स्वभाव मेंटना सक कोई नाहीं। तासों तीर्थंकर देव उत्कृष्ट हैं सो एक क्षेत्रमें एक कोई कालमें एक पाजे अरु कुदेवादिकका वृंद कहिये समूह वर्तमान कालमें बहुत पाजे। कैसा कैसा कुदेवाने पूजें छें। परस्पर रागी द्वेषी वे तो कहे मोनें पूजो अरु पूजवावाला कने खावांकूं मांगे अरु जा कहे मैं घना दिनका भूखा छूं। सो वे ही भूखा तो औराने उत्कृष्ट वस्तु देवां समर्थ कैसे होंय। जैसे कोई रंक पुरुष क्षुधा कर पीड़ित घर घर अन्यका दाना वा रोटीका टूंक झूंठा मांगता फिरे। अरु कोई अज्ञानी पुरुष वा कने उत्कृष्ट धनादिक सामग्री मांगे वाके अर्थ वाकी सेवा करे तो वह पुरुष जगतमें हास्य न पावै पावै ही तासूं श्रीगुरु कहे हैं। हे भाई तू मोहके वस कर आंख्या देखी वस्तुने झूठी मत माने यह जीव ऐसी भ्रम बुद्धि कर अनादि कालका संसारमें भूला रुले कैसे रुले है। जैसे कोई पुरुषके दाहज्वरका तीव्र रोग होय ताकों कोई अज्ञानी कुवैद्य तीव्र उष्ण औषध देय तो वह रागी कैसे शान्तिता पावे त्यों ही ये जीव अनादि तैं मोहकर दग्ध भया है। सो मोहकी वासना तो या जीवके सर्वस बिना उपदेसा ही बनी रहे है। ताकर तो आकुल व्याकुल महादुखी है ही। फेर ऊपर सों ग्रहीत मिथ्यातका फल अनन्त गुना खोटा है। सो तो गृहीत मिथ्यात द्रव्य लिंगी मुनि सर्व प्रकार छोड़े हैं अरु ग्रहीत मिथ्यात ताके भी अनन्तवें भाग ऐसा हलका अग्रहीत मिथ्यात ताके पावजे

है अरु नाना प्रकार दुद्धर दुद्धर तपश्चरन करे है। अरु अठाईस मूल गुन पाले है बाईस परीसह सहे हैं। अरु छयालीस दोष टार आहार ले है अरु अंसमात्र कषाय न करे। सर्व जीवाके रक्षपाल होय जगतमें प्रवर्त अरु नाना प्रकारके शील संयमादि गुन कर भूषित है। अरु नदी पर्वत गुफा मसान निर्जन सूका बन तामें जाय ध्यान करें। अरु जाके एक मोक्षहीकी अभिलाषा अरु संसार सों भयभीत एक मोक्षहीके अर्थ ही राजविभूतिने छोड़ दिक्षा धरी है। ऐसे होते संते भी मोक्ष कदाच पावे नाहीं। करना ही पावे याके महां सूक्ष्म केवलज्ञान गम्य ऐसा मिथ्यातका अंस लगा है। तातैं मोक्ष पावे नाहीं झूठा ही भ्रम बुद्धिकर मान्या तो गर्न सरे नाहीं। कौन दृष्टान्त जैसे बालक अज्ञान माटीका हाथी घोड़ा बैल बनावे अरु वाको सांचा मानकर वासूं बहुत प्रीत करे अरुवा सामग्रीकूं पाय बहुत खुसी होय पाछे वाकों कोई फोड़े ले जाय तो बहुत सोक करे रोवे छाती माथा आदि कूटे वाके ऐसा ज्ञान नाहीं कि ये तो झूठा विकल्प हैं। त्यों ही यह अज्ञानी पुरुष सोई हुवा बालक सो कुदेवादिकने तारन तरन जान सेवे है। ऐसा ज्ञान नाहीं के ऐही तिरवाने असमर्थ तो हमें कैसे तारसी। बहुरि और दृष्टान्त कहिये है। कोई पुरुष कांच खंडने पाइवा विषे चिन्तामन रत्नकी बुद्धि करै है अरु या जानें यह चिन्तामन रतन है। सो मोनें बहुत सुखकारी होसी यइ मोने मनवांछित फल देसी सो भ्रम बुद्धि कर कांचने चिन्तामन मानो ता कर काईं हुवो अरु कांई वेसूं मनवांछित फलकी सिद्ध हुई कदाचि न होई काम पड़वा पर बजारमें

बेचसी तो कौड़ी भी प्राप्त न होसी। त्योंही कुदेवादिकने आछा जान जीव सेवें हैं। पन वासूं किछू भी गरज सरे नाहीं। अपूठा परलोकमें नाना प्रकारके नरकादिकके दुःख सहना पड़े तासों कुदेवादिकका सेवन तो दूर ही रहो परन्तु वा निकट रहना भी उचित नाहीं। जैसे सर्पादिक क्रूर जनावराका संसर्ग उचित नाहीं। त्योंही कुदेवादिकका संसर्ग उचित नाहीं। सो सर्पादिकमें कुदेवादिकमें इतना विशेष है। सर्पादिकका संगति सूं इही प्रान नास होय अरु कुदेवादिकके सेवनतैं पर्याय पर्यायमें अनन्त वार प्रानका नास होय। अरु नाना प्रकार जीव नरक निगोदके दुखकूं सहे। तातैं सर्पादिकक सेवन श्रेष्ठ है अरु कुदेवादिकका सेवन अनिष्ट जानना तातैं विचक्षन पुरुष अपना हेतने वांक्षते शीघ्र ही कुदेवादिकका सेवन जो बहुरि देखो ये संसारमें ये जीव ऐसा स्याना है जो दमड़ीकी हांड़ी खरीदे तो तीन टंकार दे सर्व ठौर साजी देख ग्रहण करे अरु धर्म सारखी उत्कृष्ट वस्तुका सेवन कर अनंत संसारके दुःखसूं छूटे ताका अंगीकार करनेमें अंसमात्र भी परिक्षा करे नाहीं। सो लोकमें गाड़री प्रवाहकी नाईं और लोक पूजें। तैसे ही ये भी पूजें सो कैसा है गाड़री प्रवाह जो गाड़रके ऐसा विचार नाहीं जो आगे खाई है कि कूपतैं कि सिंह है कि व्याघ्र है ऐसा विचार विना एक गाड़रीके पीछे सर्व गाड़री चली जांय। सो अगली गाड़र खाई कूपमें पड़े तो पिछली भी जाय पड़े अरु जे अगली गाड़र नाहर व्याघ्रका स्थानकमें जाय पड़े त्यों ही पिछली भी जाय पड़े त्योंही ये संसारी जीव हैं। जो कुलका

आगे खोटे मारग चाल्या तो ये भी खोटे मारग चाले। अरु बड़ा आछा मारग चाले तो आछा चाले पन याके ऐसा ज्ञान नाहीं के आछा मारग कौन अरु खोटा मारग कौन ऐसा ज्ञान हो तो खोटाकूं छोड़ आछा ग्रहण करे। जगतमें एक ज्ञानहीकी बड़ाई है जामें ज्ञान विशेष है सोई जग कर पूज्य है। ताहीकूं सब सेवे हैं अरु ज्ञान ही जीवनका निज स्वभाव है जासूं धर्म परीक्षा कर ग्रहन करनें। अब आगे कुदेवादिकका लक्षन कहिये है सो हे भव्य तूं जान जामें रागद्वेष होय सर्वज्ञपनाका अभाव होइ ते ते सर्व कुदेवादिक जानना कहां ताईं याका वर्णन न करिये दोय चार दस बीस तरहके होयं तो कहना भी आवे। तातैं ऐसा निश्चय करना सर्वज्ञ वीतराग हैं—तेई देव हैं। अरु ताहीका वचन अनुसार सास्त्र हैं। सो सास्त्रानुसार प्रवर्ते सो धर्म है अरु ताही अनुसार दस प्रकार बाह्य परिग्रह चौदह प्रकार अंतरंग परिग्रह रहित निर्ग्रंथ बारके अग्रभागके सौमें भाग भी परिग्रह नाहीं। वीतराग स्वरूपके धारक तेई निर्ग्रंथ गुरु हैं। आप भव समुद्रतैं तिरे औरांने तारे धर्मसे ये इस लोकमें जस बड़ाई किछू चाहें नाहीं। अरु परलोकमें स्वर्गादिककूं भी चाहें नाहीं। एक मुक्ति हू कों चाहें ऐसा देव गुरु धर्म उपरान्त अवशेष रहा सो सर्व कुगुरु कुधर्म कुदेव जानना आगे और कहिये है। केई तो खुदाकूं सर्व सृष्टिका करता माने हैं। कैइ ब्रह्मा, बिष्नु, महेशकूं भेले करता माने हैं। कोई एकला नारायनकूं कर्ता माने हैं कैई एक शंकर कहिये महादेव ताकों करता माने हैं। कैई बड़ी भवानीकूं

कर्ता माने हैं। केई परमब्रह्मकूं कर्ता माने हैं इत्यादि कर्ता माने ताको कहिये है। जैसा येही तीन लोकका कर्ता है तो एक नें तीन लोकका कर्ता कैसे कहा अरु खुदा ही तीन लोकको कर्ता है तो हिन्दुयोंने क्यों किया अरु बिस्नु आदि ही तीन लोकका कर्ता है तो तुरक किसने किया हिन्दू तो खुदाकी निन्दा करे अरु तुरक बिस्नुकी निन्दा करे कोई कहे करती बार खबर न करी त कूं कहिये है। करती बखत खबर न रही तो परमेश्वर क्यों कर ठहराया जाके एता ही भी ज्ञान नाहीं। अरु तीन लोकका कर्ता ही तो कोई दुःखी कोई सुखी कोई नर कोई तिर्यंच कोई नारक कोई देव ऐसा नाना प्रकारका जीव पैदा क्यों किया तैसा तैसा ही सुख दुःख फल देवांके अनुसार पैदा किया तो यामें परमेश्वरका करतव्य कैसे रहा कर्महीका करतव्य रहा सो के-तो परमेश्वरहीका करतव्य कहो के कर्मका ही करतव्य कहो के दोईका भेला ही करतव्य कहो। हमारी मां अरु बांझ ऐसे तो बने नाहीं। बहुरि जीव तो पहिली न होता शुभाशुभ कर्मकूं न बांधा यामें भी कर्ताका अभाव भया बहुरि जगतमें दोई चार कार्य करिये। तो भी आकुलताका सद्भाव विशेष होय अरु आकुलता है तहां तहां बड़ा दुःख है। अरु जा परमेश्वरकूं तीन लोकमें अनन्त जीव व अनन्त पुद्गलादि पदार्थ ताका कर्ता होता अरु अनेक प्रकार जुदा जुदा परनमता अरु ताकी जुदी जुदी याद राखनी अरु जुदा जुदा सुख दुःख देना अपना संकलेश परनाम करना, ऐसा कर्ता होय ताका दुःखकी काईं पूंछनी सर्वोत्कृष्ट दुःख ताहीके बाटें आया तो परमेश्वरपना काहेका रहा बहुरि एक पुरुषसूं

ऐसा कार्य कैसे बने। कोई कहेगा जैसा राजाके जुदे जुदे चाकरन कर अनेक प्रकारका कार्य कर लेय अरु राजा सुखी भया महलमें तिष्टें है। तैसे ही परमेश्वरके अनेक चाकर हैं। ते सृष्टिकूं उपजावें हैं विनासें हैं। परमेश्वर सुखसूं वैकुंठमें तिष्टे है ताकूं कहिये है। रे भाई ऐसे संभवे नाहीं जाका चाकर कर्ता भया तो परमेश्वरको कर्ता काहेको कहिये अरु परमेश्वर वे कुटुम्बमें ही व्यस्ता तिष्टे है। तो ऐसा कैसे कहिये परमेश्वर मक्ष कक्ष आदि बैरियोंका मारवां वास्ते वा भक्तन की सहाई वास्ते चौवीस अवतार धरया अरु घना भक्तिको खेत आन पजायो अरु नरसिंह भक्ति आय दर्सन दियो अरु द्रौपतीको चीर बढ़ायो अरु टीटईके अंडाका सहाई कर अरु हस्तीने कीचमेंसो निकालो। अरु भीलनीका उसेया फल खाया इत्यादि कार्य ऐठे आया विना कूंने किया सो ऐसा विरुद्ध वचन यहां संभवे नाहीं बहुरि कोई यह कहसी परमेश्वरकी ऐसी ही लीला छे ताको कहिये है। रे भाई लीला तो सो कहिये जामें महानन्द उपजे सो सर्व जनकूं प्रिय लागे परमेश्वरकूं तो ऐसा चाहिये जो सर्व हीका भला करै। ऐसा नाहीं के वाहींकू तो पैदा करे वाहीकूं नास करे यह परमेश्वरपना कैसा सामान्य पुरुष भी ऐसा कार्य न विचारे बहुरि कोई सर्व जगतकूं शून्य कहिये नास माने है। ताकूं कहिये है रे भाई तू सर्व जगतकूं नास माने तो तूं नास्तिका कहनहारा कोई वस्तु है। ऐसे ही अनन्त जीव अनन्त पुद्गल आदि प्रमान कर वस्तु प्रतक्ष देखिये है ताकूं नास्ति कैसे कहिये। बहुरि कोई ऐसे कहें हैं जीव तो छिन छिनमें उपजै अरु छिन छिनमें विनसे है।

त.कूं कहिये है। रे भाई छिन छिनमें जीव उपजे है तो कालकी बात आजकूंने जानी। अरु में फलाना छा सो मर देव हू छो ऐसा कूंने कहा बहुरि कोई ऐसे कहे प्रथ्वी अप वायु तेज आकास ये पांच तत्व मिल एक चैतन्य शक्ति उपजावे है। जैसे हल्दी साजी मिल लाल रंग उपजावे। अथवा नील हरदी मिल हरा रंग उपजावे ताकूं कहिये है रे भाई प्रथ्वी आदि पांचों तत्व तें कहा सो तो यह अचेतन द्रव्य है सो या कर अचेतन शक्ति उपजे है। यह नेम है। सो तो प्रत्यक्ष आखां देखिये है अरु नाना प्रकारके मंत्र जंत्र तंत्र आदिके धारक जे किस ही पुद्गल द्रव्यको नाना प्रकार परणवावे हैं, ऐसा आज पहिली कोई देख्यो नाहीं, फलानों देव विद्याधर मंत्र औषधि पंच आदि पुद्गलको चैतन्य रूप परनवायो सो तो देखो नाहीं अरु आकाश अमूर्तीक अरु प्रथ्वी आदि चारों तत्व मूर्तीक पदार्थ कैसे निपजै। ऐसे होय तो आकाश पुद्गलका तो नास होय अरु आकाश पुद्गलकी जांयगां सर्व चैतन्य द्रव्य होय जाय सो तो देखी नांही चैतन्य पुद्गल सर्व न्यारा२ पदार्थ आख्यां देखिये है। ताकूं झूंठा कैसे मानिये। बहुरि कोई ऐसे कहे हैं एक ब्रह्म सर्व व्यापी है। जलमें थलमें सर्व घट पटादि में एक ब्रह्मकी सत्ता है। ताकूं कहिये हैरे भाई ऐसा होय तो बड़ा दोष उपजै कैई पदार्थ चैतन्य देखिये है कई पदार्थ अचैतन्य हैं। सो एक पदार्थ चे तन अचेतन कैसे होय अरु चेतन पदार्थ भी नाना प्रकारके देखिये है अरु अचेतन पदार्थ भी बहुधा देखिये है। सो सबनकूं एक कैसे मानिये बहुरि जो एक ही पदार्थ होय ताकूं कहिये कि फलानो नरक गयो, फलानो स्वर्ग गयो, फलानो

मनुष्य भयो, फलानो तिर्यंच भयो, फलानो मुक्ति गयो, फलानो दुखी, फलानो सुखी, फलानो चैतन्य, फलानो अचैतन्य इत्यादि जुदे जुदे पदार्थ जगतमें देखिये है। ताकूं झूठा कैसे कहिये अरु जे सर्व जीव पुद्गल एकसा होता तो एकके दुःखी होते सर्व दुःखी होते अरु एकका सुखी होते सारा ही सुखी होय। अरु चैतन्य पदार्थ छे ताके भी सुख दुःख होय सो तो देख्या नाहीं। बहुरि जे सर्व ही पदार्थकी एक सत्ता होय तो अनेक नामकूं पावे अरु फलाना खोटा कर्म किया फलाना चोखा किया ऐसा क्यूंने कहना पड़े सर्व मई व्यापक एक पदार्थ हूवा तो आपकूं आप दुःख कैसे दिया। सो कोई त्रैलोकमें नाहीं जो आपकूं आप दुःख दिया चाहे। जो आपकूं आप दुःख देवामें सिद्ध होय तो सर्व जीव दुःखने कैसे चाहें तासूं नाना प्रकारके जुदा जुदा पदार्थ स्वयमेव अनादि निधन बन्यां है। कोई किसीका कर्ता नाहीं सर्व व्यापी एक ब्रह्मका कहवामें बड़ी विपरीति प्रत्यक्ष दीखे है। तातैं हे सूक्ष्म बुद्धि तेरा श्रद्धान मिथ्या है प्रत्यक्ष वस्तु आख्यां देखिये तामें संदेह काईं तामें प्रश्न काईं आखां देखी वस्तुने भूले है। जो प्रत्यक्ष मर गया ताकूं आन माने तो वा सारखा मूर्ख संसारमें और नाहीं। अरु तूं यह कहसी मैं काई करूं फलाना शास्त्रमें कही है यह सर्वज्ञका वचन है ताकूं झूठा कैसे मानियें। ताकूं कहिये है रे भाई प्रत्यक्ष प्रमान विरुद्ध होय ताका आगम साक्षी नाहीं। अरु वे आगमका कर्ता प्रमानीक पुरुष नाहीं। यह निःसंदेह है जाका आगम प्रत्यक्ष प्रमाणसों मिले सो आगम प्रमान है अरु वह आगमका कर्ता पुरुष प्रमान है।

अरु पुरुष प्रमानका वचन प्रमान सो पुरुष प्रमान होय। तासों जो कोई सर्वज्ञ वीतराग है तेई पुरुष प्रमान करवो जोग्य है सो सर्वज्ञका वचनमें तो यो कहा है। जीव पुद्गल धर्म अधर्म आकाश काल ये छहों द्रव्य मिल त्रैलोक निपजा है ये छहों द्रव्य अनादि निधन हैं इनका कोई कर्ता नाहीं। इनका कोई कर्ता होता तो कर्ता किसका किया था अरु कोई कहे कर्ता तो अनादि निधन हैं तो ये छहों द्रव्य भी अनादि निधन हैं। तासों यह नेम ठहरा कोई पदार्थ किसी पदार्थका कर्ता नाहीं। सारा पदार्थ अपने अपने स्वभावका कर्ता है। अरु अपने अपने स्वभाव रूप स्वयमेव परनवे है। चैतन्य द्रव्य तो चैतन्य रूप ही परनवे अरु अचेतन मूर्तीक द्रव्य अचेतन रूप ही परनवे मूर्तीक द्रव्य रूप रहे। अमूर्तीक द्रव्य अमूर्तीक रूप रहे अरु जीव द्रव्य चैतन्य रूप रहे पुद्गल द्रव्य जड़ स्वभाव है। धर्म द्रव्यका चलनेमें सहकारी स्वभाव है अरु अधर्म द्रव्यका स्थिरकरन स्वभाव है जीव द्रव्य तो अनन्त प्रदेशी है पुद्गल अवगाहन स्वभाव है। कालद्रव्यका वर्तना स्वभाव है जीव द्रव्य तो अनन्त है पुद्गल तासूं अनन्तानंत गुना है। अधर्म द्रव्य धर्म द्रव्य एकही है। आकास द्रव्य भी एकही है। अरु कालकी अनु भी अस्थित है। एक एक जीव द्रव्यांका प्रदेस तीन तीन लोक प्रमान है। पन संकोच विस्तार शक्ति है। तातैं कर्मके निमित्तकर सदैव शरीरका आकार प्रमान है। एक केवल समुद्घात पूरन समयमें तीन लोक प्रमान होय अन्यकालमें नेम कर शरीरके प्रमान रहे। अवगाहना शक्ति कर तीन लोक प्रमान आत्माका आकार शरीरकी अवगाहना दिषें समाय जाय। अरु

पुद्गलका आकार एक रुईका तारका अग्र भागके असंख्यातवें भाग गोल षट्कोननै धरै है। अरु धर्म द्रव्य अधर्म द्रव्यका आकार तीन लोकके प्रमान है। अरु आकास लोकालोक प्रमान है नांही वास्ते याकूं सर्व व्यापी कहिये अरु काल अमूर्तीक पुद्गल साद्दस्य-कालानु धारे है। बहुरि जीव तो चैतन्य द्रव्य है अवशेष पांचों अचेतन द्रव्य हैं। बहुरि पुद्गल तो मूर्तीक द्रव्य है। बाकी पांचों अमूर्तीक द्रव्य हैं। बहुरि आकास लोक अलोक विषें सारे पावजे है। वा पांचों लोक विषें पावजे है। बहुरि जीव पुद्गल धर्म द्रव्यका निमित्त कर क्षेत्र सों क्षेत्रांतर गमनागमन करे है। अधर्म द्रव्यका निमित्त कर स्थित भी करे अरु जीव पुद्गल विना अवशेष चार द्रव्य अनादि निधन ध्रुव कहिये स्थिर रूप तिष्टे हैं। बहुरि जीव पुद्गल तो स्वभाव विभाव रूप परनवे हैं। अवसेष चार द्रव्य स्वभाव रूप ही परनवें विभावतारूप नाहीं परनमें बहुरि जीव तो सुख दुखरूप परनमे हैं अवशेष पाचों सुख दुखरूप नाहीं परनवे हैं बहुरि जीव तो आप सहित सर्वका स्वभाव ताकों भिन्न भिन्न जानें है अवशेष पांचों द्रव्य आपको जाने न परको जानें बहुरि काल द्रव्यका निमित्त कर पांचों द्रव्य परनमें है। अरु काल द्रव्य आपही कर आप परनवे हैं। बहुरि जीव पुद्गल द्रव्यका निमित्त कर रागादिक स्वभावरूप परनवे है। अरु पुद्गल-का निमित्तकर जीव असुभभाव रूप परनवे है बहुरि जीव कर्माका निमित्त कर नाना प्रकारके दुखकूं सहे है। वा संसार विषें नाना प्रकारकी पर्यायकूं धरे है। अरु भ्रमन करे है अरु कर्मका निमित्त करही ज्ञान आछादया जाय है। ताहीको उपाधिक भाव कहिये है।

अरु कर्म रहित हूवा जीव केवल ज्ञान संयुक्त अनंत सुखका भोक्ता हो है। अरु तीन काल संबंधी समस्त चराचर पदार्थ एक समय विषें जुगपत जाने है। अरु दोई परमान आदि स्कंधकूं असुद्ध पुद्गल कहिये है। अरु एकली परमानूंने सुद्ध पुद्गलद्रव्य कहिये है। बहुरि तीन लोक पवनका वातविलाके आधार है। अरु धर्म द्रव्य अधर्म द्रव्यका सहाई कहिये निमित्त है। अरु तीन लोक परमानूनका एक महास्कंध नामा स्कंद है। ताकर तीन लोक जड़ रहा है। वे महास्कंध केताइक तो सूक्ष्मरूप हैं। केताइक बादर रूप हैं। ऐसा तीन लोकका कारन जानना यहां कोई कहे ताका कारन तो कहा पन ऐता तीन लोकका बोझ अधर कैसे रहे। ताकूं समझाइये है रे भाई ए जोतिषी देवांका असंख्यात विमान अधर देखिये है अर बड़ा बड़ा पखेरु अधर आकासमें उड़ता देखिये है। सो ये तो नीका बने हैं अरु वासुकीराजाके आधारलोक मानिये सो यह न संभवे। जो वासुकी विना आधार काहे पै रहे अरु जो कदाच वासुकीकूं औरके आधार माने तो यामें वासुकीका कहा करतव्य रहा अनुक्रमतें परंपराय आधारका अनुक्रम आया है। तातैं यह नेम संभवै नाहीं पूर्वे कहा सोई संभवै है। ये छहों द्रव्यका रचना जाननी ये छहों द्रव्य उपरान्त और कोई नाहीं। अरु छहों द्रव्य मांहीसूं एकको कर्ता न मानिये। तो बने नाहीं सो ये न्याय संभवै है। ऐसे ही अनुमान प्रमानमें आवै है। याही तैं आज्ञा प्रधानीसे परिक्षा प्रधानी सिरे कहा है। अरु परिक्षा प्रधान पुरुषहीका कार्य सिद्ध होय है। ऐसे षट् मत विषें जुदा जुदा पदार्थोंका स्वरूप कहा है। परन्तु

बुद्धिवान पुरुष ऐसे विचारे छहों मत विषें कोई एक मत सांचा होसी। छहों तो सांचा नाहीं छहोंमें परस्पर विरुद्ध है। तासूं किसा आगमका आज्ञा मानिये सो यातो बनें नाहीं तासों परिक्षा करवो उचित है परिक्षा किया अनुमान बात मिलसी सोई प्रमान छै। सोई जो छहों मतमें कोई सर्वज्ञ वीतराग है। ताका मतमें पदार्थाका स्वरूप कहा छे सोई उनमें मिले है तातैं सर्वज्ञ वीतरागका मत प्रमान है। और मतमें वस्तुका स्वरूप कहा है सो उन्मानमें तुलै नाहीं। तातैं अप्रमान है म्हारे तो रागद्वेषका अभाव छे जैसा वस्तुका स्वरूप छा तैसा ही अनुमान प्रमान किया हमारे रागद्वेष होता तो मैं भी अन्यथा व्याख्यान करता रागद्वेष गया अन्यथा श्रद्धान होय नाहीं जैसाने जैसा कहिये तो रागद्वेष नाहीं। रागद्वेष तो कहिये जो वस्तुका स्वरूप और अरु रागद्वेष कर कहे तो और सो म्हारे ज्ञानावरन कर्मका क्षयोपसम करि ज्ञान यथार्थ भया हैं। अरु मैं भी सर्वज्ञ हों केवल ज्ञानी सारसो हमारो निजस्वरूप है। अवार चार दिन कर्माका उदय कर ज्ञानकी हीनता दीसे है। तो काई हूवो वस्तुका द्रव्यत्व स्वभावमें फेर नाहीं अब भी हमारे ज्ञान छे सो केवल ज्ञानको बीज छै। तातैं म्हारी बुद्धि ठीक छे जामे संदेह नाहीं। ऐसा सामान्यपने षट मतका स्वरूप कहा आगे संसारी जीव चन्द्रमा सूर्य आदि देवकूं तरनतारन माने है ताकूं कहिये हैं ये चन्द्रमा सूर्य आदि जगतकों दीसे हैं। सो ये तो विमान है सो अनादि निधन सास्वता है। या ऊपर चन्द्रमा सूर्य अनन्ता होय गया चन्द्रमाका विमान सामानपने अठारासै कोस चौड़ा है। सूर्यका सौ कोस

चौड़ा है। अरु ग्रह नक्षत्र ताराका विमान पांचसै कोस जघन्य सवासै कोस चौड़ा है। अरु आधा गोलाके आकार गोल है। अधोभागमें सकड़ा है ऊपर चौड़ा है। ये विमान पांचों ही जातिके जोतिषी देवनके हैं। रतनमई इन ऊपर नगर हैं तिनमें रतनमई खाई हैं। रतनमई कोट रतनमई दरवाजा रतनमई महल अनेक खन संयुक्त ऊंचा बड़ा विस्तारने लियां विमान विषैं स्थित है। ता नगरमें असंख्यात देवांगना वसें हैं। ताका स्वामी ज्योतिषी देव हैं। बारा वरसके राजपुत्र पुत्री सादृस्य मनुष्य कैसा आकार भोग भोगते तिष्टें हैं ऐता विशेष मनुष्यका शरीर हाड़ मांस लोहू मलमूत्र संयुक्त है ज्योतिषी देवका शरीर महां सुन्दर रतनमई सुगंधमई कोमल आदि अनेक गुनकर संयुक्त है। देवनके माथे मुकट है रतनमई वस्त्र पहरे हैं। वा अनेक रतनमई आभूषन पहिनें वा रतनमई महां सुगंध पहुपनकी माला पहरें ताका शरीरमें क्षुधा तृषादि कोई प्रकारके रोग नाहीं। बाल दसावत आयु पर्जंत देव देवांगनाकी एकसी दसा रहे है। भावार्थ-देवांके जरा न व्यापे है। बहुरि विमानकी भूमकामें नाना प्रकारकी पन्ना सादृस्य हरयाली दीसे अरु नाना प्रकारके बन बावड़ी नदी तालाव कुंड पर्वत आदि अनेक प्रकारकी सोभा पाजे बहुरि कठैं ही पहुप बाड़ी सोभे कहीं नव निधि वा चिन्तामन रतन सोभें। कहीं पन्ना मानक हीरा आदि नानाप्रकारके रतन ताके पुंज सोभैं हैं। अरु अठे मध्यलोकमें बड़ा मंडलेश्वर राजा राज करे है। तैसे ही विमानमें जोतिषी देवराज करे हैं। ताका पुन्य चक्रवर्तसूं अनन्तगुना अधिक है। ताका वर्नन कहां ताईं कहिये

ज्योतिषी देव भी असंख्यात वर्षका आयु पूरी कर चयें हैं सो मनुष्य वा तिर्यंच आन उपजै हैं। सो ज्योतिषीदेव कोईने तारवा समर्थ नाहीं। सो आपही कालके बस औरांने कैसे राखें अरु कैसे औरांकी सहाइ करें सो वस्तुका स्वभाव तो ऐसे अरु जगतके जीव भर्म बुद्धि कर मानें ऐसे सो चन्द्र सूर्यादिकका विमान आकासमें गमन करै है। सो बड़ा विमानमूं या कहे है ये चन्द्रमा सूर्य गाड़ाके पैया समान है। अरु तारा कूड़ा समान है। सो म्हें चन्द्रमा सूर्यने प्रनाम करूं यह म्हांको सहाई करसी सो अज्ञानी जीवांके ऐसा विचार नाहीं। जो दोय चार कागदाकी गुद्दी आकासमें दोसै चारसै हाथ ऊंची उड़े है। सो भी नकसी कागला सादस्य दीसे तो सोला लाख कोस तो सूर्यका विमान ऊंचा है अरु सतरा लाख आठ हजार कोस चंद्रमाका विमान ऊंचा है अरु तारोंका विमान पन्द्रा लाख असी हजार कोस ऊंचा है। सो ऐती दूरसो गाड़ाका पैया समान वा कूड़ाके प्रमान कैसे दीखती अरु ये आकास सादस्य हमारो भलो कैसे करसी और भी उदाहरन कहिये है सो देखो दोय तीन कोस वा पांच चार कोसका ऊंचा पर्वत धरतीमें नीचे तिष्ठे सो दस वीस कोस पर्यंत निजर आवे फेर न आवे। ऐसे इन्द्री ज्ञानकी ऐसी सक्ति है। तातैं घनी दूर सों निर्मल दीखे नाहीं। केवल ज्ञान अवधि ज्ञानतैं दूर प्रवर्तो सूक्ष्म वस्तु भी निर्मल दीसे है तो चन्द्रमां सूर्य ताराका विमान ऐसा छोटा होय ऐती दूर सों कैसे दीसे यह नेम है। बहुरि कोई या कहे। यह जोतिषी देव ग्रह नक्षत्र है। अरु संसारी जीवाकूं दुख देय हैं। सो जाने पूजा जाके अर्थ दान दिया सांतता होय है।

ताकूं कहिये है रे भाई तेरे भरम बुद्धि है। ये जोतिषी देवांका विमान अढ़ाई द्वीपमें मेरुसूं दूर गोलके क्षेत्रमें प्रदक्षनारूप भ्रमन करे है। तो कोईका विमान तो शीघ्र गमन करै है कोईका मंद गमन करे है। ताकी चालकूं देख अरु वाकी चालकूं देख अरु वाकी चाल विषें कोईका जन्मादिक हुआ देख विशेष ज्ञानी अगाऊ होतव्यताकूं बतावें हैं। जाका उदाहरनकू बतावें हैं। उदाहरन कहिये सामुंद्रक चिन्हकूं देख वाका होतव्य बतावे तथा सोंन असोंन बतावे तैसे ही होतव्यता बतावे, आठ प्रकारके निमित ज्ञान है। तामें एक जोतिष निमित्त ज्ञान है। ये आठ प्रकारके निमित्त ज्ञान कोई ईति भीति करवाने समर्थ तो नाहीं। जो समर्थ होय तो पूजिये जैसे हिरन स्याल कलसई इत्यादिकका सगुन अगाऊ होतव्यताका बतावनेका कारन है। सो याकों पूजिये तो काईं होतव्यता मिटे कदाच न मिटे त्यों ही जोतिषी देवांने पूजवां ताका अर्थ दान दियां ईत भीत भी अंसमात्र मिटे नाहीं। उलटा अज्ञान ताकर महा कर्मका बंध होय ताकर विशेष दुख होय दुखका देवांवालानो असुभकर्म है सो जिनेश्वरदेवकूं पूज्या शान्ति होई और उपाय त्रिकाल त्रिलोकमें नाहीं अरु जीवके भरम बुद्धि ऐसी है। जैसे कोई पुरुषके महा दाहज्वर है अरु फेर अग्नि आदि उस्नताका उपाय करे। तो पुरुष कैसे शान्तिता पावै त्यों ही मिथ्यात करतो जीव आगे ही गृसित हुआ अरु फेर मिथ्यात ही कूं सेवे तो कैसे सुख पावै। अरु कैसे याका कार्य होय बहुरि कोई महादेव कूं अजोनी शंभू मरन तारन माने है। अरु ताकर जग का नास माने हैं।

अरु याकूं महा कामी मानें हैं सो कैसा कामी माने सोई कहिये है। महादेवका आधा शरीर स्त्रीका है आधा पुरुषका है। तासूं याका-नाम अर्द्धांगी कहिये ऐसो स्त्री सों रागी है। ताकूं कहिये है रे भाई ऐसो दुष्ट सर्व सृष्टका मारवावाला अरु महां विड़रूप ऐसो पुरुष तारवा समर्थ कैसे होय। ताका नाम सुनता ही दुःख उपजै तो दर्सन कर कैसे सुख उपजै। यह जगतमें न्याय है जैसा कारन मिले तैसा ही कार्य निपजै। सो उदाहरन कहिये है जैसे अग्निका संजोगसों दाह उपजे अरु जलका संजोगसों शीतल-ता ही उपजें। अरु कुशीलवान स्त्रीका संजोगकर विकार भाव उपजै अरु शीलवान पुरुषका संजोगसूं विकार भ व विलय जाय। अरु विषय कषाय कर प्रानका नास होय अरु अमृतका पीवांकर प्रानकी रक्षा होय। सिंह व्याघ्र हस्ती सर्प चोर आदिक संजोग कर भय ताप ही उपजै। अरु दयालु साधुजनका संजोग कर निर्भै आनन्द ही उपजै। ऐसा नाहीं कि अग्निका संजोग कर तो शीतलता होय अरु जलका संजोग कर उस्नता होय। इत्यादिक जानना तासूं हे भाई हम महादेवका असल निज स्वरूप जो है सो कहिये हैं सो ये महादेव कहिये रुद्र सो ये चौथा कालमें ज्ञारा (११) उपजे हैं। ताकी उत्पति कहिये है जो जैनका निर्ग्रन्थ गुरु अरु अर्जका ऐ दोऊ भ्रष्ट होय कुशील सेवें पाछे मुनि तो ततक्षण ही प्रायश्चित्त लेय छे दोय स्थापन कर मुनिपदकूं धर शुद्ध होय। अरु अर्जिकाकूं गर्भ रहे। सो गर्भका निपात्त किया जाय नाहीं। ताते एक जायगा नव मास परजंत गर्भ बधाइ पीछे बालक भयो कोई स्त्री पुरुषने सोंप अर्जिका भी

पीछे वैसे ही दिक्षा धरे। अरु शुद्ध होय। पाछे वे बालक आठ दस वर्षका बड़ा होय तब याकूं न माय न बाप ऐसे लड़का बतलाइ हास्य करें। तब वह बालकजीके पले तीने जाय पूछें म्हारा माता पिता कौन है तब वे ज्यों का त्यों मुनि अर्जिकाका वृतान्त कहें। तब वह बालक आपना माता पिता मुनि अर्जिकाने जान वाही मुनि पास दिक्षा धरे-सो आगे तो मुनि अर्जिका-का वीर्य सों उपज्या तातैं महा पराक्रमी था ही पाछें नाना प्रकारके मुनि संबंधी तपश्चरन कर अनेक रिद्ध फुरें वा अनेक विद्या सिद्ध होय पाछें केवली व अवधि ज्ञानी मुनि—ताका मुख थकी या सुने यो महादेव स्त्रीके संयोग कर मुनिपद भृष्ट होसी। पाछे यह महांदेव मुनि भृष्ट होवाका भय थकी एकान्त जायगा ध्यान धरे पाछे होनहारका जोग कर उठां ही विद्याधराकीं कन्या आवे तहां वे स्नान आदि कीड़ा करे। तब वे कन्या कहे म्हे काईं जाना हमारां पिता जाने। तब महादेव कहे थारा पिता परनावे तब भी थें परनोली तब उन कही परनसी तब ऐसो कौन कराय वस्त्र दिया तब वे कन्या जाय अपने मातापिताने महादेव मुनिको सकल वृतान्त कहो। तब कन्याका माता पिता णे जानी यह महादेव महा पराक्रमी है। न परनायें तो महा उपद्रव करसी ऐसो जान कन्या परनाय पाछे वो महांदेव सौ स्त्रीने भोगई सो महादेव महा पराक्रमी है। सो महांदेवके वीर्यके तेज कर वे मर गईं। पाछें और भी राजपुत्री परन्या सो अनुक्रम कर सगली मर गईं पाछे अन्त समयमें एक पर्वतनामा राजाकी पुत्री पारवती परनी सो याका भोग कर या टिकी सोई पारवतीने रातदिन चाहे

जबे भोगवे। कोईकी संका राखे नाहीं तासों या विपरीतता सबै नगरका स्त्री पुरुष देखवा देस देसका राजा या बात सुन घनी दुखी हूवा अरु याका जीतवाने असमर्थ हुवा तातैं विशेष दुखी पाछे पारवतीका माता पिता पारवतीने पूछी। तूनें महादेवजीने पूंछथांसों विद्या कभी दूर रहे छे तब पारवती जानवेने पूछी तब महादेव कही। एक भोग करती वार दुर रहे छे और कभी दूर न रहे है। ऐ समाचार पारवतीने पितासूं कहा तब राजा परवत आपनी दाव जान म्हादेवने मारयो तब ईका इष्टदाता देव छानें नगरमें पीड़ा करी। अरु या कही म्हाका धनी थें मारया तव नगरका लोगा या कही मारो सो तो पीछो आवे नाहीं अब थें कहो सोही करो कब का व्यंतर देवां कही भग (योनि) सहित महादेवके लिंगकी पूजा करो तब पीड़ा-का भय थकी नगरका लोग ऐसी ही आकार बनाय पूजा करवां लागा ऐसेही व्यंतरदेवांका भय थकी केताइक काल ताईं पूजता हूवा पाछें गाड़री प्रवाह सारखो जगत है सो देखादेखी सारा मुलक पूजता हूवा सो वाही प्रवृत्त और चली आवे छे। अरु जगतके जीवांके ऐसो ज्ञान नाहीं जो मैं कौनने पूजों छों। अरु याको फल काईं छै सो मिथ्यात्वकी प्रवर्ति विना चलाई चली आवे छै अरु धर्मकी प्रवर्ति चलाई चलाई चले नाहीं सो यह न्याय ही है। संसारमें तो घना जीवानें रहनों है अरु संसारसों रहित थोड़ा जीवानें होनों छै। अरु देखो स्त्रीका स्वभाव दगा-बाज सो जगतके दिखावने ऐसी लज्या करे जो सरीरका आंगो-पांग अंस मात्र भी दिखावे नाहीं। अरु माता पिता भाई

आदिके देखता महादेवके लिंगकी अरु पारवतीकी भगकी चौहटे निसंक पूजा करें। अरु काहूकी हटकी मनें नाहीं। सो यह बात न्याय ही है सर्व संसारी जीवाके विषयका आसक्तता तो स्वयमेव मोहकर्मका उदयकर विना सिखाई बन रहे है पाछें जामें विषय पोखया जाय ऐसा कोई बतावे धर्म तो वह क्यों न करे। पन ऐसा जीवाके ज्ञान नाहीं कि जामें विषय पोख्या जाय तामें धर्म कैसे होय जो विषय कषायमें धर्म होय पाप कौन बातमें होय सो यह श्रद्धान अयुक्त है। आगे और कहे हैं कृष्ण सृष्टि-का कर्ता अरु परमेश्वर है अरु पाछे वाकूं ऐसे कहे हैं। कृष्णजी ढोर चराया अरु माखन चोर खाया अरु परस्त्रीसूं रमया पर-स्त्रीमें क्रीड़ा करी तासू कहिये हैं रे बड़ा महन्त पुरुष होय ऐसा नीच कार्य कभी न करे यह नेम है। नीच कार्य करे तो बड़ा पुरुष नाहीं कार्यके अनुसार पुरुषोंमें नीचपनों दीसे है। ऐसा नाहीं कि नीच कारज करें प्रभुता होय वा ऊंच कारज करतां प्रभुता घटे यह जगतमें प्रत्यक्ष दीखे हैं एक दोय गांवका ठाकुर होते भी ऐसा निन्द कार्य करे नाहीं। तो बड़ा प्रथ्वीपति राजा देव वा परमेश्वर होय कैसे करे यह प्रकृति स्वभाव है बालक होय तरुन अवस्था कैसा वा वृद्ध अवस्थाका कार्य न करै अरु तरुन होय बाल वा वृद्ध अवस्था कैसा कार्य न करे। वा वृद्ध होय तरुन होय बाल अवस्था कैसा कार्य न करे। इत्यादि ऐसे सर्वत्र जानना सो कृष्णजीका प्रभुत्व सक्तिका वर्नन जैन सिद्धान्त विषें वर्नन किया है। और मतोंमें ऐसा वर्नन नाहीं। सो वह कृष्ण-जी तीन खंडका स्वामी है अरु घनादेव विद्याधर अरु हजारां मुकट

बंध राजा ताकी सेवा करें अरु कोटशिला उठावां सारखो यामें बल है। नाना प्रकारकी विभूति कर संयुक्त है। अरु निकट भव्य है। शीघ्र ही तीर्थंकर पदको धर मोक्ष जासी सो भी रायराज अवस्था विषें नमस्कार करवो जोग्य नाहीं। नमस्कार करवां जोग्य दोय पद है। के तो निर्ग्रंथ गुरुके केवलज्ञानी तासूं मोक्षके अर्थ राजाने नमस्कार कैसे संभवे। और कृष्णजी गली गलीमें गोप्यां संयुक्त नाचता फिरा अरु वांसुरी बजावता फिरा इत्यादि नाना प्रकार क्रिया करी कहें सो कैसे हैं सोई कहिये है। भाईका सनेहकर बलभद्रजी स्वर्ग लोक सूं आप नाना प्रकारकी चेष्टा करी सो वह प्रवर्त चली आवे है। अरु जगतका यह स्वभाव है जैसी देखे जसी मानवा लाग जाइ नफा टोटा गिनें नाहीं सो अज्ञानताके बस जीव काई ये यथार्थ श्रद्धान न करै। अ गे और कहे हैं कि ब्रह्मा विश्नु महेस तीनोंकी स्थापना छै तीन मिल सृष्टि रची है। कैई या कहें हैं एक जोत छै तामाहि सों चोइन्द्री उतार निकस्या है कैई या कहें बड़ा बड़ी भई है कैई या कहै हैं कि चौवीस अवतार भये बतावें अरु चोईस पीर एकै कहै कहवा मात्र नामसंज्ञा है। पर वस्तु भेद नाहीं कैई गंगा जमुना सरस्वती गया गौमती इत्यादि सरताको तरन तारन मानें हैं। कई तो पुष्कर प्रयाग आदिने तरनतारन माने हैं। कैई गो आदिने तरन तारन माने हैं अरु गौ पूंछमें तेतीस कोट देव मानें कैई जल थल प्रथ्वी पवन वनसपति यानें परमेश्वरको रूप मानें कैईक भैरव क्षेत्रपाल हनूमान यानें देव माने कैई गनेसने पारवतीको पुत्र माने अरु चन्द्रमा समुद्रको पुत्र मानें ऐसा विचारे नाहीं। जो गंगादि

न्दी जड़ अचेतन कैसे तारसी अरु गाय तिर्यंच कैसे तारसी अरु ताकी पूंछमें तेतीस कोड़ देव कैसे रहसी अरु पार्वतीके हाथी पुत्र कैसे भयो अरु समुद्र तो एकेन्द्री जल ताके चन्द्रमा पुत्र कैसे होसी। केईक हनूमानकों पवनका पुत्र बतावें सो एकेन्द्री पवनके पंचेन्द्री महापराक्रमी देव सारखा मनुष्य कैसे होसी यह हनूमान ही पवनंजयनामा मंडलेश्वर राजा ताको पुत्र है। या बात संभवे है और बाल सुग्रीव हनूमानादि बांदर वंसी महापराक्रमी विद्याधर राजा हैं। सो इनको पसू रूप बनावे सो इनके असी हजार विद्या हैं। ताकर अनेक अचरजकारी चेष्टा करें कैईक या कहें ये तो बांदर हैं सो ऐसा विचारें नाहीं कि तिर्यंचके ऐसा बल पराक्रम कैस होसी अरु संग्राममें लड़वाका वा रामचन्द्रादि राजान सूं बतलावाका ज्ञान कैसे होसी अरु मनुष्यन कैसी भाषा कैसे बोलसी अरु ऐसे ही रावनादि राक्षकवंसी विद्याधरोंका राजा अरु ताकी राक्षसी विद्या आदि हजारों विद्या ताकर बहु रूप बनाय नाना भांतिकी क्रीड़ा करे ताकूं कहें ये राक्षस हैं अरु कोई या कहे कनककी लंका सो हनूमानने अग्नि सूं जारी ऐसा विचारे नाहीं सुवर्ण की छी तो अग्नि सो कैसे जरी अरु कोइ यां कहे है कि वासुकी राजा धरती फनपे धरे है अरु यह धरती सदा अचल है। अरु सुमेर भी अचल है परन्तु कृष्नजी सुमेरकूं राई कीनी अरु वासुकी राजाको नोतो कियो अरु समुद्र मथो तामें सूं लक्ष्मीको स्तंभ मनि पारजातक कहिये फूल सुरा कहिये मदरा धनंतर वैद्य चन्द्रमा कामधेनु गाय ऐरापति हाथी रंभा कहिये देवांगना सात मुखको घोड़ो अमृत धनुष पंचायन संख विष ये चौदा रत्न काढ़या सो

ऐसा विचारे नाहीं। वासुकी राजाने धरती तलेसू काढ़ लियो जब धरती कौनके आधार रही अरु सुमेर उखारो तब सास्वतो क्यों रहो अरु चन्द्रमा आदि चौदा रत्न अब ताईं समुद्रमाहीं छो ता चन्द्रमा विना आकासमें गमन कौन करै छो अरु चांदनी कौनकी छी अरु ऐकै रोज आदि पन्द्रह तिथि वा उजालो अंधयारो व महीनो वरष याका प्रवर्त कौन छी अरु लक्षमी विना धनवान पुरुष कैसे छा सोतो ए प्रत्यक्ष ही विरुद्ध सो सत्य कैसे संभवे और कैई कहे हैं। कोई राक्षस धरतीने पातालमें ले गयो पाछे वारह रूप धर पृथ्वीका उधार किया सो ऐसा विचार नाहीं जो यह पृथ्वी सास्वती तो राक्षस हर कैसे ले गयो कोई जा कहे सूर्य तो कास्यप राजाको पुत्र छे। अरु बुद्धि चन्द्रमाको पुत्र छै अरु शनीचर सूर्यको पुत्र छे अरु हनूमान अंजनीकुमारके कानकी आड़ीमें हो जन्मा अरु दोपदीकूं कहे यह महा सती है परन्तु याके पांच पांडव भरतार हैं। सो ऐसा विचारे नाहीं के कास्यप राजाके ऐते मनका विमान गर्भमें कैसे रहसी अरु ये चन्द्रमा सूर्य तो विमान हैं ताके शनिचर वा बुद्धि कैसे होसी अरु कुमारी स्त्रीके कानकी आड़ी पुत्र कैसे होसी अरु द्रोपदीके पांच भर्तार हुवा तो सतीपनो कैसे रहो सो ये भी प्रत्यक्ष विरुद्ध सो या बात सत्य कैसे होसी इत्यादि भर्म बुद्धि कर जगत भरम रहा है। ताका वर्नन कहां ताईं कहिये सो या बात न्याय ही है। संसारी जीवांके भर्म बुद्धि न होय तो और कौनके होय कोई पंडित ज्ञानी पुरुषांके तो होवे नाहीं अरु ऐसे ही भरम बुद्धि पंडित ज्ञानी पुरुषांके होय तो संसारी जीवमें अरु पंडितोंमें विशेष काईं धर्म छे

लोकान्तर छे। भावार्थ–लोककी रीतिसो धर्मकी प्रवृति उलटी है। लोककी प्रवृतिके अरु धर्मकी प्रवृत्तिके परस्पर विरुद्ध है। ऐसा जानना और भी आगे जगतकी विटंबना दिखाइये है। कैईकतो बड़ पीपर आंबरी आदि नाना प्रकारके वृक्ष एकेन्द्रि वनस्पति ताकूं मनुष्य पंचेन्द्री होय पूजे हैं। अरु पूजवांका फल चाहे सो घनो फल पावसी तो पंचेन्द्री सों एकेन्द्री होसी सेा यह जुक्त ही है। जो कोई हजार रुपयाको धनी है कोई वाकी घनी सेवा करे अरु वह घना संतुष्ट होय तो हजार रुपया दे घाले किछू और बध देवाने समर्थ नाहीं त्यों ही एकेन्द्रीकी पर्यायसों मर एकेन्द्री होसी अरु गाय हाथी घोड़ा बलद याने पूज्या या सारखा होसी सिवाय फल तो किछू मिले नाहीं। घट ही भले मिले, कैई लकड़ीके लत्ता लगाय गाड़े पाछे ईंधन चोर चोर काट छेना मेला करे ताकूं माता कह पूजें बहुरि अग्नि कर जलावे महा बुरा गीत गावे माथामें धूल घाल विपरीतरूप नाचे मद खाय मदोन्मत्त होय काम विकाररूप प्रवर्ते माता मोसी बहिन भोजाई सब लाज न करें अरु आप नाना प्रकार परकी मार खाय पेलाने धूल पानी कीच कर मारें। अरु गर्धवकी सवारी करें। अरु हर्षित होय काकी भोजाई वा छोटा भाईकी स्त्री इत्यादि परस्त्रीनमें नाना प्रकारकी क्रीड़ा करें। अरु कामचेष्टा कर आकुल व्याकुल होंय महा नर्कादिक पापने उपार्जे अरु आपकू धन्य मानें अरु फेर परलोकमें ऐसा पाप कर शुभ फल चाहें ऐसे कहें म्हें होली माताने पूजां छां सो म्हांने आछो फल देसी ऐसी विटम्बना जगतमें आंखा देखिये है। सो ऐसा विचार संसारी जीव करें नाहीं। सो ऐसा महा पाप

कार्य कर आछो फल कैसे लागसी सेा यह होली कौन छै। सेा होली एक साहूकारकी पुत्री छी सेा दामीका निमित्तसूं पर पुरुषसेा रति हुई सेा वह पुरुषसूं निरंतर रमे पाछे होलीने अपने मनमें विचारी जो जा बात और तो कोई जाने नाहीं दासी जानें है। सेा या भी कहीं कह देसी तो हमारो जमारो खराब होसी तातैं दामीनें मार नाखों ऐसेा सो विचारकर पाछे ईने अग्निमें जलाय दीनी सो दामी मर व्यंतरी हुई पाछे व्यंतरी अवधिकर पूर्वलों सारो वृतान्त जानेा तब यह महा क्रोधकर नगरका सारा लोगांने रोग करि पीड़ित किया पाछें वे नगरके लोग वीनती करी जो भाई कोई देव होहु तो प्रगट होहु जो थे कहो सोई करतव्य करें तब जा प्रगट हुई अरु सारो पाछलो होलीको वृतान्त कहो तब नगरके लोगां कही अब थें सबने आछा करो तूं कहे सो म्हें सब मिल करसी तब देवी इनकूं नीका कर कही काठकी तो होली बना और घास फूस लगाय बाल द्यो सब मिल जाके अपवाद गावो अरु याकों भाड़ करो अरु मांथे धूल घाल नाचो अरु जाकी वरस प्रति स्थापना करो तब वे भयका मारा नगरका लोग ऐसे ही करता भया सो जीवानें ऐसी विषय चेष्टा नीकी लागे ही तापर यह निमित्त मिल्या सर्व करवां लागा बहुरि सर्व देसोंमें फैल गई सो अवारही चली आवे है। ऐसा जानना ऐसी गनगोर दिवाली राखी सांझी इत्यादि नाना प्रकारकी प्रवृति जगमें फैली छै। ताका निवारवाने कोई समर्थ नाहीं। और भी जीवांकी अज्ञान-ताका स्वरूप कहिये है। जो शीतला वोहरी आदि शरीर विषे

लोहूका विकार है। तासूं अज्ञानी जीव कहैं यह तो देवकी सक्ति उपजी है। इसी बुद्धि कर वाकूं पूजें पाछें पूजता पूजता ही पुत्र पुत्री मर जाय अरु कैई न पूजें तिनको जीवता देखिये है। तो भी अज्ञानी जीव वाने देव ही माने और कहीं ए छादना कीला-रोड़ी चाकी पनेड़ी दहेड़ी पथरवाड़ी गायकी वादनी दवात वही कुलदेवी चौथ गांज बीज अनन्त इत्यादिक घनी ही वस्तुने अनुराग कर पूजें हैं। अरु सती अउत पितर इत्यादिक कुदेवाका कहां ताई वर्नन करिये अब सर्व कुदेव तिनका सर्व पूजवांवाला तिनका कौन बुद्धिवान पंडित वर्नन कर सके एक सर्वज्ञ जानवाने समर्थ छे। सो जा जीवने अज्ञान ताका बस कर वा लोभ दृष्टि कर कांई कांई खोटा कार्ज करै और कौन कौन परदीनता न भाषे अरु कौन कौन या मतमें मस्तक न धारे सो अवश्य नवावे ही नवावे सो यह मोहका महात्म है। अरु मोह कर अनादि कालको संसार विषें भ्रमे हैं। अरु नर्क निगोदादिकका दुख सहे है। त्या दुखको वर्नन करवां समर्थ श्री गनधर देव भी नाहीं। तासों श्री गुरु परमदयालु कहें हैं हे भाई हे पुत्र जो तू अपना हितने वाछें महा सुखी हूवा चाहे तो मिथ्यात्वका सेवन तज घनी कहवां कर कांई विचक्षन पुरुष तो थोड़ामें ही समझ जाय अरु जे धीर पुरुष हैं त्यारने चाहे जितनो कहो वे एक भी न मांने सो यह न्याय ही है जैसी जीवकी होनहार होय तैसी ही बुद्धि उपजै। ऐसे संक्षेप मात्र कुदेवादिकका वर्नन किया आगे कुधर्मका वर्नन कहिये है। कुधर्म कोने कहिये जामें हिंसा झूठ चोरी कुशील परिग्रहकी वांछामें धर्मस्थामें और दुष्ट जीव कूं वैरयाकू सज्ञा

करानी अरु भगताकी सहाई करनी अरु रागद्वेष रूप प्रवर्तन अरु अपनी बड़ाई परकी निन्दा ऐसा ज में वर्नन होय । पांचों इन्द्रियांके पोषनमें धर्म जानें । अरु तालाब कुआ बावड़ी आदि निवा नवा बागादि बनावनेमें धर्म मानें अरु श्राद्धका करवामें अरु रात्रिभोजन करवा विषें धर्म मानें अरु जग्य करवा विषें धर्म माने ताका जा विषें वर्नन होय अरुयों कर प्राग आदि तीर्थका करवा विषें अरु विषय कर आसक्त नाना प्रकारके कुदेव ताका पूजवां विषें धर्म मानें ताका जा विषें वर्नन होय अरु दस प्रकारका खोटा दान ताका व्योरो स्त्री दासी दासको दान हाथी घोड़ा ऊंट ऐसा बलध गाय भैंस अरु धरती ग्राम हवेली बहुरि छुरी कटारी बरछी तरवार लाठी राहु केतु गृहके निमित्त लोह तिल तेल वस्त्रादि देना अरु गाढ़ा रथ वहल आदिका देना दंड वा रूपा सोना आदि धात वा ताका गहने बनाय देना काकड़ी खरबूजादिक फलका देना मरा सकरकंद सूरन आदि कंदमूलका देना अरु नाना प्रकार हरित कायका देना अरु ब्राह्मन भोजन करावना बहुरि कुल आदिन्यानकूं जिवावना लाहन आदिकका करना इत्यादि अनेक प्रकारके खोटा दान हैं । ताका जामें वर्नन होय या न जानें कि ये दान पापका कारन हैं । हिंसा कषाय विषयकी आसक्तता वा तीव्रता या दान दिया होय छे । तातैं ये दान पापका कारन छै जाका फल नर्कादिक है और जामें श्रंगार गीत नृत्यादि अनेक प्रकारकी कला चतुराई हावभाव कटाक्ष जामें ताका वर्नन होय अरु वस्तुको स्वरूप और भांत अरु कहै और भांत ऐसा अजथार्थ पदार्थमें वर्नन होय इत्यादि जीवको भव भवमें दुखके कारन ताका जामें वर्नन होसी

परमार्थका किछू कथन नाहीं। ऐसे शास्त्रका नाम कुशास्त्र है सो या शास्त्रकूं सुन्यां अरु मान्यां जीवका नेमकर बुरा ही होय भला अंसमात्र भी नाहीं। ऐसे कुशास्त्रका स्वरूप कहा आगे कुगुरांका स्वरूप कहिये है। सो कैसे हैं कुगुरु कैईयक तो परिग्रही है कैईक महाक्रोधी हैं, कैईक महामानी हैं, कैईक महा मायाचारी हैं कैईक महां लोभी हैं, कैई महां कामी परस्त्री भोगता सके नाहीं। बहुरि कैसे हैं कुगुरु कैई पंचाग्नकर घना जीव बारें हैं। कैईक अनछाना पानी सूं सपड़ धर्म माने हैं। कैईक सारा शरीरकूं खाक लगावें हैं। कैई जटा बधावें हैं कैईक ठाड़ेस्वरी कहिये एक वा दोय हाथ ऊंचा किये हैं। कैईक अग्नि ऊपर ओंधा मुख किये हैं कैईक ग्रीष्म समय बालू रेतमें लोटे हैं कैई झझार कंथा पहरे हैं। कैईक बाघंबर धारें हैं। कैईक तिलक छापा धारे हैं। कैईक लंबी माला गले धारें कैईक खै का रंगा वस्त्र धारें। कईक स्वेत वस्त्र धारे हैं कैईक लाल वस्त्र धारें हैं। कैईक कटाटई धारें कैई घासका कपड़ा धारें कैईक मृगकी चाम धारें हैं। कैईक सिंहकी खाल धारें हैं। कैईक नग्न होय नाना प्रकारके वस्त्र धारें हैं। कैईक बनफल खाय हैं कैईक कूकरा आदि तिर्यंच राखे हैं। कैईक मौन धारे हैं कैईक पवन चढ़ावें हैं कैईक जोतिस वैद्यक मंत्र यंत्र तंत्र करे हैं। केईक लोकनको दिखावनेके लिये ध्यान धारें हैं। कैईक आपकूं महन्त माने हैं कैईक आपकूं सिद्ध माने हैं। कैईक आपकूं पुजाया चाहें कैईक राजादिकका पूज्या थका राजी होय हैं। कैईक न पूजे तापर क्रोध करे कैई कान फड़ाय भगुआ वस्त्र धारें कैईक मठ बंध है

लाखों रुपैयाकी दौलत राखे हैं। अरु गुरुकी ठसक राखे हैं अरु भोला जीवोंने पगां पड़ावे हैं। इत्यादि नाना प्रकारके कूगुरु पाईये है। ताकूं कहां ताईं कहिये। और जुगति कहिये है। जो नंगा रहें कल्याण होय तो तिर्यंच सास्वता नंगा रहे हैं याका कल्यान क्यों न होसी जासों यथार्थ प्रतीत विना सर्व निर्फल है। जैसे एका विना बिंदी कामकी नाहीं और श्रीगुरु कहें हैं हे पुत्र तूने दोय बापको बेटो कहे तो दुख लगे। अरु दोय गुरु थांरे कहे तो रंचमात्र भी दुख न लहै। सो माता पिता कांइ स्वारथका सगा अरु बासुं एक पर्यायका सम्बन्ध ताकी तो प्यारे ऐसी ममत्व बुद्धि छै। अरु गुरु जाका सेवनतैं जग मरनका दुख विलय जाय अरु स्वर्ग मोक्षकी प्राप्ति होय ताकी तुम्हारे या प्रतीत तासूं थांरी परनति थानें दुखदाई नाहीं। तासूं जो तूं अपना हितने बांछे छै तो एक सर्वज्ञ वीतराग जो जिनेश्वर देव ताका वचन अंगीकार कर अरु ताके बचनके अनुसार देव गुरू धर्मका श्रद्धान करि। इति कुदेवादिक वर्नन संपूर्ण भया।

॥ इति श्री पं० रायमल्लजी कृत श्रीज्ञानानंद श्रावकाचार ग्रन्थ संपूर्ण। शुभं मंगलं ॥



सद्बोध रत्नाकर कार्यालय (सागर)में मिलने-वाली पुस्तकोंका

सूचीपत्र।

आदिपुराण (महापुराण पूर्ण) बड़े टाइप और मूल्य १६)
हरिवंशपुराण–(जैन रामायण) पक्की जिल्द और मूल्य ६)
भारतवर्षीय दि० जैन डारेक्टरी, मूल्य ८)
रत्नकरण्डश्रावकाचार मूल्य ९)
पद्मनंदिपच्चीसी मूल्य ९)
ज्ञानार्णव पक्की जिल्द और मूल्य ४)
स्याद्वादमंजरी संस्कृत और भाषाटीका सहित मूल्य ४)
आराधना-कथाकोष–पृ० ११६२, मूल्य सिर्फ ४)
जैन संप्रदायशिक्षा–पक्की जिल्द मू० ३॥)
अर्थ प्रकाशिका–उत्तम छपाई, मोटे कागज और ३॥)
प्रवचनसार–भाषाटीका मू० ३)
पुण्यास्रवकथाकोष–पृष्ठ ३४० मू० ३)
सागारधर्मामृत (पं० आशाधरकृत पूर्ण ग्रंथ) मू० २॥)
नाटक समयसार–मू० २॥)
धर्मप्रश्नोत्तर (श्री सकलकीर्तिकृत) मू० १)
श्रेणिकमहाराजका बृहत् जीवनचरित्र–मू० सिर्फ १॥)
पाण्डव पुराण—छन्दबद्ध २॥)
चारुदत्त चरित्र मू० १) क्रियाकोष–मू० १)

दयानंदछलकपटदर्पण–(आर्यसमाजका खंडन) २)
पुरुषार्थसिद्ध्युपाय–भाषाटीकासहित । मूल्य १)
पंचास्तिकाय–मूल्य २)
सप्तभंगीतरंगिणी–भाषाटीकासहित । मू० १)
बृहद्द्रव्यसंग्रह–भाषाटीका । मू० २)
गोम्मटसार–मूल्य जीवकण्ड २॥) कर्मकाण्ड २)
त्रिलोकसार–(भाषाटीका) पक्की जिल्द मूल्य ५॥)
लब्धिसार (क्षपणासारगर्भित) मूल्य १॥)
परमात्म-प्रकाश भाषाटीकासहित मूल्य ३)
जिनशतक–मूल्य ॥।)
तत्वज्ञानतरंगिणी–हिन्दी भाषाटीका मू० १॥)
आत्मप्रबोध–हिन्दी अनुवाद मू० २॥)
सुभाषितरत्नसन्दोह–भाषाटीका । मू० २॥)
योगसार–भाषाटीका मूल्य २)
परमाध्यात्मतरंगिणी–भाषावचनिका । मूल्य ३॥)
मकरध्वजपराजय–हिन्दी अनुवाद । मू० ॥=)
आराधनासार भाषाटीका–मू० १।)
जिनदत्तचरित–मू० १)
संस्कृत-प्रवेशिनी–मू० २)
धर्मरत्नोद्योत–कविताग्रन्थ । मू० १)
जैनबालबोधक–प्रथमभाग मू० ।) द्वितीयभाग ॥)
भाषानित्यपाठसंग्रह–मू०।॥=)
पंचपरमेष्ठीपूजा–मू० ।)

त्रैवर्णिकाचार–मराठी टीका मू० ३)
पंचाध्यायी–भाषाटीका सहित पक्की जिल्द मू० ५॥)
ज्ञानानंद श्रावकाचार-मू० १॥)
भक्तामरकथा–मूल्य १)
चन्द्रप्रभचरित–हिन्दी अनुवाद। मूल्य १)
नेमिपुराण–हिन्दीमें अनुवाद। मू० २)
सम्यक्त्व कौमुदी–मू० १=)
सुदर्शनचरित्र–मू० ॥–)
यशोधरचरित–मूल्य ।)
पवनदूत–हिन्दी अनुवाद। मू० ।)
श्रेणिकचरितसार–=) सुकुमालचरितसार–)॥
अकलंकचरित्र-मूल्य =)
नागकुमारचरित्र–मूल्य ।)
चौवीसठाणा–चर्चा चौवीस दण्डकसहित। मूल्य ॥)
छहढालासार्थ–=) नियम पोथी)॥
हिन्दी भक्तामर–)॥ हिन्दी कल्याणमंदिर–)॥
कर्मदहनविधान–मू० पांच आने
अनुभवानन्द–अध्यात्म ग्रन्थ मू० ।)
सुशीला उपन्यास–मू० १।)
गृहस्थ धर्म–मू० १=)
समयसार-शीतलप्रसादजी कृत। टीका मू० २॥)
दशलक्षण धर्म मू० ।–)
सोलहकारणधर्म मू० ।=)

श्रीपालचरित नंदीश्वरव्रतका अपूर्व महत्म्य मू० ।।।
महावीरचरित हिन्दी अनुवाद मू० १।।)
भारत दि० जैनयात्रादर्पण मू० २)
धर्मसंग्रहश्रावकाचार भाषाटीका मू० २)
जम्बूस्वामी चरित ।)
षट्पाहुड़ मू० १)
वसुनंदिश्रावकाचार मू० ।।)
परमात्मप्रकाश मू० ।=)
पुरुषार्थसिद्ध्युपाय भाषाटीका मू० ।)
आप्तपरीक्षा भाषाटीका मू० ।–)
जैन तीर्थयात्रा विवरण नकशा सहित मू० ।=)
समयसार नाटक भाषाटीका सहित मू० २।।)
सत्यार्थयज्ञ मू० ।।)
संशयतिमिरप्रदीप (तेरहपंथका खण्डन) मू० ।।।)
मनमोदन पंचशती मू० १=)
सिद्धक्षेत्रपूजासंग्रह मू० ।।)
पञ्चमंगल सार्थ मू० ≡)
पूजाविधानसंग्रह मू० ।=)
अठारहनाते मू० –)
इन्द्रियपराजय शतक मूल और हिंदी अनुवाद मू० =)
कल्याणमंदिर स्तोत्र मू० ।)
मोक्षमार्गकी कहानियां मू० ।≡)
बालबोधजैनधर्मशिक्षक प्रथम भाग –।।, द्वितीयभाग =)॥

देवदर्शन मू० -)
पंचामृत प्रक्षाल अर्थसहित मू० -)।
प्रतिष्ठासारोद्धार मू० १॥=)
तीसचौबीसी पाठ पं० वृंदावनजीकृत मू० ३)
परीक्षामुख भाषाटीका ।=)
हिंदी भक्तामर और प्राणप्रिय काव्य मू० -)
गिरनार-महात्म्य ॥-)
बालबोध जैनधर्म प्रथम भाग)॥, द्वितीय भाग -), तृतीय भाग=), चतुर्थ भाग ।-)
सीताचरित=)
प्रद्युम्नचरितसार ।=)
द्वादशानुप्रेक्षा -)
यशोधरचरित भाषाटीका २)
तेरहद्वीप पूजाविधान २॥)
प्राचीन जैनइतिहास पहला भाग मू० ॥।)
श्राविकाधर्म =)
धन्यकुमारचरित्र ॥।)
पंचकल्याण विधान पं बखतावरलालकृत मू० ।=)
जैनार्णव । १०० पाठोंका संग्रह । मू० १)
जैनसिद्धान्त संग्रह—१०० विषयोंका संग्रह मू० १॥)
सम्मेदशिखर महात्म्य-(पूजनविधान) मू० ।)
आत्मानुशासन—पक्की जिल्द २)
चौबीसीपाठ मूल्य १=)

जिनेन्द्र पंचकल्याणक-मूल्य -)
जैनपदसंग्रह पहला भाग-मू० ।=)
जैनपदसंग्रह दूसरा भाग-मू० ।)
जैनविवाहविधि-मू० =)
तत्वार्थसूत्रकी बालबोधिनी भाषाटीका-मूल्य ॥=)
दर्शनकथा-भारामल्लजीकृत मू० साढे तीन आने
दर्शनपाठ मू० -)
भक्तामर और तत्वार्थसूत्र-मू० =)
दानकथा- चार दानकथा) मू० =)
द्रव्यसंग्रह-मू० पांच आने
धानतविलास-(धर्मविलास) मू० १)
निशिभोजनकथा-मू० =) निर्वाणकाण्ड-मू० =)
नित्यनियमपूजा संस्कृत तथा भाषा-मू० ।)
नियमसार-भाषाटीकासहित मू० २)
नेमिचरित-मूल्य ।) त्रेपन क्रिया विवरण -)॥)
न्यायदीपिका-मू० ॥)
पार्श्वपुराण-मू० १)
प्रवचनसार परमागम-मू० १।)
भक्तामरस्तोत्र सार्थ मूल्य ।-)
भाषापूजासंग्रह-मू० ॥=)
समाधिमरण और मृत्युमहोत्सव-मू० -)॥
मोक्षमार्गप्रकाशक-मू० १॥)
रत्नकरंड श्रावकाचार सान्वयार्थ-मू० ।=)

विनती संग्रह–मू० ।)
वृन्दावन–विलास–मू० ॥)
सामायिक पाठ और आलोचनापाठ–मू० एक आना ।
सूक्तमुक्तावली मूल्य छह आना ।
ज्ञानसूर्योदय नाटक–मु० ॥)
शत्रुंजय पूजनादि गुटका ।≡)
जिनगुणगायनमंजरी ।) रविव्रत कथा –)
सल्लेखना–मृत्युमहोत्सव ।) दीपमालिका विधान (दीवाली पूजन) –)
बृहत्स्वयंभूस्तोत्र (अर्थ सहित) ॥) बुधजन सतसई ।=)
महावीर चरित्र (पूजन सहित) –)॥
जैन उपदेशी गायन (प्र० भाग) = द्वि० भाग ≡)
प्रातःस्मरण मंगल पाठ –)
जैन स्त्रीशिक्षा प्र. भाग –)॥ द्वी. भाग =)
श्राविका धर्म =)
जैन नित्य पाठसंग्रह (रंगमी गुटका) ॥
प्रभंजन चरित्र ।)
धर्मचर्चा संग्रह ॥)
आराधना स्वरूप ।)

केवल संस्कृत ग्रन्थ।

लघीयस्त्रयादिसंग्रह मू० ।=)
सागारधर्मामृत मू० ।≡)

आचारसार–।=)

त्रिलोकसार–१।।।)

तत्त्वानुशासनादिसंग्रह–मू० ।।।–)

अष्टसहस्री–मु० ३)

विश्वलोचनकोश–मू० १।=)

गोम्मटसार जीवकाण्ड मूल और संस्कृत छाया मू० ।=)

सर्वार्थसिद्धि–२) तत्त्वार्थ राजवार्तिक मू० ४।।)

श्लोकवार्तिकालंकार–मूल्य ४)

औषधिदान.

दुखी चार प्रकारकमें औषधदान प्रधान ।
तृषित प्राण तो देय सब अभय अशन अरु ज्ञान ॥

सागरमें एक पारमार्थिक दिगंबर जैन औषधालय करीब २सालसे स्थापित है इस औषधालयसे सैकड़ो रोगी रोगसे निर्मुक्त हो रहे हैं जिन भाईयोंको दवाइओंकी आवश्यकता हो निम्नलिखित पते पर रोगका नाम निदान आदि लिख कर मगा सकते हैं उनको सिर्फ डाक महसूल और पेकिंग खर्च देना पड़ेगा । इसके सिवाय जो महाशय औषधि दान करना चाहें अर्थात् सहायता देना चाहें वह भी इस पते पर सहायता प्रदान करें ।

पता–मंत्री जैन औषधालय,

ठि० **सद्बोध रत्नाकर कार्यालय**–बड़ाबाजार,

सागर (सी० पी०)

सद्बोध रत्नाकर सिरीज़।



१. **ज्ञानानंद श्रावकाचार**–मूल्य १॥)

२. **जैन सिद्धांत संग्रह**–इसमें १०० पुस्तकोंका संग्रह है। पृ. ४०० मूल्य १॥)

३. **प्रद्युम्न चरित्र**–श्री कृष्णजीके ज्येष्ठ पुत्र प्रद्युम्न कुमारका संक्षिप्त चरित्र है। भाषा सरल और सुंदर है मूल्य ।=)

४. **सीता चरित्र**–इसकी भाषा सरल और मनोहारि है। प्रत्येक स्त्रीको एकवार अवश्य पढ़ना चाहिए। मूल्य =)

५. **द्वादशानुप्रेक्षा**–बारह भावनाका वर्णन। मूल्य ।–)

६. **बालशिक्षा**–इसमें इष्टछत्तीसी, आलोचना पाठ, पंचकल्याणक पाठ और छः ढालाका संग्रह है। मूल्य =।)

७. **जिनगुणगायनमंजरी**–मूल्य ।)

मिलनेका पता–

मूलचंद्र मैनेजर

सद्बोध रत्नाकर कार्यालय बड़ाबाजार, **सागर**–(सी. पी.)